॥ श्रीहरिः ॥

592

नित्यकर्म-पूजाप्रकाश

पं० लालबिहारी मिश्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं द्रों चामुण्डायै विच्चे

592

॥ श्रीहरिः ॥

नित्यकर्म-पूजाप्रकाश

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

लेखक—

परमाचार्य पं० श्रीरामभवनजी मिश्र
श्रीलालबिहारीजी मिश्र

सं० २०६६ पचासवाँ पुनर्मुद्रण २०,०००
कुल मुद्रण १३,२०,०००

❖ मूल्य— ४० रु०
(चालीस रुपये)

ISBN 81-293-0047-8

प्रकाशक एवं मुद्रक—
गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५
(गोबिन्दभवन-कार्यालय, कोलकाता का संस्थान)
फोन : (०५५१) २३३४७२१; फैक्स : (०५५१) २३३६९९७
e-mail : booksales@gitapress.org website : www.gitapress.org

॥ श्रीहरिः ॥

सम्पादकीय

भारतीय संस्कृति पुनर्जन्म एवं कर्म-सिद्धान्तपर आधारित है। संसारमें सर्वत्र सुख-दुःख, हानि-लाभ, जीवन-मरण, दरिद्रता-सम्पन्नता, रुग्णता-स्वस्थता और बुद्धिमत्ता-अबुद्धिमत्ता आदि वैभिन्न्य स्पष्ट-रूपसे दिखायी पड़ता है। पर यह वैभिन्न्य दृष्ट-कारणोंसे ही होना आवश्यक नहीं, कारण कि ऐसे बहुत सारे उदाहरण प्राप्त होते हैं, कि एक माता-पिताके एक साथ जन्मे युग्म बालकोंकी शिक्षा-दीक्षा, लालन-पालन आदि समान होनेपर भी व्यक्तिगत-रूपसे उनकी परिस्थितियाँ भिन्न-भिन्न होती हैं, जैसे कोई रुग्ण, कोई स्वस्थ, कोई दरिद्र तो कोई सम्पन्न, कोई अङ्गहीन तो कोई सर्वाङ्ग-सुन्दर इत्यादि। इन बातोंसे यह स्पष्ट है कि जन्मान्तरीय धर्माधर्मरूप अदृष्ट भी इन भोगोंका कारण है। अतः मानव-जन्म लेकर अपने कर्तव्यके पालन और स्व-धर्माचरणके प्रति प्रत्येक व्यक्तिको अत्यधिक सावधान होना चाहिये।

प्रत्येक मनुष्यके जीवनमें कुछ क्षण ऐसे होते हैं, जब उसकी बुद्धि निर्मल और सात्त्विक रहती है तथा उन क्षणोंमें किये हुए कार्यकलाप (कर्म) शुभ कामनाओंसे समन्वित एवं पुण्यवर्धन करनेवाले होते हैं, पर सामान्यतः काम-क्रोध, लोभ-मोह, मद-मात्सर्य, ईर्ष्या-दम्भ, राग-द्वेष आदि दुर्गुणोंके वशीभूत मानवका अधिकतर समय पापाचरणमें ही व्यतीत हो पाता है, जिसे वह स्वयं भी नहीं समझ पाता। चौबीस घंटेके समयमें यदि हमने एक घंटेका समय भगवदाराधन अथवा परोपकारादि शुभ कार्योंके

निमित्त अर्पित किया तो शुभ कार्यका पुण्य हमें अवश्य प्राप्त होगा। पर साथ ही तेईस घंटेका जो समय हमने अवैध अर्थात् अशास्त्रीय (निषिद्ध) भोग-विलासमें तथा उन भोग्य पदार्थोंके साधन-संचयमें लगाया तो उसका पाप भी अवश्य भोगना पड़ेगा। इसलिये जीवनका प्रत्येक क्षण भगवदाराधनके रूपमें परिणत हो जाय—इसकी आवश्यकता है, जिससे मनुष्य अपने जीवनकालमें भगवत्संनिकटता प्राप्त कर सके और पूर्णरूपसे कल्याणका भागी बने। इसीलिये वेद-शास्त्रोंमें प्रातःकाल जागरणसे लेकर रात्रि-शयनतक तथा जन्मसे लेकर मृत्यु-पर्यन्त सम्पूर्ण क्रिया-कलापोंका विवेचन विधि-निषेधके रूपमें हुआ है, जो मनुष्यके कर्तव्याकर्तव्य और धर्माधर्मका निर्णय करता है।

वैदिक, सनातन, धर्मशास्त्रसम्मत स्वधर्मानुष्ठान ही सर्वेश्वर सर्वशक्तिमान् भगवान्‌की महती सपर्या अर्थात् उनकी पूजा है। जो मानवको श्रेय (कल्याण) प्रदान करती है। गीतामें भगवान्‌ने स्वयं कहा है—'स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः।' इसलिये वेदादि समस्त शास्त्रोंमें नित्य और नैमित्तिक कर्मोंको मानवके लिये परम धर्म और परम कर्तव्य कहा है। प्रत्येक मनुष्यपर तीन प्रकारके ऋण होते हैं—देव-ऋण, पितृ-ऋण और मनुष्य (ऋषि) ऋण। नित्यकर्म करनेसे मनुष्य तीनों प्रकारके ऋणोंसे मुक्त हो जाता है—

'यत्कृत्वानृण्यमाप्नोति दैवात् पैत्र्याच्च मानुषात्।'

जो व्यक्ति श्रद्धा-भक्तिसे जीवनपर्यन्त प्रतिदिन यथाधिकार स्नान, संध्या, गायत्री-जप, देवपूजन, बलिवैश्वदेव, स्वाध्याय आदि नित्यकर्म करता है, उसकी बुद्धि आत्मनिष्ठ हो जाती है। आत्मनिष्ठ बुद्धि हो जानेपर शनैः-शनैः मनुष्यके बुद्धिकी भ्रान्ति, जड़ता,

विवेकहीनता, अहंकार, संकोच और भेद-भाव नष्ट हो जाता है, तब वह मनुष्य परमात्मचिन्तनमें संलग्न होकर अहर्निश परब्रह्म परमेश्वरकी प्राप्तिके लिये ही प्रयत्न करता रहता है। इससे उसे परमानन्दकी अनुभूति होने लगती है। परमानन्दकी अनुभूति होनेपर वह मनुष्य शनैः-शनैः दैवीगुणोंसे सम्पन्न होकर ईश्वरोन्मुख हो जाता है। ईश्वरोन्मुख होनेके बाद मनुष्यको परमात्माके वास्तविक तत्त्वका परिज्ञान होने लगता है और फिर वह सदा-सर्वदाके लिये जीवन्मुक्त हो जाता है तथा 'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म' में परिनिष्ठित होकर आत्मोद्धार कर लेता है। यही मानव-जीवनकी विशिष्ट सफलता है। अतः मानव-जन्मको सफल करनेके लिये मानवमात्रको नित्यकर्म नियमित-रूपसे करने चाहिये।

कुछ नित्यकर्म तो ऐसे हैं, जिन्हें प्रत्येक व्यक्तिको रागपूर्वक नियमित-रूपसे करना ही पड़ता है। जैसे शौचादि कृत्य, स्नान, भोजन, शयन इत्यादि। पर ये सारे कर्म शास्त्रकी आज्ञाके अनुसार होने चाहिये, तभी वे धर्माचरणके रूपमें परिणत होंगे। जीवनके साधारण-से-साधारण क्रिया-कलापोंपर भी शास्त्रोंने विवेचन किया है और अपनी सम्मति प्रदान की है। यथा—प्रातःकाल कब उठा जाय, उठनेके बाद सर्वप्रथम क्या किया जाय—इसके लिये शौच, दन्तधावन, स्नान, भोजन, शयन आदि सभीकी विधि बतायी गयी है। अतः इसके अनुसार जीवन धारण करना ही श्रेय-पथका अवलम्बन है।

प्रस्तुत पुस्तकमें प्रातःकाल जागरणके पश्चात् प्रातःकालीन भगवत्स्मरणसे लेकर शौचाचार, आभ्यन्तर-शौच, दन्तधावन-विधि, क्षौरकर्म, स्नान, संध्योपासन, जप, तर्पण, ब्रह्मयज्ञ, बलिवैश्वदेव आदि पञ्चमहायज्ञोंका विवेचन, देवपूजन, मानसपूजा, सूर्य-

नमस्कार, नित्य-दान, संकल्प-विधि, अतिथि-सत्कार, भोजन-विधि, शयन-विधान आदि प्रकरणोंके साथ-साथ नित्य पाठ करनेके स्तोत्रोंका संग्रह भी किया गया है तथा विभिन्न देवोंकी दैनिक उपयोगमें आनेवाली स्तुति और आरतीका संकलन हुआ है। विशिष्ट पूजा-प्रकरणके अन्तर्गत स्वस्तिवाचन, गणेश-पूजन, वरुणकलश-पूजन, पुण्याहवाचन, नवग्रह-पूजन, षोडशमातृका, सप्तघृतमातृका, चतुष्षष्टियोगिनी तथा वास्तुपूजनका भी संग्रह हुआ है। इसके साथ ही पञ्चदेव, शिव, पार्थिवेश्वर, शालग्राम तथा महालक्ष्मी-दीपमालिका आदिके पूजन-विधान भी प्रस्तुत किये गये हैं।

प्रत्येक मनुष्यके चौबीस घंटेमें २१,६०० श्वास चलते हैं। अतः प्रतिश्वासके अनुसार भगवन्नाम-स्मरण होना ही चाहिये। शास्त्रोंमें अजपाजपकी एक सरल प्रक्रिया है, उसे भी यहाँ दिया गया है। पुस्तकके अन्तमें विभिन्न देवोंकी पूजामें विहित एवं निषिद्ध पत्र-पुष्पोंका विवेचन भी हुआ है, जो अर्चकोंके लिये अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

इस पुस्तकका लेखन-कार्य परमाचार्य श्रीयुत पं० श्रीरामभवनजी मिश्रने प्रारम्भ किया, बीचमें ही उनका काशी-लाभ हो जानेके कारण शेष भागका लेखन उनके सुपुत्र श्रीलालबिहारीजी मिश्रने सम्पन्न किया।

आशा है, यह 'नित्यकर्म-पूजाप्रकाश' साधकोंके लिये अत्यधिक उपयोगी और लाभप्रद होगा।

गीता-जयन्ती—

—राधेश्याम खेमका

मार्गशीर्ष शुक्ल ११, वि० सं० २०५०

॥ श्रीहरिः ॥

विषय-सूची

विषय पृष्ठ-संख्या

विषय | पृष्ठ-संख्या

विषय पृष्ठ-संख्या

स्तुति-प्रकरण—

देव-पूजामें विहित एवं निषिद्ध पत्र-पुष्प—

चित्र-सूची

(रंगीन चित्र)

(सादे चित्र)

वेदमाता गायत्री

गायत्रीदेवी—प्रात:काल बाला हंसवाहिनी ब्रह्मारूपा   मध्याह्नकाल युवती गरुडवाहिनी विष्णुरूपा   सायंकाल वृद्धा वृषभवाहिनी शिवरूपा

॥ श्रीहरिः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीमातापितृभ्यां नमः । श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

नित्यकर्म-पूजाप्रकाश

लम्बोदरं परमसुन्दरमेकदन्तं रक्ताम्बरं त्रिनयनं परमं पवित्रम्।
उद्यद्दिवाकरनिभोज्ज्वलकान्तिकान्तं विघ्नेश्वरं सकलविघ्नहरं नमामि ॥

गृहस्थके नित्यकर्मका फल-कथन

अथोच्यते गृहस्थस्य नित्यकर्म यथाविधि।
यत्कृत्वानृण्यमाप्नोति दैवात् पैत्र्याच्च मानुषात् ॥

(आश्वलायन)

शास्त्रविधिके अनुसार गृहस्थके नित्यकर्मका निरूपण किया जाता है, जिसे करके मनुष्य देव-सम्बन्धी, पितृ-सम्बन्धी और मनुष्य-सम्बन्धी तीनों ऋणोंसे मुक्त हो जाता है।

'जायमानो वै ब्राह्मणस्त्रिभिर्ऋणवा जायते' (तै० सं० ६।३।१०।५) के अनुसार मनुष्य जन्म लेते ही तीन ऋणोंवाला हो जाता है। उससे अनृण होनेके लिये शास्त्रोंने नित्यकर्मका विधान किया है। नित्यकर्ममें शारीरिक शुद्धि, सन्ध्यावन्दन, तर्पण और देव-पूजन प्रभृति शास्त्रनिर्दिष्ट कर्म आते हैं। इनमें मुख्य निम्नलिखित छः कर्म बताये गये हैं—

सन्ध्या स्नानं[1] जपश्चैव देवतानां च पूजनम्।
वैश्वदेवं तथाऽऽतिथ्यं षट् कर्माणि दिने दिने ॥

(बृ० प० स्मृ० १।३९)

मनुष्यको स्नान, सन्ध्या, जप, देवपूजन, बलिवैश्वदेव और अतिथि-सत्कार—ये छः कर्म प्रतिदिन करने चाहिये।

१-यहाँ स्नान शब्द स्नान-पूर्वके सभी कृत्योंके लिये उपलक्षक-रूपमें निर्दिष्ट है। 'पाठक्रमादर्थक्रमो बलीयान्'के आधारपर प्रथम स्नानके पश्चात् संध्या समझनी चाहिये।

प्रातः जागरणके पश्चात् स्नानसे पूर्वके कृत्य

प्रातःकाल उठनेके बाद स्नानसे पूर्व जो आवश्यक विभिन्न कृत्य हैं, शास्त्रोंने उनके लिये भी सुनियोजित विधि-विधान बताया है। गृहस्थको अपने नित्य-कर्मोंके अन्तर्गत स्नानसे पूर्वके कृत्य भी शास्त्र-निर्दिष्ट-पद्धतिसे ही करने चाहिये; क्योंकि तभी वह अग्रिम षट्-कर्मोंके करनेका अधिकारी होता है। अतएव यहाँपर क्रमशः जागरण-कृत्य एवं स्नान-पूर्व-कृत्योंका निरूपण किया जा रहा है।

ब्राह्म-मुहूर्तमें जागरण—सूर्योदयसे चार घड़ी (लगभग डेढ़ घंटे) पूर्व ब्राह्ममुहूर्तमें ही जग जाना चाहिये। इस समय सोना शास्त्रमें निषिद्ध है[1]।

करावलोकन—आँखोंके खुलते ही दोनों हाथोंकी हथेलियोंको देखते हुए निम्नलिखित श्लोकका पाठ करे—

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।
करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम्॥

(आचारप्रदीप)

'हाथके अग्रभागमें लक्ष्मी, हाथके मध्यमें सरस्वती और हाथके मूलभागमें ब्रह्माजी निवास करते हैं, अतः प्रातःकाल दोनों हाथोंका अवलोकन करना चाहिये।'

१-ब्राह्म मुहूर्ते या निद्रा सा पुण्यक्षयकारिणी।
तां करोति द्विजो मोहात् पादकृच्छ्रेण शुद्ध्यति॥

(आचारेन्दु, पृ॰ १७ में स्मृतिरत्नावलीका वचन)

ब्राह्ममुहूर्तकी निद्रा पुण्यका नाश करनेवाली है। उस समय जो कोई भी शयन करता है, उसे इस पापसे छुटकारा पानेके लिये पादकृच्छ्र नामक (व्रत) प्रायश्चित्त करना चाहिये। (रोगकी अवस्थामें या कीर्तन आदि शास्त्रविहित कार्योंके कारण इस समय यदि नींद आ जाय तो उसके लिये प्रायश्चित्तकी आवश्यकता नहीं होती)।

अव्याधितं चेत् स्वपन्तं..... विहितकर्मश्रान्ते तु न॥

(आचारेन्दु॰, पृ॰ १७)

भूमि-वन्दना—शय्यासे उठकर पृथ्वीपर पैर रखनेके पूर्व पृथ्वी माताका अभिवादन करे और उनपर पैर रखनेकी विवशताके लिये उनसे क्षमा माँगते हुए निम्न श्लोकका पाठ करे—

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डिते ।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥

'समुद्ररूपी वस्त्रोंको धारण करनेवाली, पर्वतरूपस्तनोंसे मण्डित भगवान् विष्णुकी पत्नी पृथ्वीदेवि ! आप मेरे पाद-स्पर्शको क्षमा करें ।'

मङ्गल-दर्शन—तत्पश्चात् गोरोचन, चन्दन, सुवर्ण, शङ्ख, मृदंग, दर्पण, मणि आदि माङ्गलिक वस्तुओंका दर्शन करे तथा गुरु, अग्नि और सूर्यको नमस्कार करे[1] ।

माता, पिता, गुरु एवं ईश्वरका अभिवादन—पैर, हाथ-मुख धोकर कुल्ला करे। इसके बाद रातका वस्त्र बदलकर आचमन करे[2]। पुनः निम्नलिखित श्लोकोंको पढ़कर सभी अङ्गोंपर जल छिड़के। ऐसा करनेसे मानसिक स्नान हो जाता है।

मानसिक शुद्धिका मन्त्र—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥
अतिनीलघनश्यामं नलिनायतलोचनम् ।
स्मरामि पुण्डरीकाक्षं तेन स्नातो भवाम्यहम् ॥

(आचारभूषण, पृ० ४ में वामनपुराणका वचन)

१-रोचनं चन्दनं हेमं मृदङ्गं दर्पणं मणिम् ।
गुरुमग्निं रविं पश्येन्नमस्येत् प्रातरेव हि ॥
(आचारमयूख, पृ० ९ में कात्यायनका वचन)

२-उत्थाय पश्चिमे यामे रात्रिवासः परित्यजेत् ।
प्रक्षाल्य हस्तपादास्यान्युपस्पृश्य हरिं स्मरेत् ॥
(आचाररत्न, पृ० ८ में अंगिरा)

अभ्यासके अनुसार शौचादि-कृत्यसे निवृत्त होकर भी वस्त्रादि बदलकर तथा शुद्ध होकर आगेका कृत्य किया जा सकता है।

इसके बाद मूर्तिमान् भगवान् माता-पिता एवं गुरुजनोंका अभिवादन करे[1], फिर परमपिता परमात्माका ध्यान करे।

कर्म और उपासनाका समुच्चय (तन्मूलक संकल्प)— इसके बाद परमात्मासे प्रार्थना करे कि 'हे परमात्मन्! श्रुति और स्मृति आपकी ही आज्ञाएँ हैं[2]। आपकी इन आज्ञाओंके पालनके लिये मैं इस समयसे लेकर सोनेतक सभी कार्य करूँगा। इससे आप मुझपर प्रसन्न हों, क्योंकि आज्ञापालनसे बढ़कर स्वामीकी और कोई सेवा नहीं होती'—

त्रैलोक्यचैतन्यमयादिदेव! श्रीनाथ! विष्णो! भवदाज्ञयैव।
प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसारयात्रामनुवर्तयिष्ये॥
सुप्तः प्रबोधितो विष्णो! हृषीकेशेन यत् त्वया।
यद्यत् कारयसे कार्यं तत् करोमि त्वदाज्ञया॥

(व्यास)

आपकी यह भी आज्ञा है कि काम करनेके साथ-साथ मैं आपका स्मरण[3] करता रहूँ। तदनुसार यथासम्भव आपका स्मरण करता हुआ और नाम लेता हुआ काम करता रहूँगा तथा उन्हें आपको समर्पित भी करता रहूँगा। इस कर्मरूप पूजासे आप प्रसन्न हों।

१- उत्थाय मातापितरौ पूर्वमेवाभिवादयेत्।
आचार्यश्च ततो नित्यमभिवाद्यो विजानता॥

२- श्रुतिस्मृती ममैवाज्ञे०। (वाधूलस्मृ० १८९, ब्रह्मपु०, आचारेन्दु, पृष्ठ २२)

३- (क) मामनुस्मर युध्य च। (गीता ८। ७)
(ख) कर्मकालेऽपि सर्वत्र स्मरेद् विष्णुं हविर्भुजम्।
तेन स्यात् कर्म सम्पूर्णं तस्मै सर्वं निवेदयेत्॥

(आश्वलायन)

****

अजपाजप[१]

मानव-शरीर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और दुर्लभ है। यदि शास्त्रके अनुसार इसका उपयोग किया जाय तो मनुष्य ब्रह्मको भी प्राप्त कर सकता है। इसके लिये शास्त्रोंमें बहुत-से साधन बतलाये गये हैं। उनमें सबसे सुगम साधन है—'अजपाजप'। इस साधनसे पता चलता है कि जीवपर भगवान्‌की कितनी असीम अनुकम्पा है। अजपाजपका संकल्प कर लेनेपर चौबीस घंटोंमें एक क्षण भी व्यर्थ नहीं हो पाता—चाहे हम जागते हों, स्वप्नमें हों या सुषुप्तिमें हों, प्रत्येक स्थितिमें 'हंसः'[२] का जप श्वास-क्रियाद्वारा अनायास होता ही रहता है। संकल्प कर देनेसे यह जप मनुष्यद्वारा किया हुआ माना जाता है[३]।

(क) किये हुए अजपाजपके समर्पणका संकल्प—'ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु अद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे

१-(क) **'न जप्यते, नोच्चार्यते (अपितु श्वासप्रश्वासयोर्गमनागमनाभ्यां सम्पाद्यते) इति अजपा।'** (शब्दकल्पद्रुम) अर्थात् बिना जप एवं उच्चारण किये केवल श्वासके आने-जानेसे जो जप सम्पन्न होता है, उसे 'अजपा' कहते हैं।

(ख) अग्निपुराणमें बतलाया गया है कि श्वास-प्रश्वासद्वारा 'हंसः', 'सोऽहं' के रूपमें शरीरस्थित ब्रह्मका ही उच्चारण होता रहता है, अतः तत्त्ववेत्ता इसे ही 'जप' कहते हैं।

उच्चरति स्वयं यस्मात् स्वदेहावस्थितः शिवः।
तस्मात् तत्त्वविदां चैव स एव जप उच्यते॥

(२१४।२४)

२-(क) **उच्छ्वासश्चैव निःश्वासो हंस इत्यक्षरद्वयम्।**
तस्मात् प्राणस्थहंसाख्य आत्माकारेण संस्थितः॥

(ख) परमात्माको 'हंस' इसलिये कहा जाता है कि वह जीवोंके भटकावका हनन कर देता है—**'हन्ति जीवसंसारमिति हंसः।'** (उत्तरगीता १।५ में गौडपादाचार्य)

(ग) भगवान्‌ने हंसावतार धारण भी किया था।। (देखिये श्रीमद्भा० ११।१३)

३-**अजपा नाम गायत्री योगिनां मोक्षदायिनी।**
तस्याः संकल्पमात्रेण जीवन्मुक्तो न संशयः॥

(आचाररत्नमें अङ्गिरा, आचारभूषण, पृ० २)

भरतखण्डे भारतवर्षे....स्थाने....नामसंवत्सरे.... ऋतौ... मासे.... पक्षे....तिथौ....दिने प्रातःकाले.... गोत्रः, शर्मा (वर्मा, गुप्तः) अहं ह्यस्तनसूर्योदयादारभ्य अद्यतनसूर्योदयपर्यन्तं श्वासक्रियया भगवता कारितं 'अजपागायत्रीजपकर्म' भगवते समर्पये। ॐ तत्सत् श्रीब्रह्मार्पणमस्तु।

(ख) आज किये जानेवाले अजपाजपका संकल्प—किये गये अजपाजपको भगवान्‌को अर्पित कर आज सूर्योदयसे लेकर कल सूर्योदयतक होनेवाले अजपाजपका संकल्प करे—'**ॐ विष्णुः**' से प्रारम्भ कर....'**अहं**' तक बोलनेके बाद आगे कहे—**अद्य सूर्योदयादारभ्य श्वस्तनसूर्योदयपर्यन्तं षट्शताधिकैकविंशतिसहस्र-(२१६००) संख्याकोच्छ्वासनिःश्वासाभ्यां (हंसं सोहंरूपाभ्यां गणेशब्रह्मविष्णुमहेशजीवात्मपरमात्मगुरुप्रीत्यर्थमजपागायत्रीजपं करिष्ये[१]।**

इसके बाद भगवन्नामोंका कीर्तन करे। तदनन्तर नीचे लिखे श्लोकोंका पाठ करे।

प्रातःस्मरणीय श्लोक

निम्नलिखित श्लोकोंका प्रातःकाल पाठ करनेसे बहुत कल्याण होता है, जैसे—१-दिन अच्छा बीतता है, २-दुःस्वप्न, कलिदोष, शत्रु, पाप और भवके भयका नाश होता है, ३-विषका भय नहीं होता, ४-धर्मकी वृद्धि होती है, अज्ञानीको ज्ञान प्राप्त होता है, ५-रोग नहीं होता, ६-पूरी आयु मिलती है, ७-विजय प्राप्त होती है, ८-निर्धन धनी होता है, ९-भूख-प्यास और कामकी बाधा नहीं होती तथा १०-सभी बाधाओंसे छुटकारा मिलता है इत्यादि।

निष्कामकर्मियोंको भी केवल भगवत्प्रीत्यर्थ इन श्लोकोंका पाठ करना चाहिये—

१-जिस दिन अजपाजपको आरम्भ करना है, उस दिन पहले लिखा ('क' वाला) समर्पण-संकल्प न करे। उस दिन केवल (दूसरा 'ख'वाला) संकल्प करे। दूसरे दिन 'क' वाला संकल्प बोलकर 'ख' वाला संकल्प करे, क्योंकि आरम्भके दिन पहला संकल्प संगत नहीं होता।

गणेशस्मरण—

प्रातः स्मरामि गणनाथमनाथबन्धुं
सिन्दूरपूरपरिशोभितगण्डयुग्मम् ।
उद्दण्डविघ्नपरिखण्डनचण्डदण्ड-
माखण्डलादिसुरनायकवृन्दवन्द्यम् ॥

'अनाथोंके बन्धु, सिन्दूरसे शोभायमान दोनों गण्डस्थलवाले, प्रबल विघ्नका नाश करनेमें समर्थ एवं इन्द्रादि देवोंसे नमस्कृत श्रीगणेशका मैं प्रातःकाल स्मरण करता हूँ।'

विष्णुस्मरण—

प्रातः स्मरामि भवभीतिमहार्तिनाशं
नारायणं गरुडवाहनमब्जनाभम् ।
ग्राहाभिभूतवरवारणमुक्तिहेतुं
चक्रायुधं तरुणवारिजपत्रनेत्रम् ॥

'संसारके भयरूपी महान् दुःखको नष्ट करनेवाले, ग्राहसे गजराजको मुक्त करनेवाले, चक्रधारी एवं नवीन कमलदलके समान नेत्रवाले, पद्मनाभ गरुडवाहन भगवान् श्रीनारायणका मैं प्रातःकाल स्मरण करता हूँ।'

शिवस्मरण—

प्रातः स्मरामि भवभीतिहरं सुरेशं
गङ्गाधरं वृषभवाहनमम्बिकेशम् ।
खट्वाङ्गशूलवरदाभयहस्तमीशं
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥

'संसारके भयको नष्ट करनेवाले, देवेश, गङ्गाधर, वृषभवाहन, पार्वतीपति, हाथमें खट्वाङ्ग एवं त्रिशूल लिये और संसाररूपी रोगका नाश करनेके लिये अद्वितीय औषध-स्वरूप, अभय एवं वरद मुद्रायुक्त हस्तवाले भगवान् शिवका मैं प्रातःकाल स्मरण करता हूँ।'

देवीस्मरण—

प्रातः स्मरामि शरदिन्दुकरोज्ज्वलाभां
सद्रत्नवन्मकरकुण्डलहारभूषाम् ।
दिव्यायुधोर्जितसुनीलसहस्त्रहस्तां
रक्तोत्पलाभचरणां भवतीं परेशाम् ॥

'शरत्कालीन चन्द्रमाके समान उज्ज्वल आभावाली, उत्तम रत्नोंसे जटित मकरकुण्डलों तथा हारोंसे सुशोभित, दिव्यायुधोंसे दीप्त सुन्दर नीले हजारों हाथोंवाली, लाल कमलकी आभायुक्त चरणोंवाली भगवती दुर्गा देवीका मैं प्रातःकाल स्मरण करता हूँ।'

सूर्यस्मरण—

प्रातः स्मरामि खलु तत्सवितुर्वरेण्यं
रूपं हि मण्डलमृचोऽथ तनुर्यजूंषि ।
सामानि यस्य किरणाः प्रभवादिहेतुं
ब्रह्माहरात्मकमलक्ष्यमचिन्त्यरूपम् ॥

'सूर्यका वह प्रशस्त रूप जिसका मण्डल ऋग्वेद, कलेवर यजुर्वेद तथा किरणें सामवेद हैं। जो सृष्टि आदिके कारण हैं, ब्रह्मा और शिवके स्वरूप हैं तथा जिनका रूप अचिन्त्य और अलक्ष्य है, प्रातःकाल मैं उनका स्मरण करता हूँ।'

त्रिदेवोंके साथ नवग्रहस्मरण—

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी
भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥

(मार्क० स्मृ० पृ० ३२)

'ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सूर्य, चन्द्रमा, मङ्गल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु—ये सभी मेरे प्रातःकालको मङ्गलमय करें।'

ऋषिस्मरण—

भृगुर्वसिष्ठः क्रतुरङ्गिराश्च
मनुः पुलस्त्यः पुलहश्च गौतमः।
रैभ्यो मरीचिश्च्यवनश्च दक्षः
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्॥

(वामनपु० १४। ३३)

'भृगु, वसिष्ठ, क्रतु, अङ्गिरा, मनु, पुलस्त्य, पुलह, गौतम, रैभ्य, मरीचि, च्यवन और दक्ष—ये समस्त मुनिगण मेरे प्रातःकालको मङ्गलमय करें।'

सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः सनातनोऽप्यासुरिपिङ्गलौ च।
सप्त स्वराः सप्त रसातलानि कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्॥
सप्तार्णवाः सप्त कुलाचलाश्च सप्तर्षयो द्वीपवनानि सप्त।
भूरादिकृत्वा भुवनानि सप्त कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्॥

(वामनपु० १४। २४,२७)

'सनत्कुमार, सनक, सनन्दन, सनातन, आसुरि और पिङ्गल—ये ऋषिगण; षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पञ्चम, धैवत तथा निषाद—ये सप्त स्वर; अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल तथा पाताल—ये सात अधोलोक सभी मेरे प्रातःकालको मङ्गलमय करें। सातों समुद्र, सातों कुलपर्वत, सप्तर्षिगण, सातों वन तथा सातों द्वीप, भूर्लोक, भुवर्लोक आदि सातों लोक सभी मेरे प्रातःकालको मङ्गलमय करें।'

प्रकृतिस्मरण—

पृथ्वी सगन्धा सरसास्तथापः
स्पर्शी च वायुर्ज्वलितं च तेजः।
नभः सशब्दं महता सहैव
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्॥

(वामनपु० १४। २६)

'गन्धयुक्त पृथ्वी, रसयुक्त जल, स्पर्शयुक्त वायु, प्रज्वलित तेज, शब्दसहित आकाश एवं महत्तत्त्व—ये सभी मेरे प्रातःकालको मङ्गलमय करें।'

****

इत्थं प्रभाते परमं पवित्रं पठेत् स्मरेद्वा शृणुयाच्च भक्त्या ।
दुःस्वप्ननाशस्त्विह सुप्रभातं भवेच्च नित्यं भगवत्प्रसादात् ॥

(वामनपु० १४ । २८)

'इस प्रकार उपर्युक्त इन प्रातःस्मरणीय परम पवित्र श्लोकोंका जो मनुष्य भक्तिपूर्वक प्रातःकाल पाठ करता है, स्मरण करता है अथवा सुनता है, भगवद्दयासे उसके दुःस्वप्नका नाश हो जाता है और उसका प्रभात मङ्गलमय होता है।'

पुण्यश्लोकोंका स्मरण

पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको जनार्दनः ।
पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः ॥
अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः ।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः ॥

(पद्मपु० ५१ । ६-७)

सप्तैतान् संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम् ।
जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः ॥

(आचारेन्दु, पृ० २२)

कर्कोटकस्य नागस्य दमयन्त्या नलस्य च ।
ऋतुपर्णस्य राजर्षेः कीर्तनं कलिनाशनम् ॥

(मार्क० स्मृ०, पृ० ३२)

प्रह्लादनारदपराशरपुण्डरीकव्यासाम्बरीषशुकशौनकभीष्मदाल्भ्यान् ।
रुक्माङ्गदार्जुनवसिष्ठविभीषणादीन् पुण्यानिमान् परमभागवतान् नमामि ॥
धर्मो विवर्धति युधिष्ठिरकीर्तनेन पापं प्रणश्यति वृकोदरकीर्तनेन ।
शत्रुर्विनश्यति धनंजयकीर्तनेन माद्रीसुतौ कथयतां न भवन्ति रोगाः ॥

वाराणस्यां भैरवो देवः संसारभयनाशनः ।
अनेकजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ॥
वाराणस्यां पूर्वभागे व्यासो नारायणः स्वयम् ।
तस्य स्मरणमात्रेण अज्ञानी ज्ञानवान् भवेत् ॥
वाराणस्यां पश्चिमे भागे भीमचण्डी महासती ।
तस्याः स्मरणमात्रेण सर्वदा विजयी भवेत् ॥

वाराणस्यामुत्तरे भागे सुमन्तुर्नाम वै द्विजः ।
तस्य स्मरणमात्रेण निर्धनो धनवान् भवेत् ॥
वाराणस्यां दक्षिणे भागे कुक्कुटो नाम ब्राह्मणः ।
तस्य स्मरणमात्रेण दुःस्वप्नः सुस्वप्नो भवेत् ॥
उमा उषा च वैदेही रमा गङ्गेति पञ्चकम् ।
प्रातरेव पठेन्नित्यं सौभाग्यं वर्धते सदा ॥
सोमनाथो वैद्यनाथो धन्वन्तरिरथाश्विनौ ।
पञ्चैतान् यः स्मरेन्नित्यं व्याधिस्तस्य न जायते ॥
कपिला कालियोऽनन्तो वासुकिस्तक्षकस्तथा ।
पञ्चैतान् स्मरतो नित्यं विषबाधा न जायते ॥
हरं हरिं हरिश्चन्द्रं हनूमन्तं हलायुधम् ।
पञ्चकं वै स्मरेन्नित्यं घोरसंकटनाशनम् ॥
आदित्यश्च उपेन्द्रश्च चक्रपाणिर्महेश्वरः ।
दण्डपाणिः प्रतापी स्यात् क्षुत्तृड्बाधा न बाधते ॥
वसुर्वरुणसोमौ च सरस्वती च सागरः ।
पञ्चैतान् संस्मरेद् यस्तु तृषा तस्य न बाधते ॥
सनत्कुमारदेवर्षिशुकभीष्मप्लवङ्गमाः ।
पञ्चैतान् स्मरतो नित्यं कामस्तस्य न बाधते ॥
रामलक्ष्मणौ सीता च सुग्रीवो हनुमान् कपिः ।
पञ्चैतान् स्मरतो नित्यं महाबाधा प्रमुच्यते ॥
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम् ।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम् ॥

(पद्मपुराण)

महर्षिर्भगवान् व्यासः कृत्वेमां संहितां पुरा ।
श्लोकैश्चतुर्भिर्धर्मात्मा पुत्रमध्यापयच्छुकम् ॥
मातापितृसहस्राणि पुत्रदाराशतानि च ।
संसारेष्वनुभूतानि यान्ति यास्यन्ति चापरे ॥

हर्षस्थानसहस्राणि भयस्थानशतानि च।
दिवसे दिवसे मूढमाविशन्ति न पण्डितम्॥
ऊर्ध्वबाहुर्विरौम्येष न च कश्चिच्छृणोति मे।
धर्मादर्थश्च कामश्च स किमर्थं न सेव्यते॥
न जातु कामान्न भयान्न लोभाद् धर्मं त्यजेज्जीवितस्यापि हेतोः।
धर्मो नित्यः सुखदुःखे त्वनित्ये जीवो नित्यो हेतुरस्य त्वनित्यः॥
इमां भारतसावित्रीं प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
स भारतफलं प्राप्य परं ब्रह्माधिगच्छति॥

(आचारेन्दु, पृ० २२में व्यासवचन)

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारममलेश्वरम्॥
केदारं हिमवत्पृष्ठे डाकिन्यां भीमशङ्करम्।
वाराणस्यां च विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे॥
वैद्यनाथं चिताभूमौ नागेशं दारुकावने।
सेतुबन्धे च रामेशं घुश्मेशं च शिवालये॥
द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
सर्वपापविनिर्मुक्तः सर्वसिद्धिफलो भवेत्॥

(आचारभूषण, पृ० १० में शिवपुराणका वचन)

दैनिक कृत्य-सूची-निर्धारण—इसी समय दिन-रातके कार्योंकी सूची तैयार कर लें। आज धर्मके कौन-कौनसे कार्य करने हैं ? धनके लिये क्या करना है ? शरीरमें कोई कष्ट तो नहीं है ? यदि है तो उसके कारण क्या हैं और उनका प्रतीकार क्या है[१] ?

१-ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत धर्मार्थौ चानुचिन्तयेत्।
कायक्लेशांश्च तन्मूलान् वेदतत्त्वार्थमेव च॥

(मनु० ४। ९२)

शौचाचार

शौचे यत्नः सदा कार्यः शौचमूलो द्विजः स्मृतः ।
शौचाचारविहीनस्य समस्ता निष्फलाः क्रियाः ॥

(दक्षस्मृ० ५ । २, बाधूलस्मृ० २०)

'शौचाचारमें सदा प्रयत्नशील रहना चाहिये, क्योंकि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यका मूल शौचाचार ही है, शौचाचारका पालन न करनेपर सारी क्रियाएँ निष्फल हो जाती हैं ।'

शौच-विधि—यदि खुली जगह मिले तो गाँवसे नैर्ऋत्यकोण—(दक्षिण और पश्चिमके बीच) की ओर कुछ दूर जाय[1] । रातमें दूर न जाय । नगरवासी गृहके शौचालयमें सुविधानुसार मूत्र-पुरीषका उत्सर्ग करें । मिट्टी और जलपात्र लेते जायँ । इन्हें पवित्र जगहपर रखें । जलपात्रको हाथमें रखना निषिद्ध है । सिर और शरीरको ढका रखें । जनेऊको दायें कानपर चढ़ा लें । अच्छा तो यह है कि जनेऊको दायें हाथसे निकालकर (कण्ठमें करके) पहले दायें कानको लपेटे, फिर उसे सिरके ऊपर लाकर बायें कानको भी लपेट लें[2] । शौचके लिये बैठते समय सुबह, शाम और दिनमें उत्तरकी ओर मुख करे तथा रातमें दक्षिणकी ओर[3] । यज्ञमें काम न आनेवाले तिनकोंसे जमीनको ढक दे । इसके बाद मौन होकर शौच-क्रिया करे । उस समय जोरसे साँस न ले और थूके भी नहीं[4] ।

१-**नैर्ऋत्यामिषुविक्षेपमतीत्याभ्यधिकं भुवः ।** (पाराशर०)

२-ऐसा करनेसे सिर ढकनेवाला काम पूरा हो जाता है—
शिरोवेष्टनस्य तु तदा तेनैव सिद्धेः । (आचारभूषण, पृ०१४)

३-**दिवा संध्यासु कर्णस्थब्रह्मसूत्र उदङ्मुखः ।**
कुर्यान्मूत्रपुरीषे तु रात्रौ च दक्षिणामुखः ॥
(याज्ञ० १ । १६, बाधूलस्मृ०८)

४-**अन्तर्धाय तृणैर्भूमिं शिरः प्रावृत्य वाससा ।**
वाचं नियम्य यत्नेन ष्ठीवनोच्छ्वासवर्जितः ॥
(दे० भा० ११ । २ । ९)

शौचके बाद पहले मिट्टी और जलसे लिङ्गको एक बार धोवे[१]। बादमें मलस्थानको तीन बार मिट्टी-जलसे धोवे[२]। प्रत्येक बार मिट्टीकी मात्रा हरे आँवलेके बराबर हो[३]। बादमें बायें हाथको एक बार मिट्टीसे धोकर अलग रखे, इससे कुछ स्पर्श न करे। इसके पहले आवश्यकता पड़नेपर बायें हाथसे नाभिके नीचेके अङ्गोंको स्पर्श किया जा सकता था, किंतु अब नहीं। नाभिके ऊपरके स्थानोंको सदा दाहिने हाथसे छूना चाहिये[४]। दाहिने हाथसे ही लोटा या वस्त्रका स्पर्श करे। लाँग लगाकर (पुछटा खोंसकर) पहलेसे ही रखी गयी, मिट्टीके तीन भागोंमेंसे हाथ धोने (मलने) और कुल्ला करनेके लिये नियत जगहपर आये। पश्चिमकी ओर बैठकर मिट्टीके पहले भागमेंसे बायें हाथको दस बार और दूसरे भागसे दोनों हाथोंको पहुँचेतक सात बार धोये। जलपात्रको तीन बार धोकर, तीसरे भागसे पहले दायें पैरको, फिर बायें पैरको तीन-तीन[५] बार मिट्टी और जल लेकर धोये। इसके बाद बाँयी[६] ओर बारह[७] कुल्ले करे।

१-लिङ्गशौचं पुरा कृत्वा गुदशौचं ततः परम्। (आश्वलायन, आचारेन्दु पृ० २४)

२-एका लिङ्गे गुदे तिस्रस्तथा वामकरे दश।
उभयोः सप्त दातव्या मृदः शुद्धिमभीप्सता॥ (मनुस्मृति ५। १३६)

३-आर्द्रामलकमात्रास्तु ग्रासा इन्दुव्रते स्मृताः।
तथैवाहुतयः सर्वाः शौचे देयाश्च मृत्तिकाः॥ (बाधूल स्मृ० १८)

४-धर्मविद् दक्षिणं हस्तमधः शौचे न योजयेत्।
तथा च वामहस्तेन नाभेरूर्ध्वं न शोधयेत्॥ (आचारभूषण, पृष्ठ १८ में देवल)

५-तिसृभिश्चातलात् पादौ शोध्यौ गुल्फात् तथैव च।
हस्तौ त्वामणिबन्धाच्च लेपगन्धापकर्षणे॥ (मरीचि)

६-पुरतः सर्वदेवाश्च दक्षिणे पितरस्तथा।
ऋषयः पृष्ठतः सर्वे वामे गण्डूषमाचरेत्॥
(पारिजात, आचाररत्न, पृ० १५)

७-कुर्याद् द्वादश गण्डूषान् पुरीषोत्सर्जने द्विजः।
मूत्रे चत्वार एव स्युर्भोजनान्ते तु षोडश।
(आश्वलायन, आचारेन्दु, पृ० २४)

बची हुई मिट्टीको अच्छी तरह बहा दे। जलपात्रको मिट्टी और जलसे धोकर विष्णुका स्मरण कर, शिखाको बाँधकर जनेऊको 'उपवीत'[१] कर ले, अर्थात् बायें कंधेपर रखकर दायें हाथके नीचे कर ले। फिर दो बार आचमन करे।

(क) मूत्र-शौच-विधि—केवल लघुशंका (पेशाब) करनेपर शौचकी (शुद्ध होनेकी) विधि कुछ भिन्न होती है। लघुशंकाके बाद यदि आगे निर्दिष्ट क्रिया न की जाय तो प्रायश्चित्त करना पड़ता है[२]। अतः इसकी उपेक्षा न करे।

विधि यह है—लघुशंकाके बाद एक बार लिङ्गमें, तीन बार बायें हाथमें और दो बार दोनों हाथोंमें मिट्टी लगाये और धोये[३]। एक-एक बार पैरोंमें भी मिट्टी लगाये और धोये। फिर हाथ ठीकसे धोकर चार कुल्ले करे। आचमन करे, इसके बाद मिट्टीको अच्छी तरह बहा दे। स्थान साफ कर दे। शीघ्रतामें अथवा मार्गादिमें जलसे लिङ्ग प्रक्षालन कर लेनेपर तथा हाथ-पैर धो लेनेपर और कुल्ला कर लेनेपर सामान्य शुद्धि हो जाती है, पर इतना अवश्य करना चाहिये।

(ख) परिस्थिति-भेदसे शौचमें भेद—शौच अथवा शुद्धिकी

१- दक्षिणं बाहुमुत्सृज्य वामस्कन्धे निवेशितम्।
यज्ञोपवीतमित्युक्तं देवकार्येषु शस्यते॥

२- मूत्रोत्सर्गं द्विजः कृत्वा न कुर्याच्छौचमात्मनः।
मोहाद् भुङ्क्ते त्रिरात्रेण जलं पीत्वा विशुद्ध्यति॥
(अङ्गिरा)

३- एका लिङ्गे तु सव्ये त्रिरुभयोर्मृद्द्वय स्मृतम्।
मूत्रशौचं समाख्यातं मैथुने द्विगुणं स्मृतम्॥
(दक्षस्मृति ५।५)

प्रक्रिया परिस्थितिके भेदसे बदल जाती है। स्त्री और शूद्रके लिये तथा रातमें अन्योंके लिये भी यह आधी हो जाती है। यात्रा (मार्ग) में चौथाई बरती जाती है। रोगियोंके लिये यह प्रक्रिया उनकी शक्तिपर निर्भर हो जाती है। शौचका उपर्युक्त विधान स्वस्थ गृहस्थोंके लिये है। ब्रह्मचारीको इससे दुगुना, वानप्रस्थोंको तिगुना और संन्यासियोंको चौगुना करना विहित है[1]।

(ग) आभ्यन्तर शौच[2]—मिट्टी और जलसे होनेवाला यह शौच-कार्य बाहरी है। इसकी अबाधित आवश्यकता है, किंतु आभ्यन्तर शौचके बिना यह प्रतिष्ठित नहीं हो पाता। मनोभावको शुद्ध रखना आभ्यन्तर शौच माना जाता है। किसीके प्रति ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, लोभ, मोह, घृणा आदिके भावका न होना आभ्यन्तर शौच है। श्रीव्याघ्रपादका कथन है कि यदि पहाड़-जितनी मिट्टी और गङ्गाके समस्त जलसे जीवनभर कोई बाह्य शुद्धि-कार्य करता रहे, किंतु उसके पास 'आन्तरिक शौच' न हो तो वह शुद्ध नहीं हो सकता[3]। अतः आभ्यन्तर शौच अत्यावश्यक है। भगवान् सबमें विद्यमान हैं। इसलिये किसीसे द्वेष, क्रोधादि क्यों करे? सबमें भगवान्‌का दर्शन करते हुए, सब परिस्थितियोंको भगवान्‌का वरदान समझते हुए, सबमें मैत्रीभाव रखे। साथ ही प्रतिक्षण भगवान्‌का स्मरण करते हुए उनकी आज्ञा समझकर शास्त्रविहित कार्य करता रहे।

१-स्त्रीशूद्रयोरर्धमानं शौचं प्रोक्तं मनीषिभिः।
दिवा शौचस्य निश्यर्धं पथि पादो विधीयते॥
आर्तः कुर्याद् यथाशक्ति शक्तः कुर्याद् यथोदितम्॥

(आचारभूषणमें आदित्यपुराण, दक्षस्मृति ५। ११—१३)

२-शौचं तु द्विविधं प्रोक्तं बाह्यमाभ्यन्तरं तथा।
मृज्जलाभ्यां स्मृतं बाह्यं भावशुद्धिस्तथान्तरम्॥

(वाधूलस्मृ० १९)

३-गङ्गातोयेन कृत्स्नेन मृद्भारैश्च नगोपमैः।
आमृत्योश्चाचरन् शौचं भावदुष्टो न शुध्यति॥

(आचारेन्दुमें व्याघ्रपाद, यही भाव दक्षस्मृति ५। २। १० का है।)

आचमनकी विधि

प्रत्येक कार्यमें आचमनका विधान है। आचमनसे हम केवल अपनी ही शुद्धि नहीं करते, अपितु ब्रह्मासे लेकर तृणतकको तृप्त कर देते हैं[१]। आचमन न करनेपर हमारे समस्त कृत्य व्यर्थ हो जाते हैं[२]। अतः शौचके बाद भी आचमनका विधान है।

लाँग लगाकर, शिखा बाँधकर, उपवीती होकर और बैठकर तीन बार आचमन करना चाहिये[३]। उत्तर, ईशान या पूर्वकी ओर मुख करके बैठ जाय[४]। हाथ घुटनोंके भीतर रखे। दक्षिण और पश्चिमकी ओर मुख करके आचमन न करे[५]।

आचमनके लिये जलकी मात्रा—जल इतना ले कि ब्राह्मणके हृदयतक, क्षत्रियके कण्ठतक, वैश्यके तालुतक और शूद्र तथा महिलाके

१-एवं स ब्राह्मणो नित्यमुपस्पर्शनमाचरेत्।
ब्रह्मादिस्तम्बपर्यन्तं जगत् स परितर्पयेत्॥
(व्याघ्रपाद)

२-यः क्रियां कुरुते मोहादनाचम्यैव नास्तिकः।
भवन्ति हि वृथा तस्य क्रियाः सर्वा न संशयः॥
(पुराणसार)

३-निबद्धशिखकच्छस्तु द्विज आचमनं चरेत्।
कृत्वोपवीतं सव्येंऽसे वाङ्मनःकायसंयतः॥
(बृहत्पराशर)

४-(क) अन्तर्जानुः शुचौ देशे उपविष्ट उदङ्मुखः।
प्राङ् वा ब्राह्मेन तीर्थेन द्विजो नित्यमुपस्पृशेत्॥
(याज्ञवल्क्य, आचाराध्याय, श्लोक १८)

(ख) ऐशानाभिमुखो भूत्वोपस्पृशेच्च यथाविधि॥
(हारीत)

५-याम्यप्रत्यङ्मुखत्वेन कृतमाचमनं यदि।
प्रायश्चित्तं तदा कुर्यात् स्नानमाचमनं क्रमात्॥
(स्मृति-रत्नावली, आचाररत्न, पृ० १६)

जीभतक पहुँच जाय[१]। हथेलीको मोड़कर गौके कानकी तरह बना ले। कनिष्ठिका और अँगूठेको अलग कर ले। शेष अँगुलियोंको सटाकर ब्राह्मतीर्थसे[२] निम्नलिखित एक-एक मन्त्र बोलते हुए आचमन करे, जिसमें आवाज न हो। आचमनके समय बायें हाथकी तर्जनीसे दायें हाथके जलका स्पर्श कर ले[३] तो सोमपानका फल मिलता है।

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।

आचमनके बाद अँगूठेके मूल भागसे होठोंको दो[४] बार पोंछकर **'ॐ हृषीकेशाय नमः'** बोलकर हाथ धो ले। फिर अँगूठेसे[५] नाक, आँखों और कानोंका स्पर्श करे। छींक आनेपर, थूकनेपर, सोकर उठनेपर, वस्त्र पहननेपर, अश्रु गिरनेपर आचमन करे अथवा दाहिने कानके स्पर्शसे भी आचमनकी विधि पूरी हो जाती है[६]।

आचमन बैठकर करना चाहिये—यह पहले लिखा गया है; किंतु

१-हृत्कण्ठतालुगाभिस्तु यथासंख्यं द्विजातयः।
शुध्येरन् स्त्री च शूद्रश्च सकृत्स्पृष्टाभिरन्ततः॥
(याज्ञवल्क्यस्मृति, आचाराध्याय, श्लोक २१)

२-(क) अँगूठेके मूलको 'ब्राह्मतीर्थ' कहते हैं।
(ख) **आयतं पूर्वतः कृत्वा गोकर्णाकृतिवत् करम्।**
संहताङ्गुलिना तोयं गृहीत्वा पाणिना द्विजः।
मुक्ताङ्गुष्ठकनिष्ठेन शेषेणाचमनं चरेत्॥
(आचाररत्न, पृ० १६ में भरद्वाज, दे० भा० ११। १६। २७)

३-**दक्षिणे संस्थितं तोयं तर्जन्या सव्यपाणिना।**
तत्तोयं स्पृशते यस्तु सोमपानफलं लभेत्॥
(आचारप्रदीप आचाररत्न, पृ० १६)

४-**त्रिः प्राश्यापो द्विरुन्मृज्य खान्यद्भिः समुपस्पृशेत्।**
(याज्ञवल्क्य, आचाराध्याय, श्लोक २०)

५-**अग्निरङ्गुष्ठस्तस्मात् तेनैव सर्वाणि संस्पृशेत्।**

६-**क्षुते निष्ठीवने सुप्ते परिधानेऽश्रुपातने।**
पञ्चस्वेतेषु चाचामेच्छ्रोत्रं वा दक्षिणं स्पृशेत्॥
(दे० भा० ११। ३। २; आचारेन्दुमें मार्कण्डेय)

***

घुटनेसे ऊपर जलमें खड़े होकर भी आचमन किया जा सकता है। जब जल घुटनेसे कम हो तो यह अपवाद लागू नहीं होता, तब बैठकर ही आचमन किया जाना चाहिये[१]।

संकल्प

स्नान, सन्ध्या, दान, देवपूजन तथा किसी भी सत्कर्मके प्रारम्भमें संकल्प करना आवश्यक है। अन्यथा सभी कर्म विफल हो जाते हैं[२]। हाथोंमें पवित्री धारण कर तथा आचमन आदिसे शुद्ध होकर दायें हाथमें केवल जल अथवा जल, अक्षत, पुष्प आदि लेकर निम्नलिखित संकल्प करे—

'ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः। ॐ अद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे बौद्धावतारे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे....क्षेत्रे[३]नगरे ग्रामे....नाम-संवत्सरे[४]....मासे[५] (शुक्ल/कृष्ण) पक्षे....

१-जान्वोरूर्ध्वं जले तिष्ठन्नाचान्तः शुचितामियात्।
अधस्ताच्छतकृत्वोऽपि समाचान्तो न शुध्यति॥
(आचारेन्दु, पृ० २९ में, विष्णु-स्मृतिका वचन)

२-संकल्प्य च तथा कुर्यात् स्नानदानव्रतादिकम्।
अन्यथा पुण्यकर्माणि निष्फलानि भवन्ति हि॥
(आचारेन्दु, मार्कण्डेयपुराणका वचन)

३- यदि किसी तीर्थमें स्नान कर रहे हों तो उस रिक्त स्थानमें तीर्थका नाम, नगरमें हों तो उस नगरका नाम और गाँवमें हों तो उस गाँवका नाम जोड़ दें।

४- पञ्चाङ्गोंमें पहले पृष्ठपर ही संवत्सरका नाम लिखा रहता है। रिक्त स्थानमें संवत्सरका वह नाम जोड़ दें। वर्षके आरम्भवाला संवत्सर ही संकल्पादिमें जोड़ा जाता है, बादवाला नहीं।

५-चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन—इन शब्दोंको आवश्यकतानुसार रिक्त स्थानमें जोड़ दे।

****

....तिथौ[१] ....वासरे[२] ....गोत्रः[३] ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम्[४] प्रातः (मध्याह्ने, सायं) सर्वकर्मसु शुद्ध्यर्थं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्रीभगवत्प्रीत्यर्थं च अमुक कर्म करिष्ये।

दन्तधावन-विधि

मुखशुद्धिके बिना पूजा-पाठ, मन्त्र-जप आदि निष्फल होते हैं, अतः प्रतिदिन मुख-शुद्ध्यर्थ दन्तधावन अथवा मंजनादि अवश्य करना चाहिये[५]। दातौन करनेके लिये दो दिशाएँ ही विहित हैं—ईशानकोण और पूरब[६]। अतः इन्हीं दिशाओंकी ओर मुख करके बैठ जाय। ब्राह्मणके लिये दातौन बारह अंगुल, क्षत्रियकी नौ अंगुल, वैश्यकी छः अंगुल और शूद्र तथा स्त्रियोंकी चार-चार अंगुलकी हो[७]। दातौन लगभग कनिष्ठिकाके

१-प्रतिपद्, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, अमावास्या या पूर्णिमा—इन शब्दोंको तिथिके पहले रिक्त स्थानमें जोड़ दे।

२-रवि, सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि—इन दिनोंमेंसे एकको दिनके अनुसार रिक्त स्थानमें जोड़ दे।

३-कश्यप, भरद्वाज आदि अपना गोत्र रिक्त स्थानमें जोड़ दे।

४-ब्राह्मण अपने नामके अन्तमें शर्मा, क्षत्रिय अपने नामके अन्तमें वर्मा और वैश्य अपने नामके अन्तमें गुप्त रिक्त स्थानमें जोड़ दे।

५-**मुखे पर्युषिते नित्यं भवत्यप्रयतो नरः।**
दन्तधावनमुद्दिष्टं जिह्वोल्लेखनिका तथा॥
अतो मुखविशुद्ध्यर्थं गृह्णीयाद् दन्तधावनम्।
आचान्तोऽप्यशुचिर्नित्यमकृत्वा दन्तधावनम्॥
(आ० सूत्रा०)

६-(क) **ईशानाभिमुखः कुर्याद् वाग्यतो दन्तधावनम्।** (जातुकर्ण्य)
(ख) **प्राङ्मुखस्य धृतिः सौख्यं शरीरारोग्यमेव च।** (गर्ग)

७-**द्वादशाङ्गुलकं विप्रे काष्ठमाहुर्मनीषिणः।**
क्षत्रविट्शूद्रजातीनां नवषट्चतुरङ्गुलम्॥
(आचारभूषणमें विष्णु)

समान मोटी हो। एक सिरेको कूँचकर कूँची बना ले[१]। दातौन करते समय हाथ घुटनोंके भीतर रहे[२]। दातौनको धोकर[३] निम्नलिखित मन्त्रसे अभिमन्त्रित करे—

आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च।
ब्रह्म प्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते॥

(कात्यायनस्मृ० १०।४, गर्गसंहिता, विज्ञानखण्ड, अ० ७)

इसके बाद मौन होकर[४] मसूढ़े[५] को बिना चोट पहुँचाये दातौन करे। दाँतोंकी अच्छी तरह सफाई हो जानेपर दातौनको तोड़कर[६] और धोकर नैर्ऋत्य-कोणमें[७] अच्छी जगहमें फेंक दे। जीभीसे जीभ साफकर बारह कुल्ले करे।

(क) ग्राह्य दातौन—चिड़चिड़ा, गूलर, आम, नीम, बेल, कुरैया, करंज, खैर आदिकी दातौनें अच्छी मानी जाती हैं[८]। दूधवाले तथा काँटेवाले वृक्षोंकी दातौनें भी शास्त्रोंमें विहित हैं[९]।

१-(क) **कनिष्ठिकाङ्गुलिवत् स्थूलं पूर्वार्धकृतकूर्चकम्।** (विष्णु०)

(ख) जिनके दाँत बहुत छोटे हों वे पतली दातौनसे, जिनके दाँत मध्यम श्रेणीके हों वे कुछ मोटी दातौनसे और जिनके दाँत बड़े-बड़े हों वे मोटी दातौन करें—

सुसूक्ष्मं सूक्ष्मदन्तस्य समदन्तस्य मध्यमम्।
स्थूलं विषमदन्तस्य त्रिविधं दन्तधावनम्॥

(आचारभूषणमें विष्णु)

२-**कृत्वा जान्वन्तरा ततः।**

३-**प्रक्षाल्य भक्षयेत् पूर्वं प्रक्षाल्यैव च संत्यजेत्।** (आचारभूषणमें अंगिरा)

४-५-**वाग्यतो विमृजेद् दन्तान् मांसं नैव तु पीडयेत्॥** (आश्वलायन)

६-**प्रक्षाल्य भंक्त्वा शुचौ देशे त्यक्त्वा तदाचामेत्।** आचाररत्नमें अङ्गिरा (व्यास)

७-**राक्षस्यामुत्सृजेत् काष्ठम्।** (आश्वलायन)

८-**खदिरश्च करञ्जश्च कदम्बश्च वटस्तथा।**
तिन्तिडी वेणुपृष्ठं च आम्रनिम्बौ तथैव च॥
अपामार्गश्च बिल्वश्च अर्कश्चौदुम्बरस्तथा।
बदरीतिन्दुकास्त्वेते प्रशस्ता दन्तधावने॥

(आचारेन्दुमें नारसिंह)

९-**सर्वे कण्टकिनः पुण्याः क्षीरिणश्च विशेषतः॥**

(हारीतस्मृति, ४)

(ख) निषिद्ध दातौन—लसोढ़ा, पलाश, कपास, नील, धव, कुश, काश आदिकी दातौन वर्जित है[1]।

(ग) निषिद्ध काल—प्रतिपदा, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी अमावास्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति, जन्मदिन, विवाह, उपवास, व्रत, रविवार और श्राद्धके अवसरपर दातौन करना निषिद्ध है। अतः इन दिनोंमें दातौन न करे[2]। रजस्वला तथा प्रसूतकी अवस्थामें भी दातौनका निषेध है[3]।

(घ) निषिद्ध कालमें दाँतोंके धोनेकी विधि—जिन-जिन अवसरोंपर दातौनका निषेध है, उन-उन अवसरोंपर विहित वृक्षोंके पत्रोंसे या सुगन्धित दन्तमंजनोंसे दाँत स्वच्छ कर लेना चाहिये[4]। मंजन अनामिका एवं अँगूठेसे लगाना उत्तम है। अन्य दो अंगुलियोंसे भी मंजन किया जा

१-कुशं कासं पलाशं च शिंशपं यस्तु भक्षयेत्।
तावद् भवति चाण्डालो यावद् गङ्गां न पश्यति ॥

(आचारमयूख, पृ० २९ में, गर्ग)

न भक्षयेच्च पालाशं कार्पासं शाकमेव वा।
दक्षिणाभिमुखो नाद्यान्नीलं धवकदम्बकम् ॥

(उशना)

२-प्रतिपद्दर्शषष्ठीषु चतुर्दश्यष्टमीषु च।
नवम्यां भानुवारे च दन्तकाष्ठं विवर्जयेत् ॥

(आचारभूषण, पृ० ३५ में विष्णु)

चतुर्दश्यष्टमी दर्शः पूर्णिमा संक्रमो रवेः।
एषु स्त्रीतैलमांसानि दन्तकाष्ठं च वर्जयेत् ॥
श्राद्धे जन्मदिने चैव विवाहेऽजीर्णदोषतः।
व्रते चैवोपवासे च वर्जयेद् दन्तधावनम् ॥

(आचारभूषणमें यम)

३-रजस्वला सूतिका च वर्जयेद् दन्तधावनम्।
४-तत्तत्पत्रैः सुगन्धैर्वा कारयेद् दन्तधावनम् ॥

(स्कन्दपुराण, प्रभासखण्ड)

इस वचनमें जो **'सुगन्धैः'** पद आया है, उसके आचारभूषणकारने दो अर्थ दिये हैं—(क) सुगन्धित पत्रोंसे दातौन करे, जैसे कि दौनेकी पत्ती आदिसे—**'पत्रपरत्वे दामनकादिपत्राणि'**। (ख) दूसरा अर्थ है 'सुगन्ध-चूर्ण'। इस अर्थसे वैद्यक शास्त्रमें प्रसिद्ध 'मंजन' गृहीत होता है—**'वैद्यशास्त्रप्रसिद्धमेव तत्...।'**

सकता है, किंतु तर्जनीसे करना सर्वथा निषिद्ध है[1]। निषिद्ध दातौनसे दाँत धोनेका निषेध है, जीभीका निषेध नहीं है। इसलिये निषिद्ध अवसरोंपर भी जीभी तो करनी ही चाहिये[2]। दातौनके बाद यदि किसी तरह शिखा खुल गयी हो तो गायत्री-मन्त्रसे बाँध लेनी चाहिये[3]।

(ङ) मंजन—उपर्युक्त वचनोंसे स्पष्ट है कि शास्त्रने कुछ अवसरों या तिथियोंपर दातौनका निषेध किया है, पर उनमें मंजनका विधान है। दाँतसे स्वास्थ्यका गहरा सम्बन्ध है, इसीलिये शास्त्रोंके ये विधि-निषेध हैं[4]।

क्षौर-कर्म

शास्त्रने क्षौर-कर्म अथवा बाल कटवानेका निम्नलिखित क्रम निर्दिष्ट

१-**अनामाङ्गुष्ठावुत्तमौ। मध्यमायाः कनिष्ठिकायाश्च विहितप्रतिषिद्धत्वाद् विकल्पः। तर्जनी तु सर्वमते निन्द्या।** (आचारेन्दु, पृ० ३४)

२-**जिह्वोल्लेखः सदैव तु।** (आचारेन्दु, पृ० ३४ में व्यास)

३-**स्मृत्वोङ्कारं च गायत्रीं निबध्नीयाच्छिखां ततः।** (आचारेन्दुमें शौनक)

४-यहाँ दाँतोंकी शुद्धि और स्थायित्वके लिये आयुर्वेदिक पद्धतिसे अनुभूत मंजनका एक नुस्खा लिखा जा रहा है। इससे दाँत आजीवन स्वच्छ एवं स्वस्थ रहते हैं। पायरिया-जैसा असाध्य रोग भी चला जाता है। इसे प्रातःकाल और रातमें सोते समय दो बार किया जाय।

सामग्री-पीपरमिंट ५ ग्राम, भूना तूतिया १० ग्राम, काली मिर्च और अखरोट वृक्षकी छाल २५-२५ ग्राम, पठानी लोध, सोंठ, तुंबल, अकर्करा सब १००-१०० ग्राम, देशी कपूर २०० ग्राम, संगजराहट चूर्ण ६०० ग्राम, लौंगका तेल ५० मि॰ लि॰ और सेकरिन टेबलेट २००।

बनानेकी विधि—तूतियाको पीसकर पुरवेमें रखकर मंद आँचमें भूने। लकड़ीसे चलाता रहे। २० मिनटमें तूतियेका रंग सफेद हो जाता है। तूतिया, पीपरमिंट, कपूर, लौंगका तेल और सेकरिनको अलग रखें, बची सामग्रीको कपड़छान चूर्ण कर अलग रख लें। अब खरलमें सेकरिनकी टिकियों और तूतियाको मिलाकर घोंटें। फिर खरलमेंसे इन्हें निकालकर अलग रख लें। अब खरलमें पीपरमेंट और कपूर डाल दें। थोड़ा-थोड़ा लौंगका तेल डालकर घोंटते जायँ। जब कपूर मिल जाय, तब सभी सामान इसमें डालकर हाथसे खूब मसल कर शीशियोंमें भरकर मजबूत कार्क लगा लें।

सेवन-विधि—घायल दाँत या मसूड़ेमें मंजन करनेसे ५ मिनट पहले ही मंजनको लगा लें। बादमें मंजन करें।

किया है। पहले दाढ़ी दाहिनी ओरसे पूरी बनवा ले, फिर मूँछको तब बगलके बाल तथा सिरके केशको और इसके बाद आवश्यकतानुसार अन्य रोमोंको कटवाना चाहिये। अन्तमें नखोंके कटवानेका विधान है[१]।

एकादशी, चतुर्दशी, अमावास्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति, व्यतिपात, विष्टि (भद्रा), व्रतके दिन, श्राद्धके दिन एवं मंगल, शनिवारको क्षौरकर्म वर्जित है।

क्षौरकर्ममें गर्गादि मुनियोंका कथन है कि रविवारको क्षौर करानेसे एक मासकी, शनिवारको सात मासकी और भौमवारको आठ मासकी आयुको, उस-उस दिनके अभिमानी देवता क्षीण कर देते हैं। इसी प्रकार बुधवारको क्षौर करानेसे पाँच मासकी, सोमवारको सात मासकी, गुरुवारको दस मासकी और शुक्रवारको ग्यारह मासकी आयुकी, उस-उस दिनके अभिमानी देवता वृद्धि करते हैं। पुत्रेच्छु गृहस्थों एवं एक पुत्रवालेको सोमवारको तथा विद्या एवं लक्ष्मीके इच्छुकको गुरुवारको क्षौर नहीं कराना चाहिये[२]।

तैलाभ्यङ्ग-विधि—षष्ठी, एकादशी, द्वादशी, अमावास्या, पूर्णिमा, व्रत एवं श्राद्धके दिन तथा रवि, मंगल, गुरु और शुक्रवारको तेल न लगायें। किंतु सुगन्धित पुष्पोंसे वासित, आयुर्वेदकी पद्धतिसे सिद्ध षड्बिन्दु और

१-(क) श्मश्रूण्यग्रे वापयतेऽथोपकक्षावथ केशानथ लोमान्यथ नखानि।

(गृह्यसूत्र)

(ख) अथैतन्मनुर्वप्त्रे मिथुनमपश्यत्। स श्मश्रूण्यग्रेऽवपत्। अथोपकक्षौ अथ केशान्।

(तैत्तिरीय ब्राह्मण)

२-भानुर्मासं क्षपयति तथा सप्त मार्तण्डसूनु-
भौमश्चाष्टौ वितरति शुभान् बोधनः पञ्चमासान्।
सप्तैवेन्दुर्दश सुरगुरुः शुक्र एकादशेति
प्राहुर्गर्गप्रभृतिमुनयः क्षौरकार्येषु नूनम्॥

(वाराहीसंहिता)

****

महाभृङ्गराज आदि सुगन्धित तेलको वर्जित कालोंमें भी लगाया जा सकता है। इसी प्रकार सरसोंके तेलका निषेध नहीं है। मुख्यरूपसे तिलके तैलका ही निषेध है[1]।

स्नान

स्नानकी आवश्यकता—प्रातःकाल स्नान करनेके पश्चात् मनुष्य शुद्ध होकर जप, पूजा-पाठ आदि समस्त कर्मोंके योग्य बनता है, अतएव प्रातःस्नानकी प्रशंसा की जाती है।

नौ छिद्रोंवाले अत्यन्त मलिन शरीरसे दिन-रात मल निकलता रहता है, अतः प्रातःकाल स्नान करनेसे शरीरकी शुद्धि होती है।

प्रातःस्नानं प्रशंसन्ति दृष्टादृष्टकरं हि तत्।
सर्वमर्हति शुद्धात्मा प्रातःस्नायी जपादिकम्॥

(दक्षस्मृ० २।९)

अत्यन्तमलिनः कायो नवच्छिद्रसमन्वितः।
स्रवत्येष दिवारात्रौ प्रातःस्नानं विशोधनम्॥

(दक्षस्मृति अ० २।७)

शुद्ध तीर्थमें प्रातःकाल स्नान करना चाहिये, क्योंकि यह मलपूर्ण शरीर शुद्ध तीर्थमें स्नान करनेसे शुद्ध होता है। प्रातःकाल स्नान करनेवालेके

१-तैलाभ्यङ्गे रवौ तापः सोमे शोभा कुजे मृतिः।
बुधे धनं गुरौ हानिः शुक्रे दुःखं शनौ सुखम्॥
रवौ पुष्पं गुरौ दूर्वा भौमवारे तु मृत्तिका।
गोमयं शुक्रवारे च तैलाभ्यङ्गे न दोषभाक्॥
सार्षपं गन्धतैलं च यत्तैलं पुष्पवासितम्।
अन्यद्रव्ययुतं तैलं न दुष्यति कदाचन॥ (निर्णयसिन्धु)

रविवारको तेल लगानेसे ताप, सोमवारको शोभा, भौमवारको मृत्यु अर्थात् आयुक्षीणता, बुधवारको धनप्राप्ति, गुरुवारको हानि, शुक्रवारको दुःख और शनिवारको सुख होता है। यदि निषिद्ध वारोंमें तेल लगाना हो तो रविवारको पुष्प, गुरुवारको दूर्वा, भौमवारको मिट्टी और शुक्रवारको गोबर तेलमें डालकर लगानेसे दोष नहीं होता। गन्धयुक्त पुष्पोंसे सुवासित, अन्य पदार्थोंसे युक्त तथा सरसोंका तेल दूषित नहीं है।

पास दुष्ट (भूत-प्रेत आदि) नहीं आते। इस प्रकार दृष्टफल—शरीरकी स्वच्छता, अदृष्टफल—पापनाश तथा पुण्यकी प्राप्ति—ये दोनों प्रकारके फल मिलते हैं, अतः प्रातःस्नान करना चाहिये।

प्रातःस्नानं चरित्वाथ शुद्धे तीर्थे विशेषतः।
प्रातःस्नानाद्यतः शुद्ध्येत् कायोऽयं मलिनः सदा॥
नोपसर्पन्ति वै दुष्टाः प्रातःस्नायिजनं क्वचित्।
दृष्टादृष्टफलं तस्मात् प्रातःस्नानं समाचरेत्॥

(दक्ष)

रूप, तेज, बल, पवित्रता, आयु, आरोग्य, निर्लोभता, दुःस्वप्नका नाश, तप और मेधा—ये दस गुण स्नान करनेवालोंको प्राप्त होते हैं—

गुणा दश स्नानपरस्य साधो ! रूपं च तेजश्च बलं च शौचम्।
आयुष्यमारोग्यमलोलुपत्वं दुःस्वप्ननाशश्च तपश्च मेधाः॥

(दक्षस्मृति अ० २। १३)

वेद-स्मृतिमें कहे गये समस्त कार्य स्नानमूलक हैं, अतएव लक्ष्मी, पुष्टि एवं आरोग्यकी वृद्धि चाहनेवाले मनुष्यको स्नान सदैव करना चाहिये।

स्नानमूलाः क्रियाः सर्वाः श्रुतिस्मृत्युदिता नृणाम्।
तस्मात् स्नानं निषेवेत श्रीपुष्ट्यारोग्यवर्धनम्॥

स्नानके भेद—मन्त्रस्नान, भौमस्नान, अग्निस्नान, वायव्यस्नान, दिव्यस्नान, वारुणस्नान और मानसिक स्नान—ये सात प्रकारके स्नान हैं। **'आपो हि ष्ठा०'** इत्यादि मन्त्रोंसे मार्जन करना मन्त्रस्नान, समस्त शरीरमें मिट्टी लगाना भौमस्नान, भस्म लगाना अग्निस्नान, गायके खुरकी धूलि लगाना वायव्यस्नान, सूर्यकिरणमें वर्षाके जलसे स्नान करना दिव्यस्नान, जलमें डुबकी लगाकर स्नान करना वारुणस्नान, आत्मचिन्तन करना मानसिक स्नान कहा गया है।

मान्त्रं भौमं तथाग्नेयं वायव्यं दिव्यमेव च।
वारुणं मानसं चैव सप्त स्नानान्यनुक्रमात्॥
आपो हि ष्ठादिभिर्मान्त्रं मृदालम्भस्तु पार्थिवम्।
आग्नेयं भस्मना स्नानं वायव्यं गोरजः स्मृतम्॥
यत्तु सातपवर्षेण स्नानं तद् दिव्यमुच्यते।
अवगाहो वारुणं स्यात् मानसं ह्यात्मचिन्तनम्॥

(आचारमयूख, पृ० ४७-४८, प्रयोगपारिजात)

अशक्तोंके लिये स्नान—स्नानमें असमर्थ होनेपर सिरके नीचेसे ही स्नान करना चाहिये अथवा गीले वस्त्रसे शरीरको पोंछ लेना भी एक प्रकारका स्नान कहा गया है—

अशिरस्कं भवेत् स्नानं स्नानाशक्तौ तु कर्मिणाम्।
आर्द्रेण वाससा वापि मार्जनं दैहिकं विदुः॥

स्नानकी विधि—उषाकी लालीसे पहले ही स्नान करना उत्तम माना गया है[1]। इससे प्राजापत्यका फल प्राप्त होता है[2]। तेल लगाकर तथा देहको मल-मलकर नदीमें नहाना मना है। अतः नदीसे बाहर तटपर ही देह-हाथ मलकर नहा ले, तब नदीमें गोता लगाये[3]। शास्त्रोंने इसे 'मलापकर्षण' स्नान कहा है। यह अमन्त्रक होता है। यह स्नान स्वास्थ्य और शुचिता दोनोंके लिये आवश्यक है। देहमें मल रह जानेसे शुचितामें कमी आ जाती है और रोमछिद्रोंके न खुलनेसे स्वास्थ्यमें भी अवरोध हो जाता है। इसलिये मोटे कपड़ेसे प्रत्येक अङ्गको खूब रगड़-रगड़कर तटपर नहा लेना चाहिये। निवीती होकर बेसन आदिसे यज्ञोपवीत भी स्वच्छ कर ले।

१-उषःकालस्तु लोहितादिगुणलक्षितकालात् प्राक्कालः। (कल्पतरु)

२-उषस्युषसि यत् स्नानं नित्यमेवारुणोदये।
प्राजापत्येन तत्तुल्यं महापातकनाशनम्॥
(दक्षस्मृ० २।१०)

३-मलं प्रक्षालयेत्तीरे ततः स्नानं समाचरेत्॥ (मेधातिथि)

इसके बाद शिखा बाँधकर दोनों हाथोंमें पवित्रियाँ पहनकर आचमन आदिसे शुद्ध होकर दाहिने हाथमें जल लेकर पृष्ठ पाँचके अनुसार संकल्प करे—**अद्य....गोत्रोत्पन्नः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम्, श्रुतिस्मृति-पुराणोक्तफलप्राप्तिपूर्वकं श्रीभगवत्प्रीत्यर्थं च प्रातः (मध्याह्ने, सायं) स्नानं करिष्ये।'**

संकल्पके पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर सभी अङ्गोंमें मिट्टी लगाये—

अश्वक्रान्ते ! रथक्रान्ते ! विष्णुकान्ते वसुन्धरे !
मृत्तिके ! हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम् ॥

(दक्षस्मृ० २।४६, पद्मपु०, सृ० २०।१५५)

इसके पश्चात् गङ्गाजीकी उन उक्तियोंको बोले, जिनमें उन्होंने कह रखा है कि स्नानके समय मेरा जहाँ-कहीं कोई स्मरण करेगा, वहाँके जलमें मैं आ जाऊँगी—

नन्दिनी नलिनी सीता मालती च महापगा।
विष्णुपादाब्जसम्भूता गङ्गा त्रिपथगामिनी ॥
भागीरथी भोगवती जाह्नवी त्रिदशेश्वरी।
द्वादशैतानि नामानि यत्र यत्र जलाशये ॥
स्नानोद्यतः स्मरेन्नित्यं तत्र तत्र वसाम्यहम्[१] ॥

(आचारप्रकाश, आचारेन्दु, पृ० ४५)

जलकी सापेक्ष श्रेष्ठता—कुएँसे निकाले हुए जलसे झरनेका जल, झरनेके जलसे सरोवरका जल, सरोवरके जलसे नदीका जल, नदीके जलसे तीर्थका जल और तीर्थके जलसे गङ्गाजीका जल अधिक श्रेष्ठ माना गया है—

१-साधारण कूप, बावली आदिके जलमें गङ्गाजीका यह आवाहन तो आवश्यक है ही, अन्य पवित्र नदियोंके भी जलमें यह आवश्यक माना गया है। स्कन्दपुराणका वचन है—

स्नानकालेऽन्यतीर्थेषु जप्यते जाह्नवी जनैः।
बिना विष्णुपदीं कान्यत् समर्था ह्यघशोधने ॥

निपानादुद्धृतं पुण्यं ततः प्रस्त्रवणोदकम्।
ततोऽपि सारसं पुण्यं ततो नादेयमुच्यते॥
तीर्थतोयं ततः पुण्यं गङ्गातोयं ततोऽधिकम्॥

(अग्निपुराण)

'जहाँ धोबीका शिलापट रखा हो और कपड़ा धोते समय जहाँतक छींटे पड़ते हों, वहाँतकका जलस्थान अपवित्र माना जाता है'—

वासांसि धावतो यत्र पतन्ति जलबिन्दवः।
तदपुण्यं जलस्थानं रजकस्य शिलाङ्कितम्॥

(बृ० पा० स्मृ०)

इसके पश्चात् नाभिपर्यन्त जलमें जाकर, जलकी ऊपरी सतह हटाकर कान और नाक बंदकर[1] प्रवाहकी ओर या सूर्यकी ओर मुख करके स्नान करे। तीन, पाँच, सात या बारह डुबकियाँ लगाये[2]। डुबकी लगानेके पहले शिखा खोल ले। गङ्गाके जलमें वस्त्र नहीं निचोड़ना चाहिये। जलमें मल-मूत्र त्यागना और थूकना अनुचित है। शौच-कालका वस्त्र पहनकर तीर्थोंमें स्नान करना निषिद्ध है।

स्नानाङ्ग-तर्पण

गङ्गादि तीर्थोंमें स्नानके पश्चात् स्नानाङ्ग-तर्पण करे। संध्याके पहले इसका करना आवश्यक माना गया है[3]। यही कारण है कि अशौचमें भी इसका निषेध नहीं होता तथा जीवित-पितृकोंके लिये भी यह विहित है[4]।

१-निरुध्य कर्णौ नासां च त्रिःकृत्वोन्मज्जनं ततः। (बृ० पराशर) आचाररत्न पृ० ३०

२-नाभिमात्रजले तिष्ठन् सप्त द्वादश पञ्च वा।
त्रिवारं वापि चाप्लुत्य स्नानमेवं विधीयते॥ (विश्वामित्र, आचाररत्न पृ० ३०)

३-(क) स्नानानन्तरं तावत् तर्पयेत् पितृदेवताः।
(ख) स्नानाङ्गतर्पणं विद्वान् कदाचिन्नैव हापयेत्। (ब्रह्मवैवर्त, हेमाद्रि)

४-आशौचेऽपि तद्भवति।....अत्र देवपितृणामेवेज्यत्वात् साङ्गस्य चानुष्ठेयत्वा-जीवितपितृकस्याप्यधिकारः॥ (आचाररत्न)

***

जीवित-पितृकोंके लिये केवल इसका अन्तिम अंश त्याज्य होता है, जिसका आगे कोष्ठकमें निर्देश कर दिया गया है। इसमें तिलक जलसे ही किया जाता है। बायें हाथमें जल लेकर दाहिने अँगूठेसे ऊर्ध्वपुण्ड्र कर ले। तदनन्तर तीन अंगुलियोंसे त्रिपुण्ड्र करे।

जलाञ्जलि देनेकी रीति यह है कि दोनों हाथोंको सटाकर अञ्जलि बना ले। इसमें जल भरकर गौके सींग-जितना ऊँचा उठाकर जलमें ही अञ्जलि छोड़ दे[1]। इसमें देव, ऋषि, पितर एवं अपने पिता, पितामह आदिका तर्पण होता है[2]।

(क) देव-तर्पण—(इसे सपितृक भी करे) सव्य होकर, पूरबकी ओर मुँह कर अंगोछेको बायें कंधेपर रखकर देवतीर्थसे मन्त्र पढ़-पढ़कर एक-एक जलाञ्जलि दे—

ॐ ब्रह्मादयो देवास्तृप्यन्ताम् (१)। ॐ भूर्देवास्तृप्यन्ताम् (१)। ॐ भुवर्देवास्तृप्यन्ताम् (१)। ॐ स्वर्देवास्तृप्यन्ताम् (१)। ॐ भूर्भुवः स्वर्देवास्तृप्यन्ताम् (१)।

(ख) ऋषि-तर्पण—(इसे सपितृक भी करे)—उत्तरकी ओर मुँह कर निवीती होकर (जनेऊको मालाकी तरह गलेमें पहनकर) और गमछेको भी मालाकी तरह लटकाकर प्रजापतितीर्थसे दो-दो जलाञ्जलि जलमें छोड़े।

ॐ सनकादयो मनुष्यास्तृप्यन्ताम् (२)। ॐ भूर्ऋषयस्तृप्यन्ताम् (२)। ॐ भुवर्ऋषयस्तृप्यन्ताम् (२)। ॐ स्वर्ऋषयस्तृप्यन्ताम् (२)। ॐ भूर्भुवःस्वर्ऋषयस्तृप्यन्ताम् (२)।

(ग) पितृ-तर्पण—(सपितृक इसका कुछ अंश करे)—दक्षिणकी ओर मुँह कर अपसव्य होकर (जनेऊको दाहिने कंधे और बायें हाथके नीचे करके) गमछेको भी दाहिने कंधेपर रखकर पितृतीर्थसे तीन-तीन जलाञ्जलि दे। (सपितृक जनेऊको केवल पहुँचेतक

१-द्वौ हस्तौ युग्मतः कृत्वा पूरयेदुदकाञ्जलिम्।
गोशृङ्गमात्रमुद्धृत्य जलमध्ये जलं क्षिपेत्॥
(माधवीयमें यमस्मृ०, आचारा०, पृ० ३१)

२-देवानृषीन् पितृगणान् स्वपितॄंश्चापि तर्पयेत्॥ (ब्रह्मवैवर्त०)

ही रखे, बायें हाथके नीचे न करे)—'**प्राचीनावीती त्वाप्रकोष्ठात्**' (आचाररत्न)।

ॐ कव्यवाडनलादयः पितरस्तृप्यन्ताम् (३)। ॐ चतुर्दशयमास्तृप्यन्ताम् (३)। ॐ भूः पितरस्तृप्यन्ताम् (३)। ॐ भुवः पितरस्तृप्यन्ताम् (३)। ॐ स्वः पितरस्तृप्यन्ताम् (३)। ॐ भूर्भुवः स्वः पितरस्तृप्यन्ताम् (३)।

(इसके आगेका कृत्य जीवित-पितृक न करे)

ॐ अमुक गोत्रा अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहास्तृप्यन्ताम् (३)।

ॐ अमुक गोत्रा अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यस्तृप्यन्ताम् (३)।

ॐ अमुक गोत्रा अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाःसपत्नीकास्तृप्यन्ताम् (३)। ॐ ब्रह्मादिस्तम्बपर्यन्तं जगत्तृप्यताम् (३)[1]।

इसके बाद तटके पास आकर जलमें स्थित होकर[2] भूमिपर एक जलाञ्जलि दे, जिसका मन्त्र यह है—

अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम।
भूमौ दत्तेन तोयेन तृप्ता यान्तु परां गतिम्॥

जलसे बाहर आकर निम्नलिखित मन्त्रसे दाहिनी ओर शिखाको पितृतीर्थ (अँगूठे और तर्जनीके मध्यभाग) से निचोड़े—

लतागुल्मेषु वृक्षेषु पितरो ये व्यवस्थिताः।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मयोत्सृष्टैः शिखोदकैः॥

१-**आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं जगत्तृप्यत्वितिक्रमात्।**
जलाञ्जलित्रयं दद्यादेतत् संक्षेपतर्पणम्॥ (आचारदर्पण)

२-**इदं जलस्थेनैव कार्यम्।** (आचाररत्न)

सुमन्तुने कहा है कि गीले वस्त्रसे भूमिपर आकर जो जलाञ्जलि देता है, उसकी वह जलाञ्जलि मृत व्यक्तिको नहीं मिलती। फिर विवश होकर बेचारेको केवल वस्त्रके जलका ही सहारा रह जाता है—

जलार्द्रवासाः स्थलगो यः प्रदद्याज्जलाञ्जलिम्।
वस्त्रनिश्च्योतनं प्रेता अपवार्य पिबन्ति ते॥

(अपवार्य—अञ्जलिं त्यक्त्वेति हेमाद्रिः)

तर्पणके बादका कृत्य—अब उपवीती होकर (जनेऊको बायें कंधेपर और दाहिने हाथके नीचे कर) आचमन करे और बाहर एक अञ्जलि यक्ष्माको दे[१]।

यन्मया दूषितं तोयं शारीरं मलसम्भवम् ।
तस्य पापस्य शुद्ध्यर्थं यक्ष्माणं तर्पयाम्यहम् ॥

(विश्वामित्रस्मृ॰ १।८४)

जीवितपितृक वस्त्र निचोड़कर संध्या करने बैठे[२], किंतु जिन्हें तर्पण करना है, वे अभी वस्त्रको न निचोड़ें, तर्पणके बाद निचोड़ें[३]।

स्नानके बाद यदि देह न पोंछी जाय, जलको यों ही सूखने दिया जाय तो अधिक अच्छा है, क्योंकि सिरसे टपकनेवाले जलको देवता, मुखभागसे टपकनेवाले जलको पितर, बीचवाले भागसे टपकनेवाले जलको गन्धर्व और नीचेसे गिरनेवाले जलको सभी जन्तु पीते हैं[४]। यदि

१-स्नानाङ्गतर्पणं कृत्वा यक्ष्मणे जलमाहरेत् ।
अन्यथा कुरुते यस्तु स्नानं तस्याफलं भवेत् ॥

(शौनक)

२-निष्पीड्य स्नानवस्त्रं तु पश्चात् संध्यां समाचरेत् ।
अन्यथा कुरुते यस्तु स्नानं तस्याफलं भवेत् ॥

(वृद्धमनु आचारमयूख, पृ॰ ३९)

३-स्नानार्थमुपगच्छन्तं देवाः पितृगणैः सह ।
वायुभूतास्तु गच्छन्ति तृषार्ताः सलिलार्थिनः ॥
निराशाः पितरो यान्ति वस्त्रनिष्पीडने कृते ।
तस्मान्न पीडयेद् वस्त्रमकृत्वा पितृतर्पणम् ॥

(पाराशर)

४-पिबन्ति शिरसो देवाः पिबन्ति पितरो मुखात् ।
मध्यतः सर्वगन्धर्वा अधस्तात् सर्वजन्तवः ॥
तस्मात् स्नातो न निर्मृज्यात् स्नानशाट्या न पाणिना ।
तिस्रः कोट्योऽर्धकोटी च यावन्त्यङ्गरुहाणि वै ।
वसन्ति सर्वतीर्थानि तस्मान्न परिमार्जयेत् ॥

(गोभिल)

शक्ति न हो तो गीले अथवा धोये गमछेसे पोंछकर सूखा वस्त्र पहने[1]। गङ्गादि तीर्थोंमें स्नान करनेपर शरीर न पोंछनेका विशेष ध्यान रखना चाहिये। अन्य स्थलोंपर कुछ क्षण रुककर गमछेसे शरीर पोंछ सकते हैं। स्नानके बाद गीले वस्त्रसे मल-मूत्र न करे[2]।

दूसरेके लिये स्नान—यदि कोई उदार व्यक्ति माता, पिता, गुरु, भाई, मित्र आदिके लिये स्नान करना चाहे तो शास्त्रोंमें इसकी भी व्यवस्था बतलायी गयी है। जिनके लिये स्नान किया जाता है, स्नानका आठवाँ भाग उसे मिलता है[3]। जीवित व्यक्तियोंके लिये स्नानकी विधि भिन्न है और मृत व्यक्तियोंके लिये भिन्न। यहाँ दोनों विधियाँ लिखी जाती हैं।

(क) जीवित व्यक्तिके लिये—जीवित व्यक्तिके नामका इस प्रकार **(अद्य..... अमुक शर्मणः, (वर्मणः, गुप्तस्य, दासस्य) कृते.....स्नानं करिष्यामि)** संकल्प कर स्नान करे।

(ख) मृत व्यक्तिके लिये—मृत व्यक्तिके लिये कुशमें गाँठ देकर, उस कुशमें उसका ध्यान कर नीचे लिखे मन्त्रको पढ़कर कुशको नहला दे—

कुशोऽसि कुशपुत्रोऽसि ब्रह्मणा निर्मितः स्वयम्।
त्वयि स्नाते स च स्नातो यस्येदं ग्रन्थिबन्धनम्॥

इसके बाद ग्रन्थिका विसर्जन कर दे।

१-अङ्गानि शक्तो वस्त्रेण पाणिना न च मार्जयेत्।
धौताम्बरेण वा प्रोञ्छ्य बिभृयाच्छुष्कवाससी॥
(देवल)

२-स्नानं कृत्वार्द्रवस्त्रस्तु विण्मूत्रं कुरुते यदि।
प्राणायामत्रयं कृत्वा पुनः स्नानेन शुद्ध्यति॥
(जाबालि)

३-मातरं पितरं वापि भ्रातरं सुहृदं गुरुम्।
यमुद्दिश्य निमज्जेत अष्टमांशं लभेत सः॥
(अत्रिस्मृ० ५१)

वस्त्रधारण-विधि

गीले वस्त्रको नदीके तटपर नीचेसे उतारना चाहिये, किंतु घरपर ऊपरसे[१]। उतारे वस्त्रको चौगुना (चौपत) कर निचोड़े। इसे बायीं ओर रखकर जलसे बाहर दो बार आचमन करे[२]। निचोड़े हुए वस्त्रको कंधेपर रखना मना है[३]।

पूर्वदिशासे प्रारम्भ कर पश्चिमकी ओर या उत्तरसे दक्षिणकी ओर वस्त्र फैलाना चाहिये। इसके विपरीत फैलानेसे वस्त्र अशुद्ध हो जाता है और उसका फिरसे धोना आवश्यक हो जाता है[४]। जलमें सूखे वस्त्रसे और स्थलमें गीले वस्त्रसे पूजा निषिद्ध है[५]। वस्त्र जलमें न निचोड़े[६]।

धोती इस प्रकार पहननी चाहिये कि इसमें तीन कच्छ (लाँगें) लगाये जा सकें। एक लाँग पीछेकी ओर लगायी जाती है, दूसरी नाभिके पास और

१-ऊर्ध्वमुत्तारयेद् वस्त्रं गृहे नद्यां त्वधस्त्यजेत्। (बोधायन)

२-वस्त्रं चतुर्गुणीकृत्य निष्पीड्य सदशं तथा।
वामप्रकोष्ठे निक्षिप्य स्थलस्थो द्विराचमेत्॥
(जाबालि)

३-निष्पीड्य धौतवस्त्रं च यदि स्कन्धे विनिक्षिपेत्।
तदासुरं भवेत् कर्म पुनः स्नानं विशोधनम्॥
(यम)

४-प्रागग्रमुदगग्रं वा धौतं वस्त्रं प्रसारयेत्।
पश्चिमाग्रं दक्षिणाग्रं पुनः प्रक्षालनाच्छुचि॥
(शातातप)

५-आर्द्रवासा जले कुर्यात् तर्पणाचमनं जपम्।
शुष्कवासाः स्थले कुर्यात् तर्पणाचमनं जपम्॥
(हारीत)

ध्यातव्य—यदि सूखा वस्त्र उपलब्ध न हो सके तो गीले वस्त्रको निचोड़कर सात बार हवामें फटकार लेनेसे उसे सूखेकी तरह व्यवहारमें लाया जा सकता है—**'सप्तवाराहतं चार्द्रं शुष्कवत् प्रतिपादयेत्।'** (स्मृतिरत्नावली)

६-अधौतं....धौतं च पूर्वेद्युर्धौतमेव च।
अप्सु यत्पीडितं वस्त्रं तत् त्याज्यं सर्वथा बुधैः॥
(विधानपारिजात)

****

तीसरी इससे बायीं ओर[१]। उत्तरीय (चादर या गमछा) अवश्य धारण करे[२]।

आसन

कुश, कम्बल, मृगचर्म, व्याघ्रचर्म और रेशमका आसन जपादिके लिये विहित है[३]। बाँस, मिट्टी, पत्थर, तृण, पत्ते, गोबर, पलाश, पीपल और जिसमें लोहेकी कील लगी हो, ऐसे आसनपर न बैठे[४]। पुत्रवान् गृहस्थ तो मृगचर्मपर भी न बैठे[५]।

शिखा-बन्धन

स्नान, दान, जप, होम, संध्या और देवार्चन-कर्ममें बिना शिखा बाँधे कभी कर्म नहीं करना चाहिये, जैसा कि कहा है—

स्नाने दाने जपे होमे संध्यायां देवतार्चने।
शिखाग्रन्थिं विना कर्म न कुर्याद् वै कदाचन॥

शिखा बाँधनेका मन्त्र यह है—

चिद्रूपिणि! महामाये! दिव्यतेजःसमन्विते!
तिष्ठ देवि! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे॥

१-वामकुक्षौ च नाभौ च पृष्ठे चैव यथाक्रमम्।
त्रिकच्छेन समायुक्तो द्विजोऽसौ मुनिरुच्यते॥ (याज्ञवल्क्य)

२-नित्यमुत्तरं वासः धार्यम्। (धर्मप्रश्न)

३-कौशेयं कम्बलं चैव अजिनं पट्टमेव च।
दारुजं तालपत्रं वा आसनं परिकल्पयेत्॥

४-वंशासने तु दारिद्र्यं पाषाणे व्याधिरेव च।
धरण्यां तु भवेद् दुःखं दौर्भाग्यं छिद्रदारुजे।
तृणे धनयशोहानिः पल्लवे चित्तविभ्रमः॥ (व्यास)
गोशकृन्मृन्मयं भिन्नं तथा पालाशपिप्पलम्।
लोहबद्धं सदैवार्कं वर्जयेदासनं बुधः॥ (प्रचेता)

५-मृगचर्म प्रयत्नेन वर्जयेत् पुत्रवान् गृही। (स्मृत्यन्तर)

उपर्युक्त मन्त्रसे अथवा गायत्री-मन्त्रसे शिखा बाँध लेनी चाहिये। शिखा न हो तो उसके स्थानपर कुशा रख लेनेका विधान है।

यज्ञोपवीत-धारण करनेकी आवश्यकता

उपनयनके समय पिता तथा आचार्यद्वारा त्रैवर्णिक वटुओंको जो यज्ञोपवीत धारण कराया जाता है, ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ—तीनों आश्रमोंमें उसे अनिवार्यतः अखण्डरूपमें धारण किये रहनेका शास्त्रोंका आदेश है। किंतु धारण किया हुआ यज्ञोपवीत अवस्था-विशेषमें बदलकर नवीन यज्ञोपवीत धारण करना पड़ता है।

यज्ञोपवीत कब बदलें ?—यदि यज्ञोपवीत कंधेसे सरककर बायें हाथके नीचे आ जाय, गिर जाय[१] कोई धागा[२] टूट जाय, शौच आदिके समय कानपर डालना भूल जाय[३] और अस्पृश्यसे स्पर्श हो जाय तो नया यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये[४]। गृहस्थ और वानप्रस्थ-आश्रमवालेको दो यज्ञोपवीत पहनना आवश्यक है[५]। ब्रह्मचारी एक जनेऊ पहन सकता है[६]। चादर और गमछेके लिये एक यज्ञोपवीत और धारण करे। चार महीने बीतनेपर नया

१-वामहस्ते व्यतीते तु तत् त्यक्त्वा धारयेत् नवम्।

२-पतितं त्रुटितं वापि ब्रह्मसूत्रं यदा भवेत्।
नूतनं धारयेद्विप्रः स्नात्वा संकल्पपूर्वकम्॥

३-मलमूत्रे त्यजेद् विप्रो विस्मृत्यैवोपवीतधृक्।
उपवीतं तदुत्सृज्य दध्यादन्यन्नवं तदा॥
(आचारेन्दु, पृ० २४५)

४-चितिकाष्ठं चितेर्धूमं चण्डालं च रजस्वलाम्।
शवं च सूतिकां स्पृष्ट्वा सचैलो जलमाविशेत्॥
त्यजेत् वस्त्रं च सूत्रं च....॥
(आचारेन्दु, पृ० २४५ में आश्वलायन)

५-यज्ञोपवीते द्वे धार्ये श्रौते स्मार्ते च कर्मणि।
तृतीयमुत्तरीयार्थे वस्त्राभावे तदिष्यते॥
(विश्वामित्र)

६-उपवीतं वटोरेकं द्वे तथेतरयोः स्मृते। (देवल)

यज्ञोपवीत पहन ले[१]। इसी तरह उपाकर्ममें, जननाशौच और मरणाशौचमें, श्राद्धमें, यज्ञ आदिमें, चन्द्रग्रहण एवं सूर्यग्रहणके उपरान्त भी नये यज्ञोपवीतोंका धारण करना अपेक्षित है[२]। यज्ञोपवीत कमरतक रहे[३]।

जैसे पत्थर ही भगवान् नहीं होता, प्रत्युत मन्त्रोंसे भगवान्को उसमें प्रतिष्ठित किया जाता है, वैसे ही यज्ञोपवीत धागामात्र नहीं होता। प्रत्युत निर्माणके समयसे ही यज्ञोपवीतमें संस्कारोंका आधान होने लगता है। बन जानेपर इसकी ग्रन्थियोंमें और नवों तन्तुओंमें ओंकार, अग्नि आदि भिन्न-भिन्न देवताओंके आवाहन आदि कर्म होते हैं[४]। लोग सुविधाके लिये एक वर्षके लिये श्रावणीमें यज्ञोपवीतको अभिमन्त्रित कर रख लेते हैं और आवश्यकता पड़नेपर धारणविधिसे इसे पहन लेते हैं। यदि श्रावणीका यज्ञोपवीत न हो तो निम्नलिखित विधिसे उसे संस्कृत कर ले[५]।

यज्ञोपवीत-संस्कार एवं धारणकी विधि

यज्ञोपवीतमें देवताओंके आवाहनकी विधि—यज्ञोपवीतको पलाश आदिके पत्तेपर रखकर जलसे प्रक्षालित करे, फिर निम्नलिखित एक-एक मन्त्र पढ़कर चावल अथवा एक-एक फूलको यज्ञोपवीतपर छोड़ता जाय—

१-धारणाद् ब्रह्मसूत्रस्य गते मासचतुष्टये।
त्यक्त्वा तान्यपि जीर्णानि नवान्यन्यानि धारयेत्॥
(गोभिल आचारभूषण, पृ० ५५)

२-उपाकर्मणि चोत्सर्गे सूतकद्वितये तथा।
श्राद्धकर्मणि यज्ञादौ शशिसूर्यग्रहेऽपि च॥
नवयज्ञोपवीतानि धृत्वा जीर्णानि च त्यजेत्॥
(ज्योतिषार्णव)

३-आकटेस्तत्प्रमाणं स्यात्।

४-ओंकाराग्नी तथा सर्पान् सोमपितृप्रजापतीन्।
वायुं सूर्यं च विश्वांश्च देवान् नवसु तन्तुषु॥

५-यदि श्रावणी-पूजनमें यज्ञोपवीतको अभिमन्त्रित कर लिया गया हो तो पुनः संस्कारकी आवश्यकता नहीं है, केवल धारण-विधिसे धारण कर लेना चाहिये।

प्रथमतन्तौ ॐ ओंकारमावाहयामि। द्वितीयतन्तौ ॐ अग्निमावाहयामि। तृतीयतन्तौ ॐ सर्पानावाहयामि। चतुर्थतन्तौ ॐ सोममावाहयामि। पञ्चमतन्तौ ॐ पितॄनावाहयामि। षष्ठतन्तौ ॐ प्रजापतिमावाहयामि। सप्तमतन्तौ ॐ अनिलमावाहयामि। अष्टमतन्तौ ॐ सूर्यमावाहयामि। नवमतन्तौ ॐ विश्वान् देवानावाहयामि। प्रथमग्रन्थौ ॐ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि। द्वितीयग्रन्थौ ॐ विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि। तृतीयग्रन्थौ ॐ रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि।

इसके बाद **'प्रणवाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः'**—इस मन्त्रसे **'यथास्थानं न्यसामि'** कहकर उन-उन तन्तुओंमें न्यास कर चन्दन आदिसे पूजा करे। फिर जनेऊको दस बार गायत्रीसे अभिमन्त्रित करे।

यज्ञोपवीत-धारण-विधि—इसके बाद नूतन यज्ञोपवीत-धारणका संकल्पकर निम्नलिखित विनियोग पढ़कर जल गिराये। फिर मन्त्र पढ़कर एक जनेऊ पहने, इसके बाद आचमन करे। फिर दूसरा यज्ञोपवीत धारण करे। एक-एक कर यज्ञोपवीत पहनना चाहिये[१]।

***विनियोग*—ॐ यज्ञोपवीतमिति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः, लिङ्गोक्ता देवताः, त्रिष्टुप् छन्दः, यज्ञोपवीतधारणे विनियोगः।**

निम्नलिखित मन्त्रसे जनेऊ पहने—

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
ॐ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि।

जीर्ण यज्ञोपवीतका त्याग—इसके बाद निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर[२] पुराने जनेऊको कण्ठी-जैसा बनाकर सिरपरसे पीठकी ओर

१-यज्ञोपवीतमेकैकं प्रतिमन्त्रेण धारयेत्।
आचम्य प्रतिसंकल्पं धारयेन्मनुरब्रवीत्॥
(पराशर, आचारभूषण, पृ० ५४)

२-मन्त्रेण धारणं कार्यं मन्त्रेण च विसर्जनम्।
कर्तव्यं च सदा सद्भिर्नात्र कार्या विचारणा॥ (मनु०)

****

निकालकर उसे जलमें प्रवाहित कर दे—

एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात् त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम्॥

इसके बाद यथाशक्ति गायत्री-मन्त्रका जप करे और आगेका वाक्य बोलकर भगवान्को अर्पित कर दे—**ॐ तत्सत् श्रीब्रह्मार्पणमस्तु**। फिर हाथ जोड़कर भगवान्का स्मरण करे।

तिलक-धारण-प्रकार

गङ्गा, मृत्तिका या गोपी-चन्दनसे ऊर्ध्वपुण्ड्र, भस्मसे त्रिपुण्ड्र और श्रीखण्डचन्दनसे दोनों प्रकारका तिलक कर सकते हैं। किंतु उत्सवकी रात्रिमें सर्वाङ्गमें चन्दन लगाना चाहिये[1]।

भस्मादि-तिलक-विधि—तिलकके बिना सत्कर्म सफल नहीं हो पाते[2]। तिलक बैठकर लगाना चाहिये। अपने-अपने आचारके अनुसार मिट्टी, चन्दन और भस्म—इनमेंसे किसीके द्वारा तिलक लगाना चाहिये[3]। किंतु भगवान्पर चढ़ानेसे बचे हुए चन्दनको ही लगाना चाहिये। अपने लिये न घिसे। अँगूठेसे नीचेसे ऊपरकी ओर ऊर्ध्वपुण्ड्र लगाकर तब त्रिपुण्ड्र लगाना चाहिये[4]। दोपहरसे पहले जल मिलाकर भस्म लगाना

१-**ऊर्ध्वपुण्ड्रं मृदा कुर्याद् भस्मना तु त्रिपुण्ड्रकम्।**
उभयं चन्दनेनैव अभ्यङ्गोत्सवरात्रिषु॥

२-**ललाटे तिलकं कृत्वा संध्याकर्म समाचरेत्।**
अकृत्वा भालतिलकं तस्य कर्म निरर्थकम्॥
(प्रयोगपारिजात)

३-(क) **मृत्तिका चन्दनं चैव भस्म तोयं चतुर्थकम्।**
एभिर्द्रव्यैर्यथाकालमूर्ध्वपुण्ड्रं समाचरेत्॥
(ब्रह्माण्डपुराण)

(ख) यहाँ केवल भस्म-धारण-विधि दी गयी है, अन्य लोगोंको भी अपने-अपने सम्प्रदाय एवं आचारके अनुसार तिलक धारण करना चाहिये।

४-**सत्यं शौचं जपो होमस्तीर्थं देवादिपूजनम्।**
तस्य व्यर्थमिदं सर्वं यस्त्रिपुण्ड्रं न धारयेत्॥
(भविष्यपुराण)

चाहिये। दोपहरके बाद जल न मिलावे[१]। मध्याह्नमें चन्दन मिलाकर और शामको सूखा ही भस्म लगाना चाहिये[२]। जलसे भी तिलक लगाया जाता है।

अँगूठेसे ऊर्ध्वपुण्ड्र करनेके बाद मध्यमा और अनामिकासे बायीं ओरसे प्रारम्भ कर दाहिनी ओर भस्म लगावे। इसके बाद अँगूठेसे दाहिनी ओरसे प्रारम्भ कर बायीं ओर लगावे[३]। इस प्रकार तीन रेखाएँ खिंच जाती हैं। तीनों अँगुलियोंके मध्यका स्थान रिक्त रखे[४]। नेत्र रेखाओंकी सीमा हैं, अर्थात् बायें नेत्रसे दाहिने नेत्रतक ही भस्मकी रेखाएँ हों। इससे अधिक लम्बी और छोटी होना भी हानिकर है। इस प्रकार रेखाओंकी लम्बाई छः अंगुल होती है। यह विधि ब्राह्मणोंके लिये है[५]। क्षत्रियोंको चार अंगुल, वैश्योंको दो अंगुल और शूद्रोंको एक ही अंगुल लगाना चाहिये।

(क) भस्मका अभिमन्त्रण—भस्म लगानेसे पहले भस्मको अभिमन्त्रित कर लेना चाहिये। भस्मको बायीं हथेलीपर रखकर जलादि मिलाकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़े—

ॐ अग्निरिति भस्म। ॐ वायुरिति भस्म। ॐ जलमिति भस्म। ॐ स्थलमिति भस्म। ॐ व्योमेति भस्म। ॐ सर्वं ह वा इदं भस्म। ॐ मन एतानि चक्षूंषि भस्मानीति।

१-मध्याह्नात् प्राक् जलाक्तं तु परतो जलवर्जितम्।
तर्जन्यनामिकाङ्गुष्ठैस्त्रिपुण्ड्रं तु समाचरेत्॥
(देवीभागवत)

२-प्रातः ससलिलं भस्म मध्याह्ने गन्धमिश्रितम्।
सायाह्ने निर्जलं भस्म एवं भस्म विलेपयेत्॥

३-मध्यमानामिकाङ्गुष्ठैरनुलोमविलोमतः। (दे०भा० ११। ९। ४३)
अतिस्वल्पमनायुष्यमतिदीर्घं तपःक्षयम्॥
(देवीभागवत)

४-निरन्तरालं यः कुर्यात् त्रिपुण्ड्रं स नराधमः। (पद्मपुराण)

५-नेत्रयुग्मप्रमाणेन भाले दीप्तं त्रिपुण्ड्रकम्। (दे०भा० ११। १५। २३)

(ख) भस्म लगानेका मन्त्र—इसके बाद '**ॐ नमः शिवाय**[१]' मन्त्र बोलते हुए ललाट, ग्रीवा, भुजाओं और हृदयमें भस्म लगाये। अथवा निम्नलिखित भिन्न-भिन्न मन्त्र बोलते हुए भिन्न-भिन्न स्थानोंमें भस्म लगाये—

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे। ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम्। ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषमिति भुजायाम्। ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषमिति हृदये।

पवित्रीधारण

स्नान, संध्योपासन, पूजन, जप, होम, वेदाध्ययन और पितृकर्ममें पवित्री धारण करना आवश्यक है[२]। यह कुशासे बनायी जाती है। सोनेकी अँगूठी भी पवित्रीके काममें आती है। इसकी महत्ता कुशकी पवित्रीसे अधिक है[३]। पवित्री पहनकर आचमन करनेमात्रसे 'कुश' जूठा नहीं होता[४]। अतः आचमनके पश्चात् इसका त्याग भी नहीं होता। हाँ, पवित्री पहनकर यदि भोजन कर लिया जाय, तो वह जूठी हो जाती है और उसका त्याग अपेक्षित है[५]। दो कुशोंसे बनायी हुई पवित्री दाहिने हाथकी अनामिकाके मूल भागमें

१-त्र्यम्बकेन च मन्त्रेण सतारेण शिवेन वा।
पञ्चाक्षरेण मन्त्रेण प्रणवेन युतेन च॥
(क्रियासार)

२-स्नाने होमे जपे दाने स्वाध्याये पितृकर्मणि।
करौ सदर्भौ कुर्वीत तथा संध्याभिवादने॥
(स्मृत्यन्तर)

३-अन्यान्यपि पवित्राणि कुशदूर्वात्मकानि च।
हेमात्मकपवित्रस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्॥
(हेमाद्रि)

सोनेकी अँगूठीकी मात्रा पहननेवालेकी इच्छापर निर्भर है—'**यथेष्टेन सुवर्णेन कारयेदङ्गुलीयकम्।**' (शान्तिकमलाकर)

४-५-सपवित्रेण हस्तेन कुर्यादाचमनक्रियाम्।
नोच्छिष्टं तत् पवित्रं तु भुक्तोच्छिष्टं तु वर्जयेत्॥
(मार्कण्डेय)

तथा तीन कुशोंसे बनायी गयी पवित्री बायीं अनामिकाके मूलमें '**ॐ भूर्भुवः स्वः**[१]' मन्त्र पढ़कर धारण करे। दोनों पवित्रियाँ देवकर्म, ऋषिकर्म तथा पितृकर्ममें उपयोगी हैं[२]।

इन दोनों पवित्रियोंको प्रतिदिन बदलना आवश्यक नहीं है। स्नान, संध्योपासनादिके पश्चात् यदि इन्हें पवित्र स्थानमें रख दिया जाय तो दूसरे कामोंमें बार-बार धारण किया जा सकता है[३]। जूठी हो या श्राद्ध किया जाय, तब इन्हें त्याग देना चाहिये। उस समय इनकी गाँठोंका खोलना आवश्यक हो जाता है[४]। यज्ञोपवीतकी भाँति इन्हें भी शुद्ध स्थानमें छोड़ना चाहिये। जलमें छोड़ दे या शुद्ध भूमिको खोदकर 'ॐ' कहकर मिट्टीसे दबा दे[५]।

पवित्रीके अतिरिक्त अन्य कुशोंका जो किसी कर्ममें आ चुके हैं, अन्य कर्मोंमें प्रयोग निषिद्ध है। इसलिये प्रतिदिन नया-नया कुश उखाड़कर

१-मन्त्रं विना धृतं यत् तत् पवित्रमफलं भवेत्।
तस्मात् पवित्रे मन्त्राभ्यां धारयेदभिमन्त्र्य च॥
'पवित्रं ते तु'....इत्यादि मन्त्रद्वितयमस्य तु।
प्रणवस्त्वस्य मन्त्रः स्यात् समस्तव्याहृतिस्तु वा॥
(ब्रह्मपुराण)

२-समूलाग्रौ विगर्भौ तु कुशौ द्वौ दक्षिणे करे।
सव्ये चैव तथा त्रीन् वै बिभृयात् सर्वकर्मसु॥
(छान्दोग्यपरिशिष्ट)

३-कर्मान्ते पुनरादाय पवित्रद्वितयं द्विजः।
शुचौ देशे विनिक्षिप्य दद्यादेतत् पुनः पुनः॥

४-यद्युच्छिष्टमपहतं पवित्रं विहितं भवेत्।
तदैव ग्रन्थिमुत्सृज्य त्यजेदितरधा नहि॥
(भारद्वाज)

५-तस्मिन् क्षीणे क्षिपेत् तोये वह्नौ वा यज्ञसूत्रवत्।
भूमिं खात्वा तथा शुद्धां मृद्भिस्तारेण पूरयेत्॥
(आश्वलायन)

उनका उपयोग करे[१]। यदि ऐसा सम्भव न हो तो अमावास्याको कुशोत्पाटन करे। अमावास्याका उखाड़ा कुश एक मासतक चल सकता है[२]। यदि भाद्रमासकी अमावास्याको कुश उखाड़ा जाय तो वह एक वर्षतक चलता है।

(क) कुशोत्पाटन-विधि—स्नानके बाद सफेद वस्त्र पहनकर प्रातःकाल कुशको उखाड़ना चाहिये। उखाड़ते समय मुँह उत्तरकी ओर या पूरबकी ओर रहे। पहले 'ॐ' कहकर कुशका स्पर्श करे और फिर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर प्रार्थना करे—

विरञ्चिना सहोत्पन्न परमेष्ठिनिसर्जन।
नुद सर्वाणि पापानि दर्भ ! स्वस्तिकरो भव ॥

कुशको एक ही झटकेसे उखाड़ना होता है। अतः पहले खनती या खुरपी आदिसे उसकी जड़को ढीला कर ले, फिर पितृतीर्थ चित्र-पृ० सं०-४४ से 'हुं फट्' कहकर उखाड़ ले[३]।

(ख) ग्रहण करने योग्य कुश—जिसका अग्रभाग कटा न हो, जो जला न हो, जो मार्गमें या गंदी जगहपर न हो और जो गर्भित न हो, वह कुश ग्रहण करने योग्य है।

हाथोंमें तीर्थ

शास्त्रोंमें दोनों हाथोंमें भी कुछ देवादितीर्थोंके स्थान बताये गये हैं। चारों अँगुलियोंके अग्रभागमें देवतीर्थ, तर्जनी अँगुलीके मूलभागमें

१-अहन्यहनि कर्मार्थं कुशच्छेदः प्रशस्यते। (आह्निक)
कुशा धृता ये पूर्वत्र योग्याः स्युर्नेतरत्र ते। (अंगिरा)

२-मासि मास्याहृता दर्भास्तत्तन्मास्येव चादृताः। (स्मृत्यन्तर)

३-(क) हुं फट्कारेण मन्त्रेण सकृच्छित्त्वा समुद्धरेत्। (स्मृत्यर्थसार)

(ख) पूर्वं तु शिथिलीकृत्य खनित्रेण विचक्षणः।
आदद्यात् पितृतीर्थेन हुं फट् हुं फट् सकृत् सकृत् ॥

'पितृतीर्थ', कनिष्ठिकाके मूलभागमें 'प्रजापतितीर्थ' और अँगूठेके मूलभागमें 'ब्रह्मतीर्थ' माना जाता है। इसी तरह दाहिने हाथके बीचमें 'अग्नितीर्थ' और बायें हाथके बीचमें 'सोमतीर्थ' एवं अँगुलियोंके सभी पोरों और संधियोंमें 'ऋषितीर्थ' है। देवताओंको तर्पणमें जलाञ्जलि 'देवतीर्थ'से, ऋषियोंको प्रजापति (काय) तीर्थसे और पितरोंको 'पितृतीर्थ'से देनेका विधान है।[1]

देवतीर्थ
पितृतीर्थ
अग्नितीर्थ
कायतीर्थ
ब्रह्मतीर्थ

जप-विधि

जप तीन प्रकारका होता है—वाचिक, उपांशु और मानसिक। वाचिक जप धीरे-धीरे बोलकर होता है। उपांशु-जप इस प्रकार किया जाता है, जिससे दूसरा न सुन सके। मानसिक जपमें जीभ और ओष्ठ नहीं हिलते। तीनों जपोंमें पहलेकी अपेक्षा दूसरा और दूसरेकी अपेक्षा तीसरा प्रकार श्रेष्ठ है[2]।

१-पैत्र्यं मूले प्रदेशिन्याः कनिष्ठायाः प्रजापतेः।
ब्राह्म्यमङ्गुष्ठमूलस्थं तीर्थं दैवं कराग्रतः॥
सव्यपाणितले वह्नेस्तीर्थं सोमस्य वामतः।
ऋषीणां तु समग्रेषु अङ्गुलीपर्वसन्धिषु॥
(अग्निपु० ७२। ३२-३३)

२-वाचिकश्च उपांशुश्च मानसस्त्रिविधः स्मृतः।
त्रयाणां जपयज्ञानां श्रेयान् स्यादुत्तरोत्तरम्॥
(नृसिंहपुराण)

प्रातःकाल दोनों हाथोंको उत्तान कर, सायंकाल नीचेकी ओर करके और मध्याह्नमें सीधा करके जप करना चाहिये[1]। प्रातःकाल हाथको नाभिके पास, मध्याह्नमें हृदयके समीप और सायंकाल मुँहके समानान्तरमें रखे[2]। जपकी गणना चन्दन, अक्षत, पुष्प, धान्य, हाथके पोर और मिट्टीसे न करे[3]। जपकी गणनाके लिये लाख, कुश, सिन्दूर और सूखे गोबरको मिलाकर गोलियाँ बना ले। जप करते समय दाहिने हाथको जपमालीमें डाल ले अथवा कपड़ेसे ढक लेना आवश्यक होता है[4], किंतु कपड़ा गीला न हो[5]। यदि सूखा वस्त्र न मिल सके तो सात बार उसे हवामें फटकार ले[6] तो वह सूखा-जैसा मान लिया जाता है। जपके लिये मालाको अनामिका अँगुलीपर रखकर अँगूठेसे स्पर्श करते हुए मध्यमा अँगुलीसे फेरना चाहिये। सुमेरुका उल्लङ्घन न करे[7]। तर्जनी न लगावे। सुमेरुके पाससे मालाको घुमाकर दूसरी बार जपे। जप करते समय हिलना, डोलना, बोलना निषिद्ध

१-कृत्वोत्तानौ करौ प्रातः सायं चाधोमुखौ ततः।
मध्ये सम्मुखहस्ताभ्यां जप एवमुदाहृतः॥
(शौनक, दे० भा० ११। १९। १८)

२-हस्तौ नाभिसमौ कृत्वा प्रातःसंध्याजपं चरेत्।
हृत्समौ तु करौ मध्ये सायं मुखसमौ करौ॥
(स्मृत्यन्तर)

३-नाक्षतैर्हस्तपर्वैर्वा न धान्यैर्न च पुष्पकैः।
न चन्दनैर्मृत्तिकया जपसंख्यां तु कारयेत्॥
(यामल)

४-वस्त्रेणाच्छाद्य तु करं दक्षिणं यः सदा जपेत्।
तस्य तत् सफलं जप्यं तद्धीनमफलं स्मृतम्॥
(वृद्धमनु)

५-आच्छाद्यार्द्रेण वस्त्रेण करं यस्तु जपेद् यदि।
निष्फलः स्याज्जपस्तस्य देवता न प्रसीदति॥
(स्मृत्यन्तर)

६-तदपि पूर्वपरिधानीयवत् सप्तवारमवधूनितं चेन्न दोषावहम्। (आचारभूषण)

७-मेरौ तु लङ्घिते देवि न मन्त्रफलभाग्भवेत्।

है। यदि जप करते समय बोल दिया जाय तो भगवान्‌का स्मरण कर फिरसे जप करना चाहिये।

यदि माला गिर जाय तो एक सौ आठ बार जप करे। यदि माला पैरपर गिर जाय तो इसे धोकर दुगुना जप करे[१]।

(क) स्थान-भेदसे जपकी श्रेष्ठताका तारतम्य—घरमें जप करनेसे एक गुना, गोशालामें सौ गुना, पुण्यमय वन या वाटिका तथा तीर्थमें हजार गुना, पर्वतपर दस हजार गुना, नदी-तटपर लाख गुना, देवालयमें करोड़ गुना तथा शिवलिङ्गके निकट अनन्त गुना पुण्य प्राप्त होता है—

गृहे चैकगुणः प्रोक्तः गोष्ठे शतगुणः स्मृतः।
पुण्यारण्ये तथा तीर्थे सहस्रगुणमुच्यते॥
अयुतः पर्वते पुण्यं नद्यां लक्षगुणो जपः।
कोटिर्देवालये प्राप्ते अनन्तं शिवसंनिधौ॥

(ख) माला-वन्दना—निम्नलिखित मन्त्रसे मालाकी वन्दना करे—

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणी।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥
ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥

देवमन्त्रकी करमाला

अङ्गुल्यग्रे च यज्जप्तं यज्जप्तं मेरुलङ्घनात्।
पर्वसन्धिषु यज्जप्तं तत्सर्वं निष्फलं भवेत्॥

अँगुलियोंके अग्रभाग तथा पर्वकी रेखाओंपर और सुमेरुका उल्लङ्घन कर किया हुआ जप निष्फल होता है।

यस्मिन् स्थाने जपं कुर्याद्धरेच्छक्रो न तत्फलम्।
तन्मृदा लक्ष्म कुर्वीत ललाटे तिलकाकृतिम्॥

१-प्रमादात् पतिते सूत्रे जपेदष्टोत्तरं शतम्।
पादयोः पतिते तस्मिन् प्रक्षाल्य द्विगुणं जपेत्॥
(नृसिंहपरिचर्या)

****

जिस स्थानपर जप किया जाता है, उस स्थानकी मृत्तिका जपके अनन्तर मस्तकपर लगाये अन्यथा उस जपका फल इन्द्र ले लेते हैं।
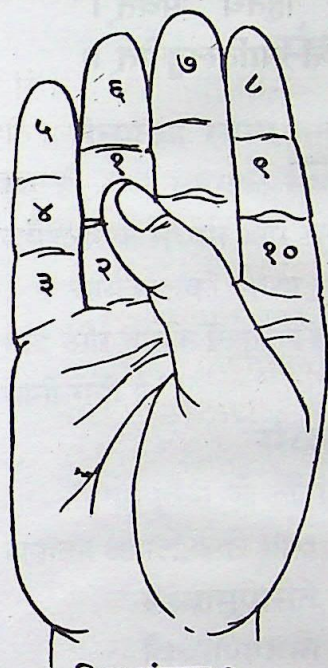
चित्र-संख्या १ चित्र-संख्या २

(शक्ति-मन्त्रकी करमाला संध्याके प्रकरणमें देखें)
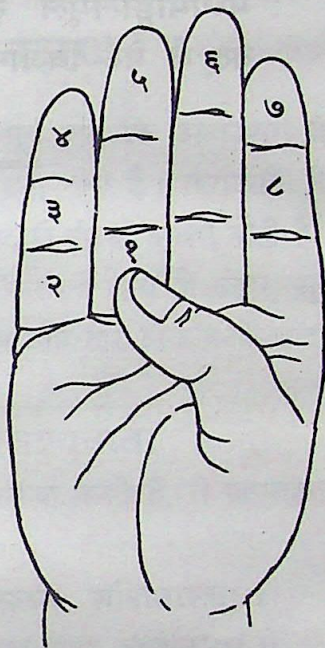
ऊपरके चित्र-सं० १ के अनुसार अङ्क १ से आरम्भ कर १० अङ्कतक अँगूठेसे जप करनेसे एक करमाला होती है। इसी प्रकार दस करमाला जप करके चित्र संख्या २ के अनुसार १ अङ्कसे आरम्भ करके ८ अङ्कतक जप करनेसे १०८ संख्याकी माला होती है।

अनामिकाके मध्यवाले पर्वसे आरम्भकर क्रमशः पाँचों अँगुलियोंके दसों पर्वपर (अँगूठेको घुमावे) और मध्यमा अङ्गुलिके मूलमें जो दो पर्व हैं, उन्हें मेरु मानकर उसका उल्लङ्घन न करे। यह गायत्रीकल्पके अनुसार करमाला है, जिसका वर्णन ऊपरके चित्रमें भी दिखाया गया है।

आरभ्यानामिकामध्यं पर्वाण्युक्तान्यनुक्रमात् ।
तर्जनीमूलपर्यन्तं जपेद् दशसु पर्वसु ॥
मध्यमाङ्गुलिमूले तु यत्पर्व द्वितयं भवेत् ।
तद् वै मेरुं विजानीयाज्जपे तं नातिलङ्घयेत् ॥

संध्या-प्रकरण

संध्याका समय—सूर्योदयसे पूर्व जब कि आकाशमें तारे भरे हुए हों, उस समयकी संध्या उत्तम मानी गयी है। ताराओंके छिपनेसे सूर्योदयतक मध्यम और सूर्योदयके बादकी संध्या अधम होती है[१]।

सायंकालकी संध्या सूर्यके रहते कर ली जाय तो उत्तम, सूर्यास्तके बाद और तारोंके निकलनेके पूर्व मध्यम और तारा निकलनेके बाद अधम मानी गयी है[२]।

संध्याकी आवश्यकता

नियमपूर्वक जो लोग प्रतिदिन संध्या करते हैं, वे पापरहित होकर सनातन ब्रह्मलोकको प्राप्त होते हैं—

संध्यामुपासते ये तु सततं संशितव्रताः।
विधूतपापास्ते यान्ति ब्रह्मलोकं सनातनम्॥

(अत्रि)

इस पृथ्वीपर जितने भी स्वकर्मरहित द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) हैं, उनको पवित्र करनेके लिये ब्रह्माने संध्याकी उत्पत्ति की है। रात या दिनमें जो भी अज्ञानवश विकर्म हो जायँ, वे त्रिकाल-संध्या करनेसे नष्ट हो जाते हैं—

१-**उत्तमा तारकोपेता मध्यमा लुप्ततारका।**
अधमा सूर्यसहिता प्रातः संध्या त्रिधा स्मृता॥
(धर्मसार, विश्वामित्रस्मृ० १। २२, देवीभा० ११। १६। ४)

२-**उत्तमा सूर्यसहिता मध्यमा लुप्तसूर्यका।**
अधमा तारकोपेता सायं संध्या त्रिधा स्मृता॥
(धर्मसार, विश्वामित्रस्मृ० १। २४)

यावन्तोऽस्यां पृथिव्यां हि विकर्मस्थास्तु वै द्विजाः ।
तेषां वै पावनार्थाय संध्या सृष्टा स्वयम्भुवा ।।
निशायां वा दिवा वापि यदज्ञानकृतं भवेत् ।
त्रैकाल्यसंध्याकरणात् तत्सर्वं विप्रणश्यति ।।

(याज्ञवल्क्यस्मृ० प्रायश्चित्ताध्याय ३०७)

संध्या न करनेसे दोष

जिसने संध्याका ज्ञान नहीं किया, जिसने संध्याकी उपासना नहीं की, वह (द्विज) जीवित रहते शूद्र-सम रहता है और मृत्युके बाद कुत्ते आदिकी योनिको प्राप्त करता है—

संध्या येन न विज्ञाता संध्या येनानुपासिता ।
जीवमानो भवेच्छूद्रो मृतः श्वा चाभिजायते ।।

(दे० भा० ११ । १६ । ७)

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदि संध्या नहीं करें, तो वे अपवित्र हैं और उन्हें किसी पुण्यकर्मके करनेका फल प्राप्त नहीं होता ।

संध्याहीनोऽशुचिर्नित्यमनर्हः सर्वकर्मसु ।
यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाग्भवेत् ।।

(दक्षस्मृ० २ । २७)

संध्या-कालकी व्याख्या

सूर्य और तारोंसे रहित दिन-रातकी संधिको तत्त्वदर्शी मुनियोंने संध्याकाल माना है—

अहोरात्रस्य या संधिः सूर्यनक्षत्रवर्जिता ।
सा तु संध्या समाख्याता मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ।।

(आचारभूषण ८९)

संध्यास्तुति

ब्राह्मणरूपी वृक्षका मूल संध्या है, चारों वेद चार शाखाएँ हैं, धर्म और कर्म पत्ते हैं । अतः मूलकी रक्षा यत्नसे करनी चाहिये । मूलके छिन्न हो

जानेपर वृक्ष और शाखा कुछ भी नहीं रह सकते हैं—

विप्रो वृक्षो मूलकान्यत्र संध्या वेदाः शाखा धर्मकर्माणि पत्रम्।
तस्मान्मूलं यत्नतो रक्षणीयं छिन्ने मूले नैव वृक्षो न शाखा ॥

(देवीभा० ११।१६।६)

समयपर की गयी संध्या इच्छानुसार फल देती है और बिना समयकी की गयी संध्या वन्ध्या स्त्रीके समान होती है—

स्वकाले सेविता संध्या नित्यं कामदुघा भवेत्।
अकाले सेविता सा च संध्या वन्ध्या वधूरिव ॥

(मित्रकल्प)

प्रातःकालमें तारोंके रहते हुए, मध्याह्नकालमें जब सूर्य आकाशके मध्यमें हों, सायंकालमें सूर्यास्तके पहले ही इस तरह तीन प्रकारकी संध्या करनी चाहिये—

प्रातः संध्यां सनक्षत्रां मध्याह्ने मध्यभास्कराम् ॥
ससूर्यां पश्चिमां संध्यां तिस्त्रः संध्या उपासते।

(दे० भा० ११।१६।२-३)

सायंकालमें पश्चिमकी तरफ मुख करके जबतक तारोंका उदय न हो और प्रातःकालमें पूर्वकी ओर मुख करके जबतक सूर्यका दर्शन न हो, तबतक जप करता रहे—

जपन्नासीत सावित्रीम्प्रत्यगातारकोदयात् ॥
संध्यां प्राक् प्रातरेवं हि तिष्ठेदासूर्यदर्शनात्।

(या०स्मृ० २।२४-२५)

गृहस्थ तथा ब्रह्मचारी गायत्रीके आदिमें 'ॐ'का उच्चारण करके जप करें, और अन्तमें 'ॐ'का उच्चारण न करें, क्योंकि ऐसा करनेसे सिद्धि नहीं होती है—

गृहस्थो ब्रह्मचारी च प्रणवाद्यामिमां जपेत्।
अन्ते यः प्रणवं कुर्यान्नासौ सिद्धिमवाप्नुयात् ॥

(याज्ञवल्क्यस्मृ०, आचाराध्याय २४-२५ बालम्भट्टी)

जपके आदिमें चौंसठ कलायुक्त विद्याओं तथा सम्पूर्ण ऐश्वर्योंका सिद्धिदायक 'गायत्री-हृदय' का तथा अन्तमें 'गायत्री-कवच' का पाठ करे। (यह नित्य-संध्यामें आवश्यक नहीं है, करे तो अच्छा है)—

चतुष्षष्टिकला विद्या सकलैश्वर्यसिद्धिदा।
जपारम्भे च हृदयं जपान्ते कवचं पठेत्॥

घरमें संध्या-वन्दन करनेसे एक, गोस्थानमें सौ, नदी-किनारे लाख तथा शिवके समीपमें अनन्त गुना फल होता है—

गृहेषु तत्समा संध्या गोष्ठे शतगुणा स्मृता।
नद्यां शतगुणा प्रोक्ता अनन्ता शिवसंनिधौ॥

(लघुशातातपस्मृ० ११४)

पैर धोनेसे, पीनेसे और संध्या करनेसे बचा हुआ जल श्वानके मूत्रके तुल्य हो जाता है, उसे पीनेपर चान्द्रायण-व्रत करनेसे मनुष्य पवित्र होता है। इसलिये बचे हुए जलको फेंक दे—

पादशेषं पीतशेषं संध्याशेषं तथैव च।
शुनो मूत्रसमं तोयं पीत्वा चान्द्रायणं चरेत्॥

संध्याके लिये पात्र आदि

१-लोटा प्रधान जलपात्र—१

२-घंटी और संध्याका विशेष जलपात्र—१

३-पात्र-चन्दन-पुष्पादिके लिये

४-पञ्चपात्र—२

५-आचमनी—२

६-अर्घा—१

७-जल गिरानेके लिये तामड़ी (छोटी थाली)—१

८-आसन

संध्योपासन-विधि

संध्योपासन द्विजमात्रके लिये बहुत ही आवश्यक कर्म है। इसके बिना पूजा आदि कार्य करनेकी योग्यता नहीं आती[१]। अतः द्विजमात्रके लिये संध्या करना आवश्यक है[२]।

स्नानके बाद दो वस्त्र धारणकर पूर्व, ईशानकोण या उत्तरकी ओर मुँह कर आसनपर बैठ जाय। आसनकी ग्रन्थि उत्तर-दक्षिणकी ओर हो। तुलसी, रुद्राक्ष आदिकी माला धारण कर ले[३]। दोनों अनामिकाओंमें पवित्री धारण कर ले। गायत्री मन्त्र पढ़कर शिखा बाँधे तथा तिलक लगा ले और आचमन करे—

आचमन—'ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः'—इन तीन मन्त्रोंसे तीन बार आचमन करके **'ॐ हृषीकेशाय नमः'** इस मन्त्रको बोलकर हाथ धो ले।

पहले विनियोग पढ़ ले, तब मार्जन करे (जल छिड़के)।

१-**संध्याहीनोऽशुचिर्नित्यमनर्हः सर्वकर्मसु।** (दक्षस्मृति २। २७)
निम्नलिखित स्थितिमें संध्याके लोप होनेपर पुण्यका साधन होनेके कारण दोष नहीं माना गया है—

राष्ट्रक्षोभे नृपक्षोभे रोगार्ते भय आगते।
देवाग्निद्विजभूपानां कार्ये महति संस्थिते॥
संध्याहानौ न दोषोऽस्ति यतस्तत् पुण्यसाधनम्॥
(जमदग्नि)

२-जिनके पास संध्या करनेके लिये समयका अभाव हो तथा संध्याके मन्त्र भी याद न हों, वे कम-से-कम आचमन कर गायत्रीमन्त्रसे प्राणायाम तथा गायत्रीमन्त्रसे तीन बार सूर्यार्घ्य देकर करमालापर दस बार गायत्री मन्त्रका जप कर लें। न करनेकी अपेक्षा इतने मात्रसे भी संध्याकी पूर्ति हो सकती है।

३-संध्या-पूजामें आँवलेके बराबर रुद्राक्षकी ३२ मणियोंकी माला कण्ठीरूपमें धारण करनेका भी विधान है।

****

मार्जन-विनियोग-मन्त्र—'**ॐ अपवित्रः पवित्रो वेत्यस्य वामदेव ऋषिः, विष्णुर्देवता, गायत्रीच्छन्दः हृदि पवित्रकरणे विनियोगः।**' इस प्रकार विनियोग पढ़कर जल छोड़े[1] तथा निम्नलिखित मन्त्रसे मार्जन करे (शरीर एवं सामग्रीपर जल छिड़के)।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

तदनन्तर आगे लिखा विनियोग पढ़े—'**ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता आसनपवित्रकरणे विनियोगः।**' फिर नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर आसनपर जल छिड़के—

ॐ पृथ्वि ! त्वया धृता लोका देवि ! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि ! पवित्रं कुरु चासनम्॥

संध्याका संकल्प—इसके बाद हाथमें कुश और जल लेकर संध्याका संकल्प पढ़कर जल गिरा दे—'**ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य**[2]**...उपात्तदुरितक्षयपूर्वकश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं संध्योपासनं करिष्ये।**'

आचमन—इसके लिये निम्नलिखित विनियोग पढ़े—

ॐ ऋतं चेति माधुच्छन्दसोऽघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तं दैवतमपामुपस्पर्शने विनियोगः[3]। फिर नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर आचमन करे—

ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।

१- विनियोग पढ़कर जल छोड़नेकी विधि शास्त्रोंमें नहीं मिलनेके कारण कुछ विद्वानोंका मत है कि विनियोगमें जल छोड़नेका प्रचलन अर्वाचीन है। मुख्यरूपसे ऋषि, देवता आदिके स्मरणका महत्त्व माना गया है। इसलिये विनियोगका पाठमात्र भी किया जा सकता है।

२-पृष्ठ-सं॰पाँचके अनुसार संकल्प करे।

३-अग्निपुराण २१५।४३

दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः । (ऋग्वेद १० । १९० । १)

तदनन्तर दायें हाथमें जल लेकर बायें हाथसे ढककर 'ॐ' के साथ तीन बार गायत्रीमन्त्र पढ़कर अपनी रक्षाके लिये अपने चारों ओर जलकी धारा दे । फिर प्राणायाम करे ।

प्राणायामका विनियोग[१]—प्राणायाम करनेके पूर्व उसका विनियोग इस प्रकार पढ़े—

१-शास्त्रका कथन है कि पर्वतसे निकले धातुओंका मल जैसे अग्निसे जल जाता है, वैसे प्राणायामसे आन्तरिक पाप जल जाते हैं—

यथा पर्वतधातूनां दोषान् हरति पावकः ।
एवमन्तर्गतं पापं प्राणायामेन दह्यते ॥

(प्रयोगपारिजात, अत्रिस्मृ० २ । ३)

प्राणायाम करनेवाला आगकी तरह चमक उठता है—

'प्राणायामैस्त्रिभिः पूतस्तत्क्षणाज्ज्वलतेऽग्निवत् ॥'

(प्रयोगपारिजात)

यही बात शब्द-भेदसे अत्रिस्मृति (३ । ३) में कही गयी है । भगवान्‌ने कहा है कि प्राणायाम सिद्ध होनेपर हजारों वर्षोंकी लम्बी आयु प्राप्त होती है । अतः चलते-फिरते सदा प्राणायाम किया करे—

गच्छंस्तिष्ठन् सदा कालं वायुस्वीकरणं परम् ।
सर्वकालप्रयोगेण सहस्रायुर्भवेन्नरः ॥

प्राणायामकी बड़ी महिमा कही गयी है । इससे पाप-ताप तो जल ही जाते हैं, शारीरिक उन्नति भी अद्भुत ढंगसे होती है । हजारों वर्षकी लंबी आयु भी इससे मिल सकती है । सुन्दरता और स्वास्थ्यके लिये तो यह मानो वरदान ही है । यदि प्राणायामके ये लाभ बुद्धिगम्य हो जायँ तो इसके प्रति आकर्षण बढ़ जाय और तब इससे राष्ट्रका बड़ा लाभ हो ।

जब हम साँस लेते हैं, तब इसमें मिले हुए आक्सीजनसे फेफड़ोंमें पहुँचा हुआ अशुद्ध काला रक्त शुद्ध होकर लाल बन जाता है । इस शुद्ध रक्तका हृदय पंपिंग-क्रियाद्वारा शरीरमें संचार कर देता है । यह रक्त शरीरके सब घटकोंको खुराक बाँटता-बाँटता स्वयं काला पड़ जाता है । तब हृदय इस उपकारी तत्त्वको फिरसे शुद्ध होनेके लिये फेफड़ोंमें भेजता है । वहाँ साँसमें मिले प्राणवायु (आक्सीजन) के द्वारा यह फिर सशक्त हो जाता है और फिर सारे घटकोंको खुराक बाँटकर शरीरकी जीवनी-शक्तिको बनाये रखता है । यही कारण है कि साँसके बिना पाँच मिनट भी जीना कठिन हो जाता है ।

किंतु रक्तकी शोधन-क्रियामें एक बाधा पड़ती रहती है । साधारण साँस फेफड़ोंकी सूक्ष्म कणिकाओंतक पहुँच नहीं पाती । इसकी यह अनिवार्य आवश्यकता देख भगवान्‌ने प्रत्येक

'ॐकारस्य ब्रह्मा ऋषिर्दैवी गायत्री छन्दः अग्निः परमात्मा देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः[१]।'

सत्कर्मके आरम्भमें इसका (प्राणायामका) संनिवेश कर दिया है। कभी-कभी तो सोलह-सोलह प्राणायामोंका विधान कर दिया है—

द्वौ द्वौ प्रातस्तु मध्याह्ने त्रिभिः संध्यासुरार्चने।
भोजनादौ भोजनान्ते प्राणायामास्तु षोडश॥

(देवीपुराण)

किंतु भगवान्‌की यह व्यवस्था तो शास्त्र मानकर चलनेवाले अधिकारी पुरुषोंके लिये हुई, पर प्राणायाम सभी प्राणियोंके लिये अपेक्षित है। अतः भगवान्‌ने प्राणायामकी दूसरी व्यवस्था प्रकृतिके द्वारा करवायी है। हम जो खर्राटे भरते हैं, वह वस्तुतः प्रकृतिके द्वारा हमसे कराया गया प्राणायाम ही है। इस प्राणायामका नाम 'भस्त्रिका-प्राणायाम' है। 'भस्त्रिका' का अर्थ है—'भाथी'। भाथी इस गहराईसे वायु खींचती है कि जिससे उसके प्रत्येक अवयवतक वायु पहुँच जाती है और वह पूरी फूल उठती है तथा वह इस भाँति वायु फेंकती है कि उसका प्रत्येक अवयव भलीभाँति सिकुड़ जाता है। इसी तरह भस्त्रिका-प्राणायाममें वायुको इस तरह खींचा जाता है कि फेफड़ेके प्रत्येक कणिकातक वह पहुँच जाय और छोड़ते समय प्रत्येक कणिकासे वह निकल जाय। इस प्राणायाममें 'कुम्भक' नहीं होता और न मन्त्रकी ही आवश्यकता पड़ती है। केवल ध्यानमात्र करना चाहिये—

'अगर्भो ध्यानमात्रं तु स चामन्त्रः प्रकीर्तितः॥ (देवीपुराण ११।२०।३४)

स्वास्थ्य और सुन्दरता बढ़ानेके लिये तथा भगवान्‌के सांनिध्यको प्राप्त करनेके लिये तो प्राणायाम शत-शत अनुभूत है।

भस्त्रिका-प्राणायामकी अनेक विधियाँ हैं। उनमें एक प्रयोग लिखा जाता है—

प्रातः खाली पेट शवासनसे लेट जाय। मेरुदण्ड सीधा होना चाहिये। इसलिये चौकी या जमीनपर लेट जाय, फिर मुँह बंद कर नाकसे धीरे-धीरे साँस खींचे। जब खींचना बंद हो जाय, तब मुँहसे फूँकते हुए धीरे-धीरे छोड़े, रोके नहीं। भगवान्‌का ध्यान चलता रहे। यह प्रयोग बीस मिनटसे कम न हो। यहाँ ध्यान देनेकी बात यह है कि साँसका लेना और छोड़ना अत्यन्त धीरे-धीरे हो। इतना धीरे-धीरे कि नाकके पास हाथमें रखा हुआ सत्तू भी उड़ न सके—

न प्राणेनाप्यपानेन वेगाद् वायुं समुच्छ्वसेत्।
येन सक्तून् करस्थांश्च निःश्वासो नैव चालयेत्॥

१-प्रणवस्य ऋषिर्ब्रह्मा गायत्री छन्द एव च।
देवोऽग्निः परमात्मा स्याद् योगो वै सर्वकर्मसु॥

(अग्निपु० २१५।३२)

ॐ सप्तव्याहृतीनां विश्वामित्रजमदग्निभरद्वाजगौतमात्रिवसिष्ठ-कश्यपा ऋषयो गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपङ्क्तित्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांस्य-ग्निवाय्वादित्यबृहस्पतिवरुणेन्द्रविष्णवो देवता अनादिष्टप्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः[1]।

ॐ तत्सवितुरिति विश्वामित्रऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता प्राणायामे विनियोगः।

ॐ आपो ज्योतिरिति शिरसः प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दो ब्रह्माग्नि-वायुसूर्या देवताः प्राणायामे विनियोगः[2]।

(क) *प्राणायामके मन्त्र*—फिर आँखें बंद कर नीचे लिखे मन्त्रोंका प्रत्येक प्राणायाममें तीन-तीन बार (अथवा पहले एक बारसे ही प्रारम्भ करे, धीरे-धीरे तीन-तीन बारका अभ्यास बढ़ावे) पाठ करे।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्। (तै० आ० प्र० १० अ० २७)

१-व्याहृतीनां तु सर्वासामृषिरेव प्रजापतिः।
व्यस्ताश्चैव समस्ताश्च ब्राह्ममक्षरमोमिति॥
विश्वामित्रो जमदग्निर्भरद्वाजोऽथ गौतमः।
ऋषिरत्रिर्वसिष्ठश्च कश्यपश्च यथाक्रमम्॥
अग्निर्वायू रविश्चैव वाक्पतिर्वरुणस्तथा।
इन्द्रो विष्णुर्व्याहृतीनां दैवतानि यथाक्रमम्॥
गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् च बृहतीपंक्तिरेव च।
त्रिष्टुप् च जगती चेतिच्छन्दांस्याहुरनुक्रमात्॥

(अग्निपुराण २१५। २३५—३८)

२-'आपो ज्योती रस' इति गायत्र्यास्तु शिरः स्मृतम्।
ऋषिः प्रजापतिस्तस्य छन्दोहीनं यजुर्यतः॥
ब्रह्माग्निवायुसूर्याश्च देवताः परिकीर्तिताः॥

(अग्निपुराण २१५। ४४-४५)

(ख) प्राणायामकी विधि—प्राणायामके तीन भेद होते हैं—१. पूरक, २. कुम्भक और ३. रेचक।
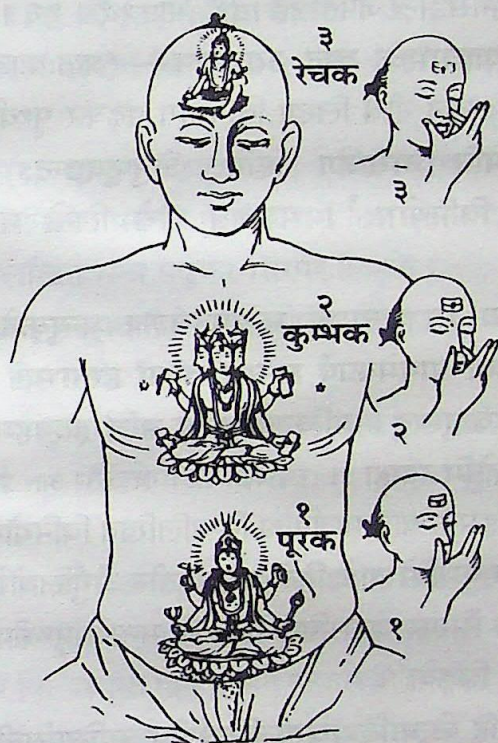
१-अँगूठेसे नाकके दाहिने छिद्रको दबाकर बायें छिद्रसे श्वासको धीरे-धीरे खींचनेको 'पूरक प्राणायाम' कहते हैं। पूरक प्राणायाम करते समय उपर्युक्त मन्त्रोंका मनसे उच्चारण करते हुए नाभिदेशमें नीलकमलके दलके समान नीलवर्ण चतुर्भुज भगवान् विष्णुका ध्यान करे।

२-जब साँस खींचना रुक जाय, तब अनामिका और कनिष्ठिका अँगुलीसे नाकके बायें छिद्रको भी दबा दे। मन्त्र जपता रहे। यह 'कुम्भक प्राणायाम' हुआ। इस अवसरपर हृदयमें कमलपर विराजमान लाल वर्णवाले चतुर्मुख ब्रह्माका ध्यान करे।

****

३-अँगूठेको हटाकर दाहिने छिद्रसे श्वासको धीरे-धीरे छोड़नेको 'रेचक प्राणायाम' कहते हैं। इस समय ललाटमें श्वेतवर्ण शंकरका ध्यान करना चाहिये। मनसे मन्त्र जपता रहे। (दे०भा० ११। १६। २८-३६)।

(ग) प्राणायामके बाद आचमन—(प्रातःकालका विनियोग और मन्त्र) प्रातःकाल नीचे लिखा विनियोग पढ़कर पृथ्वीपर जल छोड़ दे—**सूर्यश्च मेति नारायण ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः**[1]। पश्चात् नीचे लिखे मन्त्रको पढ़कर आचमन करे—

ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु। यत्किञ्च दुरितं मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ॥ (तै० आ० प्र० १०, अ० २५)

मार्जन—इसके बाद मार्जनका निम्नलिखित विनियोग पढ़कर बायें हाथमें जल लेकर कुशोंसे या दाहिने हाथकी तीन अँगुलियोंसे १ से ७ तक मन्त्रोंको बोलकर सिरपर जल छिड़के। ८वें मन्त्रसे पृथ्वीपर तथा ९वेंसे फिर सिरपर जल छिड़के[2]।

ॐ आपो हि ष्ठेत्यादित्र्यृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः[3]।

१-**ब्रह्मोक्तयाज्ञवल्क्यसंहिता** (अ० २, श्लोक ६७के आगे)

२-**विप्रुषोऽष्टौ क्षिपेन्मूर्ध्नि अथो यस्य क्षयाय च।** (व्याससमृति)

३-**'आपो हि ष्ठे' त्यृचोऽस्याश्च सिन्धुद्वीप ऋषिः स्मृतः ॥**
ब्रह्मस्नानाय छन्दोऽस्य गायत्री देवता जलम्।
मार्जने विनियोगोऽस्य ह्यावभृथके क्रतोः ॥

(अग्निपु० २१५। ४१—४२)

(योगियाज्ञवल्क्यस्मृतिमें भी इसका प्रमाण मिलता है)

****

१. ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवः। २. ॐ ता न ऊर्जे दधातन। ३. ॐ महे रणाय चक्षसे। ४. ॐ यो वः शिवतमो रसः। ५. ॐ तस्य भाजयतेह नः। ६. ॐ उशतीरिव मातरः। ७. ॐ तस्मा अरं गमाम वः। ८. ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ। ९. ॐ आपो जनयथा च नः।

(यजु० ११। ५०—५२)

मस्तकपर जल छिड़कनेके विनियोग और मन्त्र—निम्नलिखित विनियोग पढ़कर बायें हाथमें जल लेकर दाहिने हाथसे ढक ले और निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर सिरपर छिड़के।

विनियोग—द्रुपदादिवेत्यस्य कोकिलो राजपुत्र ऋषिरनुष्टुप् छन्दः आपो देवताः शिरस्सेके विनियोगः[1]।

मन्त्र—ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव।
पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः॥

(यजु० २०। २०)

अघमर्षण और आचमनके विनियोग और मन्त्र—नीचे लिखा विनियोग पढ़कर दाहिने हाथमें जल लेकर उसे नाकसे लगाकर मन्त्र पढ़े और ध्यान करे कि 'समस्त पाप दाहिने नाकसे निकलकर हाथके जलमें आ गये हैं। फिर उस जलको बिना देखे बायीं ओर फेंक दे[2]।

१-कोकिलो राजपुत्रस्तु द्रुपदाया ऋषिः स्मृतः।
अनुष्टुप् च भवेच्छन्द आपश्चैव तु दैवतम्॥
(योगियाज्ञवल्क्य, आह्निक सूत्रावली)

२-उद्धृत्य दक्षिणे हस्ते जलं गोकर्णवत् कृते।
निःश्वसन् नासिकाग्रे तु पाप्मानं पुरुषं स्मरेत्॥
ऋतं चेति ऋचं वापि द्रुपदां वा जपेद् ऋचम्।
दक्षनासापुटेनैव पाप्मानमपसारयेत्।
तज्जलं नावलोक्याथ वामभागे क्षितौ त्यजेत्॥
(प्रजापति, दे० भा० ११। १६। ४५—४७)

****

अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तो देवता अघमर्षणे विनियोगः[१] ।

मन्त्र—ॐ ऋतञ्च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत । ततः समुद्रो अर्णवः । समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ॥

(ऋ० अ० ८ अ० ८ व० ४८)

पुनः निम्नलिखित विनियोग करे—

अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप् छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः[२] ।

फिर इस मन्त्रसे आचमन करे—

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः ।
त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम्[३] ॥

(कात्यायन, परिशिष्ट सूत्र)

सूर्यार्घ्य-विधि—इसके बाद निम्नलिखित विनियोगको पढ़कर अञ्जलिसे अँगूठेको अलग हटाकर[४] गायत्री मन्त्रसे सूर्य

१-अघमर्षणसूक्तस्य ऋषिरेवाघमर्षणम्।
अनुष्टुप् च भवेच्छन्दो भाववृत्तस्तु दैवतम् ॥
(अग्निपुराण २१५।४३)

२-ब्रह्मोक्तयाज्ञवल्क्यसंहिता २।७३

३-अग्निपुराणमें इस मन्त्रका पाठ इस प्रकार है—
अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु ॥
तपोयज्ञवषट्कार आपो ज्योती रसामृतम्।
(२१५।४६-४७)

४-मुक्तहस्तेन दातव्यं मुद्रां तत्र न कारयेत्।
तर्जन्यङ्गुष्ठयोगेन राक्षसी मुद्रिका स्मृता ॥
राक्षसीमुद्रिकार्घ्येण तत्तोयं रुधिरं भवेत् ॥
(अत्रिस्मृति, देवीभा० ११।१६।४९)

भगवान्‌को जलसे अर्घ्य दे। अर्घ्यमें चन्दन और फूल मिला ले। सबेरे और दोपहरको एक एड़ी उठाये हुए खड़े होकर अर्घ्य देना चाहिये। सबेरे कुछ झुककर खड़ा होवे और दोपहरको सीधे खड़ा होकर और शामको बैठकर[१]। सबेरे और शामको तीन-तीन अञ्जलि दे और दोपहरको एक अञ्जलि। सुबह और दोपहरको जलमें अञ्जलि उछाले और शामको धोकर स्वच्छ किये स्थलपर धीरेसे अञ्जलि दे[२]। ऐसा नदीतटपर करे। अन्य जगहोंमें पवित्र स्थलपर अर्घ्य दे, जहाँ पैर न लगे। अच्छा है कि बर्तनमें अर्घ्य देकर उसे वृक्षके मूलमें डाल दिया जाय।

सूर्यार्घ्यका विनियोग—सूर्यको अर्घ्य देनेके पूर्व निम्नलिखित विनियोग पढ़ें—

(क) 'ॐकारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दः परमात्मा देवता अर्घ्यदाने विनियोगः।'

(ख) ॐ भूर्भुवः स्वरिति महाव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांस्यग्निवायुसूर्या देवताः अर्घ्यदाने विनियोगः।'

(ग) ॐ तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता सूर्यार्घ्यदाने विनियोगः।'

१-ईषन्नम्रः प्रभाते वै मध्याह्ने दण्डवत् स्थितः।
आसने चोपविष्टस्तु द्विजः सायं क्षिपेदपः॥ (दे०भा० ११।१६।५२)

२-जलेष्वर्घ्यं प्रदातव्यं जलाभावे शुचिस्थले।
सम्प्रोक्ष्य वारिणा सम्यक् ततोऽर्घ्यं तु प्रदापयेत्॥ (अग्निस्मृति)

इस प्रकार विनियोग कर नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर अर्घ्य दे—

'ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।' (शुक्लयजु० ३६।३)

इस मन्त्रको पढ़कर **'ब्रह्मस्वरूपिणे सूर्यनारायणाय नमः'** कहकर अर्घ्य दे।

विशेष—यदि समय (प्रातः सूर्योदयसे तथा सूर्यास्तसे तीन घड़ी बाद) का अतिक्रमण हो जाय तो प्रायश्चित्तस्वरूप नीचे लिखे मन्त्रसे एक अर्घ्य पहले देकर तब उक्त अर्घ्य दे—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ[१]।

उपस्थान—सूर्यके उपस्थानके लिये प्रथम नीचे लिखे विनियोगोंको पढ़े—

(क) उद्वयमित्यस्य प्रस्कण्व[२] ऋषिरनुष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

(ख) उदु त्यमित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिर्निचृद्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

(ग) चित्रमित्यस्य कौत्स ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः[३]।

(घ) तच्चक्षुरित्यस्य दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिरक्षरातीतपुरउष्णिक्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः[४]।

१-कालातिक्रमणे चैव त्रिसंध्यमपि सर्वदा।
चतुर्थार्घ्यं प्रकुर्वीत भानोर्व्याहृतिसम्पुटम्॥

(वसिष्ठ)

२-शुक्लयजुर्वेद-सर्वानुक्रम।

३-चित्रं देवेति ऋचके ऋषिः कौत्स उदाहृतः।
त्रिष्टुप् छन्दो दैवतं च सूर्योऽस्याः परिकीर्तितम्॥

(अग्निपुराण २१५।४९)

४-यजुर्वेद-सर्वानुक्रम।

इसके बाद प्रातः चित्रानुसार खड़े होकर तथा दोपहरमें दोनों हाथोंको उठाकर और सायंकाल बैठकर हाथ जोड़कर नीचे लिखे मन्त्रोंको पढ़ते हुए सूर्योपस्थान करे[१]।

प्रातःकालीन सूर्योपस्थान

सूर्योपस्थानके मन्त्र—

(क) ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्॥

(यजु० २०। २१)

(ख) ॐ उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः।
दृशे विश्वाय सूर्यम्। (यजु० ७। ४१)

१-मध्याह्न-उपस्थान तथा सायं-उपस्थानके चित्र आगे दिये गये हैं।

(ग) ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्ष ँ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥

(यजु० ७।४२)

(घ) ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।

(यजु० ३६।२४)

गायत्री-जपका विधान

षडङ्गन्यास—गायत्री-मन्त्रके जपके पूर्व षडङ्गन्यास करनेका विधान है। अतः आगे लिखे एक-एक मन्त्रको बोलते हुए चित्रके अनुसार उन-उन अङ्गोंका स्पर्श करे—

****
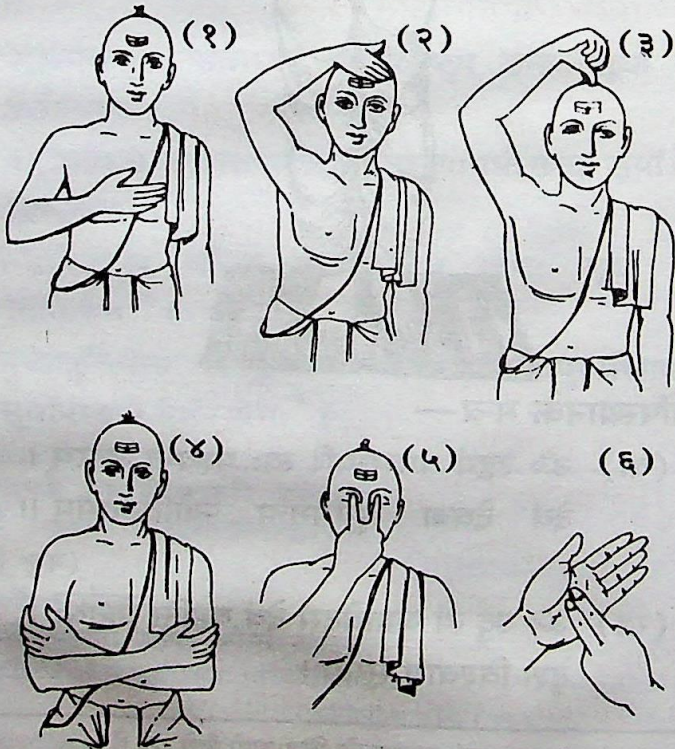
(१) **ॐ हृदयाय नमः** (दाहिने हाथकी पाँचों अँगुलियोंसे हृदयका स्पर्श करे)। (२) **ॐ भूः शिरसे स्वाहा** (मस्तकका स्पर्श करे)। (३) **ॐ भुवः शिखायै वषट्** (शिखाका अँगूठेसे स्पर्श करे)। (४) **ॐ स्वः कवचाय हुम्** (दाहिने हाथकी अँगुलियोंसे बायें कंधेका और बायें हाथकी अँगुलियोंसे दायें कंधेका स्पर्श करे)। (५) **ॐ भूर्भुवः स्वः नेत्राभ्यां वौषट्** (नेत्रोंका स्पर्श करे)। (६) **ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट्** (बायें हाथकी हथेलीपर दायें हाथको सिरसे घुमाकर मध्यमा और तर्जनीसे ताली बजाये)।

प्रातःकाल ब्रह्मरूपा गायत्रीमाताका ध्यान—

ॐ बालां विद्यां तु गायत्रीं लोहितां चतुराननाम्।
रक्ताम्बरद्वयोपेतामक्षसूत्रकरां तथा॥
कमण्डलुधरां देवीं हंसवाहनसंस्थिताम्।
ब्रह्माणीं ब्रह्मदैवत्यां ब्रह्मलोकनिवासिनीम्॥
मन्त्रेणावाहयेद्देवीमायान्तीं सूर्यमण्डलात्।

'भगवती गायत्रीका मुख्य मन्त्रके द्वारा सूर्यमण्डलसे आते हुए इस प्रकार ध्यान करना चाहिये कि उनकी किशोरावस्था है और वे ज्ञानस्वरूपिणी हैं। वे रक्तवर्णा एवं चतुर्मुखी हैं। उनके उत्तरीय तथा मुख्य परिधान दोनों ही रक्तवर्णके हैं। उनके हाथमें रुद्राक्षकी माला है। हाथमें कमण्डलु धारण किये वे हंसपर विराजमान हैं। वे सरस्वती-स्वरूपा हैं, ब्रह्मलोकमें निवास करती हैं और ब्रह्माजी उनके पतिदेवता हैं।'

गायत्रीका आवाहन—इसके बाद गायत्रीमाताके आवाहनके लिये निम्नलिखित विनियोग करे—

तेजोऽसीति धामनामासीत्यस्य च परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिर्यजुस्त्रिष्टुबुष्णिहौ छन्दसी आज्यं देवता गायत्र्यावाहने विनियोगः।

पश्चात् निम्नलिखित मन्त्रसे गायत्रीका आवाहन करे—

'ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि। धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि।' (यजु० १।३१)

गायत्रीदेवीका उपस्थान (प्रणाम)—आवाहन करनेपर गायत्री-देवी आ गयी हैं, ऐसा मानकर निम्नलिखित विनियोग पढ़कर आगेके मन्त्रसे उनको प्रणाम करे—

गायत्र्यसीति विवस्वान् ऋषिः स्वराण्महापङ्क्तिश्छन्दः परमात्मा देवता गायत्र्युपस्थाने विनियोगः।

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि। न हि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदो मा प्रापत्।

(बृहदा० ५।१४।७)

[गायत्री-उपस्थानके बाद गायत्री-शापविमोचनका तथा गायत्री-मन्त्र-जपसे पूर्व चौबीस मुद्राओंके करनेका भी विधान है, परंतु नित्य-संध्यावन्दनमें अनिवार्य न होनेपर भी इन्हें जो विशेषरूपसे करनेके इच्छुक हैं, उनके लिये यहाँपर दिया जा रहा है।]

गायत्री-शापविमोचन

ब्रह्मा, वसिष्ठ, विश्वामित्र और शुक्रके द्वारा गायत्री-मन्त्र शप्त है। अतः शाप-निवृत्तिके लिये शाप-विमोचन करना चाहिये।

(१) ब्रह्म-शापविमोचन—विनियोग—**ॐ अस्य श्रीब्रह्म-शापविमोचनमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्भुक्तिमुक्तिप्रदा ब्रह्मशापविमोचनी गायत्री शक्तिर्देवता गायत्री छन्दः ब्रह्मशापविमोचने विनियोगः।**

मन्त्र—

ॐ गायत्रीं ब्रह्मेत्युपासीत यद्रूपं ब्रह्मविदो विदुः।
तां पश्यन्ति धीराः सुमनसो वाचमग्रतः॥

ॐ वेदान्तनाथाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात्। ॐ देवि! गायत्रि! त्वं ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव।

****

(२) वसिष्ठ-शापविमोचन—विनियोग—ॐ अस्य श्रीवसिष्ठ-शापविमोचनमन्त्रस्य निग्रहानुग्रहकर्ता वसिष्ठ ऋषिर्वसिष्ठानुगृहीता गायत्री शक्तिर्देवता विश्वोद्भवा गायत्री छन्दः वसिष्ठशापविमोचनार्थं जपे विनियोगः।

मन्त्र—

ॐ सोऽहमर्कमयं ज्योतिरात्मज्योतिरहं शिवः।
आत्मज्योतिरहं शुक्रः सर्वज्योतीरसोऽस्म्यहम्॥

योनिमुद्रा दिखाकर तीन बार गायत्री जपे।

ॐ देवि ! गायत्रि ! त्वं वसिष्ठशापाद्विमुक्ता भव।

(३) विश्वामित्र-शापविमोचन—विनियोग—ॐ अस्य श्रीविश्वामित्रशापविमोचनमन्त्रस्य नूतनसृष्टिकर्ता विश्वामित्रऋषिर्विश्वामित्रानुगृहीता गायत्री शक्तिर्देवता वाग्देहा गायत्री छन्दः विश्वामित्रशापविमोचनार्थं जपे विनियोगः।

मन्त्र—

ॐ गायत्रीं भजाम्यग्निमुखीं विश्वगर्भां यदुद्भवाः।
देवाश्चक्रिरे विश्वसृष्टिं तां कल्याणीमिष्टकरीं प्रपद्ये॥

ॐ देवि ! गायत्रि ! त्वं विश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव।

(४) शुक्र-शापविमोचन—विनियोग—ॐ अस्य श्रीशुक्रशाप-विमोचनमन्त्रस्य श्रीशुक्रऋषिः अनुष्टुपछन्दः देवी गायत्री देवता शुक्रशापविमोचनार्थं जपे विनियोगः।

मन्त्र—

सोऽहमर्कमयं ज्योतिरर्कज्योतिरहं शिवः।
आत्मज्योतिरहं शुक्रः सर्वज्योतीरसोऽस्म्यहम्॥

ॐ देवि ! गायत्रि ! त्वं शुक्रशापाद्विमुक्ता भव।

प्रार्थना—

ॐ अहो देवि महादेवि संध्ये विद्ये सरस्वति !
अजरे अमरे चैव ब्रह्मयोनिर्नमोऽस्तु ते॥

ॐ देवि गायत्रि त्वं ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव, वसिष्ठशापाद्विमुक्ता

भव, विश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव, शुक्रशापाद्विमुक्ता भव ।

जपके पूर्वकी चौबीस मुद्राएँ

सुमुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा ।
द्विमुखं त्रिमुखं चैव चतुष्पञ्चमुखं तथा ॥
षण्मुखाऽधोमुखं चैव व्यापकाञ्जलिकं तथा ।
शकटं यमपाशं च ग्रथितं चोन्मुखोन्मुखम् ॥
प्रलम्बं मुष्टिकं चैव मत्स्यः कूर्मो वराहकम् ।
सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा ॥
एता मुद्राश्चतुर्विंशज्जपादौ परिकीर्तिताः ॥

(देवीभा० ११ । १७ । ९९-१०१, याज्ञवल्क्यस्मृति, आचाराध्याय, बालम्भट्टी टीका)
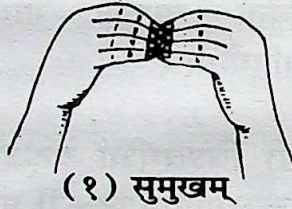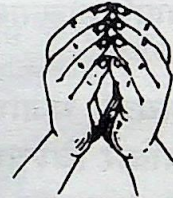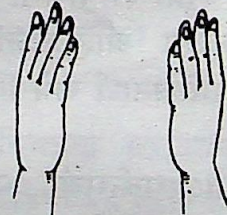
(१) सुमुखम्
(२) सम्पुटम्
(३) विततम्
(४) विस्तृतम्
(५) द्विमुखम्
(६) त्रिमुखम्

****

(१) **सुमुखम्**—दोनों हाथोंकी अँगुलियोंको मोड़कर परस्पर मिलाये। (२) **सम्पुटम्**—दोनों हाथोंको फुलाकर मिलाये। (३) **विततम्**—दोनों हाथोंकी हथेलियाँ परस्पर सामने करे। (४) **विस्तृतम्**—दोनों हाथोंकी अँगुलियाँ खोलकर दोनोंको कुछ अधिक अलग करे। (५) **द्विमुखम्**—दोनों हाथोंकी कनिष्ठिकासे कनिष्ठिका तथा अनामिकासे अनामिका मिलाये। (६) **त्रिमुखम्**—पुनः दोनों मध्यमाओंको मिलाये। (७) **चतुर्मुखम्**—दोनों तर्जनियाँ और मिलाये। (८) **पञ्चमुखम्**—दोनों अँगूठे और मिलाये। (९) **षण्मुखम्**—हाथ वैसे ही रखते हुए दोनों कनिष्ठिकाओंको खोले। (१०) **अधोमुखम्**— उलटे हाथोंकी अँगुलियोंको मोड़े तथा मिलाकर नीचेकी ओर करे। (११) **व्यापकाञ्जलिकम्**—वैसे ही मिले हुए हाथोंको शरीरकी ओर घुमाकर सीधा करे। (१२) **शकटम्**—दोनों हाथोंको उलटाकर अँगूठेसे अँगूठा मिलाकर तर्जनियोंको सीधा रखते हुए मुट्ठी बाँधे। (१३) **यमपाशम्**— तर्जनीसे तर्जनी बाँधकर दोनों मुट्ठियाँ बाँधे। (१४) **ग्रथितम्**—दोनों हाथोंकी अँगुलियोंको परस्पर गूँथे। (१५) **उन्मुखोन्मुखम्**—हाथोंकी पाँचों अँगुलियोंको मिलाकर प्रथम बायेंपर दाहिना, फिर दाहिनेपर बायाँ हाथ रखे। (१६) **प्रलम्बम्**—अँगुलियोंको कुछ मोड़ दोनों हाथोंको उलटाकर नीचेकी ओर करे। (१७) **मुष्टिकम्**—दोनों अँगूठे ऊपर रखते हुए दोनों मुट्ठियाँ बाँधकर मिलाये। (१८) **मत्स्यः**—दाहिने हाथकी पीठपर बायाँ हाथ उलटा रखकर दोनों अँगूठे हिलाये। (१९) **कूर्मः**—सीधे बायें हाथकी मध्यमा, अनामिका तथा कनिष्ठिकाको मोड़कर उलटे दाहिने हाथकी मध्यमा, अनामिकाको उन तीनों अँगुलियोंके नीचे रखकर तर्जनीपर दाहिनी कनिष्ठिका और बायें अँगूठेपर दाहिनी तर्जनी रखे।
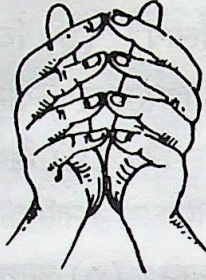
(७) चतुर्मुखम्
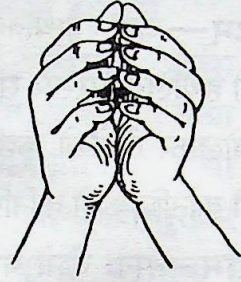
(८) पञ्चमुखम्
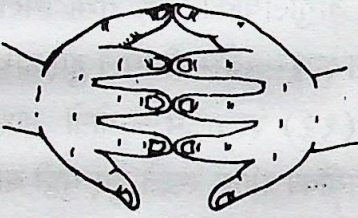
(९) षण्मुखम्
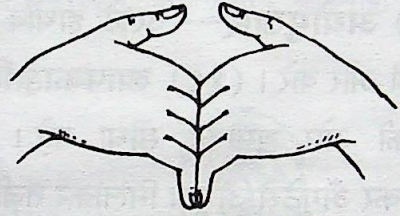
(१०) अधोमुखम्

(११) व्यापकाञ्जलिम्

(१२) शकटम्
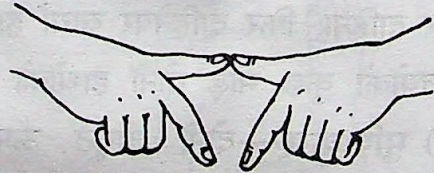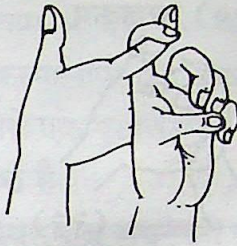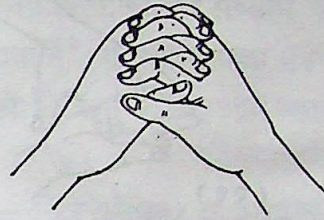
(१३) यमपाशम् (१४) ग्रथितम्
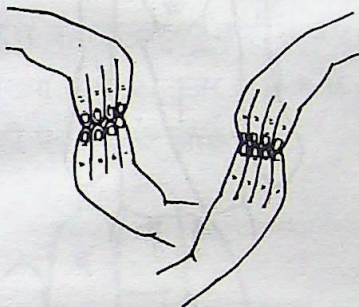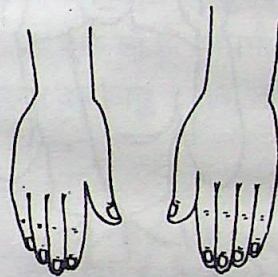
(१५) उन्मुखोन्मुखम् (१६) प्रलम्बम्
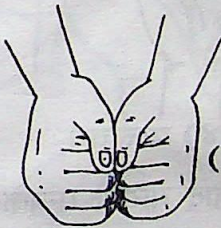
(१७) मुष्टिकम् (१८) मत्स्यः

(२०) **वराहकम्**—दाहिनी तर्जनीको बायें अँगूठेसे मिला, दोनों हाथोंकी अँगुलियोंको परस्पर बाँधे। (२१) **सिंहाक्रान्तम्**—दोनों हाथोंको कानोंके समीप करे। (२२) **महाक्रान्तम्**—दोनों हाथोंकी अँगुलियोंको कानोंके समीप करे। (२३) **मुद्गरम्**— मुट्ठी बाँध, दाहिनी कुहनी बायीं हथेलीपर रखे। (२४) **पल्लवम्**—दाहिने हाथकी अँगुलियोंको मुखके सम्मुख हिलाये।
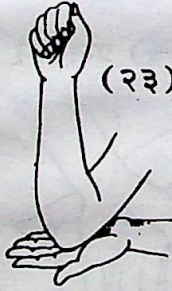
गायत्री-मन्त्रका विनियोग—इसके बाद गायत्री-मन्त्रके जपके लिये विनियोग पढ़े—**ॐकारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दः परमात्मा देवता, ॐ भूर्भुवः स्वरिति महाव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापति-र्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि अग्निवायुसूर्या देवताः, ॐ तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्रऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः ।**

इसके पश्चात् गायत्री-मन्त्रका १०८ बार जप करे । १०८ बार न हो

सके तो कम-से-कम १० बार अवश्य जप किया जाय। संध्यामें गायत्री मन्त्रका करमालापर जप अच्छा माना जाता है[1], गायत्री मन्त्रका २४ लक्ष जप करनेसे एक पुरश्चरण होता है। जपके लिये सब मालाओंमें रुद्राक्षकी माला श्रेष्ठ है।

शक्तिमन्त्र जपनेकी करमाला—चित्र-संख्या१ के अनुसार अङ्क एकसे आरम्भकर दस अङ्कतक अँगूठेसे जप करनेसे एक करमाला होती है (दे० भा० ११।१९।१९) तर्जनीका मध्य तथा अग्रपर्व सुमेरु है। इस प्रकार दस करमाला जप करनेसे जप-संख्या एक सौ हो जायगी, पश्चात् चित्र-संख्या २ के अनुसार अङ्क १ से आरम्भ कर अङ्क ८ तक जप करनेसे १०८ की एक माला होती है।
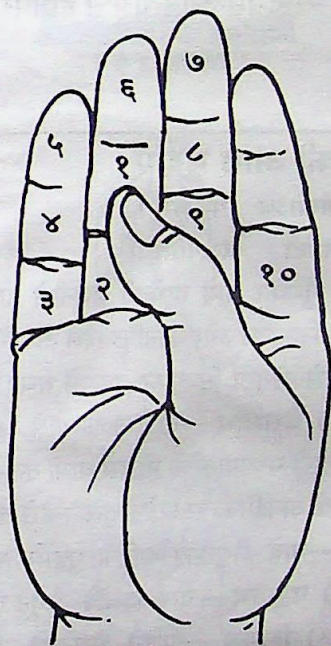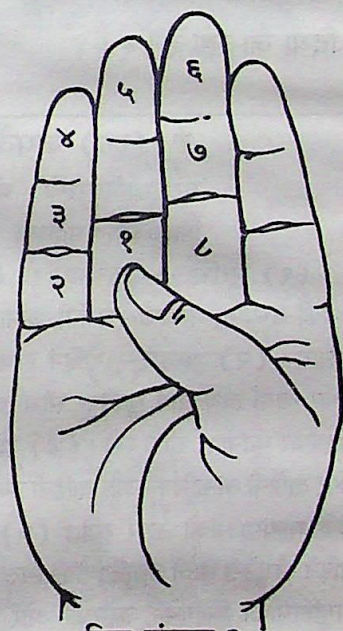
चित्र-संख्या १ चित्र-संख्या २

१-पर्वभिस्तु जपेद् देवीं माला काम्यजपे स्मृता।
गायत्री वेदमूला स्याद् वेदः पर्वसु गीयते॥

****

गायत्री-मन्त्र

'ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।' (शु० यजु० ३६। ३)

गायत्री-मन्त्रका अर्थ—भूः=सत्, भुवः=चित्, स्वः=आनन्द-स्वरूप, सवितुः देवस्य=सृष्टिकर्ता प्रकाशमान परमात्माके, तत् वरेण्यं भर्गः=उस प्रसिद्ध वरणीय तेजका (हम) ध्यान करते हैं, यः=जो परमात्मा, नः=हमारी, धियः=बुद्धिको (सत्की ओर) प्रचोदयात्=प्रेरित करे।

[गायत्रीमन्त्र-जपके बाद आठ मुद्राएँ, गायत्रीकवच तथा गायत्री-तर्पण करनेका विधान है, जिसे नित्य संध्या-वन्दनमें अनिवार्य न होनेपर भी यहाँ दिया जा रहा है] *।

---

* (क) जपके बादकी आठ मुद्राएँ

सुरभिर्ज्ञानवैराग्ये योनिः शंखोऽथ पङ्कजम्।
लिङ्गनिर्वाणमुद्राश्च जपान्तेऽष्टौ प्रदर्शयेत्॥

(१) **सुरभिः**—दोनों हाथोंकी अँगुलियाँ गूँथकर बायें हाथकी तर्जनीसे दाहिने हाथकी मध्यमा, मध्यमासे तर्जनी, अनामिकासे कनिष्ठिका और कनिष्ठिकासे अनामिका मिलाये। (२) **ज्ञानम्**—दाहिने हाथकी तर्जनीसे अँगूठा मिलाकर हृदयमें तथा इसी प्रकार बायाँ हाथ बायें घुटनेपर सीधा रखे। (३) **वैराग्यम्**—दोनों तर्जनियोंसे अँगूठे मिलाकर घुटनोंपर सीधे रखे। (४) **योनिः**—दोनों मध्यमाओंके नीचेसे बायीं तर्जनीके ऊपर दाहिनी अनामिका और दाहिनी तर्जनीपर बायीं अनामिका रख दोनों तर्जनियोंसे बाँध, दोनों मध्यमाओंको ऊपर रखे। (५) **शंखः**—बायें अँगूठेको दाहिनी मुट्ठीमें बाँध, दाहिने अँगूठेसे बायीं अंगुलियोंको मिलाये। (६) **पङ्कजम्**—दोनों हाथोंके अँगूठे तथा अँगुलियोंको मिलाकर ऊपरकी ओर करे। (७) **लिङ्गम्**—दाहिने अँगूठेको सीधा रखते हुए दोनों हाथोंकी अंगुलियोंको गूँथकर बायाँ अँगूठा दाहिने अँगूठेकी जड़के ऊपर रखे। (८) **निर्वाणम्**—उलटे बायें हाथपर दाहिना हाथ सीधा रख, अँगुलियोंको परस्पर गूँथ, दोनों हाथ अपनी ओरसे घुमा, दोनों तर्जनियोंको सीधा कानके समीप करे।

सूर्य-प्रदक्षिणा—

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे॥

भगवान्‌को जपका अर्पण—अन्तमें भगवान्‌को यह वाक्य
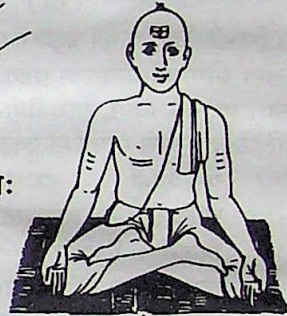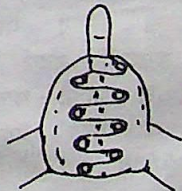
बोलते हुए जप निवेदित करे—**अनेन गायत्रीजपकर्मणा सर्वान्तर्यामी भगवान् नारायणः प्रीयतां न मम।**

गायत्री देवीका विसर्जन—निम्नलिखित विनियोगके साथ आगे बताये गये मन्त्रसे गायत्रीदेवीका विसर्जन करे—

(ख) गायत्री-कवच

प्रथम निम्नलिखित वाक्य पढ़कर गायत्री-कवचका विनियोग करे—

ॐ अस्य श्रीगायत्रीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दो गायत्री देवता ॐ भूः बीजम्, भुवः शक्तिः, स्वः कीलकम्, गायत्रीप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

निम्नलिखित मन्त्रोंसे गायत्रीमाताका ध्यान करे—

पञ्चवक्त्रां दशभुजां सूर्यकोटिसमप्रभाम्।
सावित्रीं ब्रह्मवरदां चन्द्रकोटिसुशीतलाम्॥
त्रिनेत्रां सितवक्त्रां च मुक्ताहारविराजिताम्।
वराभयाङ्कुशकशाहेमपात्राक्षमालिकाम्॥
शङ्खचक्राब्जयुगलं कराभ्यां दधतीं वराम्।
सितपङ्कजसंस्थां च हंसारूढां सुखस्मिताम्॥
ध्यात्वैवं मानसाम्भोजे गायत्रीकवचं जपेत्।

तदनन्तर गायत्रीकवचका पाठ करे—

ॐ ब्रह्मोवाच

विश्वामित्र ! महाप्राज्ञ ! गायत्रीकवचं शृणु।
यस्य विज्ञानमात्रेण त्रैलोक्यं वशयेत् क्षणात्॥
सावित्री मे शिरः पातु शिखायाममृतेश्वरी।
ललाटं ब्रह्मदैवत्या भ्रुवौ मे पातु वैष्णवी॥
कर्णौ मे पातु रुद्राणी सूर्या सावित्रिकाऽम्बिके।
गायत्री वदनं पातु शारदा दशनच्छदौ॥
द्विजान् यज्ञप्रिया पातु रसनायां सरस्वती।
सांख्यायनी नासिकां मे कपोलौ चन्द्रहासिनी॥
चिबुकं वेदगर्भा च कण्ठं पात्वघनाशिनी।
स्तनौ मे पातु इन्द्राणी हृदयं ब्रह्मवादिनी॥
उदरं विश्वभोक्त्री च नाभौ पातु सुरप्रिया।
जघनं नारसिंही च पृष्ठं ब्रह्माण्डधारिणी॥
पार्श्वौ मे पातु पद्माक्षी गुह्यं गोगोप्त्रिकाऽवतु।
ऊर्वोरोंकाररूपा च जान्वोः संध्यात्मिकाऽवतु॥
जङ्घयोः पातु अक्षोभ्या गुल्फयोर्ब्रह्मशीर्षका।
सूर्या पदद्वयं पातु चन्द्रा पादाङ्गुलीषु च॥

विनियोग—'उत्तमे शिखरे' इत्यस्य वामदेव ऋषिरनुष्टुप् छन्दः गायत्री देवता गायत्रीविसर्जने विनियोगः।

गायत्रीके विसर्जनका मन्त्र—

ॐ उत्तमे शिखरे देवी भूम्यां पर्वतमूर्धनि।
ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि! यथासुखम्॥

(तै० आ० प्र० १० अ० १०)

संध्योपासनकर्मका समर्पण—इसके बाद नीचे लिखा वाक्य पढ़कर इस संध्योपासनकर्मको भगवान्‌को समर्पित कर दे—

'अनेन संध्योपासनाख्येन कर्मणा श्रीपरमेश्वरः प्रीयतां न मम। ॐ तत्सत् श्रीब्रह्मार्पणमस्तु।'

फिर भगवान्‌का स्मरण करे—

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥
श्रीविष्णवे नमः, श्रीविष्णवे नमः, श्रीविष्णवे नमः॥*
श्रीविष्णुस्मरणात् परिपूर्णतास्तु।

सर्वाङ्गं वेदजननी पातु मे सर्वदाऽनघा।
इत्येतत् कवचं ब्रह्मन् गायत्र्याः सर्वपावनम्।
पुण्यं पवित्रं पापघ्नं सर्वरोगनिवारणम्॥
त्रिसन्ध्यं यः पठेद्विद्वान् सर्वान् कामानवाप्नुयात्।
सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः स भवेद्वेदवित्तमः॥
सर्वयज्ञफलं प्राप्य ब्रह्मान्ते समवाप्नुयात्।
प्राप्नोति जपमात्रेण पुरुषार्थांश्चतुर्विधान्॥

॥ श्रीविश्वामित्रसंहितोक्तं गायत्रीकवचं सम्पूर्णम्॥

(ग) गायत्रीतर्पण (केवल प्रातःसंध्यामें करे)

ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिः सविता देवता गायत्री छन्दः गायत्रीतर्पणे विनियोगः। ॐ भूः ऋग्वेदपुरुषं तर्पयामि। ॐ भुवः यजुर्वेदपुरुषं त०। ॐ स्वः सामवेदपुरुषं त०। ॐ महः अथर्ववेदपुरुषं त०। ॐ जनः इतिहासपुराणपुरुषं त०। ॐ तपः सर्वागमपुरुषं त०। ॐ सत्यं सत्यलोकपुरुषं त०। ॐ भूः भूर्लोकपुरुषं त०। ॐ भुवः भुवर्लोकपुरुषं त०। ॐ स्वः स्वर्लोकपुरुषं त०। ॐ भूः एकपदां गायत्रीं त०। ॐ भुवः द्विपदां गायत्रीं त०। ॐ स्वः त्रिपदां गायत्रीं त०। ॐ भूर्भुवः स्वः चतुष्पदां गायत्रीं त०। ॐ उषसीं त०। ॐ गायत्रीं त०। ॐ सावित्रीं त०। ॐ सरस्वतीं त०। ॐ वेदमातरं त०। ॐ पृथिवीं त०। ॐ अजां त०। ॐ कौशिकीं त०। ॐ सांकृतिं त०। ॐ सार्वजितीं तर्पयामि। ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु॥ (देवीभागवत)

* तत्सद्ब्रह्मार्पणं कर्म कृत्वा त्रिर्विष्णुं स्मरेत्। (आचारभूषण)

****

संध्या समाप्त होनेपर पात्रोंमें बचा हुआ जल ऐसे स्थानमें या वृक्षकी जड़में गिरा दे जहाँ किसीका पाँव न पड़े। संध्या-समाप्तिके बाद आसनके नीचे किंचित् जल गिराकर उससे मस्तकमें तिलक करे।

═══ ★ ═══

मध्याह्न-संध्या

(प्रातः-संध्याके अनुसार करे)

प्राणायामके बाद **'ॐ सूर्यश्च मेति'** के विनियोग तथा आचमन-मन्त्रके स्थानपर नीचे लिखा विनियोग तथा मन्त्र पढ़े।

विनियोग—ॐ आपः पुनन्त्विति ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः[१]।

आचमन—ॐ आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथ्वी पूता पुनातु माम्। पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम्। यदुच्छिष्टमभोज्यं च यद्वा दुश्चरितं मम। सर्वं पुनन्तु मामापोऽसतां च प्रतिग्रहꣳ स्वाहा।

(तै० आ० प्र० १०, अ० २३)

उपस्थान—चित्रके अनुसार दोनों हाथ ऊपर करे।

अर्घ्य—सीधे खड़े होकर सूर्यको एक अर्घ्य दे।

विष्णुरूपा गायत्रीका ध्यान—

१-सायं'अग्निश्च मे' त्युक्त्वा प्रातः सूर्येत्यपः पिबेत्।
आपः पुनन्तु मध्याह्ने ततश्चाचमनं चरेत्॥

(भरद्वाज, ब्रह्मोक्त याज्ञवल्क्यसंहिता)

(शब्दान्तरके साथ लघ्वाश्वलायनस्मृ० ३६-३७)

ॐ मध्याह्ने विष्णुरूपां च तार्क्ष्यस्थां पीतवाससाम्।
युवतीं च यजुर्वेदां सूर्यमण्डलसंस्थिताम्॥

सूर्यमण्डलमें स्थित युवावस्थावाली, पीला वस्त्र, शङ्ख, चक्र, गदा तथा पद्म धारण कर गरुडपर बैठी हुई यजुर्वेदस्वरूपा गायत्रीका ध्यान करे।

—★—

सायं-संध्या

(प्रातः-संध्याके अनुसार करे)

उत्तराभिमुख हो सूर्य रहते करना उत्तम है। प्राणायामके बाद '**ॐ सूर्यश्च मेति॰**' के विनियोग तथा आचमन-मन्त्रके स्थानपर नीचे लिखा विनियोग तथा मन्त्र पढ़कर आचमन करे।

विनियोग—ॐ अग्निश्च मेति रुद्र ऋषिः प्रकृतिश्छन्दोऽग्निर्देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

आचमन—ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यदह्ना पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलुम्पतु। यत्किंच दुरितं मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।

(तै॰ आ॰ प्र॰ १० अ॰ २४)

अर्घ्य—पश्चिमाभिमुख होकर बैठे हुए तीन अर्घ्य दे।

****

उपस्थान—चित्रके अनुसार दोनों हाथ बंदकर कमलके सदृश करे।

सायंकालीन सूर्योपस्थान

शिवरूपा गायत्रीका ध्यान—

ॐ सायाह्ने शिवरूपां च वृद्धां वृषभवाहिनीम्।
सूर्यमण्डलमध्यस्थां सामवेदसमायुताम्॥

सूर्यमण्डलमें स्थित वृद्धारूपा त्रिशूल, डमरू, पाश तथा पात्र लिये वृषभपर बैठी हुई सामवेदस्वरूपा गायत्रीका ध्यान करे।

आशौचमें संध्योपासनकी विधि

महर्षि पुलस्त्यने जननाशौच एवं मरणाशौचमें संध्योपासनकी

****

अबाधित्त आवश्यकता बतलायी है[१]। किंतु आशौचमें इसकी प्रक्रिया भिन्न हो जाती है। शास्त्रोंने इसमें मानसी संध्याका विधान किया है[२]। इसमें उपस्थान नहीं होता[३]। यह संध्या आरम्भसे सूर्यके अर्घ्यतक ही सीमित रहती है[४]। यहाँ दस बार गायत्रीका जप आवश्यक है[५]। इतनेसे संध्योपासनका फल प्राप्त हो जाता है[६]।

एक मत यह है कि इसमें कुश और जलका भी प्रयोग न हो[७]। निर्णीत मत यह है कि बिना मन्त्र पढ़े प्राणायाम करे, मार्जन-मन्त्रोंका मनसे उच्चारण कर, मार्जन करे। गायत्रीका सम्यक् उच्चारण कर सूर्यको अर्घ्य दे[८]। फिर पैठीनसिके अनुसार सूर्यको जलाञ्जलि देकर प्रदक्षिणा और नमस्कार करे[९]। आपत्तिके समय, रास्तेमें और अशक्त होनेकी स्थितिमें भी मानसी संध्या की जाती है[१०]।

══ ★ ══

पञ्चमहायज्ञ

गृहस्थके घरमें पाँच स्थल ऐसे हैं, जहाँ प्रतिदिन न चाहनेपर भी जीव-हिंसा होनेकी सम्भावना रहती हैं। चूल्हा (अग्नि जलानेमें), चक्की

१-संध्यामिष्टिं च होमं च यावज्जीवं समाचरेत्।
न त्यजेत् सूतके वापि त्यजन् गच्छत्यधोगतिम्॥

२-सूतके मानसीं संध्यां कुर्याद् वै सुप्रयत्नतः। (स्मृतिसमुच्चय)

३-उपस्थानं न चैव हि। (भारद्वाज, आचारभूषण)

४-अर्घ्यान्ता मानसी संध्या। (निर्णयसिन्धु)

५-६-गायत्रीं दशधा जप्त्वा संध्यायाः फलमाप्नुयात्। (स्मृतिसमुच्चय)

७-कुशवारिविवर्जिता। (निर्णयसिन्धु)

८-सूतके मृतके कुर्यात् प्राणायाममन्त्रकम्। तथा मार्जनमन्त्रांस्तु मनसोच्चार्य मार्जयेत्॥
गायत्रीं सम्यगुच्चार्य सूर्यायार्घ्यं निवेदयेत्। मार्जनं तु न वा कार्यमुपस्थानं न चैव हि॥
(भारद्वाज आचारभूषण १०३-१०४)

९-सूतके तु सावित्र्याञ्जलिं प्रक्षिप्य प्रदक्षिणम्।
कृत्वा सूर्यं तथा ध्यायन् नमस्कुर्यात् पुनः पुनः॥

१०-(क) 'आपन्नश्चाशुचिः काले तिष्ठन्नपि जपेद् दश। (आचारभूषण पृ० १०४)

(ख) आपद्यध्वन्यशक्तश्च संध्यां कुर्वीत मानसीम्। (गौतम)

(पीसनेमें), बुहारी (बुहारनेमें), ऊखल (कूटनेमें), जल रखनेके स्थान (जलपात्र रखनेपर नीचे जीवोंके दबने) से जो पाप होते हैं, उन पापोंसे मुक्त होनेके लिये ब्रह्मयज्ञ—वेद-वेदाङ्गादि तथा पुराणादि आर्षग्रन्थोंका स्वाध्याय, पितृयज्ञ—श्राद्ध तथा तर्पण, देवयज्ञ—देवताओंका पूजन एवं हवन, भूतयज्ञ—बलिवैश्वदेव तथा पञ्चबलि, मनुष्ययज्ञ—अतिथि-सत्कार—इन पाँचों यज्ञोंको प्रतिदिन अवश्य करना चाहिये।

पञ्च सूना गृहस्थस्य चुल्ली पेषण्युपस्करः।
कण्डनी चोदकुम्भश्च बध्यते यास्तु वाहयन्॥
तासां क्रमेण सर्वासां निष्कृत्यर्थं महर्षिभिः।
पञ्च क्लृप्ता महायज्ञाः प्रत्यहं गृहमेधिनाम्॥
अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।
होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्॥

(मनु० ३। ६८—७०)

ब्रह्मयज्ञ

संध्यावन्दनके बाद द्विजमात्रको प्रतिदिन वेद-पुराणादिका पठन-पाठन करना चाहिये अथवा नीचे लिखे मन्त्रोंका पाठ करे। (समयाभाव होनेपर केवल गायत्री महामन्त्रके जपनेसे भी ब्रह्मयज्ञकी पूर्ति हो जाती है[1]।)

देश-कालके स्मरणपूर्वक '**अथ ब्रह्मयज्ञाख्यं कर्म करिष्ये**'—ऐसा उच्चारण कर संकल्प करे।

ऋग्वेद—ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।

१-अवेदविन्महायज्ञान् कर्तुमिच्छंस्तु यो द्विजः।
तारव्याहृतिसंयुक्तां सावित्रीं त्रिः समुच्चरेत्॥
(आचारेन्दुमें अग्निस्मृति)

यजुर्वेद—ओ३म् इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्व मघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघशँ्सो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ।

सामवेद—ओ३म् अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये । निहोता सत्सु बर्हिषि ।

अथर्ववेद—ओ३म् शं नो देवीरभीष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्त्रवन्तु नः ।

निरुक्तम्—समाम्नायः समाम्नातः ।

छन्द—मयरसतजभनलगसंमितम् ।

निघण्टु—गौः ग्मा ।

ज्यौतिषम्—पञ्चसंवत्सरमयम् ।

शिक्षा—अथ शिक्षां प्रवक्ष्यामि ।

व्याकरणम्—वृद्धिरादैच् ।

कल्पसूत्रम्—अथातोऽधिकारः फलयुक्तानि कर्माणि ।

गृह्यसूत्रम्—अथातो गृह्यस्थालीपाकानां कर्म ।

न्यायदर्शनम्—प्रमाणप्रमेयसंशयप्रयोजनदृष्टान्तसिद्धान्तावयवतर्कनिर्णयवादजल्पवितण्डाहेत्वाभासच्छलजातिनिग्रहस्थानानां तत्त्वज्ञानान्निःश्रेयसाधिगमः ।

वैशेषिकदर्शनम्—अथातो धर्मं व्याख्यास्यामः । यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः ।

योगदर्शनम्—अथ योगानुशासनम् । योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः ।

सांख्यदर्शनम्—अथ त्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः ।

भारद्वाजकर्ममीमांसा—अथातो धर्मजिज्ञासा । धारको धर्मः ।

जैमिनीयकर्ममीमांसा—अथातो धर्मजिज्ञासा, चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः ।

ब्रह्ममीमांसा—अथातो ब्रह्मजिज्ञासा। जन्माद्यस्य यतः। शास्त्रयोनित्वात्। तत्तु समन्वयात्।

स्मृतिः—

मनुमेकाग्रमासीनमभिगम्य महर्षयः।
प्रतिपूज्य यथान्यायमिदं वचनमब्रुवन्॥

रामायणम्—

तपःस्वाध्यायनिरतं तपस्वी वाग्विदां वरम्।
नारदं परिपप्रच्छ वाल्मीकिर्मुनिपुङ्गवम्॥

भारतम्—

नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्॥

पुराणम्—

जन्माद्यस्य यतोऽन्वयादितरतश्चार्थेष्वभिज्ञः स्वराट्
तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये मुह्यन्ति यत्सूरयः।
तेजोवारिमृदां यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गोऽमृषा
धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं सत्यं परं धीमहि॥

तन्त्रम्—

आचारमूला जातिः स्यादाचारः शास्त्रमूलकः।
वेदवाक्यं शास्त्रमूलं वेदः साधकमूलकः॥
साधकश्च क्रियामूलः क्रियापि फलमूलिका।
फलमूलं सुखं देवि सुखमानन्दमूलकम्॥

———★———

तर्पण (पितृयज्ञ)

तर्पणका फल—

एकैकस्य तिलैर्मिश्रांस्त्रींस्त्रीन् दद्याज्जलाञ्जलीन्।
यावज्जीवकृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यति ॥

एक-एक पितरको तिलमिश्रित जलकी तीन-तीन अञ्जलियाँ प्रदान करे। (इस प्रकार तर्पण करनेसे) जन्मसे आरम्भकर तर्पणके दिनतक किये पाप उसी समय नष्ट हो जाते हैं।

तर्पण न करनेसे प्रत्यवाय (पाप)—ब्रह्मादिदेव एवं पितृगण तर्पण न करनेवाले मानवके शरीरका रक्तपान करते हैं अर्थात् तर्पण न करनेके पापसे शरीरका रक्त-शोषण होता है।

'अतर्पिताः शरीराद्रुधिरं पिबन्ति'

—इससे यह सिद्ध होता है कि गृहस्थ मानवको प्रतिदिन तर्पण अवश्य करना चाहिये।

तर्पणके योग्य पात्र—सोना, चाँदी, ताँबा, काँसाका पात्र पितरोंके तर्पणमें प्रशस्त माना गया है। मिट्टी तथा लोहेका पात्र सर्वथा वर्जित है[१]।

तिल-तर्पणका निषेध—सप्तमी एवं रविवारको, घरमें, जन्मदिनमें, दास, पुत्र और स्त्रीकी कामनावाला मनुष्य तिलसे तर्पण न करे। नन्दा (प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी) तिथि, शुक्रवार, कृत्तिका, मघा एवं भरणी नक्षत्र, रविवार तथा गजच्छायायोगमें तिलमिले जलसे कदापि तर्पण न करे[२]।

कुशाके अग्रभागसे देवताओंका, मध्यसे मनुष्योंका और मूल तथा अग्रभागसे पितरोंका तर्पण करे[३]।

घरमें, ग्रहण, पितृश्राद्ध, व्यतीपातयोग, अमावास्या तथा संक्रान्तिके दिन निषेध होनेपर भी तिलसे तर्पण करे। किंतु अन्य दिनोंमें घरमें तिलसे तर्पण न करे[४]।

१-हैमं रौप्यमयं पात्रं ताम्रं कांस्यसमुद्भवम्।
पितॄणां तर्पणे पात्रं मृण्मयं तु परित्यजेत्॥
(आह्निकसूत्रा०)

२-सप्तम्यां भानुवारे च गृहे जन्मदिने तथा।
भृत्यपुत्रकलत्रार्थी न कुर्यात् तिलतर्पणम्॥
नन्दायां भार्गवदिने कृत्तिकासु मघासु च।
भरण्यां भानुवारे च गजच्छायाह्वये तथा।
तर्पणं नैव कुर्वीत तिलमिश्रं कदाचन॥
(आचारमयूख)

३-कुशाग्रैस्तर्पयेद्देवान् मनुष्यान् कुशमध्यतः।
द्विगुणीकृत्य मूलाग्रैः पितॄन् संतर्पयेद्द्विजः॥

४-उपरागे पितृश्राद्धे पातेऽमायां च संक्रमे।
निषेधेऽपीह सर्वत्र तिलैस्तर्पणमाचरेत्॥
(आ० सूत्रा० भाग ४, कात्यायनका वचन)

तर्पण-प्रयोग-विधि[१]

गायत्रीमन्त्रसे शिखा बाँधकर तिलक लगाकर प्रथम दाहिनी अनामिकाके मध्य पोरमें दो कुशों और बायीं अनामिकामें तीन कुशोंकी पवित्री[२] धारण कर ले। फिर हाथमें त्रिकुश, यव, अक्षत और जल लेकर निम्नलिखित संकल्प पढ़े—

अद्य श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणं करिष्ये। (पृ० ५के अनुसार संकल्प करे)

आवाहन—इसके बाद ताँबेके पात्रमें जल और चावल डालकर त्रिकुशको पूर्वाग्र रखकर उस पात्रको दायें हाथमें लेकर बायें हाथसे ढककर नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर देव-ऋषियोंका आवाहन करे।

आवाहन-मन्त्र—

ब्रह्मादयः सुराः सर्वे ऋषयः सनकादयः।
आगच्छन्तु महाभागा ब्रह्माण्डोदरवर्तिनः॥

(१) देव-तर्पण-विधि—देव तथा ऋषि-तर्पणमें—१-पूरब दिशाकी ओर मुँह करे। २-जनेऊको सव्य रखे। ३-दाहिना घुटना जमीनपर लगाकर बैठे[३]। ४-अर्घ्यपात्रमें चावल[४] छोड़े।

१-संध्योपासनमें सूर्यार्घ्यसे मन्देहादि राक्षस भस्म होते हैं और तर्पणसे समस्त ब्रह्माण्डका कल्याण होता है। इस तर्पण-प्रयोगके द्वारा थोड़े समयमें हमसे जो इतना महान् कार्य हो जाता है, वह भगवान्‌की असीम दयाका सूचक है, क्योंकि ऐसा विधान हमें उन्होंने दिया। इसलिये प्रत्येक अधिकारीको इसका अनुष्ठान प्रतिदिन अवश्य करना चाहिये। गृह्यसूत्रमें भगवान्‌का यह आदेश है—

'नित्यमेव स्नात्वाऽद्भिर्देवानृषींश्च तर्पयन्ति तर्पयन्ति।' पुराणमें लिखा है—**'तर्पयेदन्वहं द्विजः।'**

२-बिना कुश आदि पहने केवल हाथसे तर्पण नहीं करना चाहिये—

खड्गमौक्तिकहस्तेन कर्तव्यं पितृतर्पणम्।
मणिकाञ्चनदर्भैर्वा न शुद्धेन कदाचन॥

३-**दक्षिणजानुभूलग्नो देवेभ्यः सेचयेज्जलम्।** (वृद्धपराशर)

४-**देवान् ब्रह्मऋषींश्चैव तर्पयेदक्षतोदकैः।** (कूर्मपुराण)

५-तीनों कुशोंको पूर्वकी ओर अग्रभाग[१] कर रखे। ६-जलकी अञ्जलि एक-एक हो[२]। ७-देवतीर्थसे अर्थात् दायें हाथकी अँगुलियोंके अग्रभागसे दे। (देवतीर्थका चित्र पृ०-सं० ४४ में देखें) ८-जलाञ्जलिको सोना, चाँदी, ताँबा अथवा काँसेके बर्तनमें डाले। यदि नदीमें तर्पण किया जाय तो दोनों हाथोंको मिलाकर जलसे भरकर गौकी सींग-जितना ऊँचा उठाकर जलमें ही अञ्जलि डाल दे[३]।

निम्नलिखित प्रत्येक नाम-मन्त्रके बाद **'तृप्यताम्'** कहकर एक-एक अञ्जलि जल देता जाय।

ॐ ब्रह्मा तृप्यताम्। ॐ विष्णुस्तृप्यताम्। ॐ रुद्रस्तृप्यताम्। ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम्। ॐ देवास्तृप्यन्ताम्। ॐ छन्दांसि तृप्यन्ताम्। ॐ वेदास्तृप्यन्ताम्। ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्। ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम्। ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ संवत्सरः सावयवस्तृप्यताम्। ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम्। ॐ अप्सरसस्तृप्यन्ताम्। ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम्। ॐ नागास्तृप्यन्ताम्। ॐ सागरास्तृप्यन्ताम्। ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम्। ॐ सरितस्तृप्यन्ताम्। ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम्। ॐ रक्षांसि तृप्यन्ताम्। ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम्। ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतानि तृप्यन्ताम्। ॐ पशवस्तृप्यन्ताम्। ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम्। ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यताम्।

(२) ऋषि-तर्पण—इसी प्रकार निम्नाङ्कित मन्त्रवाक्योंसे मरीचि आदि ऋषियोंको भी एक-एक अञ्जलि जल दे—

ॐ मरीचिस्तृप्यताम्। ॐ अत्रिस्तृप्यताम्। ॐ अङ्गिरास्तृप्यताम्। ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम्। ॐ पुलहस्तृप्यताम्। ॐ क्रतुस्तृप्यताम्।

१-कुशाग्रेषु सुरांस्तर्पयेत्। (ब्रह्मपुराण)

२-एकैकमञ्जलिं देवान्। (व्यास)

३-द्वौ हस्तौ युग्मतः कृत्वा पूरयेदुदकाञ्जलिम्।
गोशृङ्गमात्रमुद्धृत्य जलमध्ये जलं क्षिपेत्॥ (उशना)

ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम्। ॐ प्रचेतास्तृप्यताम्। ॐ भृगुस्तृप्यताम्। ॐ नारदस्तृप्यताम्।

(३) दिव्य मनुष्य-तर्पण—दिव्य मनुष्य-तर्पणमें—१-उत्तर दिशाकी ओर मुँह करे [1]। २-जनेऊको कंठीकी तरह कर ले। ३-गमछेको भी कंठीकी तरह कर ले। ४-सीधा बैठे। कोई घुटना जमीनपर न लगाये [2]। ५-अर्घ्यपात्रमें जौ छोड़े। ६-तीनों कुशोंको उत्तराग्र रखे । प्राजापत्य

प्राजापत्यतीर्थ

(काय) तीर्थसे दे अर्थात् कुशोंको दाहिने हाथकी कनिष्ठिकाके मूलभागमें रखकर यहींसे जल दे। ८-दो-दो अञ्जलियाँ दे [3]।

१-ततः कृत्वा निवीतं तु यज्ञसूत्रमुदङ्मुखः।
प्राजापत्येन तीर्थेन मनुष्यांस्तर्पयेत् पृथक्॥
(विष्णु)

२-मनुष्यतर्पणं कुर्वन्न किञ्चिज्जानु पातयेत्। (पुलस्त्य)

३-द्वौ द्वौ तु सनकादयः अर्हन्ति। (व्यास)

अञ्जलिदानके मन्त्र—

ॐ सनकस्तृप्यताम् (२) । ॐ सनन्दनस्तृप्यताम् (२) । ॐ सनातनस्तृप्यताम् (२) । ॐ कपिलस्तृप्यताम् (२) । ॐ आसुरिस्तृप्यताम् (२) । ॐ वोढुस्तृप्यताम् (२) । ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम् (२) ।

(४) दिव्य पितृ-तर्पण—पितृ-तर्पणमें—१-दक्षिण दिशाकी ओर मुँह करे। २-अपसव्य हो जाय अर्थात् जनेऊको दाहिने कंधेपर रखकर बायें हाथके नीचे ले जाय[1]। ३-गमछेको भी दाहिने कंधेपर रखे। ४-बायाँ घुटना जमीनपर लगाकर बैठे[2]। ५-अर्घ्य-पात्रमें कृष्ण तिल छोड़े[3]। ६-कुशोंको बीचसे मोड़कर उनकी जड़ और अग्रभागको दाहिने हाथमें तर्जनी और अँगूठेके बीचमें रखे। ७-पितृतीर्थ (चित्र पृ०-सं० ४४ में देखें) से अर्थात् अँगूठे और तर्जनीके मध्यभागसे अञ्जलि दे। ८-तीन-तीन अञ्जलियाँ दे[4]।

उपर्युक्त नियमसे प्रत्येक मन्त्रसे तीन-तीन अञ्जलियोंको देनेके मन्त्र इस प्रकार हैं—

ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः[5]। ॐ सोमस्तृप्यताम्

१-जिनके पास यज्ञोपवीत नहीं है, उन्हें उत्तरीय (गमछे) के द्वारा तर्पणकार्य करना चाहिये।

२-**भूलग्नसव्यजानुश्च दक्षिणाग्रकुशेन च।**
पितॄन् संतर्पयेत्....। (वृद्धपराशर)

३-**पितॄन् भक्त्या तिलैः कृष्णैः....।** (माधव)

४-**अर्हन्ति पितरस्त्रींस्त्रीन्।** (व्यास)

५-कुछ पद्धतियोंके अनुसार तर्पणमें केवल 'स्वधा' का प्रयोग चलता है। परंतु

इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः (३)। ॐ यमस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः (३)। ॐ अर्यमा तृप्यताम् इदं सतिलं जलम् (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः (३)। ॐ अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तेभ्यः स्वधा नमः, तेभ्यः स्वधा नमः, तेभ्यः स्वधा नमः। ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तेभ्यः स्वधा नमः (३)। ॐ बर्हिषदः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तेभ्यः स्वधा नमः (३)।

(५) यम-तर्पण—इसी प्रकार निम्नलिखित प्रत्येक नामसे यमराजको पितृतीर्थसे ही दक्षिणाभिमुख तीन-तीन अञ्जलियाँ दे—

ॐ यमाय नमः (३)। ॐ धर्मराजाय नमः (३)। ॐ मृत्यवे नमः (३)। ॐ अन्तकाय नमः (३)। ॐ वैवस्वताय नमः (३)। ॐ कालाय नमः (३)। ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः (३)। ॐ औदुम्बराय नमः (३)। ॐ दध्नाय नमः (३)। ॐ नीलाय नमः (३)। ॐ परमेष्ठिने नमः (३)। ॐ वृकोदराय नमः (३)। ॐ चित्राय नमः (३)। ॐ चित्रगुप्ताय नमः (३)[१]।

(६) मनुष्यपितृ-तर्पण—पितरोंका तर्पण करनेके पूर्व निम्नाङ्कित मन्त्रोंसे हाथ जोड़कर प्रथम उनका आवाहन करे—

ॐ उशन्तस्त्वा नि धीमह्युशन्तः समिधीमहि।
उशन्नुशत आ वह पितॄन् हविषे अत्तवे॥

(यजु॰ १९।७०)

पारस्करगृह्यसूत्रके हरिहरभाष्यमें तर्पण-प्रयोग-निरूपणके अन्तर्गत 'स्वधा नमः' प्रयोग दिया गया है, जिसके अनुसार यहाँ तर्पणमें 'स्वधा नमः' का प्रयोग ही उचित है।

१-**यमाय धर्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च।**
वैवस्वताय कालाय सर्वभूतक्षयाय च॥
औदुम्बराय दध्नाय नीलाय परमेष्ठिने।
वृकोदराय चित्राय चित्रगुप्ताय वै नमः॥

(मत्स्यपु॰ १०२।२३—२४, कात्यायनपरिशिष्ट)

आ यन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः।
अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्॥

(यजु० १९।५८)

यदि ऊपर लिखे वेदमन्त्रोंका शुद्ध उच्चारण सम्भव न हो तो निम्नलिखित वाक्यका उच्चारण कर पितरोंका आवाहन करे—

ॐ आगच्छन्तु मे पितर इमं गृह्णन्तु जलाञ्जलिम्।

इसी तरह नीचे लिखे मन्त्रोंका भी शुद्ध उच्चारण सम्भव न हो तो मन्त्रोंको छोड़कर केवल '**अमुकगोत्रः अस्मत्पिता........अमुकस्वरूपः**' आदि संस्कृतवाक्य बोलकर तिलके साथ तीन-तीन जलाञ्जलियाँ दे, यथा—

अमुकगोत्रः अस्मत्पिता अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः।

अमुकगोत्रः अस्मत्पितामहः अमुकशर्मा रुद्ररूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः (३)।

अमुकगोत्रः अस्मत्प्रपितामहः अमुकशर्मा आदित्यरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः (३)।

अमुकगोत्रा अस्मन्माता अमुकी देवी वसुरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः।

अमुकगोत्रा अस्मत्पितामही अमुकी देवी रुद्ररूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः (३)।

अमुकगोत्रा अस्मत्प्रपितामही अमुकी देवी आदित्यरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः (३)।

यदि सौतेली माँ मर गयी हो तो उसको भी तीन बार जल दे—

अमुकगोत्रा अस्मत्सापत्नमाता अमुकी देवी तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः (३)।

इसके बाद निम्नाङ्कित नौ मन्त्रोंको पढ़ते हुए पितृतीर्थसे जल गिराता रहे[१] (जिन्हें वेदमन्त्र न आता हो, वे इसे ब्राह्मणद्वारा पढ़वावें या

१-पारस्कर गृह्यसूत्रके हरिहरभाष्यमें तर्पण-प्रकरणके अनुसार इन नौ मन्त्रोंको पढ़ते हुए जलधारा छोड़नेका विधान है।

छोड़ भी सकते हैं।) —

ओ३म् उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः।
असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु॥

(यजु० १९।४९)

अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः।
तेषां वय ँ सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम॥

(यजु० १९।५०)

आ यन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः।
अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्॥

(यजु०१९।५८)

ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्।
स्वधा स्थ तर्पयत मे पितृन्॥

(यजु० २।३४)

पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्।

(यजु० १९।३६)

ये चेह पितरो ये च नेह याँश्च विद्म याँ उ च न प्रविद्म। त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञ ँ सुकृतं जुषस्व।

(यजु०१९।६७)

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।

(यजु० १३।२७)

मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥

(यजु० १३।२८)

मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥

(यजु० १३ । २९)

ॐ मधु । मधु । मधु । तृप्यध्वम् । तृप्यध्वम् । तृप्यध्वम् ।

फिर नीचे लिखे मन्त्रका पाठमात्र करे—

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्मैतद्वः पितरो वास आधत्त ।

(यजु० २ । ३२)

द्वितीय गोत्र-तर्पण—इसके बाद द्वितीय गोत्रवाले (ननिहालके) मातामह (नाना) आदिका तर्पण करे। यहाँ भी पहलेकी भाँति निम्नलिखित वाक्योंको तीन-तीन बार पढ़कर तिलसहित जलकी तीन-तीन अञ्जलियाँ पितृतीर्थसे दे—

अमुकगोत्रः अस्मन्मातामहः (नाना) अमुकः वसुरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः (३) ।

अमुकगोत्रः अस्मत्प्रमातामहः (परनाना) अमुकः रुद्ररूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः (३) ।

अमुकगोत्रः अस्मद् वृद्धप्रमातामहः (वृद्ध परनाना) अमुकः आदित्यरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः (३) ।

अमुकगोत्रा अस्मन्मातामही (नानी) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः (३) ।

अमुकगोत्रा अस्मत्प्रमातामही (परनानी) अमुकी देवी दा रुद्ररूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः (३) ।

अमुकगोत्रा अस्मदवृद्धप्रमातामही (वृद्ध परनानी) अमुकी देवी दा आदित्यरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः (३) ।

पत्न्यादितर्पण—इसके आगे पत्नीसे लेकर आप्तपर्यन्त जो भी सम्बन्धी मृत हो गये हों, उनके गोत्र और नाम लेकर एक-एक अञ्जलि जल दे[१]—

अमुकगोत्रा अस्मत्पत्नी (भार्या) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मत्सुतः (बेटा) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रा अस्मत्कन्या (बेटी) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मत्पितृव्यः (पिताके भाई) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मन्मातुलः (मामा) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मद्भ्राता (अपना भाई) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मत्सापत्नभ्राता (सौतेला भाई) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रा अस्मत्पितृभगिनी (बूआ) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्रा अस्मन्मातृभगिनी (मौसी) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्रा अस्मदात्मभगिनी (अपनी

१-(क) पारस्कर-गृह्यसूत्र, हरिहरभाष्य तर्पण-प्रयोग (परिशिष्ट कण्डिका ३)में यही प्रयोग मिलता है।

(ख) **....येऽप्यन्ये गोत्रिणो ज्ञातिवर्जिताः।
तानेकाञ्जलिदानेन प्रत्येकं च पृथक् पृथक्॥**

(व्यासस्मृति ३। २२)

सपत्नीक पित्रादित्रय, सपत्नीक मातामहादित्रयसे अतिरिक्त सभी स्त्री-पुरुषोंको एक-एक अञ्जलि देनी चाहिये।

बहन) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्रा अस्मत्सापत्नभगिनी (सौतेली बहन) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मच्छ्वशुरः (श्वशुर) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मद्गुरुः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रा अस्मदाचार्यपत्नी अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मच्छिष्यः वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मत्सखा अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मदाप्तपुरुषः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।

इसके बाद सव्य होकर पूर्वाभिमुख हो सीधे बैठ जाय। कुशोंको सीधा कर उनके अग्रभागको भी पूरबकी ओर कर ले। फिर नीचे लिखे श्लोकोंको पढ़ते हुए देवतीर्थसे जल गिराये—

देवासुरास्तथा यक्षा नागा गन्धर्वराक्षसाः।
पिशाचा गुह्यकाः सिद्धाः कूष्माण्डास्तरवः खगाः॥
जलेचरा भूनिलया वाय्वाधाराश्च जन्तवः।
तृप्तिमेते प्रयान्त्वाशु मद्दत्तेनाम्बुनाखिलाः॥

इसके बाद अपसव्य होकर जनेऊ और अँगोछेको भी दाहिने कंधेपर रखकर दक्षिणाभिमुख हो जाय[१]। कुशोंको बीचसे मोड़कर इनकी जड़ और अग्रभागको दक्षिणकी ओर कर दे। फिर नीचे लिखे हुए श्लोकोंको पढ़कर पितृतीर्थसे जल गिराये—

नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिताः।
तेषामाप्यायनायैतद्दीयते सलिलं मया॥

१-पारस्कर-गृह्यसूत्र, तर्पण-प्रयोगमें अपसव्य होकर तर्पणका विधान है।

****

येऽबान्धवा बान्धवाश्च येऽन्यजन्मनि बान्धवाः ।
ते तृप्तिमखिला यान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति ॥

(पद्मपु० १ । २० । १६९-७०)

ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः ।
तेषां हि दत्तमक्षय्यमिदमस्तु तिलोदकम् ॥
आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः ।
तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः ॥
अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम् ।
आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम् ॥

वस्त्र-निष्पीडन—इस प्रकार सब पितरोंका तर्पण हो जानेके बाद अँगोछेकी चार तह कर उसमें तिल तथा जल छोड़कर नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर जलके बाहर बायीं ओर पृथ्वीपर निचोड़े—

ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः ।
ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम् ॥

(देवी० भा० ११ । २० । २६-२७)

भीष्मतर्पण—इसके बाद भीष्मपितामहको पितृतीर्थ और कुशोंसे जल दे—

भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः ।
आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम् ॥

सूर्यको अर्घ्यदान—इसके पश्चात् पात्रको जल तथा मिट्टीसे स्वच्छ कर ले। तदनन्तर पूर्वोक्त रीतिसे आचमन और प्राणायाम कर सव्य हो जाय अर्थात् जनेऊको बायें कंधेपर कर ले। अर्घ्यमें फूल-चन्दन लेकर निम्नलिखित मन्त्रसे सूर्यको अर्घ्य दे—

नमो विवस्वते ब्रह्मन् ! भास्वते विष्णुतेजसे ।
जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने ॥

सूर्यार्घ्य देकर प्रदक्षिणा करे। इसके बाद दिशाओं एवं उनके अधिष्ठातृ देवताओंका वन्दन करे[१]—

१-पारस्कर-गृह्यसूत्र-तर्पणसूत्रकण्डिका हरिहरभाष्य।

१-ॐ प्राच्यै नमः, ॐ इन्द्राय नमः । २-ॐ आग्नेय्यै नमः, ॐ अग्नये नमः । ३-ॐ दक्षिणायै नमः, ॐ यमाय नमः । ४-ॐ नैर्ऋत्यै नमः, ॐ निर्ऋतये नमः । ५-ॐ प्रतीच्यै नमः, ॐ वरुणाय नमः । ६-ॐ वायव्यै नमः, ॐ वायवे नमः । ७-ॐ उदीच्यै नमः, ॐ कुबेराय नमः । ८-ॐ ऐशान्यै नमः, ॐ ईशानाय नमः । ९-ॐ ऊर्ध्वायै नमः, ॐ ब्रह्मणे नमः । १०-ॐ अधरायै नमः, ॐ अनन्ताय नमः ।

इस तरह दिशाओं और देवताओंको नमस्कार कर बैठकर नीचे लिखे मन्त्र पढ़कर एक-एक जलाञ्जलि दे—

ॐ ब्रह्मणे नमः । ॐ अग्नये नमः । ॐ पृथिव्यै नमः । ॐ ओषधिभ्यो नमः । ॐ वाचे नमः । ॐ वाचस्पतये नमः । ॐ महद्भ्यो नमः । ॐ विष्णवे नमः । ॐ अद्भ्यो नमः । ॐ अपाम्पतये नमः । ॐ वरुणाय नमः ।

समर्पण—निम्नाङ्कित वाक्य पढ़कर यह तर्पण-कर्म भगवान्‌को समर्पित करे—

अनेन यथाशक्तिकृतेन देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणाख्येन कर्मणा भगवान् पितृस्वरूपी जनार्दनवासुदेवः प्रीयतां न मम। ॐ तत्सद्-ब्रह्मार्पणमस्तु ।

तदनन्तर हाथ जोड़कर भगवान्‌का स्मरण करते हुए पाठ करे—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥
यत्पादपङ्कजस्मरणात् यस्य नामजपादपि ।
न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम् ॥
ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः ।
ॐ विष्णवे नमः ।

तर्पण-विधि समाप्त ।

═══ ★ ═══

सूर्यके बारह नमस्कार

सूर्यकी पूजा एवं वन्दना भी नित्यकर्ममें आती है[1]। शास्त्रमें इसका बहुत महत्त्व बतलाया गया है। दूध देनेवाली एक लाख गायोंके दानका जो फल होता है, उससे भी बढ़कर फल एक दिनकी सूर्यपूजासे होता है[2]। पूजाकी तरह सूर्यके नमस्कारोंका भी महत्त्व है[3]। सूर्यके बारह नामोंके द्वारा होनेवाले बारह नमस्कारोंकी विधि यहाँ दी जाती है। प्रणामोंमें साष्टाङ्ग प्रणामका अधिक महत्त्व माना गया है। यह अधिक उपयोगी है। इससे शारीरिक व्यायाम भी हो जाता है। भगवान् सूर्यके एक नामका उच्चारण कर दण्डवत् करे। फिर उठकर दूसरा नाम बोलकर दूसरा दण्डवत् करे। इस तरह बारह साष्टाङ्ग प्रणाम हो जाते हैं। शीघ्रता न करे, भक्ति-भावसे करे।

एतदर्थ प्रथम सूर्यमण्डलमें सौन्दर्यराशि भगवान् नारायणका ध्यान करना चाहिये। भावनासे दोनों हाथ भगवान्के सुकोमल चरणोंका स्पर्श करते हों, ललाट भी उसी सुखस्पर्शमें केन्द्रित हो और आँखें उनके सौन्दर्य-पानमें मत्त हों।

संकल्प—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य·········अहं श्रीपरमात्म-प्रीत्यर्थमादित्यस्य द्वादशनमस्काराख्यं कर्म करिष्ये।

संकल्पके बाद अञ्जलिमें या ताम्रपात्रमें लाल चन्दन, अक्षत, फूल डालकर हाथोंको हृदयके पास लाकर निम्नलिखित मन्त्रसे सूर्यको अर्घ्य दे—

१- प्रातः संध्यावसाने तु नित्यं सूर्यं समर्चयेत् । (पारिजात)

२- प्रदद्याद् वै गवां लक्षं दोग्ध्रीणां वेदपारगे ।
एकाहमर्चयेद् भानुं तस्य पुण्यं ततोऽधिकम् ॥ (भविष्यपुराण)

३- यः सूर्यं पूजयेन्नित्यं प्रणमेद् वापि भक्तितः ।
तस्य योगं च मोक्षं च ब्रध्नस्तुष्टः प्रयच्छति ॥ (भविष्यपुराण)

एहि सूर्य ! सहस्रांशो ! तेजोराशे ! जगत्पते !
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर !

अब सूर्यमण्डलमें स्थित भगवान् नारायणका ध्यान करे—

ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती
नारायणः सरसिजासनसंनिविष्टः ।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी
हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचक्रः ॥

अब उपर्युक्त विधिसे ध्यान करते हुए निम्नलिखित नाम-मन्त्रोंसे भगवान् सूर्यको साष्टाङ्ग प्रणाम करे—

(१) ॐ मित्राय नमः । (२) ॐ रवये नमः । (३) ॐ सूर्याय नमः । (४) ॐ भानवे नमः । (५) ॐ खगाय नमः । (६) ॐ पूष्णे नमः । (७) ॐ हिरण्यगर्भाय नमः । (८) ॐ मरीचये नमः । (९) ॐ आदित्याय नमः । (१०) ॐ सवित्रे नमः । (११) ॐ अर्काय नमः । (१२) ॐ भास्कराय नमो नमः ।

इसके बाद सूर्यके सारथि अरुणको अर्घ्य दे—

विनतातनयो देवः कर्मसाक्षी सुरेश्वरः ।
सप्ताश्वः सप्तरज्जुश्च अरुणो मे प्रसीदतु ॥
ॐ कर्मसाक्षिणे अरुणाय नमः ।
आदित्यस्य नमस्कारं ये कुर्वन्ति दिने दिने ।
जन्मान्तरसहस्त्रेषु दारिद्र्यं नोपजायते ॥

—इसके बाद सूर्यार्घ्यका जल मस्तक और आँखोंमें लगाये तथा कुछ चरणामृत निम्नलिखित मन्त्रसे पी ले—

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम् ।
सूर्यपादोदकं तीर्थं जठरे धारयाम्यहम् ॥

ॐ तत्सत् कृतमिदं कर्म ब्रह्मार्पणमस्तु । विष्णवे नमः, विष्णवे नमः, विष्णवे नमः ।

═══★═══

नित्य-दान

नित्यकर्ममें दान भी आता है। वेदने आदेश दिया है कि दान बहुत ही श्रद्धाके साथ करना चाहिये। अपनी जैसी सम्पत्ति हो, उसके अनुसार दान करना चाहिये। देते समय अभिमान न हो, लज्जासे विनम्र होकर दान करे। भय मान कर दे[१]। यह दान सुपात्रको करना चाहिये और प्रतिदिन करना चाहिये[२]। यह आवश्यक नहीं है कि दानकी मात्रा अधिक ही हो। शास्त्रका आदेश है कि यदि स्थिति विपन्न हो तो जो कुछ भोजनके लिये मिले, उसमेंसे आधा ग्रास ही दान कर दे[३]। महाभारतमें कहा गया है कि यदि एक दिन भी दानके बिना बीत जाय, तो उस दिन इस तरहका शोक प्रकट करना चाहिये, जिस तरह लुटेरोंसे लुट जानेपर मनुष्य करता है[४]। दाता पूरबकी ओर मुख करके दे और ग्रहीता उत्तरकी ओर मुख करके ले। इससे दोनोंका हित होता है[५]। माता, पिता और गुरुको अपने पुण्यका भी दान किया जाता है[६]।

दान देनेसे पहले दान लेनेवाले ब्राह्मणकी चन्दनादिसे पूजा कर ले।

१-श्रद्धया देयम्। अश्रद्धयाऽदेयम्। श्रिया देयम्। ह्रिया देयम्। भिया देयम्।
(तैत्तिरीयोप० ११।३)

२-दातव्यं प्रत्यहं पात्रे स्वस्थः शक्त्यनुसारतः। (स्मृतिरत्नावली)

३-ग्रासादर्धतरो ग्रासो ह्यर्थिभ्यः किं न दीयते।
इच्छानुरूपो विभवः कदा कस्य भविष्यति॥
(स्मृतिरत्नावली)

४-एकस्मिन्नप्यतिक्रान्ते दिने दानविवर्जिते।
दस्युभिर्मुषितस्येव युक्तमाक्रन्दितुं भृशम्॥
(महाभारत)

५-दद्यात् पूर्वमुखो दानं गृह्णीयादुत्तरामुखः।
आयुर्विवर्धते दातुर्ग्रहीतुः क्षीयते न तत्॥
(योगचिन्तामणि)

६-देवतानां गुरूणां च मातापित्रोस्तथैव च।
पुण्यं देयं प्रयत्नेन नापुण्यं नोदितं क्वचित्॥

देय वस्तुकी भी शुद्धि तथा फूलसे पूजा कर ले तथा देय वस्तुका इस प्रकार संकल्प करे।

(क) निष्काम संकल्प—'ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः, अद्य.... श्रीपरमात्मप्रीत्यर्थमिदं वस्तु अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं सम्प्रददे।'

(ख) सकाम संकल्प—'श्रीपरमात्मप्रीत्यर्थं' के बाद **'ममैतच्छरीरावच्छिन्नसमस्तपापक्षयसर्वग्रहपीडाशान्तिशरीरोत्थार्तिनाशमनःप्रसादायुरारोग्यादिसर्वसौख्यसम्पत्त्यर्थं....इदं वस्तु अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं सम्प्रददे।'**

देवपूजा-प्रकरण

[देवयज्ञ]

[पूजन-सम्बन्धी जानने योग्य कुछ आवश्यक बातें]

यहाँ सर्वप्रथम पूजन-सम्बन्धी कुछ ज्ञातव्य बातोंका निर्देश किया जा रहा है—

पञ्चदेव—

आदित्यं गणनाथं च देवीं रुद्रं च केशवम्।
पञ्चदैवत्यमित्युक्तं सर्वकर्मसु पूजयेत्॥

(मत्स्यपुराण)

सूर्य, गणेश, दुर्गा, शिव, विष्णु—ये पञ्चदेव कहे गये हैं। इनकी पूजा सभी कार्योंमें करनी चाहिये।

अनेक देवमूर्ति-पूजा-प्रतिष्ठा-विचार—

एका मूर्तिर्न सम्पूज्या गृहिणा स्वेष्टमिच्छता।
अनेकमूर्तिसम्पन्नः सर्वान् कामानवाप्नुयात्॥

कल्याण चाहनेवाले गृहस्थ एक मूर्तिकी ही पूजा न करें, किंतु अनेक देवमूर्तिकी पूजा करें, इससे कामना पूरी होती है।

किंतु—

गृहे लिङ्गद्वयं नार्च्यं गणेशत्रितयं तथा।
शङ्खद्वयं तथा सूर्यो नार्च्यौ शक्तित्रयं तथा॥
द्वे चक्रे द्वारकायास्तु शालग्रामशिलाद्वयम्।
तेषां तु पूजनेनैव उद्वेगं प्राप्नुयाद् गृही॥

(आचारप्रकाश, आचारेन्दु)

घरमें दो शिवलिङ्ग, तीन गणेश, दो शङ्ख, दो सूर्य, तीन दुर्गामूर्ति, दो गोमतीचक्र और दो शालग्रामकी पूजा करनेसे गृहस्थ मनुष्यको अशान्ति होती है।

शालग्रामशिलायास्तु प्रतिष्ठा नैव विद्यते । (स्कन्दपुराण)

शालग्रामकी प्राणप्रतिष्ठा नहीं होती ।

बाणलिङ्गानि राजेन्द्र ख्यातानि भुवनत्रये ।
न प्रतिष्ठा न संस्कारस्तेषां नावाहनं तथा ॥

(भविष्यपुराण)

बाणलिङ्ग तीनों लोकोंमें विख्यात हैं, उनकी प्राणप्रतिष्ठा, संस्कार या आवाहन कुछ भी नहीं होता ।

शैलीं दारुमयीं हैमीं धात्वाद्याकारसम्भवाम् ।
प्रतिष्ठां वै प्रकुर्वीत प्रासादे वा गृहे नृप ॥

(वृद्धपाराशर)

पत्थर, काष्ठ, सोना या अन्य धातुओंकी मूर्तियोंकी प्रतिष्ठा घर या मन्दिरमें करनी चाहिये ।

गृहे चलार्चा विज्ञेया प्रासादे स्थिरसंज्ञिका ।
इत्येते कथिता मार्गा मुनिभिः कर्मवादिभिः ॥

(लौगाक्षिभास्कर)

घरमें चल प्रतिष्ठा और मन्दिरमें अचल प्रतिष्ठा करनी चाहिये । यह कर्मज्ञानी मुनियोंका मत है ।

गङ्गाप्रवाहे शालग्रामशिलायां च सुरार्चने ।
द्विजपुङ्गव ! नापेक्ष्ये आवाहनविसर्जने ॥
शिवलिङ्गेऽपि सर्वेषां देवानां पूजनं भवेत् ।
सर्वलोकमये यस्माच्छिवशक्तिर्विभुः प्रभुः ॥

(बृहद्धर्मपुराण अ० ५७)

गङ्गाजीमें, शालग्रामशिलामें तथा शिवलिङ्गमें सभी देवताओंका पूजन बिना आवाहन-विसर्जन किया जा सकता है ।

पाँच उपचार—१-गन्ध, २-पुष्प, ३-धूप, ४-दीप और ५-नैवेद्य ।

दस उपचार—१-पाद्य, २-अर्घ्य, ३-आचमन, ४-स्नान, ५-वस्त्र-निवेदन, ६-गन्ध, ७-पुष्प, ८-धूप, ९-दीप और १०-नैवेद्य।

सोलह उपचार—१-पाद्य, २-अर्घ्य, ३-आचमन, ४-स्नान, ५-वस्त्र, ६-आभूषण, ७-गन्ध, ८-पुष्प, ९-धूप, १०-दीप, ११-नैवेद्य, १२-आचमन, १३-ताम्बूल, १४-स्तवपाठ, १५-तर्पण और १६-नमस्कार[1]।

फूल तोड़नेका मन्त्र—प्रातःकालिक स्नानादि[2] कृत्योंके बाद

१- पूजनके अन्तमें साङ्गता-सिद्धिके लिये दक्षिणा भी चढ़ानी चाहिये।

२- हारीतका वचन है—

स्नानं कृत्वा तु ये केचित् पुष्पं चिन्वन्ति मानवाः।
देवतास्तन्न गृह्णन्ति भस्मीभवति दारुवत्॥

स्नान कर फूल न तोड़े, क्योंकि ऐसा करनेसे देवता इसे स्वीकार नहीं करते। इस शब्दार्थसे आपाततः प्रतीत होने लगता है कि सबेरे उठकर स्नान करनेके पहले ही फूल तोड़ ले। किंतु इस श्लोकका यह तात्पर्य नहीं है। निबन्धकारोंने निर्णय दिया है कि यहाँ 'स्नान' का तात्पर्य 'मध्याह्न-स्नान' है। फलितार्थ होता है कि मध्याह्न-स्नानके बाद फूल तोड़ना मना है, इसके पहले ही प्रातः-स्नानके बाद तोड़ ले—

(क) **स्नानम्, प्रातःस्नानातिरिक्तम्, स्नानोत्तरं प्रातः पुष्पाहरणादिविधानात्।**
(वीरमित्रोदय, पूजाप्रकाश, पृ० ५८)

(ख) **तन्मध्याह्नस्नानपरम्।** (आचारेन्दु, पृ० १५०)

(ग) रुद्रधरका मत है—

अस्नात्वा तुलसीं छित्त्वा देवतापितृकर्मणि।
तत्सर्वं निष्फलं याति पञ्चगव्येन शुद्ध्यति॥

इस पद्मपुराणके वचनमें 'तुलसी' पद पुष्प आदिका उपलक्षक है। अतः इस वचनसे सिद्ध होता है कि स्नान किये बिना ही यदि तुलसीदल, फूल आदि तोड़ लिये जायँ तो पाप लगता है, जिसकी शुद्धि पञ्चगव्यसे हो सकती है—'**अत्र तुलसीपदं पुष्पमात्रपरम्। शिष्टाचारानुरोधादिति रुद्रधरः।**' (आचारेन्दु, पृ० १५०)

(घ) दक्षने समिधा, फूल आदिका समय संध्याके बाद दिनका दूसरा भाग माना है। दिनको आठ भागोंमें बाँटा गया है—'**समित्पुष्पकुशादीनां स कालः परिकीर्तितः।**'

देव-पूजाका विधान है। एतदर्थ स्नानके बाद तुलसी, बिल्वपत्र और फूल तोड़ने चाहिये। तोड़नेसे पहले हाथ-पैर धोकर आचमन कर ले। पूरबकी ओर मुँहकर हाथ जोड़कर मन्त्र बोले—

मा नु शोकं कुरुष्व त्वं स्थानत्यागं च मा कुरु।
देवतापूजनार्थाय प्रार्थयामि वनस्पते ॥

पहला फूल तोड़ते समय '**ॐ वरुणाय नमः**', दूसरा फूल तोड़ते समय '**ॐ व्योमाय**[१] **नमः**' और तीसरा फूल तोड़ते समय '**ॐ पृथिव्यै नमः**' बोले[२]।

तुलसीदल-चयन—स्कन्दपुराणका वचन है कि जो हाथ पूजार्थ तुलसी चुनते हैं, वे धन्य हैं—

तुलसीं ये विचिन्वन्ति धन्यास्ते करपल्लवाः।

तुलसीका एक-एक पत्ता न तोड़कर पत्तियोंके साथ अग्रभागको तोड़ना चाहिये। तुलसीकी मञ्जरी सब फूलोंसे बढ़कर मानी जाती है। मञ्जरी तोड़ते समय उसमें पत्तियोंका रहना भी आवश्यक माना गया है[३]। निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर पूज्यभावसे पौधेको हिलाये बिना तुलसीके अग्रभागको तोड़े। इससे पूजाका फल लाख गुना बढ़ जाता है[४]।

१-यह आर्ष प्रयोग है—**व्योमायेतिच्छान्दसम्।** (वी० मि० पू० प्र०)

२-**प्रक्षाल्य पाणिपादौ च आचम्य च कृताञ्जलिः।**
पादपाभिमुखो भूत्वा प्रणवादिनमोऽन्तकम्।
विसृज्य पुष्पमेकं तु वाचा वरुणमुच्चरेत्।
व्योमाय च पृथिव्यै च द्वित्रिपुष्पं यथाक्रमम्॥
(आचारेन्दु)

३-(क) **मञ्जर्यां पत्रसाहित्यमपेक्षितम्।** (वीरमित्रोदय, पू० प्र०)
(ख) **अभिन्नपत्रां हरितां हृद्यमञ्जरिसंयुताम्।**
क्षीरोदार्णवसम्भूतां तुलसीं दापयेद्धरिम्॥
(ब्रह्मपुराण)

४-**मन्त्रेणानेन यः कुर्याद् गृहीत्वा तुलसीदलम्।**
पूजनं वासुदेवस्य लक्षपूजाफलं लभेत्॥
(पद्मपुराण)

तुलसी-दल तोड़नेके मन्त्र—

तुलस्यमृतजन्मासि सदा त्वं केशवप्रिया।
चिनोमि केशवस्यार्थे वरदा भव शोभने॥
त्वदङ्गसम्भवैः पत्रैः पूजयामि यथा हरिम्।
तथा कुरु पवित्राङ्गि! कलौ मलविनाशिनि॥

(आह्निकसूत्रावली)

तुलसीदल-चयनमें निषिद्ध समय—वैधृति और व्यतीपात—इन दो योगोंमें, मंगल, शुक्र और रवि—इन तीन वारोंमें, द्वादशी, अमावास्या एवं पूर्णिमा—इन तीन तिथियोंमें, संक्रान्ति और जननाशौच तथा मरणाशौचमें तुलसीदल तोड़ना मना है[1]। संक्रान्ति, अमावास्या, द्वादशी, रात्रि और दोनों संध्यायोंमें भी तुलसीदल न तोड़े[2], किंतु तुलसीके बिना भगवान्‌की पूजा पूर्ण नहीं मानी जाती, अतः निषिद्ध समयमें तुलसीवृक्षसे स्वयं गिरी हुई पत्तीसे पूजा करे[3], (पहले दिनके पवित्र स्थानपर रखे हुए तुलसीदलसे भी भगवान्‌की पूजा की जा सकती है)। शालग्रामकी पूजाके लिये निषिद्ध तिथियोंमें भी तुलसी तोड़ी जा सकती है[4]। बिना स्नानके और

१-वैधृतौ च व्यतीपाते भौमभार्गवभानुषु।
पर्वद्वये च संक्रान्तौ द्वादश्यां सूतके द्वयोः॥
(निर्णयसिन्धु, परिच्छेद ३, स्मृतिसारो०)

२-संक्रान्तौ कृष्णपक्षान्ते द्वादश्यां निशि संध्ययोः।
नच्छिन्द्यात् .... ॥
(विष्णुधर्मोत्तर)

३-निषिद्धे दिवसे प्राप्ते गृह्णीयाद् गलितं दलम्।
तेनैव पूजां कुर्वीत न पूजा तुलसीं विना॥
(वाराहपुराण)

४-शालग्रामशिलार्चार्थं प्रत्यहं तुलसीक्षितौ।
तुलसीं ये विचिन्वन्ति धन्यास्ते करपल्लवाः॥
सङ्क्रान्त्यादौ निषिद्धेऽपि तुलस्यवचयः स्मृतः।
(आह्निकसूत्रावली)

जूता पहनकर भी तुलसी न तोड़े[१]।

बिल्वपत्र तोड़नेका मन्त्र—

अमृतोद्भव ! श्रीवृक्ष ! महादेवप्रियः सदा ।
गृह्णामि तव पत्राणि शिवपूजार्थमादरात् ॥

(आचारेन्दु)

बिल्वपत्र तोड़नेका निषिद्ध काल—चतुर्थी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी और अमावास्या तिथियोंको, संक्रान्तिके समय और सोमवारको बिल्वपत्र न तोड़े[२]। किंतु बिल्वपत्र शङ्करजीको बहुत प्रिय है, अतः निषिद्ध समयमें पहले दिनका रखा बिल्वपत्र चढ़ाना चाहिये। शास्त्रने तो यहाँतक कहा है कि यदि नूतन बिल्वपत्र न मिल सके तो चढ़ाये हुए बिल्वपत्रको ही धोकर बार-बार चढ़ाता रहे[३]।

बासी जल, फूलका निषेध—जो फूल, पत्ते और जल बासी हो गये हों, उन्हें देवताओंपर न चढ़ाये। किंतु तुलसीदल और गङ्गाजल बासी नहीं होते। तीर्थोंका जल भी बासी नहीं होता[४]। वस्त्र, यज्ञोपवीत और आभूषणमें

१-अस्नात्वा तुलसीं छित्वा सोपानत्कस्तथैव च ।
स याति नरकं घोरं यावदाभूतसम्प्लवम् ॥
(पद्मपुराण)

२-अमारिक्तासु संक्रान्त्यामष्टम्यामिन्दुवासरे ।
बिल्वपत्रं न च छिन्द्याच्छिन्द्याच्चेन्नरकं व्रजेत् ॥
(लिङ्गपुराण)

३-अर्पितान्यपि बिल्वानि प्रक्षाल्यापि पुनः पुनः ।
शंकरायार्पणीयानि न नवानि यदि क्वचित् ॥
(स्कन्दपु०, आचारेन्दु, पृ० १६५)

४-(क) वर्ज्यं पर्युषितं पुष्पं वर्ज्यं पर्युषितं जलम् ।
न वर्ज्यं तुलसीपत्रं न वर्ज्यं जाह्नवीजलम् ॥
(बृहन्नारदीय)

(ख) न पर्युषितदोषोऽस्ति तीर्थतोयस्य चैव हि । (स्मृतिसारावली)

****

भी निर्माल्यका दोष नहीं आता[१]।

मालीके घरमें रखे हुए फूलोंमें बासी दोष नहीं आता[२]। दौना तुलसीकी ही तरह एक पौधा होता है। भगवान् विष्णुको यह बहुत प्रिय है। स्कन्दपुराणमें आया है कि दौनाकी माला भगवान्‌को इतनी प्रिय है कि वे इसे सूख जानेपर भी स्वीकार कर लेते हैं[३]। मणि, रत्न, सुवर्ण, वस्त्र आदिसे बनाये गये फूल बासी नहीं होते[४]। इन्हें प्रोक्षण कर चढ़ाना चाहिये[५]।

नारदजीने 'मानस' (मनके द्वारा भावित) फूलको सबसे श्रेष्ठ फूल माना है[६]। उन्होंने देवराज इन्द्रको बतलाया है कि हजारों-करोड़ों बाह्य फूलोंको चढ़ाकर जो फल प्राप्त किया जा सकता है, वह केवल एक मानस-फूल चढ़ानेसे प्राप्त हो जाता है[७]। इससे मानस-पुष्प ही उत्तम पुष्प है। बाह्य पुष्प तो निर्माल्य भी होते हैं। मानस-पुष्पमें बासी आदि कोई दोष नहीं होता। इसलिये पूजा करते समय मनसे गढ़कर फूल चढ़ानेका अद्भुत

१-न निर्माल्यं भवेद् वस्त्रं स्वर्णरत्नादिभूषणम्। (आचाररत्न)

२-न पर्युषितदोषोऽस्ति मालाकारगृहेषु च। (आचारेन्दु०, पृ० १६३)

३-तस्य माला भगवतः परमप्रीतिकारिणी।
शुष्का पर्युषिता वापि न दुष्टा भवति क्वचित्॥

४-मणिरत्नसुवर्णादिनिर्मितं कुसुमोत्तमम्।
तत्परं कुसुमं प्रोक्तमपरं चित्रवस्त्रजम्॥
पराणामपराणां च निर्माल्यत्वं न विद्यते।
(तत्त्वसागरसंहिता)

५-वस्त्रमभ्युक्षणाच्छुध्येत्। (तत्त्वसागरसंहिता)

६-तस्मान्मानसमेवातः शस्तं पुष्पं मनीषिणाम्। (तत्त्वसागरसंहिता)

७-बाह्यपुष्पसहस्त्राणां सहस्त्रायुतकोटिभिः।
पूजिते यत्फलं पुंसां तत्फलं त्रिदशाधिप!
मानसेनैकेन पुष्पेण विद्वानाप्नोत्यसंशयम्॥
(तत्त्वसागरसं०, वीर०, पूजा० पृ० ५७)

****

आनन्द अवश्य प्राप्त करना चाहिये।

सामान्यतया निषिद्ध फूल—यहाँ उन निषेधोंको दिया जा रहा है जो सामान्यतया सब पूजामें सब फूलोंपर लागू होते हैं। भगवान्‌पर चढ़ाया हुआ फूल 'निर्माल्य' कहलाता है, सूँघा हुआ या अङ्गमें लगाया हुआ फूल भी इसी कोटिमें आता है। इन्हें न चढ़ाये[१]। भौंरेके सूँघनेसे फूल दूषित नहीं होता[२]। जो फूल अपवित्र बर्तनमें रख दिया गया हो, अपवित्र स्थानमें उत्पन्न हो, आगसे झुलस गया हो, कीड़ोंसे विद्ध हो, सुन्दर न हो[३], जिसकी पंखुड़ियाँ बिखर गयी हों, जो पृथ्वीपर गिर पड़ा हो, जो पूर्णतः खिला न हो, जिसमें खट्टी गंध या सड़ाँध आती हो, निर्गन्ध हो या उग्र गन्धवाला हो, ऐसे पुष्पोंको नहीं चढ़ाना चाहिये[४]। जो फूल बायें हाथ, पहननेवाले अधोवस्त्र, आक और रेंड़के पत्तेमें रखकर लाये गये हों, वे फूल त्याज्य हैं[५]। कलियोंको चढ़ाना मना है, किंतु यह निषेध कमलपर लागू नहीं है[६]।

१-(क) **निर्माल्यं द्विविधं प्रोक्तमुत्सृष्टं घ्रातमेव च।**
न क्रियान्तरयोग्यं तत् सर्वथा त्याज्यमेव हि॥
(तत्त्वसागरसंहिता)

(ख) **आघ्रातैरङ्गसंसृष्टैः।** (विष्णुधर्मोत्तर)

२-**मुक्त्वा भ्रमरमेकं तु।** (विष्णुधर्मोत्तर)

३-**कुपात्रान्तरसंस्थानि कुत्सितस्थानजानि च।**
वह्निकीटापविद्धानि विशोभान्यशुभानि वै।
एवंविधानि पुष्पाणि त्याज्यान्येव विचक्षणैः॥

४- .... **महींगतैः।**
न विकीर्णदलैः स्पृष्टैर्नाशुभैरविकासिभिः।
पूतिगन्धान्यगन्धान्यम्लगन्धीनि वर्जयेत॥ (विष्णुधर्मोत्तर)

५-**करानीतं पटानीतमानीतं चार्कपत्रके।**
एरण्डपत्रेऽप्यानीतं तत् पुष्पं सकलं त्यजेत्॥
(करोऽयं वामः, पटः अधोवस्त्रम्) (वीर० मि० पू० प्र० पृ० ६०)

६-**मुकुलैर्नार्चयेद्देवं पङ्कजैर्जलजैर्विना।** (स्मृतिसारावली)

फूलको जलमें डुबाकर धोना मना है। केवल जलसे इसका प्रोक्षण कर देना चाहिये[१]।

पुष्पादि चढ़ानेकी विधि—फूल, फल और पत्ते जैसे उगते हैं, वैसे ही इन्हें चढ़ाना चाहिये[२]। उत्पन्न होते समय इनका मुख ऊपरकी ओर होता है, अतः चढ़ाते समय इनका मुख ऊपरकी ओर ही रखना चाहिये। इनका मुख नीचेकी ओर न करे[३]। दूर्वा एवं तुलसीदलको अपनी ओर और बिल्वपत्र नीचे मुखकर चढ़ाना चाहिये[४]। इनसे भिन्न पत्तोंको ऊपर मुखकर या नीचे मुखकर दोनों ही प्रकारसे चढ़ाया जा सकता है[५]। दाहिने हाथके करतलको उत्तान कर मध्यमा, अनामिका और अँगूठेकी सहायतासे फूल चढ़ाना चाहिये[६]।

उतारनेकी विधि—चढ़े हुए फूलको अँगूठे और तर्जनीकी सहायतासे उतारे[७]।

पञ्चदेवपूजा (आगमोक्त-पद्धति)

प्रतिदिन पञ्चदेव-पूजा अवश्य करनी चाहिये। यदि वेदके मन्त्र अभ्यस्त न हों, तो आगमोक्त मन्त्रसे, यदि वे भी अभ्यस्त न हों तो नाम-मन्त्रसे और यदि यह भी सम्भव न हो तो बिना मन्त्रके ही जल, चन्दन आदि चढ़ाकर पूजा करनी चाहिये[८]।

१-गन्धोदकेन चैतानि त्रिः प्रोक्ष्यैव प्रपूजयेत्। (तत्त्वसारसंहिता)

२-'यथोत्पन्नं तथार्पणम्।' (तृचभास्कर)

३-पत्रं वा यदि वा पुष्पं फलं नेष्टमधोमुखम्।

४-(क) दूर्वाः स्वाभिमुखाग्राः स्युर्बिल्वपत्रमधोमुखम्॥ (तृचभास्कर)

(ख) तुलस्यादिपत्रम् आत्माभिमुखं न्युब्जमेव समर्पणीयम्। (प्रतिष्ठासारदीपिका)

५- इतरपत्राणामप्यूर्ध्वमुखाधोमुखंमनयोर्विकल्पः। (आचारेन्दु)

६-मध्यमानामिकाङ्गुष्ठैः पुष्पं संगृह्य पूजयेत्। (चिन्तामणि)

७-अङ्गुष्ठतर्जनीभ्यां तु निर्माल्यमपनोदयेत्। (कालिकापुराण)

८-अयं विनैव मन्त्रेण पुण्यराशिः प्रकीर्तितः।
स्यादयं मन्त्रयुक्तश्चेत् पुण्यं शतगुणोत्तरम्॥
(पूजाप्रकाश)

यहाँ सामान्यरूपसे पूजाकी विधि दी जा रही है। साथ-साथ नाम-मन्त्र भी हैं। जो श्लोकोंका उच्चारण न कर सकें, वे नाममन्त्रसे षोडशोपचार पूजन करें।

गृह-मन्दिरमें स्थित पञ्चदेव-पूजा—

यदि गृहका मन्दिर हो तो पूजागृहमें प्रवेश करनेसे पहले बाहर दरवाजेपर ही पूर्वोक्त प्रकारसे आचमन कर ले और तीन तालियाँ बजाये और विनम्रताके साथ मन्दिरमें प्रवेश करे। ताली बजानेके पहले निम्नलिखित विनियोगसहित मन्त्र पढ़ ले—

***विनियोग*—अपसर्पन्त्विति मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, शिवो देवता, अनुष्टुप् छन्दः, भूतादिविघ्नोत्सादने विनियोगः।**

***भूतोत्सादन मन्त्र*—**

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूतले स्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

पश्चात् देवताओंका ध्यान करे, साष्टाङ्ग प्रणाम करे। बादमें निम्नलिखित विनियोग और मन्त्र पढ़कर आसनपर बैठकर उसको जलसे पवित्र करे।

***आसन पवित्र करनेका विनियोग एवं मन्त्र*—**

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसनपवित्रकरणे विनियोगः।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

पूजाकी बाहरी तैयारी

बैठनेके पूर्व पूजाकी आवश्यक तैयारी कर ले। ताजे[1] जलको कपड़ेसे छानकर कलशमें भरे। आचमनीसे शङ्खमें भी जल डालकर

१-बासी जलका निषेध है—**'जलं पर्युषितं त्याज्यम्।'** (शिवरहस्य)
अपवाद—किंतु गङ्गाजल या तीर्थजलमें बासीका दोष नहीं होता—**'गाङ्गं वारि न दुष्यति।'** (शिवरहस्य)

****

पीठपर रख दे। शङ्खको जलमें डुबाना[१] मना है। इसी तरह शङ्खको पृथ्वीपर[२] रखना भी मना है। शङ्खमें चन्दन और फूल छोड़ दे। उदकुम्भ (कलश) के जलको भी सुवासित करनेके लिये कपूर और केसरके साथ चन्दन घिसकर मिला दे या पवित्र इत्र डाल दे। अक्षतको केसर या रोलीसे हलका रँग ले।

पूजा-सामग्रीके रखनेका प्रकार

पूजनकी किस वस्तुको किधर रखना चाहिये, इस बातका भी शास्त्रने निर्देश दिया है। इसके अनुसार वस्तुओंको यथास्थान सजा देना चाहिये।

बायीं ओर—(१) सुवासित जलसे भरा उदकुम्भ (जलपात्र[३]), (२) घंटा[४] और (३) धूपदानी[५]। (४) तेलका दीपक भी बायीं ओर रखे[६]।

दायीं ओर—(१) घृतका दीपक और (२) सुवासित जलसे भरा शङ्ख[७]।

सामने—(१) कुङ्कुम (केसर) और कपूरके साथ घिसा गाढ़ा

१-शङ्खका पृष्ठभाग शुद्ध नहीं माना गया है। इसलिये शङ्खको जलमें न डुबाये, आचमनीसे उसमें जल भरे—

उद्धरिण्या जलं ग्राह्यं जले शङ्खं न मज्जयेत्।
शङ्खस्य पृष्ठसंलग्नं जलं पापकरं ध्रुवम्॥

२-**यः शङ्खं भुवि संस्थाप्य पूजयेत् पुरुषोत्तमम्।**
तस्य पूजां न गृह्णाति तस्मात् पीठं प्रकल्पयेत्॥

३-**सुवासितजलैः पूर्णं सव्ये कुम्भं प्रपूजयेत्।** (पूजाप्रकाश)

४-**घण्टां वामदिशि स्थिताम्।** (गौतम, आ० सू०)

५-**वामतस्तु तथा धूपमग्रे नापि न दक्षिणे।** (यामल)

६-**घृतदीपो दक्षिणतस्तैलदीपस्तु वामतः।** (महोदधि)

७-**शङ्खमद्भिः पूरयित्वा प्रणवेन च दक्षिणे।**

चन्दन[1], (२) पुष्प आदि हाथमें तथा चन्दन ताम्रपात्रमें न रखे[2]।

भगवान्‌के आगे—चौकोर जलका घेरा डालकर नैवेद्यकी वस्तु रखे।

पूजाकी भीतरी तैयारी

शास्त्रोंमें पूजाको हजारगुना अधिक महत्त्वपूर्ण बनानेके लिये एक उपाय बतलाया गया है। वह उपाय है, मानसपूजा। जिसे पूजासे पहले करके फिर बाह्य वस्तुओंसे पूजन करे[3]।

पहले पुष्प-प्रकरणमें शास्त्रका एक वचन उद्धृत किया गया है, जिसमें बतलाया गया है कि मनःकल्पित यदि एक फूल भी चढ़ा दिया जाय तो करोड़ों बाहरी फूल चढ़ानेके बराबर होता है। इसी प्रकार मानस चन्दन, धूप, दीप, नैवेद्य भी भगवान्‌को करोड़गुना अधिक संतोष दे सकेंगे। अतः मानसपूजा बहुत अपेक्षित है।

मानसपूजा

वस्तुतः भगवान्‌को किसी वस्तुकी आवश्यकता नहीं, वे तो भावके भूखे हैं। संसारमें ऐसे दिव्य पदार्थ उपलब्ध नहीं हैं, जिनसे परमेश्वरकी पूजा की जा सके। इसलिये पुराणोंमें मानसपूजाका विशेष महत्त्व माना गया है। मानसपूजामें भक्त अपने इष्टदेवको मुक्तामणियोंसे मण्डितकर स्वर्ण-सिंहासनपर विराजमान कराता है। स्वर्गलोककी मन्दाकिनी गङ्गाके जलसे अपने आराध्यको स्नान कराता है, कामधेनु गौके दुग्धसे पञ्चामृतका निर्माण

१-पतला चन्दन चढ़ाना निषिद्ध है—

द्रवीभूतं घृतं चैव द्रवीभूतं च चन्दनम्।
नार्पयेन्मम तुष्ट्यर्थं घनीभूतं तदर्पयेत्॥

(वाराहपुराण)

२-**हस्ते धृतानि पुष्पाणि ताम्रपात्रे च चन्दनम्।**
गङ्गोदकं चर्मपात्रे निषिद्धं सर्वकर्मसु॥

(आचारेन्दु)

३-**कृत्वादौ मानसीं पूजां ततः पूजां समाचरेत्।** (मुद्गलपु०)

****

करता है। वस्त्राभूषण भी दिव्य अलौकिक होते हैं। पृथ्वीरूपी गन्धका अनुलेपन करता है। अपने आराध्यके लिये कुबेरकी पुष्पवाटिकासे स्वर्णकमलपुष्पोंका चयन करता है। भावनासे वायुरूपी धूप, अग्निरूपी दीपक तथा अमृतरूपी नैवेद्य भगवान्‌को अर्पण करनेकी विधि है। इसके साथ ही त्रिलोककी सम्पूर्ण वस्तु सभी उपचार सच्चिदानन्दघन परमात्म-प्रभुके चरणोंमें भावनासे भक्त अर्पण करता है। यह है मानसपूजाका स्वरूप। इसकी एक संक्षिप्त विधि भी पुराणोंमें वर्णित है। जो नीचे लिखी जा रही है—

१-ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं परिकल्पयामि।

(प्रभो ! मैं पृथ्वीरूप गन्ध (चन्दन) आपको अर्पित करता हूँ।)

२-ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं परिकल्पयामि।

(प्रभो ! मैं आकाशरूप पुष्प आपको अर्पित करता हूँ।)

३-ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं परिकल्पयामि।

(प्रभो ! मैं वायुदेवके रूपमें धूप आपको प्रदान करता हूँ।)

४-ॐ रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि।

(प्रभो ! मैं अग्निदेवके रूपमें दीपक आपको प्रदान करता हूँ।)

५-ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि।

(प्रभो ! मैं अमृतके समान नैवेद्य आपको निवेदन करता हूँ।)

६-ॐ सौं सर्वात्मकं सर्वोपचारं समर्पयामि।

(प्रभो ! मैं सर्वात्माके रूपमें संसारके सभी उपचारोंको आपके चरणोंमें समर्पित करता हूँ।) इन मन्त्रोंसे भावनापूर्वक मानसपूजा की जा सकती है।

मानसपूजासे चित्त एकाग्र और सरस हो जाता है, इससे बाह्य पूजामें भी रस मिलने लगता है। यद्यपि इसका प्रचार कम है, तथापि इसे अवश्य अपनाना चाहिये[१]।

१-मानस-पूजामें आराधकका जितना समय लगता है, उतना भगवान्‌के सम्पर्कमें बीतता है और तबतक संसार उससे दूर हटा रहता है। अपने आराध्यदेवके लिये बढ़िया-से-बढ़िया रत्नजटित आसन, सुगन्धके बौछार करते दिव्य फूलकी वह कल्पना करता है और उसका मन वहाँसे दौड़कर उन्हें जुटाता है। इस तरह मनको दौड़नेकी और कल्पनाओंकी उड़ान भरनेकी इस पद्धतिमें पूरी छूट मिल जाती है। इसके दौड़नेके लिये क्षेत्र भी बहुत विस्तृत है। इस दायरेमें अनन्त ब्रह्माण्ड ही नहीं, अपितु इसकी पहुँचके परे गोलोक, साकेतलोक, सदाशिवलोक भी आ जाते हैं। अपने आराध्यदेवको इसे आसन देना है, वस्त्र और आभूषण पहनाना है, चन्दन लगाना है, मालाएँ पहनानी हैं, धूप-दीप दिखलाना है और नैवेद्य निवेदित करना है। इन्हें जुटानेके लिये उसे इन्द्रलोकसे ब्रह्मलोकतक दौड़ लगाना है। पहुँचे या न पहुँचे, किंतु अप्राकृतिक लोकोंके चक्कर लगानेसे भी वह नहीं चूकता, ताकि उत्तम साधन जुट जायँ और भगवान्‌की अद्भुत सेवा हो जाय।

इतनी दौड़-धूपसे लायी गयी वस्तुओंको आराधक जब अपने भगवान्‌के सामने रखता है, तब उसे कितना संतोष मिलता होगा ? उसका मन तो निहाल ही हो जाता होगा।

इस तरह पूजा-सामग्रियोंके जुटानेमें और भगवान्‌के लिये उनका उपयोग करनेमें साधक जितना भी समय लगा पाता है, उतना समय वह अन्तर्जगत्‌में बिताता है। इस तरह मानस-पूजा साधकको समाधिकी ओर अग्रसर करती रहती है और उसके रसास्वादका आभास भी कराती रहती है। जैसे कोई प्रेमी साधक कान्ताभावसे अपने इष्टदेवकी मानसी सेवा कर रहा है। चाह रहा है कि अपने पूज्य प्रियतमको जूही, चमेली, चम्पा-गुलाब और बेलाकी तुरंतकी गुँथी, गमगमाती हुई बढ़िया-से-बढ़िया माला पहनायें। बाहरी पूजामें इसके लिये बहुत ही भाग-दौड़ करनी पड़ेगी। आर्थिक कठिनाई मुँह बाकर अलग खड़ी हो जाती है। तबतक भगवान्‌से बना यह मधुर सम्बन्ध भी टूट जाता है। पर मानसपूजामें यह अड़चन नहीं आती। इसलिये बना हुआ वह सम्पर्क और गाढ़-से-गाढ़तर होता जाता है। मनकी कोमल भावनाओंसे उत्पन्न की गयी वे वनमालाएँ तुरंत तैयार मिलती हैं। पहनाते समय पूज्य प्रियतमकी सुरभित साँसोंसे जब इसकी सुगन्ध टकराती है, तब नस-नसमें मादकता व्याप्त हो जाती है। पूज्य प्रियतमका स्पर्श पाकर वह उद्वेलित हो उठती है और साधकको समरस कर देती है। अब न आराधक है, न आराध्य है और न आराधना ही है। आगेकी पूजा कौन करे ? धन्य हैं वे, जिनकी पूजा इस तरह अधूरी रह जाती है। मानसपूजासे यह स्थिति शीघ्र आ सकती है।

पञ्चदेव-पूजन-विधि

गणेश-स्मरण

हाथमें पुष्प-अक्षत आदि लेकर प्रारम्भमें भगवान् गणेशजीका स्मरण करना चाहिये—

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। उमामहेश्वराभ्यां नमः। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। शचीपुरन्दराभ्यां नमः। मातृपितृचरण-कमलेभ्यो नमः। इष्टदेवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्यो नमः। ग्रामदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः। स्थानदेवताभ्यो नमः। एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।

पूजनका संकल्प

सर्वप्रथम पूजनका संकल्प करे—

(क) निष्काम संकल्प— **ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य\`\`\`अहं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं विष्णुशिवगणेशसूर्यदुर्गार्चनं करिष्ये।**

(ख) सकाम संकल्प—**\`\`\`सर्वाभीष्टस्वर्गापवर्गफलप्राप्तिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं विष्णुशिवगणेशसूर्यदुर्गार्चनं करिष्ये।**

घण्टा-पूजन—घण्टाको चन्दन और फूलसे अलङ्कृत कर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर प्रार्थना करे—

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं च रक्षसाम्।
कुरु घण्टे वरं नादं देवतास्थानसंनिधौ॥

प्रार्थनाके बाद घण्टाको बजाये और यथास्थान रख दे।

'घण्टास्थिताय गरुडाय नमः।'

इस नाममन्त्रसे घण्टेमें स्थित गरुडदेवका भी पूजन करे।

शङ्खपूजन—शङ्खमें दो दर्भ या दूब, तुलसी और फूल डालकर 'ओम्' कहकर उसे सुवासित जलसे भर दे। इस जलको गायत्री-मन्त्रसे अभिमन्त्रित कर दे। फिर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर शङ्खमें तीर्थोंका आवाहन करे—

पृथिव्यां यानि तीर्थानि स्थावराणि चराणि च।
तानि तीर्थानि शङ्खेऽस्मिन् विशन्तु ब्रह्मशासनात्॥

तब '**शङ्खाय नमः, चन्दनं समर्पयामि**' कहकर चन्दन लगाये और '**शङ्खाय नमः, पुष्पं समर्पयामि**' कहकर फूल चढ़ाये। इसके बाद निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर शङ्खको प्रणाम करे—

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे।
निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य! नमोऽस्तु ते॥

प्रोक्षण—शङ्खमें रखी हुई पवित्रीसे निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर अपने ऊपर तथा पूजाकी सामग्रियोंपर जल छिड़के—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

उदकुम्भकी पूजा—सुवासित जलसे भरे हुए उदकुम्भ (कलश) की '**उदकुम्भाय नमः**' इस मन्त्रसे चन्दन, फूल आदिसे पूजा कर इसमें तीर्थोंका आवाहन करे[1]—

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः॥

१-(क) '**कलशस्येति मन्त्रेण तीर्थान्यावाहयेत् ततः।**' (प्रभासागर)
(ख) शुद्ध गङ्गाजलमें किसी तीर्थजलकी आवश्यकता नहीं है।

अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा॥
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति!
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु॥

इसके बाद निम्नलिखित मन्त्रसे उदकुम्भकी प्रार्थना करे—

देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ! विधृतो विष्णुना स्वयम्॥
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव!
सांनिध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा॥[१]

अब पञ्चदेवोंकी पूजा करे। सबसे पहले ध्यान करे—

विष्णुका ध्यान

उद्यत्कोटिदिवाकराभमनिशं शङ्खं गदां पङ्कजं
चक्रं बिभ्रतमिन्दिरावसुमतीसंशोभिपार्श्वद्वयम्।
कोटीराङ्गदहारकुण्डलधरं पीताम्बरं कौस्तुभै-
र्दीप्तं विश्वधरं स्ववक्षसि लसच्छ्रीवत्सचिह्नं भजे॥

ध्यानार्थे अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॐ विष्णवे नमः।

उदीयमान करोड़ों सूर्यके समान प्रभातुल्य, अपने चारों हाथोंमें शङ्ख, गदा, पद्म तथा चक्र धारण किये हुए एवं दोनों भागोंमें भगवती लक्ष्मी और पृथ्वीदेवीसे सुशोभित, किरीट, मुकुट, केयूर, हार और कुण्डलोंसे समलङ्कृत,

---

१-संक्षेप करनेके लिये केवल यही अन्तिम श्लोक पढ़कर प्रार्थना करे।

कौस्तुभमणि तथा पीताम्बरसे देदीप्यमान विग्रहयुक्त एवं वक्षःस्थलपर श्रीवत्सचिह्न धारण किये हुए भगवान् विष्णुका मैं निरन्तर स्मरण-ध्यान करता हूँ।

शिवका ध्यान

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

ध्यानार्थे अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॐ शिवाय नमः।

चाँदीके पर्वतके समान जिनकी श्वेत कान्ति है, जो सुन्दर चन्द्रमाको आभूषण-रूपसे धारण करते हैं, रत्नमय अलङ्कारोंसे जिनका शरीर उज्ज्वल है, जिनके हाथोंमें परशु, मृग, वर और अभय मुद्रा है, जो प्रसन्न हैं, पद्मके आसनपर विराजमान हैं, देवतागण जिनके चारों ओर खड़े होकर स्तुति करते हैं, जो बाघकी खाल पहनते हैं, जो विश्वके आदि जगत्की उत्पत्तिके बीज और समस्त भयोंको हरनेवाले हैं, जिनके पाँच मुख और तीन नेत्र हैं, उन महेश्वरका प्रतिदिन ध्यान करे।

गणेशका ध्यान

खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं
प्रस्यन्दन्मदगन्धलुब्धमधुपव्यालोलगण्डस्थलम्।
दन्ताघातविदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरं
वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम्॥

ध्यानार्थे अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॐ श्रीगणेशाय नमः।

जो नाटे और मोटे शरीरवाले हैं, जिनका गजराजके समान मुख और लम्बा उदर है, जो सुन्दर हैं तथा बहते हुए मदकी सुगन्धके लोभी भौंरोंके चाटनेसे जिनका गण्डस्थल चपल हो रहा है, दाँतोंकी चोटसे विदीर्ण हुए

शत्रुओंके खूनसे जो सिन्दूरकी-सी शोभा धारण करते हैं, कामनाओंके दाता और सिद्धि देनेवाले उन पार्वतीके पुत्र गणेशजीकी मैं वन्दना करता हूँ।

सूर्यका ध्यान

रक्ताम्बुजासनमशेषगुणैकसिन्धुं
भानुं समस्तजगतामधिपं भजामि।
पद्मद्वयाभयवरान् दधतं कराब्जै-
र्माणिक्यमौलिमरुणाङ्गरुचिं त्रिनेत्रम्॥

ध्यानार्थे अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॐ श्रीसूर्याय नमः।

लाल कमलके आसनपर समासीन, सम्पूर्ण गुणोंके रत्नाकर, अपने दोनों हाथोंमें कमल और अभयमुद्रा धारण किये हुए, पद्मराग तथा मुक्ताफलके समान सुशोभित शरीरवाले, अखिल जगत्के स्वामी, तीन नेत्रोंसे युक्त भगवान् सूर्यका मैं ध्यान करता हूँ।

दुर्गाका ध्यान

सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः
शङ्खं चक्रधनुःशरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता।
आमुक्ताङ्गदहारकङ्कणरणत्काञ्चीरणन्नूपुरा
दुर्गा दुर्गतिहारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला॥

ध्यानार्थे अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॐ श्रीदुर्गायै नमः।

जो सिंहकी पीठपर विराजमान हैं, जिनके मस्तकपर चन्द्रमाका मुकुट है, जो मरकतमणिके समान कान्तिवाली अपनी चार भुजाओंमें शङ्ख, चक्र, धनुष और बाण धारण करती हैं, तीन नेत्रोंसे सुशोभित होती हैं, जिनके भिन्न-भिन्न अङ्ग बाँधे हुए बाजूबंद, हार, कङ्कण, खनखनाती हुई करधनी और रुनझुन करते हुए नूपुरोंसे विभूषित हैं तथा जिनके कानोंमें रत्नजटित कुण्डल झिलमिलाते रहते हैं, वे भगवती दुर्गा हमारी दुर्गति दूर करनेवाली हों।

अब हाथमें फूल लेकर आवाहनके लिये पुष्पाञ्जलि दे[१]।

पुष्पाञ्जलि—'ॐ विष्णुशिवगणेशसूर्यदुर्गाभ्यो नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।'

यदि पञ्चदेवकी मूर्तियाँ न हों तो अक्षतपर इनका आवाहन करे। मन्त्र नीचे दिया जाता है। निम्न कोष्ठकके अनुसार देवताओंको स्थापित करे—

विष्णु-पञ्चायतन[२]

शिव		गणेश
	विष्णु	
देवी		सूर्य

आवाहन—आगच्छन्तु सुरश्रेष्ठा भवन्त्वत्र स्थिराः समे।
यावत् पूजां करिष्यामि तावत् तिष्ठन्तु संनिधौ॥

ॐ विष्णुशिवगणेशसूर्यदुर्गाभ्यो नमः, आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि। (पुष्प समर्पण करे)

१-प्रतिष्ठित मूर्ति, शालग्राम, बाणलिङ्ग, अग्नि और जलमें आवाहन करना मना है। इसकी जगह पुष्पाञ्जलि दे।

२-पञ्चायतन-देवताओंके स्थानके नियम हैं। इसी नियमके अनुसार इन्हें स्थापित करे। इस नियमके उल्लङ्घनसे हानि होती है। विष्णु-पञ्चायतनका प्रकार ऊपर दिया जा चुका है। अन्य पञ्चायतनोंके प्रकार नीचे लिखे जाते हैं—

गणेश-पञ्चायतन	शिव-पञ्चायतन	देवी-पञ्चायतन	सूर्य-पञ्चायतन
विष्णु शिव	विष्णु सूर्य	विष्णु शिव	शिव गणेश
गणेश	शिव	दुर्गा	सूर्य
देवी सूर्य	देवी गणेश	सूर्य गणेश	देवी विष्णु

अन्य पञ्चायतनोंके नाम-मन्त्र—

(१) गणेश-पञ्चायतन—**ॐ गणेशविष्णुशिवदुर्गासूर्येभ्यो नमः।**

(२) शिव-पञ्चायतन—**ॐ शिवविष्णुसूर्यदुर्गागणेशेभ्यो नमः।**

(३) देवी-पञ्चायतन—**ॐ दुर्गाविष्णुशिवसूर्यगणेशेभ्यो नमः।**

(४) सूर्य-पञ्चायतन—**ॐ सूर्यशिवगणेशदुर्गाविष्णुभ्यो नमः।**

आसन—अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्।
कार्तस्वरमयं दिव्यमासनं परिगृह्यताम्॥

ॐ विष्णुपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः, आसनार्थे तुलसीदलं समर्पयामि। (तुलसीदल समर्पण करे।)

पाद्य—गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्य आनीतं तोयमुत्तमम्।
पाद्यार्थं सम्प्रदास्यामि गृह्णन्तु परमेश्वराः॥

ॐ विष्णुपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः, पादयोः पाद्यं समर्पयामि। (जल अर्पण करे।)

अर्घ्य—गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया।
गृह्णन्त्वर्घ्यं महादेवाः प्रसन्नाश्च भवन्तु मे॥

ॐ विष्णुपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः, हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि। (गन्ध, पुष्प, अक्षत मिला हुआ अर्घ्य अर्पण करे।)

आचमन—कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं गृह्णन्तु परमेश्वराः॥

ॐ विष्णुपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि। (कर्पूरसे सुवासित सुगन्धित शीतल जल समर्पण करे।)

स्नान—मन्दाकिन्याः समानीतैः कर्पूरागुरुवासितैः।
स्नानं कुर्वन्तु देवेशा जलैरेभिः सुगन्धिभिः॥

ॐ विष्णुपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि। (शुद्ध जलसे स्नान कराये।)

आचमन—स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (स्नान करानेके बाद आचमनके लिये जल दे।)

पञ्चामृत-स्नान—पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम्।
पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ विष्णुपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। (पञ्चामृतसे स्नान कराये।)

गन्धोदकस्नान—मलयाचलसम्भूतचन्दनेन विमिश्रितम्।
इदं गन्धोदकं स्नानं कुङ्कुमाक्तं नु गृह्यताम्॥
ॐ विष्णुपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः, गन्धोदकं समर्पयामि।
(मलय चन्दनसे सुवासित जलसे स्नान कराये।)

गन्धोदकस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानम्— (गन्धोदक-स्नानके बाद शुद्ध जलसे स्नान कराये।)

शुद्धोदकस्नान—मलयाचलसम्भूतचन्दनाऽगरुमिश्रितम्।
सलिलं देवदेवेश ! शुद्धस्नानाय गृह्यताम्॥
ॐ विष्णुपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
(शुद्धोदकसे स्नान करानेके बाद आचमन करनेके लिये पुनः जल चढ़ाये।)

आचमन—शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

वस्त्र और उपवस्त्र—शीतवातोष्णसंत्राणे लोकलज्जानिवारणे।
देहालङ्करणे वस्त्रे भवद्भ्यो वाससी शुभे॥
ॐ विष्णुपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः, वस्त्रमुपवस्त्रं च समर्पयामि।
(वस्त्र और उपवस्त्र चढ़ानेके बाद आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

आचमन—वस्त्रोपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

यज्ञोपवीत—नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृह्णन्तु परमेश्वराः॥
ॐ विष्णुपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।
(यज्ञोपवीत चढ़ानेके बाद आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

आचमन—यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

चन्दन—श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ विष्णुपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः, चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।
(सुगन्धित मलय चन्दन लगाये।)

पुष्पमाला—माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि भक्तितः।
मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ विष्णुपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः, पुष्पाणि (पुष्पमालाम्) समर्पयामि। (मालती आदिके पुष्प चढ़ाये।)

तुलसीदल और मञ्जरी—तुलसीं हेमरूपां च रत्नरूपां च मञ्जरीम्।
भवमोक्षप्रदां रम्यामर्पयामि हरिप्रियाम्॥

ॐ विष्णुपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः, तुलसीदलं मञ्जरीं च समर्पयामि। (तुलसीदल और तुलसी-मञ्जरी समर्पण करे।)

(भगवान्‌के आगे चौकोर जलका घेरा डालकर उसमें नैवेद्यकी वस्तुओंको रखे तब धूप-दीप निवेदन करे।)

धूप—वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ विष्णुपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः, धूपमाघ्रापयामि। (धूप दिखाये)

दीप—साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृह्णन्तु देवेशास्त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥

ॐ विष्णुपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि। (दीप दिखाये)

हाथ धोकर नैवेद्य निवेदन करे—

नैवेद्य—शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ विष्णुपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। (नैवेद्य निवेदित करे।)

नैवेद्यान्ते ध्यानं ध्यानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। उत्तरापोऽशनार्थं हस्तप्रक्षालनार्थं मुखप्रक्षालनार्थं च जलं समर्पयामि।

नैवेद्य देनेके बाद भगवान्‌का ध्यान करे (मानो भगवान् भोग लगा रहे हैं)। ध्यानके बाद आचमन करनेके लिये जल चढ़ाये और मुख-प्रक्षालनके लिये तथा हस्त-प्रक्षालनके लिये जल दे।

ऋतुफल—इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

ॐ विष्णुपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि। मध्ये आचमनीयं उत्तरापोऽशनं च जलं समर्पयामि। (ऋतुफल अर्पण करे इसके बाद आचमन तथा उत्तरापोऽशनके लिये जल दे।)

ताम्बूल—पूगीफलं महद् दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलालवंगसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ विष्णुपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः, मुखवासार्थे ताम्बूलं समर्पयामि। (सुपारी, इलायची, लवंगके साथ पान चढ़ाये।)

दक्षिणा—हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ विष्णुपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः, दक्षिणां समर्पयामि। (दक्षिणा चढ़ाये)।

आरती—कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मां वरदो भव॥

ॐ विष्णुपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः, आरार्तिकं समर्पयामि। (कर्पूरकी आरती करे और आरतीके बाद जल गिरा दे।)

शङ्ख-भ्रामण—शङ्खमध्ये स्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि।
अङ्गलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यां व्यपोहति॥

जलसे भरे शङ्खको पाँच बार भगवान्‌के चारों ओर घुमाकर शङ्खको यथास्थान रख दे। भगवान्‌का अँगोछा भी घुमा दे। अब दोनों हथेलियोंसे आरती ले। हाथ धो ले। शङ्खके जलको अपने ऊपर तथा उपस्थित लोगोंपर छिड़क दे।

निम्नलिखित मन्त्रसे चार बार परिक्रमा करे[1] (परिक्रमाका स्थान न

---

[1]-एका चण्ड्या रवेः सप्त तिस्रः कार्या विनायके।
हरेश्चतस्रः कर्तव्याः शिवस्यार्धप्रदक्षिणा॥
(आह्निक सू॰ देवतीर्थ-विचार)

हो तो अपने आसनपर ही चार बार घूम जाय)।

प्रदक्षिणा—**यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।**
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे॥

ॐ विष्णुपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि। (मन्त्र पढ़कर प्रदक्षिणा करे।)

मन्त्रपुष्पाञ्जलि—**श्रद्धया सिक्तया भक्त्या हार्दप्रेम्णा समर्पितः।**
मन्त्रपुष्पाञ्जलिश्चायं कृपया प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ विष्णुपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। (पुष्पाञ्जलि भगवान्‌के सामने अर्पण कर दे।)

नमस्कार—**नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।**
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः॥

ॐ विष्णुपञ्चायतनदेवताभ्यो नमः, प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि। (प्रार्थनापूर्वक नमस्कार करे।)

भक्तोंको शतांश-प्रदान

इसके बाद विष्वक्सेन, शुक आदि महाभागवतोंको नैवेद्यका शतांश निर्माल्य जलमें दे।

(क) वैष्णव संतोंको—**विष्वक्सेनोद्धवाक्रूराः सनकाद्याः शुकादयः।**
महाविष्णुप्रसादोऽयं सर्वे गृह्णन्तु वैष्णवाः॥

(ख) गाणपत्य संतोंको—**गणेशो गालवो गार्ग्यो मङ्गलश्च सुधाकरः।**
गणेशस्य प्रसादोऽयं सर्वे गृह्णन्तु भागिनः॥

(ग) शैव संतोंको—**बाणरावणचण्डीशनन्दिभृङ्गिरिटादयः।**
सदाशिवप्रसादोऽयं सर्वे गृह्णन्तु शाम्भवाः॥

(घ) शाक्त संतोंको—**शक्तिरुच्छिष्टचाण्डालीसोमसूर्यहुताशनाः।**
महालक्ष्मीप्रसादोऽयं सर्वे गृह्णन्तु शाक्तिकाः॥

(ङ) सौर संतोंको—**छायासंज्ञाश्राद्धरेवादण्डमाठरकादयः।**
दिवाकरप्रसादोऽयं ब्राध्ना गृह्णन्तु शेषकम्॥

इन श्लोकोंको पढ़कर या बिना पढ़े भी जलमें संतोंके उद्देश्यसे निर्माल्य दे दे। भगवान् और भक्तमें अन्तर नहीं होता। अतः उत्तम पक्ष यह है कि इन संतोंका नामोच्चारण हो जाय।

चरणामृत-पान—अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम्।
विष्णुपादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते॥

(चरणामृतको पात्रमें लेकर ग्रहण करे। सिरपर भी चढ़ा ले।)

क्षमा-याचना—मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन।
यत्पूजितं मया देव! परिपूर्णं तदस्तु मे॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात् कारुण्यभावेन रक्ष मां परमेश्वर॥

(इन मन्त्रोंका श्रद्धापूर्वक उच्चारण कर अपनी विवशता एवं त्रुटियोंके लिये क्षमा-याचना करे।)

प्रसाद-ग्रहण—भगवान्पर चढ़े फूलको सिरपर धारण करे। पूजासे बचे चन्दन आदिको प्रसादरूपसे ग्रहण करे। अन्तमें निम्नलिखित वाक्य पढ़कर समस्त कर्म भगवान्को समर्पित कर दे—

ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु।

ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः।

सर्वसामान्य देवी-देव-पूजाका विधान

किसी भी देवताकी पृथक् पूजा करनी हो तो पिछली विधि और पिछले मन्त्रोंसे ही की जा सकती है। केवल उन मन्त्रोंमें विभक्ति और नाममन्त्रका ही परिवर्तन करना पड़ता है। इन्हीं मन्त्रोंसे देवीकी पूजा भी की जा सकती है। देवीकी पूजामें केवल पुंलिङ्गकी जगह स्त्रीलिङ्गका प्रयोग करना होगा। इसी प्रकार पञ्चदेव-पूजामें पाँच देवोंके लिये बहुवचनका प्रयोग हुआ है। किसी एक देव या देवीकी पूजामें उनका एकवचनमें प्रयोग कर लेना चाहिये। यहाँ उदाहरणस्वरूप प्रायः इन्हीं मन्त्रोंसे 'शिवपूजा'का विधान दिया जा रहा है। इसीके आधारपर अन्य देवोंकी पूजा करनी चाहिये। उसके बाद लिङ्ग बदलकर उदाहरणस्वरूपमें दुर्गापूजाका विधान बतलाया गया है। इसी आधारपर अन्य देवियोंकी पूजा करनी चाहिये। यदि ये आगमोक्त मन्त्र भी पढ़ना कठिन पड़ें तो केवल नाममन्त्रसे (**'अमुक देवाय या अमुक देव्यै'** इस प्रकार कहकर) 'आवाहन' करके 'नैवेद्य' आदि चढ़ाना चाहिये।

यदि कोई भी पूजाका उपचार न जुट पाये या जुटाना अशक्य हो तो उसे मनसे तैयार कर चढ़ा देना चाहिये। जैसे **'दिव्यमासनं मनसा परिकल्प्य समर्पयामि, पुष्पितां पुष्पमालां मनसा परिकल्प्य समर्पयामि'** आदि।

शिव-पूजा

सर्वप्रथम पहलेकी तरह आचमन कर पवित्री धारण करे। अपने ऊपर और पूजा-सामग्रीपर जलका प्रोक्षण करे। इसके बाद संकल्प करे। हाथमें फूल लेकर अञ्जलि बाँधकर शङ्करभगवान्‌का ध्यान करे। ध्यानका मन्त्र पञ्च-देवपूजा (पृ० सं० १२२) में आ चुका है।

आवाहन—आगच्छ भगवन् ! देव ! स्थाने चात्र स्थिरो भव ।
यावत् पूजां करिष्येऽहं तावत् त्वं संनिधौ भव ॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः । आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि । (पुष्प चढ़ाये ।)

आसन—अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम् ।
इदं हेममयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः । आसनार्थे बिल्वपत्रं समर्पयामि । (बिल्वपत्र दे ।)

पाद्य—गङ्गोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम् ।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं मे प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः । पादयोः पाद्यं समर्पयामि । (जल चढ़ाये ।)

अर्घ्य—गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया ।
गृहाण भगवन् शम्भो प्रसन्नो वरदो भव ॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः । हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि । (चन्दन, पुष्प, अक्षतयुक्त अर्घ्य समर्पण करे ।)

आचमन—कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम् ।
तोयमाचमनीयार्थं गृहाण परमेश्वर ॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः । आचमनीयं जलं समर्पयामि । (कर्पूरसे सुवासित शीतल जल चढ़ाये ।)

स्नान—मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम् ।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः । स्नानीयं जलं समर्पयामि । (गङ्गाजल चढ़ाये ।)

स्नानाङ्ग-आचमन—स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (जल चढ़ाये।)

दुग्धस्नान—कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानाय गृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः। पयःस्नानं समर्पयामि। (गोदुग्धसे स्नान कराये।)

दधिस्नान—पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः। दधिस्नानं समर्पयामि। (गोदधिसे स्नान कराये।)

घृतस्नान—नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः। घृतस्नानं समर्पयामि। (गोघृतसे स्नान कराये।)

मधुस्नान—पुष्परेणुसमुत्पन्नं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजःपुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः। मधुस्नानं समर्पयामि। (मधुसे स्नान कराये।)

शर्करास्नान—इक्षुसारसमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः। शर्करास्नानं समर्पयामि। (शक्करसे स्नान कराये।)

पञ्चामृतस्नान—पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम्।
पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः। पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। (अन्य पात्रमें पृथक् निर्मित पञ्चामृतसे स्नान कराये।)

गन्धोदकस्नान—(केसरको चन्दनसे घिसकर पीला द्रव्य बना ले और उस गन्धोदकसे स्नान कराये।)

मलयाचलसम्भूतचन्दनेन विमिश्रितम्।
इदं गन्धोदकस्नानं कुङ्कुमाक्तं नु गृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः। गन्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नान—शुद्धं यत् सलिलं दिव्यं गङ्गाजलसमं स्मृतम्।
समर्पितं मया भक्त्या शुद्धस्नानाय गृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (शुद्ध जलसे स्नान कराये।)

स्नानान्त आचमन—शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

वस्त्र—शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रं धृत्वा शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः। वस्त्रं समर्पयामि। (वस्त्र चढ़ाये।)

आचमन—श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः। वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

उपवस्त्र—उपवस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः। उपवस्त्रं (अथवा **उपवस्त्रार्थे सूत्रम्) समर्पयामि।** (उपवस्त्र चढ़ाये।)

आचमन—उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

यज्ञोपवीत—नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि। (यज्ञोपवीत चढ़ाये।)

आचमनीय—यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

****

चन्दन—श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः । चन्दनानुलेपनं समर्पयामि । (मलय चन्दन लगाये ।)

अक्षत—अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः ।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः । अक्षतान् समर्पयामि । (कुङ्कुमयुक्त अक्षत चढ़ाये ।)

पुष्पमाला—माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि भक्तितः ।
मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः । पुष्पमालां समर्पयामि । (फूल एवं फूलमाला चढ़ाये ।)

बिल्वपत्र—त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुतम् ।
त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः । बिल्वपत्रं समर्पयामि । (बिल्वपत्र चढ़ाये ।)

दूर्वा—दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान् ।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर ॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः । दुर्वाङ्कुरान् समर्पयामि । (दूर्वाङ्कुर चढ़ाये ।)

शमी—अमङ्गलानां शमनीं शमनीं दुष्कृतस्य च ।
दुःस्वप्ननाशिनीं धन्यामर्पयेऽहं शमीं शुभाम् ॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः । शमीपत्राणि समर्पयामि । (शमीपत्र चढ़ाये ।)

आभूषण—वज्रमाणिक्यवैदूर्यमुक्ताविद्रुममण्डितम् ।
पुष्परागसमायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥

****

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः। रत्नाभूषणं समर्पयामि। (रत्नाभूषण समर्पित करे।)

परिमलद्रव्य—दिव्यगन्धसमायुक्तं नानापरिमलान्वितम्।
गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं स्वीकुरु शोभनम्॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः। परिमलद्रव्याणि समर्पयामि। (परिमल द्रव्य चढ़ाये।)

भगवान्‌के आगे चौकोर जलका घेरा डालकर उसमें नैवेद्यकी वस्तुओंको रख दे, इसके बाद धूप-दीप निवेदन करे।

धूप—वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः। धूपमाघ्रापयामि। (धूप दिखाये।)

दीप—साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः। दीपं दर्शयामि। (घृतदीप दिखाये, हाथ धो ले।)

नैवेद्य—शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः। नैवेद्यं निवेदयामि। (नैवेद्य निवेदित करे।)

आचमनीय—नैवेद्यान्ते ध्यानम् आचमनीयं जलं उत्तरापोऽशनं
हस्तप्रक्षालनार्थं मुखप्रक्षालनार्थं च जलं समर्पयामि।
(जल चढ़ाये।)

ऋतुफल—इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः। ऋतुफलं निवेदयामि। मध्ये आचमनीयं जलम् उत्तरापोऽशनं च समर्पयामि। (ऋतुफल चढ़ाये) और आचमन तथा उत्तरापोऽशनके लिये जल दे।)

ताम्बूल—पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलालवङ्गसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः । ताम्बूलं समर्पयामि । (इलायची, लौंग, सुपारीके साथ पान समर्पित करे ।)

दक्षिणा—हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः । दक्षिणां समर्पयामि । (दक्षिणा चढ़ाये ।)

आरती—कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम् ।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मां वरदो भव ॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः । आरार्तिक्यं समर्पयामि । (कर्पूरसे आरती करे और आरतीके बाद जल गिराये) ।

प्रदक्षिणा—यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे ॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः । प्रदक्षिणां समर्पयामि । (प्रदक्षिणा करे ।)

मन्त्रपुष्पाञ्जलि—श्रद्धया सिक्तया भक्त्या हार्दप्रेम्णा समर्पितः ।
मन्त्रपुष्पाञ्जलिश्चायं कृपया प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः । मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि । (पुष्पाञ्जलि समर्पण करे ।)

नमस्कार—नमः सर्वहितार्थाय जगदाधारहेतवे ।
साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः ॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः । नमस्कारान् समर्पयामि (नमस्कार करे ।)

क्षमा-याचना—मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर !
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥

श्रीभगवते साम्बशिवाय नमः । क्षमायाचनां समर्पयामि । (क्षमा-याचना करे ।)

अन्तमें चरणोदक और प्रसाद ग्रहण कर पूजाकी साङ्गता करे ।

अर्पण— ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु ।

विष्णवे नमः, विष्णवेनमः, विष्णवे नमः ।

═══ ★ ═══

दुर्गापूजा-विधान

पहले बतलाये नियमके अनुसार आसनपर प्राङ्मुख बैठ जाय। जलसे प्रोक्षणकर शिखा बाँधे। तिलक लगाकर आचमन एवं प्राणायाम करे। संकल्प करे। हाथमें फूल लेकर अञ्जलि बाँधकर दुर्गाजीका ध्यान करे। (ध्यानका मन्त्र पञ्चदेवपूजा (पृष्ठ-सं० १२३) में आ चुका है। यदि प्रतिष्ठित प्रतिमा हो तो आवाहनकी जगह पुष्पाञ्जलि दे, नहीं तो दुर्गाजीका आवाहन करे।)

आवाहन—आगच्छ त्वं महादेवि ! स्थाने चात्र स्थिरा भव।
यावत् पूजां करिष्यामि तावत् त्वं संनिधौ भव॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। दुर्गादेवीमावाहयामि। आवाहनार्थे पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। (पुष्पाञ्जलि समर्पण करे।)

आसन—अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्।
इदं हेममयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि। (रत्नमय आसन या फूल समर्पित करे।)

पाद्य—गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्य आनीतं तोयमुत्तमम्।
पाद्यार्थं ते प्रदास्यामि गृहाण परमेश्वरि॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। (जल चढ़ाये।)

अर्घ्य—गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया।
गृहाण त्वं महादेवि प्रसन्ना भव सर्वदा॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। (चन्दन, पुष्प, अक्षतसे युक्त अर्घ्य दे।)

आचमन—कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं गृहाण परमेश्वरि॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। आचमनं समर्पयामि। (कर्पूरसे

सुवासित शीतल जल चढ़ाये।)

स्नान—मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देवि! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। स्नानार्थं जलं समर्पयामि। (गङ्गा-जल चढ़ाये।)

स्नानाङ्ग-आचमन—स्नानान्ते पुनराचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमनके लिये जल दे।)

दुग्धस्नान—कामधेनुसमुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। दुग्धस्नानं समर्पयामि। (गोदुग्धसे स्नान कराये।)

दधिस्नान—पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देवि! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। दधिस्नानं समर्पयामि। (गोदधिसे स्नान कराये।)

घृतस्नान—नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। घृतस्नानं समर्पयामि। (गोघृतसे स्नान कराये।)

मधुस्नान—पुष्परेणुसमुत्पन्नं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजःपुष्टिसमायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। मधुस्नानं समर्पयामि। (मधुसे स्नान कराये।)

शर्करास्नान—इक्षुसारसमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। शर्करास्नानं समर्पयामि। (शक्करसे स्नान कराये।)

पञ्चामृत-स्नान—पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम्।
पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्य ताम्॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। (अन्य पात्रमें पृथक् निर्मित पञ्चामृतसे स्नान कराये।)

गन्धोदक-स्नान—मलयाचलसम्भूतं चन्दनागरुमिश्रितम्।
सलिलं देवदेवेशि शुद्धस्नानाय गृह्यताम्॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। गन्धोदकस्नानं समर्पयामि। (मलयचन्दन और अगरुसे मिश्रित जल चढ़ाये।)

शुद्धोदक-स्नान—शुद्धं यत् सलिलं दिव्यं गङ्गाजलसमं स्मृतम्।
समर्पितं मया भक्त्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (शुद्ध जलसे स्नान कराये।)

आचमन—शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमनके लिये जल दे।)

वस्त्र—पट्टयुग्मं मया दत्तं कञ्चुकेन समन्वितम्।
परिधेहि कृपां कृत्वा मातर्दुर्गार्तिनाशिनि॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। वस्त्रोपवस्त्रं कञ्चुकीयं च समर्पयामि। (धौतवस्त्र, उपवस्त्र और कञ्चुकी निवेदित करे।)

वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमनके लिये जल दे।)

सौभाग्यसूत्र—सौभाग्यसूत्रं वरदे सुवर्णमणिसंयुतम्।
कण्ठे बध्नामि देवेशि सौभाग्यं देहि मे सदा॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। सौभाग्यसूत्रं समर्पयामि। (सौभाग्यसूत्र चढ़ाये।)

चन्दन—श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठे चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। चन्दनं समर्पयामि। (मलयचन्दन लगाये।)

****

हरिद्राचूर्ण—हरिद्रारञ्जिते देवि ! सुखसौभाग्यदायिनि ।
तस्मात् त्वां पूजयाम्यत्र सुखं शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः । हरिद्रां समर्पयामि । (हल्दीका चूर्ण चढ़ाये ।)

कुङ्कुम—कुङ्कुमं कामदं दिव्यं कामिनीकामसम्भवम् ।
कुङ्कुमेनार्चिता देवी कुङ्कुमं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः । कुङ्कुमं समर्पयामि । (कुंकुम चढ़ाये ।)

सिन्दूर—सिन्दूरमरुणाभासं जपाकुसुमसंनिभम् ।
अर्पितं ते मया भक्त्या प्रसीद परमेश्वरि ॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः । सिन्दूरं समर्पयामि । (सिन्दूर चढ़ाये ।)

कज्जल (काजल)—चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे शान्तिकारकम् ।
कर्पूरज्योतिसमुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि ॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः । कज्जलं समर्पयामि । (काजल चढ़ाये ।)

दूर्वाङ्कुर—तृणकान्तमणिप्रख्यहरिताभिः सुजातिभिः ।
दूर्वाभिराभिर्भवतीं पूजयामि महेश्वरि ॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः । दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि । (दूब चढ़ाये ।)

बिल्वपत्र—त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुतम् ।
त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः । बिल्वपत्रं समर्पयामि । (बिल्वपत्र चढ़ाये ।)

आभूषण—हारकङ्कणकेयूरमेखलाकुण्डलादिभिः ।
रत्नाढ्यं हीरकोपेतं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। आभूषणानि समर्पयामि। (आभूषण चढ़ाये।)

पुष्पमाला—माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि भक्तितः।
मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। पुष्पमालां समर्पयामि। (पुष्प एवं पुष्पमाला चढ़ाये।)

नानापरिमलद्रव्य—अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्।
नानापरिमलद्रव्यं गृहाण परमेश्वरि॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि। (अबीर, गुलाल, हल्दीका चूर्ण चढ़ाये।)

सौभाग्यपेटिका—हरिद्रां कुङ्कुमं चैव सिन्दूरादिसमन्विताम्।
सौभाग्यपेटिकामेतां गृहाण परमेश्वरि॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। सौभाग्यपेटिकां समर्पयामि। (सौभाग्यपेटिका समर्पण करे।)

धूप—वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। धूपमाघ्रापयामि। (धूप दिखाये।)

दीप—साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेशि त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। दीपं दर्शयामि। (घीकी बत्ती दिखाये, हाथ धो ले।)

नैवेद्य—शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारार्थं भक्ष्यभोज्यं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। नैवेद्यं निवेदयामि। (नैवेद्य निवेदित करे।)

आचमनीय आदि—नैवेद्यान्ते ध्यानमाचमनीयं जलमुत्तरापोऽशनं हस्तप्रक्षालनार्थं मुखप्रक्षालनार्थं च जलं समर्पयामि॥

(आचमनीसे जल दे।)

ऋतुफल—इदं फलं मया देवि स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। ऋतुफलानि समर्पयामि। (ऋतुफल समर्पण करे।)

ताम्बूल—पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलालवङ्गसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। ताम्बूलं समर्पयामि। (इलायची, लौंग, पूगीफलके साथ पान निवेदित करे।)

दक्षिणा—दक्षिणां हेमसहितां यथाशक्तिसमर्पिताम्।
अनन्तफलदामेनां गृहाण परमेश्वरि॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। दक्षिणां समर्पयामि। (दक्षिणा चढ़ाये।)

आरती—कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मां वरदा भव॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। कर्पूरारार्तिक्यं समर्पयामि। (कर्पूरकी आरती करे।)

श्रीअम्बाजीकी आरती

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामागौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव जी॥ १ ॥ जय अम्बे०
माँग सिंदूर विराजत टीको मृगमदको।
उज्ज्वलसे दोउ नैना, चंद्रवदन नीको॥ २ ॥ जय अम्बे०
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्त-पुष्प गल माला कण्ठनपर साजै॥ ३ ॥ जय अम्बे०
केहरि वाहन राजत, खड्ग खपर धारी।

सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुखहारी ॥ ४ ॥ जय अम्बे०
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ।
कोटिक चंद्र दिवाकर सम राजत ज्योती ॥ ५ ॥ जय अम्बे०
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर-घाती ।
धूम्रविलोचन नैना निशिदिन मदमाती ॥ ६ ॥ जय अम्बे०
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे ।
मधु-कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ॥ ७ ॥ जय अम्बे०
ब्रह्माणी, रुद्राणी तुम कमला रानी ।
आगम-निगम बखानी, तुम शिव-पटरानी ॥ ८ ॥ जय अम्बे०
चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूँ ।
बाजत ताल मृदंगा औ बाजत डमरू ॥ ९ ॥ जय अम्बे०
तुम ही जगकी माता, तुम ही हो भरता ।
भक्तनकी दुख हरता सुख सम्पति करता ॥ १० ॥ जय अम्बे०
भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी ।
मनवाञ्छित फल पावत सेवत नर-नारी ॥ ११ ॥ जय अम्बे०
कंचन थाल विराजत अगर कपुर बाती ।
(श्री) मालकेतुमें राजत कोटिरतन ज्योती ॥ १२ ॥ जय अम्बे०
(श्री) अम्बेजीकी आरति जो कोइ नर गावै ।
कहत शिवानँद स्वामी, सुख सम्पति पावै ॥ १३ ॥ जय अम्बे०

प्रदक्षिणा—यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे ॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः । प्रदक्षिणां समर्पयामि । (प्रदक्षिणा करे ।)

मन्त्रपुष्पाञ्जलि—श्रद्धया सिक्तया भक्त्या हार्दप्रेम्णा समर्पितः ।
मन्त्रपुष्पाञ्जलिश्चायं कृपया प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। (पुष्पाञ्जलि समर्पित करे।)

नमस्कार—या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। नमस्कारान् समर्पयामि। (नमस्कार करे, इसके बाद चरणोदक सिरपर चढ़ाये।)

क्षमा-याचना—मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। क्षमायाचनां समर्पयामि। (क्षमा-याचना करे।)

अर्पण—ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु।
विष्णवे नमः, विष्णवे नमः, विष्णवे नमः।

═══★═══

नित्यहोम

होम-सम्बन्धी जानने योग्य बातें—हवनकी अग्निको पंखेसे प्रज्वलित करना मना है। मुखसे बाँसकी फुँकनीद्वारा फूँककर प्रज्वलित करे। सामान्य अग्निको भी मुखसे फूँकना मना है। यदि भूख, प्यास या क्रोधका आवेग हो, मन्त्र न आता हो, अग्नि प्रज्वलित न हो तो हवन न करे। अग्नि जब दक्षिणावर्त हो अर्थात् दक्षिणकी ओरसे घूमती हुई जल रही हो, तब हवन करना उत्तम माना जाता है। यदि अग्नि वामावर्त हो, थोड़ी जली हो, रुक्ष हो, चिनगारियोंसे व्याप्त हो, फट्-फट् करती हो और वह लकड़ियोंसे ढक दी गयी हो तो हवन न करे। **नित्यहोमकी विधि पृ०-सं० ३६५ में देखनी चाहिये।**

═══★═══

बलिवैश्वदेव (भूतयज्ञ)

[ज्ञातव्य बातें]

स्नान, संध्या, जप, देवपूजा, वैश्वदेव और अतिथिपूजा—ये छः नित्यकर्म माने गये हैं[1]। इनमें स्नान, संध्या, जप तथा देवपूजाके सम्बन्धमें लिखा जा चुका है। अब वैश्वदेवके सम्बन्धमें लिखा जा रहा है। देवपूजाके बाद वैश्वदेवका विधान है[2]।

संध्या न करनेसे जैसे प्रत्यवाय (पाप) लगता है, वैसे ही बलिवैश्वदेव न करनेसे भी प्रत्यवाय लगता है[3]। भोजनके लिये जो हविष्यान्न घरमें पकाया जाता है, उसीसे वैश्वदेव करना चाहिये। अभावमें साग, पत्ता, फल, फूलसे भी करे[4]। गेहूँ, चावल (जो उसना न हो), तिल, मूँग, जौ, मटर, कँगुनी, नीवार—ये हविष्यान्न हैं[5]। घी, दूध या दही मिलाकर

१-संध्या स्नानं जपश्चैव देवतानां च पूजनम्।
वैश्वदेवं तथातिथ्यं षट् कर्माणि दिने दिने॥
(बृ॰ परा॰ १। ३९)

२-वैश्वदेवं प्रकुर्वीत स्वशाखाविहितं ततः। ततः—देवार्चनानन्तरमिति माधवाचार्याः।
(आचारभूषण, पृ॰ २४०)

३-प्रत्यवायमाह माधवीये व्यासः—
पञ्चयज्ञांस्तु यो मोहान्न करोति गृहाश्रमी।
तस्य नायं न च परो लोको भवति धर्मतः॥
(दे॰ भा॰ ११। २२)

४-शाकं वा यदि वा पत्रं मूलं वा यदि वा फलम्।
सङ्कल्पयेद् यदाहारं तेनैव जुहुयाद्धविः॥
(दे॰ भा॰ ११। २२। १२)

५-(क) गोधूमा व्रीहयश्चैव तिला मुद्गा यवास्तथा।
हविष्या इति विज्ञेया वैश्वदेवादिकर्मणि॥
(ख) सितमस्विन्नं च हविष्यमिति व्रतार्के। ।(आचारेन्दु, २५२)
(ग) 'कलायकङ्गुनीवाराः' (व्रतार्क)

होम करे। तेल और क्षार-पदार्थ निषिद्ध हैं[1]। कोदो, चना, उड़द, मसूर, कुलथी—ये अन्न भी निषिद्ध हैं[2]। भोजनके लिये पकाया हुआ हविष्यान्न ही बलिवैश्वदेवका मुख्य उपकरण है। किंतु इस कर्मकी अबाधित आवश्यकता देखकर शास्त्रने छूट दे दी है कि यदि पकाया अन्न सुलभ न हो तो कच्चे अन्नसे, यदि हविष्यान्न न हो तो अहविष्यान्नसे, यदि अन्न सुलभ न हो तो फल-फूलसे और यह भी सम्भव न हो तो जलसे ही वैश्वदेव करे[3]।

इसी तरह वैश्वदेवमें नमक निषिद्ध है। किंतु पाकमें कहीं वह पड़ ही गया हो तो क्या करे ? तब शास्त्रने उपाय बतलाया है कि कुण्डके उत्तरकी ओरकी गर्म राख हटाकर होम करे[4]। जब दूसरेके घरमें सपरिवार भोजन करना हो, तब तो चूल्हा जलानेका प्रश्न नहीं उठता, किंतु शास्त्रका आदेश है कि उस दिन भी बलिवैश्वदेव करे। उपवासके दिन भी बलिवैश्वदेव करना चाहिये। पक्वान्नके अभावमें सूखे अन्नसे अथवा फल-फूलसे यह कर्म करे[5]।

१-जुहुयात् सर्पिषाभ्यक्तं तैलक्षारविवर्जितम्।
दध्याक्तं पयसाक्तं वा तदभावेऽम्बुनाऽपि वा॥
(बृ० प० स्मृ० ४। १५९)

२-कोद्रवं चणकं माषं मसूरं च कुलित्थकम्।
क्षारं च लवणं सर्वं वैश्वदेवे विवर्जयेत्॥
(स्मृत्यन्तर)

३-तत्र च सिद्धस्य हविष्यस्य मुख्यत्वात् तदर्थं पाकः कर्तव्यः। तत्रासामर्थ्ये तु अपक्वेनापि वैश्वदेवः कर्तव्यः। हविष्याभावे अहविष्येनापि। (वीरमित्रोदय, आ० प्र०)
'न चेदुत्पद्यतेऽन्नं तु अद्भिरेतान् समापयेत्।' (वीरमित्रोदय, आ० प्र०)
'अहरहः पञ्चयज्ञान् निर्वपेत्—आपत्रशाकोदकेभ्यः।' (शंखलिखित)

४-'न क्षारलवणहोमो विद्यते' (नारायणवृत्ति)
तथा परान्नसंस्पृष्टस्य चाहविष्यस्य होमः। उदीचीनमुष्णं भस्मापोह्य तस्मिन् जुहुयात्। (आपस्तम्ब)

५-परान्नभोजने उपवासदिनेऽपि पञ्चयज्ञार्थं पक्तव्यमेव। सर्वथा पाकासम्भवे पुष्पैः फलैरद्भिर्वा वैश्वदेवं कुर्यात्। (आश्वलायनवृत्ति)

जिस अग्निमें भोजन तैयार होता है, उसी अग्निमें होम करे[1]। घरके बीचमें[2] ताँबेके कुण्डमें यह अग्नि रखकर होम करना चाहिये अथवा अठारह अंगुलकी चौकोर वेदी बना ले, जिसमें तीन, दो या एक मेखला हो[3]। यदि ताम्रकुण्ड या वेदी न हो तो कच्ची मिट्टीके पात्र, ताम्रपात्र आदि अथवा पके मिट्टीके पात्रमें भी वैश्वदेव करे[4]। चूल्हा, लौहपात्र और खपरेका निषेध है[5]।

अविभक्त परिवारमें इस कर्मको मुख्य व्यक्ति ही करे। एकके करनेसे ही परिवार-भरका किया हुआ मान लिया जाता है[6]। दूसरे देशमें पृथक् पाक करनेपर पिताके रहते पुत्र या ज्येष्ठ भाईके रहते छोटा भाई भी बलिवैश्वदेव करे[7]। स्त्रियाँ भी बिना मन्त्रके वैश्वदेव कर सकती हैं[8]।

१-यस्मिन्नग्नौ पचेदन्नं तस्मिन् होमो विधीयते। (अङ्गिरा)

२-गृहस्य मध्यदिग्भागे वैश्वदेवं समाचरेत्। (स्मृतिमञ्जरी)

३-वैश्वदेवं प्रकुर्वीत कुण्डमष्टादशाङ्गुलम्।
मेखलात्रयसंयुक्तं द्विमेखलमथापि वा॥
स्यादेकमेखलं वापि चतुरस्रं समन्ततः।
अपि ताम्रमयं प्रोक्तं कुण्डमत्र मनीषिभिः॥ (स्मृतिसार)

४-कुण्डस्थण्डिलासम्भवेऽपक्वमृण्मयपात्रकुण्डाकृतिरहितताम्रादिपात्रपक्वमृण्मय-पात्राणामप्यनुज्ञा गम्यते। (संस्काररत्नमाला)

५-न चुल्ल्यां नायसे पात्रे न भूमौ न च खर्परे।
वैश्वदेवं प्रकुर्वीत… ॥
(दे० भा० ११। २२। ४)

६-सर्वैरनुमतिं कृत्वा ज्येष्ठेनैव तु यत्कृतम्।
द्रव्येण चाविभक्तेन सर्वैरेव कृतं भवेत्॥
(स्मृतिसार)

७-(क) यदि स्याद् भिन्नपाकाशी ग्रामे ग्रामान्तरेऽपि च।
वैश्वदेवं पृथक् कुर्यात् पितर्यपि च जीवति॥
(शाकल)

(ख) वैश्वदेवः क्षयाहश्च महालयाविधिस्तथा।
देशान्तरे पृथक् कार्यो दर्शश्राद्धं तथैव हि॥
(स्मृतिसमुच्चय)

८-'नास्ति स्त्रीणां पृथग् यज्ञः', 'न स्त्री जुहुयात्' इति निषेधौ समन्त्रकवैश्वदेवपरम्।'
(आचारेन्दु, पृ० २५५)

बलिवैश्वदेवके सम्पन्न होनेके बाद भगवान्‌को भोग लगाये[१]। कारण, बलिवैश्वदेवसे अन्नका संस्कार हो जाता है। भोग लगानेके लिये अन्न अलग निकाल कर रख ले[२]। वैश्वदेव होनेके पहले यदि अतिथि आ जाय, तो इस यज्ञके लिये अलगसे अन्न निकालकर उसे ससम्मान भिक्षा देकर बिदा करे।[३] अतिथिको प्रतीक्षा नहीं करानी चाहिये। वह न आये तो अग्निमें ही हवन करना चाहिये। आवश्यक हो तो वैश्वदेवकी अग्निको बाँसकी फूँकनीसे फूँककर प्रज्वलित करे॥ हाथसे, सूपसे और अपवित्र वस्त्रसे हाँककर प्रज्वलित करनेका निषेध है[४]। दाहिने हाथको उत्तान कर, चारों अँगुलियोंको सटाकर, अँगूठेकी सहायतासे मौन रहकर, बायें हाथको हृदयसे लगाकर और दाहिना घुटना टेककर हवि दे[५]। घृतमिश्रित चावल या

१-वैश्वदेवविधिं कृत्वा विष्णोर्नैवेद्यमर्पयेत्। (व्यास)
वैश्वदेवविशुद्धोऽसौ विष्णवेऽन्नं निवेदयेत्। (मनु०)

२-देवार्थमन्नमुद्धृत्य वैश्वदेवं समाचरेत्।
नैवेद्यमर्पयेत् पश्चान्नृयज्ञं तु ततश्चरेत्॥ (प्रयोगसार)

३-अकृते वैश्वदेवे तु भिक्षौ भिक्षार्थमागते।
उद्धृत्य वैश्वदेवार्थं भिक्षां दत्त्वा विसर्जयेत्॥ (दे० भा० ११। २२। १३)
नाग्निहोत्रेण दानेन नोपवासोपसेवनैः।
देवाश्च परितुष्यन्ति यथा त्वतिथिपूजनात्॥
(शंख)

४-न पाणिना न शूर्पेण न चामेध्यादिनापि वा।
मुखेनोपधमेदग्निं मुखादेष व्यसीयत॥ (दे० भा० ११। २२। ५)
मुखेनेत्यत्र वेणुधमनीयुक्तेनेति वाक्यशेषः।
(आ० सूत्रावली)

५-उत्तानेन तु हस्तेन अङ्गुष्ठाग्रेण तु पीडितम्।
संहताङ्गुलिपाणिस्तु वाग्यतो जुहुयाद्धविः॥
(परिशिष्ट)
'हृदि सव्यं निधाय वै।' (स्मृतिमञ्जरी)
'अनिपातितजानोस्तु राक्षसैर्ह्रियते हविः। (गोभिल)

****

रोटीसे आहुति देनी चाहिये। आहुतिका परिमाण बेर या आँवलेके बराबर हो[१]। यहाँ 'घृत' शब्दसे घी, दूध, कुसुम आदिका तेल—ये सभी गृहीत होते हैं[२]। अर्थात् घृतके अभावमें इन वस्तुओंका प्रयोग किया जा सकता है।

बलिवैश्वदेव-विधि

रसोईघरके बीच कुण्डके पीछे पूरबकी ओर मुखकर कुशासनपर बैठकर पवित्री धारणकर आचमन और प्राणायाम करे। इसके बाद हाथमें **जल लेकर संकल्प करे—**

'अद्य...मम पञ्चसूनाजनितपापक्षयपूर्वकश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं तन्त्रेण वैश्वदेवकर्म करिष्ये।'

इसके बाद **'पावकनाम्ने अग्नये नमः'**—इस मन्त्रसे प्रज्वलित अग्निको कुण्डमें प्रतिष्ठित करे। उक्त मन्त्रसे अग्निकी पूजा कर प्रणाम करे। निम्नलिखित मन्त्रसे प्रार्थना करे—

मुखं यः सर्वदेवानां हव्यभुक् कव्यभुक् तथा।
पितॄणां च नमस्तस्मै विष्णवे पावकात्मने॥

इसके बाद जलसे पर्युक्षण कर दाहिना घुटना टेककर सव्य होकर बायें हाथसे हृदयका स्पर्श करते हुए देवतीर्थसे जलती हुई आगमें घृताक्त अन्नकी पाँच आहुतियाँ दे—

(१) देवयज्ञ

१-**ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, इदं ब्रह्मणे न मम।**
२-**ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।**
३-**ॐ गृह्याभ्यः स्वाहा, इदं गृह्याभ्यो न मम।**
४-**ॐ कश्यपाय स्वाहा, इदं कश्यपाय न मम।**
५-**ॐ अनुमतये स्वाहा, इदमनुमतये न मम।**

इसके बाद जलपात्रके पास (चित्र देखें) हवनसे बचे हुए अन्नके तीन ग्रास रखे।

१-प्राणाहुतिं बलिं चैव बदर्यामलकमानतः। (छन्दोगपरिशिष्ट)
२-घृतं वा यदि वा तैलं पयो वा यदि वा दधि।
घृतस्थाने वियुक्तानां घृतशब्दो विधीयते।

१-ॐ पर्जन्याय नमः ।

२-ॐ अद्भ्यो नमः ।

३-ॐ पृथिव्यै नमः[१] ।

इसके बाद अग्निके पास पानीसे एक बित्ता चौकोर मण्डल बनाकर

बलिहरण-मण्डल

पूर्व

देवयज्ञ

१ २

५ अग्निपात्र

४ ३

अन्नपात्र

७

२ ३ १

जलपात्र

दक्षिण

२० १३

१० १७ १५ १२

६ १६ १४ ११ १८ ८

९

१९ ५ ४

पश्चिम

गोग्रास, श्वान, काक, देवादि, पिपीलिकादि पञ्चबलि

उसका द्वार पूरबकी ओर रखे। इसमें साथके मानचित्रके अङ्कोंके अनुसार बीस आहुतियाँ देनी हैं। जैसे चित्रमें जहाँ एक अङ्क लिखा है, वहाँ **'धात्रे नमः, इदं धात्रे न मम'** कहकर एक ग्रास रखे, फिर जहाँ २ का अङ्क लिखा है, वहाँ गृहद्वारपर, दूसरा ग्रास रखे। इसी तरह ३ से २० तक अङ्कोंकी जगह ग्रास देते जायँ—

१-पारस्करगृह्यसूत्र (२।९।३)

'मणिके त्रीन् पर्जन्यायादभ्यः पृथिव्यै ॥'

(हरिहरभाष्य भी इसीके अनुकूल है)

(२) भूतयज्ञ

१-**ॐ धात्रे नमः, इदं धात्रे न मम ।**

२-**ॐ विधात्रे नमः, इदं विधात्रे न मम ।**

३-**ॐ वायवे नमः, इदं वायवे न मम ।**

४-**ॐ वायवे नमः, इदं वायवे न मम ।**

५-**ॐ वायवे नमः, इदं वायवे न मम ।**

६-**ॐ वायवे नमः, इदं वायवे न मम ।**

७-**ॐ प्राच्यै नमः, इदं प्राच्यै न मम ।**

८-**ॐ अवाच्यै नमः, इदमवाच्यै न मम ।**

९-**ॐ प्रतीच्यै नमः, इदं प्रतीच्यै न मम ।**

१०-**ॐ उदीच्यै नमः, इदमुदीच्यै न मम ।**

११-**ॐ ब्रह्मणे नमः, इदं ब्रह्मणे न मम ।**

१२-**ॐ अन्तरिक्षाय नमः, इदमन्तरिक्षाय न मम ।**

१३-**ॐ सूर्याय नमः, इदं सूर्याय न मम ।**

१४-**ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यो न मम ।**

१५-**ॐ विश्वेभ्यो भूतेभ्यो नमः, इदं विश्वेभ्यो भूतेभ्यो न मम ।**

१६-**ॐ उषसे नमः, इदमुषसे न मम ।**

१७-**ॐ भूतानां पतये नमः, इदं भूतानां पतये न मम ।**

(३) पितृयज्ञ

दक्षिणकी ओर मुखकर जनेऊको दाहिने कंधेपर रखकर बायाँ घुटना टेके ।

१८-**ॐ पितृभ्यः स्वधा नमः, इदं पितृभ्यः स्वधा न मम ।**

निर्णेजनम्—पूरबकी ओर मुखकर सव्य होकर दाहिना घुटना टेके । अन्नके पात्रको धोकर वह जल १९वें अङ्ककी जगह निम्न मन्त्र पढ़कर डाले—

१९-ॐ यक्ष्मैतत्ते निर्णेजनं नमः, इदं यक्ष्मणे न मम ।

(४) मनुष्य-यज्ञ

जनेऊको कण्ठीकर उत्तराभिमुख होकर २०वें अङ्कपर ग्रास दे।

२०-ॐ हन्त ते सनकादिमनुष्येभ्यो नमः, इदं हन्त ते सनकादिमनुष्येभ्यो न मम ।

(५) ब्रह्मयज्ञ

पूरबकी ओर मुँह कर सव्य होकर पालथी मारकर तीन बार गायत्रीका जप करे।

पञ्चबलि-विधि

१-गोबलि (पत्तेपर)—मण्डलके बाहर पश्चिमकी ओर निम्नलिखित मन्त्र[1] पढ़ते हुए सव्य होकर गोबलि पत्तेपर दे—

ॐ सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः ।
प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः ॥
इदं गोभ्यो न मम ।

२-श्वानबलि (पत्तेपर)—जनेऊको कण्ठीकर निम्नलिखित मन्त्रसे कुत्तोंको बलि दे—

द्वौ श्वानौ श्यामशबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ ।
ताभ्यामन्नं प्रयच्छामि स्यातामेतावहिंसकौ ॥
इदं श्वभ्यां न मम ।

३-काकबलि (पृथ्वीपर)—अपसव्य होकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर कौओंको भूमिपर अन्न दे—

ॐ ऐन्द्रवारुणवायव्या याम्या वै नैर्ऋतास्तथा ।
वायसाः प्रतिगृह्णन्तु भूमौ पिण्डं मयोज्झितम् ॥
इदमन्नं वायसेभ्यो न मम ।

१-यदि मन्त्र स्मरण न रहे तो केवल 'गोभ्यो नमः' आदि नाम-मन्त्रसे बलि-प्रदान कर सकते हैं।

****

४-देवादिबलि (पत्तेपर)—सव्य होकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर देवता आदिके लिये अन्न दे—

ॐ देवा मनुष्याः पशवो वयांसि
सिद्धाः सयक्षोरगदैत्यसङ्घाः ।
प्रेताः पिशाचास्तरवः समस्ता
ये चान्नमिच्छन्ति मया प्रदत्तम् ॥
इदमन्नं देवादिभ्यो न मम ।

५-पिपीलिकादिबलि (पत्तेपर)—इसी प्रकार निम्नाङ्कित मन्त्रसे चींटी आदिको बलि दे—

पिपीलिकाः कीटपतङ्गकाद्या
बुभुक्षिताः कर्मनिबन्धबद्धाः ।
तेषां हि तृप्त्यर्थमिदं मयान्नं
तेभ्यो विसृष्टं सुखिनो भवन्तु ॥
इदमन्नं पिपीलिकादिभ्यो न मम ।

अग्निका विसर्जन—इसके बाद हाथ धोकर और आचमन कर भस्म लगाये। फिर हाथ जोड़कर अग्निदेवताको प्रणाम करे और निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर इनका विसर्जन करे—

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर ।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन ॥

न्यूनतापूर्ति—अब न्यूनताकी पूर्तिके लिये भगवान्से प्रार्थना करे—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ।
स्मरणादेव तद् विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥

अर्पण—अब पवित्री खोलकर रख दे और इस वैश्वदेवकर्मको भगवान्को अर्पित कर दे—'**अनेन वैश्वदेवाख्येन कर्मणा श्रीयज्ञस्वरूपः परमेश्वरः प्रीयताम्। ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।**'

ॐ विष्णवे नमः, विष्णवे नमः, विष्णवे नमः ।

══ ★ ══

अतिथि (मनुष्य)-यज्ञ

बलिवैश्वदेवके बाद सबसे पहले अतिथियोंको ससम्मान भोजन कराये[१]। इसके पहले मनुष्य-यज्ञमें जो हन्तकार अन्न दिया गया है, उससे भिन्न अन्न श्रेष्ठ ब्राह्मणोंको जो दिया जाता है, वह मनुष्य-यज्ञ कहलाता है[२]। यह भी देखना होता है कि नियमित भोजन करनेवाले जो भृत्य हैं, उनका उपरोध किसी तरह न हो[३]। अभावकी स्थितिमें मीठी बातोंसे अतिथियोंको संतुष्ट करे। चटाई बिछाकर ससम्मान बिठाये, जल ही दे दे। इन तीनोंसे भी अतिथियोंका जो सत्कार होता है, वह ज्योतिष्टोमसे भी अधिक फलप्रद होता है[४]।

अतिथियोंको लौटाना नहीं चाहिये, ऐसा करनेसे पाप लगता है। मध्याह्नमें आये अतिथिकी अपेक्षा सूर्यास्तके समय आये अतिथिका आठ गुना अधिक महत्त्व[५] है। सूर्यास्तके समय आये अतिथिको 'सूर्योढ' कहा जाता है। 'सूर्योढ' अतिथि यदि असमयमें भी आ जाय तो उसे बिना भोजन कराये न रहे[६]।

वैश्वदेवके समय प्राप्त अतिथिको नारायणका स्वरूप मानते

१-अतिथिमेवाग्रे भोजयेत्। (धर्मप्रश्न)

२-वैश्वदेवादूर्ध्वं हन्तकारान्नव्यतिरिक्तमन्नमतिथिभ्यो वरेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यद् दीयते स मनुष्ययज्ञस्तावतैव समाप्यते।

३-ये च नित्या भृत्यास्तेषामनुपरोधेन संविभागो विहितः। (धर्मप्रश्न)

४-ज्योतिष्टोमादिभ्योऽपि दुष्करम्। (धर्मप्रश्न)

५-दिनेऽतिथौ तु विमुखे गते यत् पातकं भवेत्।
तदेवाष्टगुणं प्रोक्तं सूर्योढे विमुखे गते॥ (याज्ञवल्क्य)

६-अप्रणोद्योऽतिथिः सायं सूर्योढो गृहमेधिना।
काले प्राप्तस्त्वकाले वा नास्यानश्नन् गृहे वसेत्॥ (मनु० ३। १०५)

हुए उसके कुल, शील, आचार, गुण-दोष, विद्या-अविद्या आदिपर विचार नहीं करना चाहिये[१]।

विशेष बातें

(१) पात्रापात्रका विचार न करना केवल अतिथिके लिये है—वैश्वदेवके लिये है। अन्यत्र पात्रापात्रका विचार बहुत ही अपेक्षित है। दान तो खूब विचारकर सत्पात्रको ही देना चाहिये। यदि बिना विचारे किसी अपात्रको खिला दिया जाय तो वह जो कुछ पाप करेगा, उसका हिस्सेदार खिलानेवाला भी होगा और खोजकर यदि किसी भगवत्प्राप्त संतको भोजन करा दिया जाय तो अन्नदाताको लाखों ब्राह्मणोंके भोजन करानेका फल प्राप्त हो जायगा[२]। साथ ही दया-परवश होकर दीन-दुखियोंको यदि कुछ दिया जाय तो वह भी फलप्रद होता है। लूले-लँगड़े आदिका भी भरण-पोषण किया जाना चाहिये, किंतु उन्हें दान[३] न दे।

(२) वैश्वदेव नित्यकर्म है। इसके करनेसे प्रत्यवायके शमनके साथ-साथ फलकी भी प्राप्ति होती है, किंतु अशौचमें इसे न करे।

१-न परीक्षेत चरितं न विद्यां न कुलं तथा।
न शीलं न च देशादीनतिथेरागतस्य हि॥
कुरूपं वा सुरूपं वा कुचैलं वा सुवाससम्।
विद्यावन्तमविद्यं वा सगुणं वाऽथ निर्गुणम्॥
मन्येत विष्णुमेवैतं साक्षान्नारायणं हरिम्।
अतिथिं समनुप्राप्तं विंचिकित्सेन्न कर्हिचित्॥
(नृसिंहपुराण)

२-परान्नेनोदरस्थेन यः करोति शुभाशुभम्।
अन्नदस्य त्रयो भागाः कर्ता भागेन लिप्यते॥

३-(क) दयामुद्दिश्य यद्दानमपात्रेभ्योऽपि दीयते।
दीनान्धकृपणेभ्यश्च तदानन्त्याय कल्पते॥
(व्यास)

(ख) भर्तव्यास्ते महाराज न तु देयः प्रतिग्रहः॥ (महाभा०)

(३) नित्यकर्ममें नित्य-श्राद्ध भी आता है। यहाँ आगे उसका भी उल्लेख किया गया है। परंतु जो लोग नित्य-श्राद्ध नहीं कर सकें, उनके लिये निम्नलिखित रूपसे भी नित्य-श्राद्धकी पूर्ति हो जाती है—

(क)—नित्यतर्पण करनेसे—'**अपि वाऽऽपस्तत् पितृयज्ञः संतिष्ठेत्।**'

(ख)—वैश्वदेवमें पितृयज्ञ करनेसे—'**वैश्वदेवान्तःपाति स्वधा पितृभ्यः' इति पैत्र्यबलिनैव वा नित्यश्राद्धसिद्धिः।**'

नित्य-श्राद्ध

श्राद्धकर्ता श्राद्धदेशमें पूर्वाभिमुख बैठकर आचमन (पृ० १८) और प्राणायाम (पृ० ५८) कर '**ॐ पवित्रे स्थो०**' यह मन्त्र पढ़कर दोनों अनामिकाओंमें पवित्री धारण कर ले। इसके बाद तीन कुशोंके अग्रभागसे निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर अपने ऊपर और श्राद्ध-सामग्रीपर भी जल छिड़के—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥
दृष्टिस्पर्शनादिदोषाद् वस्तूनां पवित्रताऽस्तु।

पितरोंके लिये आसन और भोजनपात्र

अपने आसनसे दाहिनी ओर पिता, पितामह और प्रपितामहके लिये तीन पलाशके पत्तोंका एक आसन उत्तराभिमुख बिछाये। इसके आगे चार पत्तोंका एक भोजनपात्र रखे। इसी तरह मातामह आदिके लिये भी आसन और भोजनपात्र रखे।

तदनन्तर हाथमें जल, मोटक और तिल लेकर संकल्प करे—

संकल्प—(सव्य होकर)—**ॐ विष्णवे नमः, विष्णवे नमः, विष्णवे नमः। ॐ अद्य** (पृ० १९) **... गोत्रः .....शर्मा (वर्मा/ गुप्तः) अहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्रीभगवत्प्रीत्यर्थं**

(इतना संकल्प पढ़कर दक्षिणाभिमुख हो अपसव्य हो जाय अर्थात् जनेऊ और गमछा दाहिने कंधेपर रख ले, तब आगेका संकल्प बोले) **अमुक गोत्राणाम्, अमुक शर्मणां (वर्मणां/गुप्तानां) अस्मत्पितृपितामह-प्रपितामहानां सपत्नीकानां तथा च अमुक गोत्राणाम्, अमुक शर्मणाम्, अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानां नित्यश्राद्धं करिष्ये।**

—यह संकल्प पढ़कर पिता आदिके आसनपर हाथका तिल, जल और मोटक दक्षिणाग्र रख दे।

सव्य—इसके बाद पूर्वाभिमुख बैठकर जनेऊ-गमछा बाँये कंधेपर रखकर सव्य हो जाय तथा निम्न मन्त्रोंको तीन-तीन बार पढ़े—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वधायै स्वाहायै नित्यमेव नमो नमः॥

अपसव्य—इसके बाद अपसव्य और दक्षिणाभिमुख होकर बायाँ घुटना भूमिपर टेक कर तिल, जल तथा मोटक लेकर निम्नलिखित वाक्य बोले—

ॐ अद्य अमुकगोत्राः अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाः अमुकामुकशर्माणः (वर्माणः/ गुप्ताः) सपत्नीकाः नित्यश्राद्धे इदमासनं त्रिधा विभज्य युष्मभ्यं स्वधा।

मोटक आदिको पिता आदिके आसनपर दक्षिणाग्र रख दे। इसी तरह

फिर तिल, जल, मोटक लेकर निम्नलिखित वाक्य बोले और मोटक आदिको मातामह आदिके आसनपर रख दे।

ॐ अद्य अमुकगोत्राः अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः अमुकामुकशर्माणः (वर्माणः/गुप्ताः) सपत्नीकाः नित्यश्राद्धे इदमासनं त्रिधा विभज्य युष्मभ्यं स्वधा।

तिलोंका विकिरण

इसके बाद तिल लेकर पितृतीर्थसे, '**ॐ अपहता असुरा रक्षाँसि वेदिषदः**' यह मन्त्र पढ़कर श्राद्धदेशमें तिल छोड़ दे।

आसनपर चन्दन आदि

इसके बाद पिता आदिके आसनपर चन्दन, पुष्प, तिल, ताम्बूल चढ़ाये। धूप और दीप जला दे। निम्नलिखित वाक्य बोलकर इन्हें अर्पण करे—

ॐ अद्य अमुकगोत्राः अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाः अमुकामुकशर्माणः (वर्माणः/गुप्ताः) सपत्नीकाः नित्यश्राद्धे एतानि गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलानि युष्मभ्यं स्वधा।

इसी तरह मातामह आदिके आसनपर भी चन्दन आदि चढ़ाकर निम्नलिखित वाक्य बोलकर इन्हें अर्पण करे—

ॐ अद्य अमुकगोत्राः अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः अमुकामुकशर्माणः (वर्माणः/गुप्ताः) सपत्नीकाः नित्यश्राद्धे एतानि गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलानि युष्मभ्यं स्वधा।

भोज्य पदार्थ परोसना और उसे अभिमन्त्रित करना

भोजनपात्रके चारों ओर जलसे चौकोर घेरा लगाकर अन्न आदि परोस दे। फिर निम्न मन्त्र पढ़कर अन्नको अभिमन्त्रित करे—

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ २ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ ॐ मधु मधु मधु॥

(शु० य० १३। २७—२९, ३७। १३)

अन्नका स्पर्श

दोनों हाथोंको अन्नपात्रका स्पर्श करते हुए व्यस्तरूपसे रखे। अर्थात् बायाँ हाथ अपनी दाहिनी ओर उलटा और इसपर दाहिना हाथ बायीं ओर उलटा रखकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़े—

ॐ पृथ्वी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा। ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा। ॐ विष्णो कव्यमिदं रक्ष मदीयम्।

अब बायें हाथको वैसे ही रखते हुए दाहिने हाथको उलटकर अँगूठेसे अन्न आदिका स्पर्श करे—

इदमन्नम् (अन्नका स्पर्श)।

इमा आपः (जलका स्पर्श)।

इदमाज्यम् (घीका स्पर्श)।

इदं हविः (फिर अन्नका स्पर्श)।

तिल बिखेरना

पाककी रक्षाके लिये निम्नलिखित वाक्य पढ़कर अन्नपात्रके चारों ओर तिल छोड़ दे—

ॐ अपहता असुरा रक्षा ँ सि वेदिषदः।

अन्नका संकल्प

मोटक, तिल, जल लेकर निम्नलिखित वाक्य बोलकर पिता आदिके भोजनपात्रके पास तिलादि छोड़ दे—

ॐ अमुकगोत्राः अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाः अमुकामुकशर्माणः (वर्माणः/गुप्ताः) सपत्नीकाः इदमन्नं सोपस्करं युष्मभ्यं स्वधा।

इसी तरह मातामह आदिको अन्न दे तथा मोटक, तिल, जल लेकर निम्नलिखित वाक्य बोलकर मातामह आदिके भोजनपात्रके पास तिलादि छोड़ दे—

ॐ अद्य अमुकगोत्राः अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः अमुकामुकशर्माणः (वर्माणः/गुप्ताः) सपत्नीकाः इदमन्नं सोपस्करं युष्मभ्यं स्वधा।

कर्मकी पूर्णताके लिये प्रार्थना

इसके बाद हाथ जोड़कर कर्मकी पूर्णताके लिये प्रार्थना करे—

अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद् भवेत्।
अच्छिद्रमस्तु तत्सर्वं पित्रादीनां प्रसादतः ॥

मन्त्र-पाठ

इसके बाद गायत्री-मन्त्र और '**ॐ मधु वाता०**' (पृ० १६०) मन्त्रका पाठ करे। यथाशक्ति पुरुषसूक्तका भी पाठ करे। '**ॐ उदीरतामवर०**' (यजु० १९। ४९) इत्यादि मन्त्रोंका भी पाठ करे।

दक्षिणाका संकल्प

हाथमें दक्षिणा लेकर निम्नलिखित संकल्प पढ़े—

ॐ अद्य अमुकगोत्राणाम्, अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानाम्, अमुकामुकशर्मणां (वर्मणां/गुप्तानां) सपत्नीकानां तथा अमुकामुकगोत्राणाम्, अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानाम्, अमुकामुकशर्मणां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां कृतैतन्नित्यश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदममुकदैवतं दक्षिणाद्रव्यम् अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।

इस प्रकार संकल्प पढ़कर दक्षिणा ब्राह्मणको दे दे। दक्षिणामें फल-मूल भी दिया जा सकता है।

प्रार्थना

हाथ जोड़कर भगवान्‌को प्रार्थनापूर्वक निम्न मन्त्रसे प्रणाम करे—

प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद् विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥

भगवान्‌को अर्पण

श्राद्धका अन्न ब्राह्मणको दे या जलमें डाल दे। इसके बाद हाथ जोड़कर इस श्राद्ध-कर्मको आगेका वाक्य पढ़कर भगवान्‌को अर्पण कर दे—

अनेन कृतेन नित्यश्राद्धकर्मणा भगवान् गदाधरः प्रीयतां न मम, ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु।

विष्णवे नमः, विष्णवे नमः, विष्णवे नमः।

═══ ★ ═══

वार्षिक तिथिपर श्राद्धके निमित्त ब्राह्मण-भोजनका संकल्प

पिता, पितामह, प्रपितामह आदिकी वार्षिक तिथिपर समयाभाव अथवा किसी कारणवश वार्षिक एकोद्दिष्ट श्राद्ध न हो सके तो पूर्वाभिमुख होकर निम्नलिखित संकल्प करे—

ॐ अद्य विक्रमसंवत्सरे (अमुक) संख्यके (अमुक) मासे (अमुक) पक्षे (अमुक) तिथौ (अमुक) वासरे (अमुक) गोत्रस्य अस्मत्पितुः[१] (अमुक) सांकल्पिकश्राद्धं तथा बलिवैश्वदेवाख्यं पञ्चबलिकर्म च करिष्ये।

(बलिवैश्वदेव पृ०-सं० १५० तथा पञ्चबलि पृ०-सं० १५३ के अनुसार करे)

तत्पश्चात् दक्षिणाभिमुख हो अपसव्य होकर मोटक-तिल-जल लेकर निम्नलिखित संकल्प करे—

ॐ अद्य (अमुक) गोत्राय पित्रे (अमुक) शर्मणे (वर्मणे/ गुप्ताय) सांकल्पिकश्राद्धे इदमन्नं परिविष्टं परिवेष्यमाणं ब्राह्मणभोजन-तृप्तिपर्यन्तं सोपस्करं ते स्वधा। सव्य तथा पूर्वाभिमुख होकर आशीर्वादके लिये निम्नलिखित प्रार्थना करे—

ॐ गोत्रं नो वर्धतां दातारो नोऽभिवर्धन्ताम्। वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु। अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन। एताः सत्या आशिषः सन्तु॥ फिर दक्षिणाका संकल्प इस प्रकार करे—

कृतैतच्छ्राद्धप्रतिष्ठार्थं दक्षिणाद्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे। तदनन्तर निम्न प्रार्थना करे—

अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु पित्रादीनां प्रसादतः॥
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

★

१-'पितुः' की जगह दादाको 'पितामहस्य' तथा परदादाको 'प्रपितामहस्य' कहे।

भोजनादि शयनान्तविधि

भोजन-विधि—भोजनालयमें प्रवेश करनेके पहले हाथ-पाँव धोकर दाँतोंको रगड़कर साफ कर ले। फिर कुल्ले कर **'ॐ भूर्भुवः स्वः'** इस मन्त्रसे दो बार आचमन करे। फिर विहित पीढ़ेपर पूरब या उत्तरकी ओर मुँह कर बैठ जाय। थाल रखनेकी जगहपर थालके बराबर, जलसे दाहिनी ओरसे प्रारम्भ कर चौकोर घेरा बनाये। भगवान्‌के भोग लगाये अन्नको पात्रमें परोसवाकर (यदि भोग न लगा हो तो भगवान्‌को निवेदन कर) हाथ जोड़कर प्रणाम करे और **'ॐ अस्माकं नित्यमस्त्वेतत्'** कहकर प्रार्थना करे। फिर हाथमें जल लेकर (दिनमें) **'सत्यं त्वर्तेन त्वा परिषिञ्चामि'** और (रातमें) **'ऋतं त्वा सत्येन परिषिञ्चामि'** कहकर प्रोक्षण करे।

अब पात्रसे दस या पाँच अंगुल हटकर दाहिनी ओर पृथ्वीपर जलका आसन देकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर तीन ग्रास निकाले—

१-ॐ भूपतये स्वाहा।
२-ॐ भुवनपतये स्वाहा।
३-ॐ भूतानां पतये स्वाहा।

इन मन्त्रोंद्वारा पृथ्वी, चौदह भुवनों तथा सम्पूर्ण प्राणियोंके स्वामी परमात्माकी तृप्ति की जाती है, जिससे सबकी तृप्ति स्वतः हो जाती है।

पञ्च प्राणाहुति—इसके बाद दाहिने हाथमें किंचित् जल लेकर **'ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा'** इस मन्त्रसे आचमन करे (अर्थात् भोजनसे पूर्व अमृतरूपी जलका आसन प्रदान करे)। आवाज न हो। इसके बाद मौन होकर बेरके बराबर पाँच ग्रासद्वारा निम्नलिखित मन्त्रोंसे प्राणाहुतियाँ दे।

१-ॐ प्राणाय स्वाहा।

२-ॐ अपानाय स्वाहा।

३-ॐ व्यानाय स्वाहा।

४-ॐ उदानाय स्वाहा।

५-ॐ समानाय स्वाहा।

फिर हाथ धोकर प्रसाद पाये। भगवान्‌से उपभुक्त होनेके कारण इसके आस्वादनके समय अवश्य उनका प्रेम स्मरण होता रहेगा।

जिनके पिता या ज्येष्ठ भाई जीवित हों, उन्हें प्राणाहुतितक ही मौन रखना चाहिये। बचे हुए बेरके बराबर अन्नको दाहिने हाथमें रखकर थोड़ा जल भी रख ले। इसे निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर बलिस्थानकी ओर रख दे—

अस्मत्कुले मृता ये च पितृलोकविवर्जिताः।
भुञ्जन्तु मम चोच्छिष्टं.....पात्राच्चैव बहिः क्षिपेत्॥

इसके बाद दाहिने हाथमें जल लेकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़ते हुए—'**ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा।**' आधा जल पी ले और बचे हुए आधे जलको निम्न मन्त्र पढ़ते हुए उच्छिष्ट अन्नपर छोड़ दे—

रौरवेऽपुण्यनिलये पद्मार्बुदनिवासिनाम्।
अर्थिनामुदकं दत्तमक्षय्यमुपतिष्ठतु॥

(दे० भा० ११।२३।३)

अब सब बलि-अन्न लेकर आँगनमें आ जाय और उसे कौओंको दे दे। हाथ और मुँह धोकर बायीं ओर सोलह कुल्ले करे। थोड़ा जल लेकर हथेलीपर रखे और इसे दोनों हथेलियोंसे खूब घिसकर दोनों आँखोंमें अँगूठेकी सहायतासे डाल दे। उस समय निम्नलिखित मन्त्र पढ़ता रहे—

शर्यातिं च सुकन्यां च च्यवनं शक्रमश्विनौ।
भोजनान्ते स्मरन्नक्ष्णोरङ्गुलाग्राम्बु निक्षिपेत्॥

उचित परिपाकके लिये निम्नलिखित मन्त्र पढ़ते हुए उदरपर तीन बार हाथ फेरे—

अगस्त्यं वैनतेयं च शनिं च वडवानलम्।
अन्नस्य परिणामार्थं स्मरेद् भीमं च पञ्चमम्॥

भोजनके बाद भगवान्‌पर चढ़ी तुलसी, लौंग, इलायची आदि खाये[१]।

भोजनके बादके कृत्य

हलका विश्राम—भोजनके बाद हलका विश्राम अपेक्षित है। किंतु दिनमें सोना मना है[२]। भोजनके बाद लगभग सौ कदम चलकर आठ साँसतक चित्त, सोलह साँसतक दायीं करवट और बत्तीस साँसतक बायीं करवट लेट जाना चाहिये। इससे पाचनमें सुविधा होती है और आलस्य भी दूर हो जाता है।

पुराण आदिका अनुशीलन—विश्रामके बाद अपने कर्तव्य-कार्योंमें संलग्न हो जाना चाहिये। शास्त्रने कहा है कि भोजनके बाद इतिहास, पुराण और धर्मशास्त्र आदिके अनुशीलनमें तथा अपने जीविकोपार्जनमें समयका सदुपयोग करना चाहिये। व्यर्थ समय न खोये[३]।

लोकयात्रा[४] और संध्योपासन—सूर्यके अस्त होनेसे सवा घंटा पहले मन्दिरोंमें दर्शनके लिये निकले। तेजीसे चले ताकि भ्रमणका कार्य भी हो जाय। वैसे प्रातःभ्रमणका अत्यधिक महत्त्व है। सूर्यास्तसे २४ मिनट पहले संध्योपासनके लिये बैठ जाना चाहिये। इसके पहले पैर, हाथ, मुख धोकर धोती बदलकर आचमन कर लेना चाहिये। सायंकाल भी स्नान कर

१-शास्त्रानुसार भोजन करनेकी पूर्ण विधि यहाँ लिखी गयी है। पर यदि मन्त्र स्मरण न हो तो भावानुसार केवल क्रियाद्वारा भी विधि पूरी की जा सकती है।

२-**दिवास्वापं न कुर्वीत** ....। (दक्ष)

३-**इतिहासपुराणानि धर्मशास्त्राणि चाभ्यसेत्।**
वृथाविनोदवाक्यानि परिवादांश्च वर्जयेत्॥
(अत्रि)

४-**ग्रामे यान्यागाराणि देवतानां तदीक्षणात्।**
लोकयात्रेति कथिता तां कुर्वन् पुण्यभाग्भवेत्॥

सकते हैं, पर आवश्यक नहीं है। संध्योपासनके बाद नित्य एकाग्रतासे भगवत्स्मरण करे तथा अपने इष्टदेवका जप करे। कपड़ा धोकर भगवान्‌पर चढ़े चन्दन आदिको पोंछ देना चाहिये। भोग लगाकर आरती उतारनी चाहिये। शयन कराना चाहिये।

सांध्यदीप—सूर्यास्तके समय दीपक जला देना चाहिये। इससे लक्ष्मीकी प्राप्ति होती है। जलानेके बाद निम्नलिखित मन्त्रोंसे दीपकको प्रकाशरूप ब्रह्म समझकर प्रणाम करे—

दीपो ज्योतिः परं ब्रह्म दीपो ज्योतिर्जनार्दनः।
दीपो हरतु मे पापं सांध्यदीप ! नमोऽस्तु ते॥
शुभं करोतु कल्याणमारोग्यं सुखसम्पदम्।
शत्रुबुद्धिविनाशं च दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥

दीपकको दीवट या अक्षत आदिपर रखना चाहिये। सीधे जमीनपर रखना मना है। सायंकालिक भोजन कर दिनभरके अपने कृत्योंका सिंहावलोकन करना चाहिये।

आत्मनिरीक्षण[1] एवं प्रभुस्मरण—रात्रिमें सोनेके पूर्व प्रत्येक व्यक्तिको कुछ समयके लिये आत्मनिरीक्षण करना चाहिये कि मेरे शरीर, वचन और मनसे शास्त्रके विपरीत कोई क्रिया तो नहीं हो गयी और यदि हो गयी हो तो उसके लिये भगवन्नामका जप और आगे न हो, इसके लिये मनमें संकल्प करे। दिनभर प्रत्येक कर्ममें भगवान्‌का स्मरण होता रहा है या नहीं ? यदि नहीं तो कातरभावसे भगवान्‌से प्रार्थना करनी चाहिये कि उनका निरन्तर स्मरण बना रहे। सोनेसे पूर्व गुरुजनोंकी सेवा करनी चाहिये। तदनन्तर भगवान्‌की मानसिक सेवा करते हुए उन्हींके चरणोंमें सो जाय।

═══★═══

१-प्रत्यहं पर्यवेक्षेत नरश्चरितमात्मनः।

विशिष्ट पूजा-प्रकरण

[किसी भी यज्ञादि महोत्सवों, पूजा-अनुष्ठानों अथवा नवरात्र-पूजन, शिवरात्रिमें शिव-पूजन, पार्थिव-पूजन, रुद्राभिषेक, सत्यनारायण-पूजन, दीपावली-पूजन आदि कर्मोंमें प्रारम्भमें स्वस्तिवाचन, पुण्याहवाचन, गणेश-कलश-नवग्रह तथा रक्षा-विधान आदि कर्म सम्पन्न किये जाते हैं, इसके अनन्तर प्रधान-पूजा की जाती है। अतः यहाँ भी वह पूजा-विधान दिया गया है। नान्दीमुख श्राद्ध तथा विशेष अनुष्ठानोंके प्रधान देवताका पूजन-विधान यहाँ नहीं दिया गया है, अन्य पद्धतियोंको देखकर करना चाहिये।]

देवपूजनमें वेद-मन्त्र, फिर आगम-मन्त्र और बादमें नाम-मन्त्रका उच्चारण किया जाता है। यहाँ इसी क्रमका आधार लिया गया है। जिन्हें वेद-मन्त्र न आता हो, उन्हें आगम-मन्त्रोंका प्रयोग करना चाहिये और जो इनका भी शुद्ध उच्चारण न कर सकें, उनको नाम-मन्त्रोंसे पूजन करना चाहिये।

पूजासे पहले पात्रोंको क्रमसे यथास्थान (पृ० ११५) रखकर पूर्व दिशाकी ओर मुख करके आसनपर बैठकर तीन बार आचमन करना चाहिये—

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।

आचमनके पश्चात् दाहिने हाथके अँगूठेके मूलभागसे '**ॐ हृषीकेशाय नमः, ॐ गोविन्दाय नमः**' कहकर ओठोंको पोंछकर हाथ धो लेना चाहिये। तत्पश्चात् निम्नलिखित मन्त्रसे पवित्री धारण करे—

'पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।'

पवित्री धारण करनेके पश्चात् प्राणायाम (पृ० ५६—५९) करे।

इसके बाद बायें हाथमें जल लेकर दाहिने हाथसे अपने ऊपर और पूजा-सामग्रीपर छिड़कना चाहिये—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु ।

तदनन्तर पात्रमें अष्टदल-कमल बनाकर यदि गणेश-अम्बिकाकी मूर्ति न हो तो सुपारीमें मौली लपेटकर अक्षतपर स्थापित कर देनेके बाद हाथमें अक्षत और पुष्प लेकर स्वस्त्ययन पढ़ना चाहिये ।

स्वस्त्ययन

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः । देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवाना ँ रातिरभि नो निवर्तताम् । देवाना ँ सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥ तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम् । अर्यमणं वरुण ँ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥ तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः । तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम् ॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः । अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह ॥ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् ।

****

पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ॥ अदितिर्द्यौ-रदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः । विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॥ (शु० य० २५ । १४-२३) द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ् शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ् शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ (शु० य० ३६ । १७) यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ सुशान्तिर्भवतु ॥ (शु० य० ३६ । २२)

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । उमा-महेश्वराभ्यां नमः । वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः । शचीपुरन्दराभ्यां नमः । मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः । इष्टदेवताभ्यो नमः । कुलदेवताभ्यो नमः । ग्रामदेवताभ्यो नमः । वास्तुदेवताभ्यो नमः । स्थानदेवताभ्यो नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः । ॐ सिद्धि-बुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
सङ्ग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये ! शिवे ! सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके ! गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् ।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः ॥
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ।
विद्याबलं देवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि ॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥
स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते ।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ॥
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः ॥
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम् ।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम् ॥
वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ॥

हाथमें लिये अक्षत-पुष्पको गणेशाम्बिकापर चढ़ा दे। इसके बाद दाहिने हाथमें जल, अक्षत और द्रव्य लेकर संकल्प करे।

(क) निष्काम संकल्प

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे

भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे.....नगरे/ग्रामे/क्षेत्रे (अविमुक्तवाराणसी-क्षेत्रे आनन्दवने महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते)...... वैक्रमाब्दे....संवत्सरे.....मासे....शुक्ल/कृष्णपक्षे.... तिथौ... वासरे....प्रातः/सायंकाले....गोत्रः....शर्मा/ वर्मा/गुप्तः अहं ममोपात्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं....देवस्य पूजनं करिष्ये ।

(ख) सकाम संकल्प

यदि सकाम पूजा करनी हो तो कामना-विशेषका नाम लेना चाहिये—या निम्नलिखित संकल्प करना चाहिये—

........अहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य क्षेमस्थैर्यायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थमाधिभौतिकाधि-दैविकाध्यात्मिकत्रिविधतापशमनार्थं धर्मार्थकाममोक्षफलप्राप्त्यर्थं नित्यकल्याणलाभाय भगवत्प्रीत्यर्थं ....देवस्य पूजनं करिष्ये ।

न्यास

संकल्पके पश्चात् न्यास करे[1]। मन्त्र बोलते हुए दाहिने हाथसे कोष्ठमें निर्दिष्ट अङ्गोंका स्पर्श करे।

अङ्गन्यास[2]

सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् ।
स भूमि ँ सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ (बायाँ हाथ)
पुरुष एवेद ँ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ (दाहिना हाथ)
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ (बायाँ पैर)

१-यथा देवे तथा देहे न्यासं कुर्याद् विधानतः । (बृहत्पाराशरस्मृति ४ । १३५)
२-बृहत्पाराशरस्मृतिके अध्याय ४ में यह विधान श्लोक १२४ से १२८ तक है।
(पूजन आदिमें अङ्गन्यास, करन्यास आदि करनेका विशेष फ़ल है, करना चाहिये। क्योंकि न्याससे मनुष्यमें देवत्वका आधान होता है।

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥ (दाहिना पैर)
ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः ।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ (वाम जानु)
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥ (दक्षिण जानु)
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दा ँ सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ (वाम कटिभाग)
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥ (दक्षिण कटिभाग)
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥ (नाभि)
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते ॥ (हृदय)
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ँ शूद्रो अजायत ॥ (वाम बाहु)
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ (दक्षिण बाहु)
नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन् ॥ (कण्ठ)
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥ (मुख)
सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् ॥ (आँख)
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ (मूर्धा)

पञ्चाङ्गन्यास

अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्तताग्रे ।
तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे ॥ (हृदय)
वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ॥ (सिर)
प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरजायमानो बहुधा वि जायते ।
तस्य योनिं परि पश्यन्ति धीरास्तस्मिन् ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा ॥ (शिखा)
यो देवेभ्य आतपति यो देवानां पुरोहितः । (कवचाय हुम्, दोनों कंधों-
पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये ॥ का स्पर्श करे)
रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवा अग्रे तदब्रुवन् ।
यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवा असन् वशे ॥ (अस्त्राय फट्, बायीं हथेलीपर ताली बजाये)

करन्यास

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ँ शूद्रो अजायत ॥ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । (दोनों अंगूठोंका स्पर्श करे)
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ तर्जनीभ्यां नमः । (दोनों तर्जनियोंका ,,)
नाभ्यां आसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन् ॥ मध्यमाभ्यां नमः । (दोनों मध्यमाओंका,,)
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥ अनामिकाभ्यां नमः । (दोनों अनामिकाओंका,,)
सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् ॥ कनिष्ठिकाभ्यां नमः । (दोनों कनिष्ठिकाओंका,,)
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥
करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । (दोनों करतल और करपृष्ठोंका स्पर्श करे)

गणपति और गौरीकी पूजा

(पूजामें जो वस्तु विद्यमान न हो उसके लिये **'मनसा परिकल्प्य समर्पयामि'** कहे। जैसे, आभूषणके लिये **'आभूषणं मनसा परिकल्प्य समर्पयामि'**।)

हाथमें अक्षत लेकर ध्यान करे—

भगवान् गणेशका ध्यान—

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्॥

भगवती गौरीका ध्यान—

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥

श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ध्यानं समर्पयामि।

भगवान् गणेशका आवाहन—

ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ँ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥ (यजुर्वेद २३। १९)

एह्येहि हेरम्ब महेशपुत्र समस्तविघ्नौघविनाशदक्ष।
माङ्गल्यपूजाप्रथमप्रधान गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

हाथके अक्षत गणेशजीपर चढ़ा दे। फिर अक्षत लेकर गणेशजीकी दाहिनी ओर गौरीजीका आवाहन करे।

भगवती गौरीका आवाहन—

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

(शु० य० २३। १८)

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

प्रतिष्ठा—ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो३ म्प्रतिष्ठ॥

(यजुर्वेद २। १३)

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥
गणेशाम्बिके! सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्।

प्रतिष्ठापूर्वकम् आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। (आसनके लिये अक्षत समर्पित करे)।

पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, स्नानीय, पुनराचमनीय — ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥ (यजु० १। १०)

एतानि पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानीयपुनराचमनीयानि समर्पयामि गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। (इतना कहकर जल चढ़ा दे)।

दुग्धस्नान—ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥

(यजुर्वेद १८। ३६)

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पयःस्नानं समर्पयामि। (दूधसे स्नान कराये)।

दधिस्नान—ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयू ँ षि तारिषत्॥

(यजु० २३। ३२)

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दधिस्नानं समर्पयामि। (दधिसे स्नान कराये)।

घृतस्नान—ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम।
अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्॥
(यजु० १७।८८)

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, घृतस्नानं समर्पयामि। (घृतसे स्नान कराये)।

मधुस्नान—ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवँ्ँ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥
(यजु० १३।२७-२८)

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मधुस्नानं समर्पयामि। (मधुसे स्नान कराये।)

शर्करास्नान—ॐ अपाँ्ँ रसमुद्वयसँ्ँ सूर्ये सन्तँ्ँ समाहितम्। अपाँ्ँ
रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा
जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्॥ (यजु० ९।३)

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि। (शर्करासे स्नान कराये)।

पञ्चामृतस्नान—ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥
(यजु० ३४।११)

****

पञ्चामृतं मयानीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करया समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। (पञ्चामृतसे स्नान कराये।)

गन्धोदकस्नान—ॐ अꣳशुना ते अꣳशुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः॥
(यजु० २०।२७)

मलयाचलसम्भूतचन्दनेन विनिःसृतम्।
इदं गन्धोदकस्नानं कुङ्कुमाक्तं च गृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धोदकस्नानं समर्पयामि। (गन्धोदकसे स्नान कराये।)

शुद्धोदकस्नान—ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः
श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा
यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥
(यजु० २४।३)

गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदा सिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (शुद्ध जलसे स्नान कराये।)

आचमन—शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमनके लिये जल दे।)

वस्त्र—ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो३ मनसा देवयन्तः॥
(ऋग्० ३।८।४)

शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। (वस्त्र समर्पित करे।)

आचमन—वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमनके लिये जल दे।)

उपवस्त्र—ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्वः।
वासो अग्ने विश्वरूप ँ्ँ सं व्ययस्व विभावसो॥

(यजु० ११।४०)

यस्याभावेन शास्त्रोक्तं कर्म किञ्चिन्न सिध्यति।
उपवस्त्रं प्रयच्छामि सर्वकर्मोपकारकम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं (उपवस्त्राभावे रक्तसूत्रम् समर्पयामि)। (उपवस्त्र समर्पित करे।)

आचमन—उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमनके लिये जल दे।)

यज्ञोपवीत—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि।
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि। (यज्ञोपवीत समर्पित करे।)

आचमन—यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमनके लिये जल दे।)

चन्दन—ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत॥

(यजु० १२।९८)

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनानुलेपनं समर्पयामि। (चन्दन अर्पित करे।)

अक्षत—ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी॥
(यजु० ३। ५१)

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि। (अक्षत चढ़ाये।)

पुष्पमाला—ॐ ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः॥
(यजु० १२। ७७)

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पमालां समर्पयामि। (पुष्पमाला समर्पित करे।)

दूर्वा—ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्रेण शतेन च॥
(यजु० १३। २०)

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि। (दूर्वाङ्कुर चढ़ाये।)

सिन्दूर—ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः॥
(यजु० १७। ९५)

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सिन्दूरं समर्पयामि।
(सिन्दूर अर्पित करे।)

अबीर-गुलाल आदि नाना परिमल द्रव्य	ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा ँ॒सं परि पातु विश्वतः ॥

(यजु० २९।५१)

अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्।
नाना परिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।
(अबीर आदि चढ़ाये।)

सुगन्धिद्रव्य—ॐ अहिरिव .... विश्वतः॥

दिव्यगन्धसमायुक्तं महापरिमलाद्भुतम्।
गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं वै परिगृह्यताम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि। (सुगन्धित द्रव्य अर्पण करे।)

धूप—ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः। देवानामसि वह्नितम ँ॒सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् ॥

(यजु० १।८)

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपमाघ्रापयामि। (धूप दिखाये।)

दीप—ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥ ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥ (यजु० ३।९)

****

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। (दीप दिखाये।)

हस्तप्रक्षालन—'ॐ हृषीकेशाय नमः' कहकर हाथ धो ले।

नैवेद्य—नैवेद्यको प्रोक्षित कर गन्ध-पुष्पसे आच्छादित करे। तदनन्तर जलसे चतुष्कोण घेरा लगाकर भगवान्‌के आगे रखे।

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन्॥

(यजु० ३१।१३)

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।
ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा।
ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा।

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। (नैवेद्य निवेदित करे।)

नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (जल समर्पित करे।)

ऋतुफल—ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वँ हसः॥

(यजु० १२।८९)

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि। (ऋतुफल अर्पित करे।)

फलान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमनीय जल अर्पित करे।)

उत्तरापोऽशन—उत्तरापोऽशनार्थे जलं समर्पयामि। गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। (जल दे।)

करोद्वर्तन—ॐ अँ॒शुना ते अँ॒शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः॥
(यजु० २०।२७)

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, करोद्वर्तनकं चन्दनं समर्पयामि। (मलयचन्दन समर्पित करे।)

ताम्बूल—ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥
(यजु० ३१।१४)

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थम् एलालवंग-पूगीफलसहितं ताम्बूलं समर्पयामि। (इलायची, लौंग-सुपारीके साथ ताम्बूल अर्पित करे।)

दक्षिणा—ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥
(यजु० १३।४)

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, कृतायाः पूजायाः

साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। (द्रव्य दक्षिणा समर्पित करे।)

आरती—ॐ इदँ हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीरँ सर्वगणँ स्वस्तये।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि।
अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त॥
(यजु० १९।४८)

ॐ आ रात्रि पार्थिवँ रजः पितुरप्रायि धामभिः।
दिवः सदाँसि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः॥
(यजु० ३४।३२)

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आरार्तिकं समर्पयामि।
(कर्पूरकी आरती करे, आरतीके बाद जल गिरा दे।)

पुष्पाञ्जलि—ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥
(यजु० ३१।१६)

ॐ गणानां त्वा .... ॥(पृ० १७४)
ॐ अम्बे अम्बिके ..... ॥(पृ० १७४)
नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।
(पुष्पाञ्जलि अर्पित करे।)

प्रदक्षिणा—ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषाँ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।
(यजु० १६।६१)

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि ।
(प्रदक्षिणा करे ।)

विशेषार्घ्य—ताम्रपात्रमें जल, चन्दन, अक्षत, फल, फूल, दूर्वा और दक्षिणा रखकर अर्घ्यपात्रको हाथमें लेकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़े—

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक ।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो ।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद ॥
अनेन सफलार्घ्येण वरदोऽस्तु सदा मम ।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, विशेषार्घ्यं समर्पयामि ।
(विशेषार्घ्य दे ।)

प्रार्थना—विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय
सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय ।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय
भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते ॥
नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः
नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः ।
विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक ॥

त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति
भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति ।
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति
तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव ॥
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या
विश्वस्य बीजं परमासि माया ।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि । (साष्टाङ्ग नमस्कार करे ।)

गणेशपूजने कर्म यन्न्यूनमधिकं कृतम् ।
तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम ॥
अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेताम्, न मम ।

(ऐसा कहकर समस्त पूजनकर्म भगवान्को समर्पित कर दे) * तथा पुनः नमस्कार करे ।

═══ ★ ═══

* अचल प्रतिमाका विसर्जन नहीं किया जाता, किंतु आवाहित एवं प्रतिष्ठित देव-प्रतिमाओंका विसर्जन करना चाहिये ।

कलश-स्थापन

कलशमें रोलीसे स्वस्तिकका चिह्न बनाकर गलेमें तीन धागावाली मौली लपेटे और कलशको एक ओर रख ले। कलश स्थापित किये जानेवाली भूमि अथवा पाटेपर कुङ्कुम या रोलीसे अष्टदलकमल बनाकर निम्न मन्त्रसे भूमिका स्पर्श करे—

भूमिका स्पर्श—ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृꣳ ह पृथिवीं मा हिꣳसीः ॥

निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर पूजित भूमिपर सप्तधान्य[1] अथवा गेहूँ, चावल या जौ[2] रख दे—

धान्यप्रक्षेप—ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वो दानाय त्वा व्यानाय त्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रति गृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि ॥

इस धान्यपर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर कलशकी स्थापना करे—

कलश-स्थापन—ॐ आ जिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा नि वर्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः ॥

कलशमें जल—ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमा सीद ॥(इस मन्त्रसे जल छोड़े।)

१-जौ, धान, तिल, कँगनी, मूँग, चना, साँवा—ये सप्तधान्य कहलाते हैं—

यवधान्यतिलाः कंगुः मुद्गचणकश्यामकाः।
एतानि सप्तधान्यानि सर्वकार्येषु योजयेत् ॥

२-नवरात्र आदिमें स्थापित कलशको कई दिनोंतक सुरक्षित रखना पड़ता है, ऐसे अवसरोंपर शुद्ध मिट्टी बिछा दी जाती है और उसपर जौ बो दिया जाता है। नवरात्रमें इस उगे हुए जौको देवताओंपर चढ़ाया जाता है। ब्राह्मण लोग उसे आशीर्वादके रूपमें बाँटा करते हैं।

****

कलशमें चन्दन—ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः ।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत ॥
(चन्दन छोड़े ।)

कलशमें सर्वौषधि[१]—ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा ।
मनै नु बभ्रूणामह ँ्शतं धामानि सप्त च ॥
(सर्वौषधि छोड़ दे ।)

कलशमें दूब—ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ।
एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्रेण शतेन च ॥
(दूब छोड़े ।)

कलशपर पञ्चपल्लव[२]—ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता ।
गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम् ॥
(पञ्चपल्लव रख दे ।)

कलशमें पवित्री—ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः । तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥ (कुश छोड़ दे ।)

कलशमें सप्तमृत्तिका[३]—ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी ।
यच्छा नः शर्म सप्रथाः । (सप्तमृत्तिका छोड़े ।)

१-मुरा माँसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम् ।
सठी चम्पकमुस्ता च सर्वौषधिगणः स्मृतः ॥ (अग्निपु० १७७ । १७)
मुरा, जटामाँसी, वच, कुष्ठ, शिलाजीत, हल्दी और दारुहल्दी, सठी, चम्पक, मुस्ता—ये सर्वोषधि कहलाती हैं ।

२-न्यग्रोधोदुम्बरोऽश्वत्थः चूतप्लक्षस्तथैव च ।
बरगद, गूलर, पीपल, आम, पाकड़—ये पञ्चपल्लव हैं ।

३-अश्वस्थानाद्गजस्थानाद्वल्मीकात्सङ्गमाद्ध्रदात् ।
राजद्वाराच्च गोष्ठाच्च मृदमानीय निक्षिपेत् ॥
घुड़साल, हाथीसाल, बाँबी, नदियोंके संगम, तालाब, राजाके द्वार और गोशाला—इन सात स्थानोंकी मिट्टीको सप्तमृत्तिका कहते हैं ।

कलशमें सुपारी—ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ँ हसः ॥ (सुपारी छोड़े।)

कलशमें पञ्चरत्न[१]—ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्।
दधद्रत्नानि दाशुषे। (पञ्चरत्न छोड़े।)

कलशमें द्रव्य—ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ (द्रव्य छोड़े।)

निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर कलशको वस्त्रसे अलंकृत करे—

कलशपर वस्त्र—ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्वः।
वासो अग्ने विश्वरूप ँ सं व्ययस्व विभावसो ॥

कलशपर पूर्णपात्र—ॐ पूर्णा दर्वि परा पत सुपूर्णा पुनरा पत।
वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्ज ँ शतक्रतो ॥

चावलसे भरे पूर्णपात्रको कलशपर स्थापित करे और उसपर लाल कपड़ा लपेटे हुए नारियलको निम्न मन्त्र पढ़कर रखे—

कलशपर नारियल—ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ँ हसः ॥

अब कलशमें देवी-देवताओंका आवाहन करना चाहिये। सबसे पहले हाथमें अक्षत और पुष्प लेकर निम्नलिखित मन्त्रसे वरुणका आवाहन करे—

कलशमें वरुणका ध्यान और आवाहन—

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ँ स मा न आयुः प्र मोषीः ॥
अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि।

१-कनकं कुलिशं मुक्ता पद्मरागं च नीलकम्। एतानि पञ्चरत्नानि सर्वकार्येषु योजयेत् ॥
सोना, हीरा, मोती, पद्मराग और नीलम—ये पञ्चरत्न कहे जाते हैं।

ॐ भूर्भुवः स्वः भो वरुण ! इहागच्छ, इह तिष्ठ, स्थापयामि, पूजयामि, मम पूजां गृहाण। 'ॐ अपां पतये वरुणाय नमः' कहकर अक्षत-पुष्प कलशपर छोड़ दे।

फिर हाथमें अक्षत-पुष्प लेकर चारों वेद एवं अन्य देवी-देवताओंका आवाहन करे—

कलशमें देवी-देवताओंका आवाहन—

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा॥
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु॥
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥

इस तरह जलाधिपति वरुणदेव तथा वेदों, तीर्थों, नदों, नदियों, सागरों, देवियों एवं देवताओंके आवाहनके बाद हाथमें अक्षत-पुष्प लेकर निम्नलिखित मन्त्रसे कलशकी प्रतिष्ठा करे—

प्रतिष्ठा—ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु। ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः।

—यह कहकर अक्षत-पुष्प कलशके पास छोड़ दे।

****

ध्यान—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, ध्यानार्थे पुष्पं समर्पयामि। (पुष्प समर्पित करे।)

आसन—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि। (अक्षत रखे।)

पाद्य—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, पादयोः पाद्यं समर्पयामि। (जल चढ़ाये।)

अर्घ्य—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि। (जल चढ़ाये।)

स्नानीय जल—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि। (स्नानीय जल चढ़ाये।)

स्नानाङ्ग आचमन—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमनीय जल चढ़ाये।)

पञ्चामृतस्नान—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, पञ्चामृतस्नानं सर्पयामि। (पञ्चामृतसे स्नान कराये।)

गन्धोदक-स्नान—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, गन्धोदकस्नानं समर्पयामि। (जलमें मलयचन्दन मिलाकर स्नान कराये।)

शुद्धोदक-स्नान—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (शुद्ध जलसे स्नान कराये।)

आचमन—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

वस्त्र—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, वस्त्रं समर्पयामि। (वस्त्र चढ़ाये।)

आचमन—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

यज्ञोपवीत—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि। (यज्ञोपवीत चढ़ाये।)

आचमन—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

उपवस्त्र—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, उपवस्त्रं (उपवस्त्रार्थे रक्तसूत्रम्) समर्पयामि। (उपवस्त्र चढ़ाये।)

आचमन—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

चन्दन—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, चन्दनं समर्पयामि। (चन्दन लगाये।)

अक्षत—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, अक्षतान् समर्पयामि। (अक्षत समर्पित करे।)

पुष्प (पुष्पमाला)—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, पुष्पं (पुष्पमालाम्) समर्पयामि। (पुष्प और पुष्पमाला चढ़ाये।)

नानापरिमल-द्रव्य—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि। (विविध परिमल द्रव्य समर्पित करे।)

सुगन्धित द्रव्य—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, सुगन्धितद्रव्यं समर्पयामि। (सुगन्धित द्रव्य (इत्र आदि) चढ़ाये।)

धूप—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, धूपमाघ्रापयामि। (धूप आघ्रापित कराये।)

दीप—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि। (दीप दिखाये।)

हस्तप्रक्षालन—दीप दिखाकर हाथ धो ले।

नैवेद्य—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, सर्वविधं नैवेद्यं निवेदयामि। (नैवेद्य निवेदित करे।)

आचमन आदि—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, आचमनीयं जलम्, मध्ये पानीयं जलम्, उत्तरापोऽशने, मुख-प्रक्षालनार्थे, हस्तप्रक्षालनार्थे च जलं समर्पयामि। (आचमनीय एवं पानीय तथा मुख और हस्त-प्रक्षालनके लिये जल चढ़ाये।)

करोद्वर्तन—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, करोद्वर्तनं समर्पयामि। (करोद्वर्तनके लिये गन्ध समर्पित करे।)

ताम्बूल—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, ताम्बूलं समर्पयामि। (सुपारी, इलायची, लौंगसहित पान चढ़ाये।)

दक्षिणा—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। (द्रव्य-दक्षिणा चढ़ाये।)

आरती—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, आरार्तिकं समर्पयामि। (आरती करे।)

पुष्पाञ्जलि—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। (पुष्पाञ्जलि समर्पित करे।)

प्रदक्षिणा—ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि। (प्रदक्षिणा करे।)

हाथमें पुष्प लेकर इस प्रकार प्रार्थना करे—

प्रार्थना—देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥

शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः ।
त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव ।
सांनिध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥
नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय ।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ॥
'ॐ अपां पतये वरुणाय नमः ।'

नमस्कार—**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि।** (इस नाम-मन्त्रसे नमस्कारपूर्वक पुष्प समर्पित करे।)

अब हाथमें जल लेकर निम्नलिखित वाक्यका उच्चारण कर जल कलशके पास छोड़ते हुए समस्त पूजन-कर्म भगवान् वरुणदेवको निवेदित करे—

समर्पण—**कृतेन अनेन पूजनेन कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्तां न मम ।**

══★══

पुण्याहवाचन[1]

पुण्याहवाचनके दिन आरम्भमें वरुण-कलशके पास जलसे भरा एक पात्र (कलश) भी रख दे। वरुण-कलशके पूजनके साथ-साथ इसका भी पूजन कर लेना चाहिये। पुण्याहवाचनका कर्म इसीसे किया जाता है। सबसे पहले वरुणकी प्रार्थना करे[2]।

वरुण-प्रार्थना—**ॐ पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक ।
पुण्याहवाचनं यावत् तावत् त्वं सुस्थिरो भव ॥**

१-यहाँ पुण्याहवाचन विस्तारसे दिया गया है। बोधायनकी एक संक्षिप्त विधि भी है। जो लोग संक्षिप्त विधिसे पुण्याहवाचन करना चाहते हैं, वे पृष्ठ-संख्या ३६२ पर देख सकते हैं।

२-शास्त्रानुसार पुण्याहवाचनके लिये वरुण-कलशके अतिरिक्त शान्ति-कलशकी भी स्थापना करनेका विधान है, परंतु सामान्यतः केवल वरुण-कलशसे भी पुण्याहवाचनका कार्य सम्पन्न कर लेते हैं।

यजमान अपनी दाहिनी ओर पुण्याहवाचन-कर्मके लिये वरण किये हुए युग्म ब्राह्मणोंको, जिनका मुख उत्तरकी ओर हो, बैठा ले। इसके बाद यजमान घुटने टेककर कमलकी कोंढ़ीकी तरह अञ्जलि बनाकर सिरसे लगाकर तीन बार प्रणाम करे। तब आचार्य अपने दाहिने हाथसे स्वर्णयुक्त उस जलपात्र (लोटे) को यजमानकी अञ्जलिमें रख दे। यजमान उसे सिरसे लगाकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर ब्राह्मणोंसे अपनी दीर्घ आयुका आशीर्वाद माँगे—

यजमान—ॐ दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च।
तेनायुःप्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु॥

यजमानकी इस प्रार्थनापर ब्राह्मण निम्नलिखित आशीर्वचन बोलें—

ब्राह्मण—अस्तु दीर्घमायुः।

अब यजमान ब्राह्मणोंसे फिर आशीर्वाद माँगे—

यजमान—

ॐ त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन्॥
तेनायुःप्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण—पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।

यजमान और ब्राह्मणोंका यह संवाद इसी आनुपूर्वीसे दो बार और होना चाहिये। अर्थात् आशीर्वाद मिलनेके बाद यजमान कलशको सिरसे हटाकर कलशके स्थानपर रख दे। फिर इस कलशको सिरसे लगाकर—**'ॐ दीर्घा नागा नद्यो....रस्तु'** बोले इसके बाद ब्राह्मण **'दीर्घमायुरस्तु'** बोलें। इसके बाद यजमान पहलेकी तरह कलशको कलश-स्थानपर रखकर फिर सिरसे लगाकर **'ॐ दीर्घा नागा....रस्तु'** कहकर आशीर्वाद माँगे और ब्राह्मण **'दीर्घमायुरस्तु'** यह कहकर आशीर्वाद दें।

यजमान—ॐ अपां मध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम्।
ब्राह्मणानां करे न्यस्ताः शिवा आपो भवन्तु नः॥

ॐ शिवा आपः सन्तु। ऐसा कहकर यजमान ब्राह्मणोंके हाथोंमें जल दे।

****

ब्राह्मण—सन्तु शिवा आपः ।

अब यजमान निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर ब्राह्मणोंके हाथोंमें पुष्प दे—

यजमान—लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे ।

सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं सदास्तु मे ॥ सौमनस्यमस्तु ।

ब्राह्मण—'अस्तु सौमनस्यम्' ऐसा कहकर ब्राह्मण पुष्पको स्वीकार करें ।

अब यजमान निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर ब्राह्मणोंके हाथमें अक्षत दे—

यजमान—अक्षतं चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम् ।

यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम॥ अक्षतं चारिष्टं चास्तु।

ब्राह्मण—'अस्त्वक्षतमरिष्टं च' ।—ऐसा बोलकर ब्राह्मण अक्षतको स्वीकार करें। इसी प्रकार आगे यजमान ब्राह्मणोंके हाथोंमें चन्दन, अक्षत, पुष्प आदि देता जाय और ब्राह्मण इन्हें स्वीकार करते हुए यजमानकी मङ्गल-कामना करें ।

यजमान—(चन्दन) **गन्धाः पान्तु ।**

ब्राह्मण—सौमङ्गल्यं चास्तु ।

यजमान—(अक्षत) **अक्षताः पान्तु ।**

ब्राह्मण—आयुष्यमस्तु ।

यजमान—(पुष्प) **पुष्पाणि पान्तु ।**

ब्राह्मण—सौश्रियमस्तु ।

यजमान—(सुपारी-पान) **सफलताम्बूलानि पान्तु ।**

ब्राह्मण—ऐश्वर्यमस्तु ।

यजमान—(दक्षिणा) **दक्षिणाः पान्तु ।**

ब्राह्मण—बहुदेयं चास्तु ।

यजमान—(जल) **आपः पान्तु ।**

ब्राह्मण—स्वर्चितमस्तु ।

यजमान—(हाथ जोड़कर) **दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं बहुधनं चायुष्यं चास्तु ।**

****

ब्राह्मण—'तथास्तु'—ऐसा कहकर ब्राह्मण यजमानके सिरपर कलशका जल छिड़ककर निम्नलिखित वचन बोलकर आशीर्वाद दें—

ॐ दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु ।

यजमान—(अक्षत लेकर) **यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियाकरण-कर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते, तमहमोङ्कारमादिं कृत्वा यजुराशीर्वचनं बहुऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये ।**

ब्राह्मण—'वाच्यताम्'—ऐसा कहकर निम्न मन्त्रोंका पाठ करें—

ॐ द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्र च तिष्ठत । नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत॥

सविता त्वा सवाना ँ॑सुवतामग्निर्गृहपतीना ँ॑सोमो वनस्पतीनाम्। बृहस्पतिर्वाच इन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो धर्मपतीनाम् ।

न तद्रक्षा ँ॑सि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमज ँ॑ह्येतत् । यो बिभर्ति दाक्षायण ँ॑हिरण्य ँ॑स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ।

उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्या ददे । उग्र ँ॑शर्म महि श्रवः ॥

उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे । अभि देवाँ२ इयक्षते ।

यजमान—व्रतजपनियमतपःस्वाध्यायक्रतुशमदमदयादानविशिष्टानांसर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम् ।

ब्राह्मण—समाहितमनसः स्मः ।

यजमान—प्रसीदन्तु भवन्तः ।

ब्राह्मण—प्रसन्नाः स्मः ।

इसके बाद यजमान पहलेसे रखे गये दो सकोरोंमेंसे पहले सकोरेमें आमके पल्लव या दूबसे थोड़ा-थोड़ा जल[१] कलशसे डाले और ब्राह्मण बोलते जायँ—

१-कहींपर जल डाला जाता है और कहीं चावल डाला जाता है।

****

पहले पात्र (सकोरे) में—ॐ शान्तिरस्तु। ॐ पुष्टिरस्तु। ॐ तुष्टिरस्तु। ॐ वृद्धिरस्तु। ॐ अविघ्नमस्तु। ॐ आयुष्यमस्तु। ॐ आरोग्यमस्तु। ॐ शिवमस्तु। ॐ शिवं कर्मास्तु। ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ वेदसमृद्धिरस्तु। ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु। ॐ धनधान्यसमृद्धिरस्तु। ॐ पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु। ॐ इष्टसम्पदस्तु।

दूसरे पात्र (सकोरे) में—ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु। ॐ यत्पापं रोगोऽशुभमकल्याणं तद् दूरे प्रतिहतमस्तु।

पुनः पहले पात्रमें—ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु। ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु। ॐ उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु। ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। ॐ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नसम्पदस्तु। ॐ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ तिथिकरणे समुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदैवते प्रीयेताम्। ॐ दुर्गापाञ्चाल्यौ प्रीयेताम्। ॐ अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐ इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। ॐ वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। ॐ माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम्। ॐ अरुन्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम्। ॐ ऋषयश्छन्दांस्याचार्या वेदा देवा यज्ञाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ श्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम्। ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम्। ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्। ॐ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा इष्टदेवताः प्रीयन्ताम्।

दूसरे पात्रमें—ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः। ॐ हताश्च परिपन्थिनः। ॐ हताश्च कर्मणो विघ्नकर्तारः। ॐ शत्रवः पराभवं यान्तु। ॐ शाम्यन्तु घोराणि। ॐ शाम्यन्तु पापानि। ॐ शाम्यन्त्वीतयः। ॐ शाम्यन्तूपद्रवाः ॥

पहले पात्रमें—ॐ शुभानि वर्धन्ताम्। ॐ शिवा आपः सन्तु। ॐ शिवा ऋतवः सन्तु। ॐ शिवा ओषधयः सन्तु। ॐ शिवा वनस्पतयः सन्तु। ॐ शिवा अतिथयः सन्तु। ॐ शिवा अग्नयः सन्तु। ॐ शिवा आहुतयः सन्तु। ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम्।

ॐ निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥

ॐ शुक्राङ्गारकबुधबृहस्पतिशनैश्चरराहुकेतुसोमसहिता आदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम्। ॐ भगवान् पर्जन्यः प्रीयताम्। ॐ भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम्। ॐ पुरोऽनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु। ॐ याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। ॐ वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। ॐ प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।

इसके बाद यजमान कलशको कलशके स्थानपर रखकर पहले पात्रमें गिराये गये जलसे मार्जन करे। परिवारके लोग भी मार्जन करें। इसके बाद इस जलको घरमें चारों तरफ छिड़क दे। द्वितीय पात्रमें जो जल गिराया गया है, उसको घरसे बाहर एकान्त स्थानमें गिरा दे।

अब यजमान हाथ जोड़कर ब्राह्मणोंसे प्रार्थना करे—

यजमान—ॐ एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।

****

ब्राह्मण—वाच्यताम्।

इसके बाद यजमान फिरसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करे—

यजमान—ॐ ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्।

(पहली बार) वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण—ॐ पुण्याहम्।

यजमान—भो ब्राह्मणाः! मम ...करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः

(दूसरी बार) पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण—ॐ पुण्याहम्।

यजमान—भो ब्राह्मणाः! मम....करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः

(तीसरी बार) पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण—ॐ पुण्याहम्।

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥

यजमान—पृथिव्यामुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुरा कृतम्।

(पहली बार) ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण—ॐ कल्याणम्।

यजमान—भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे

(दूसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण—ॐ कल्याणम्।

****

यजमान—भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे
(तीसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मण—ॐ कल्याणम् ।

ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ।
ब्रह्मराजन्याभ्या ँ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च ।
प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्ध्यतामुप
मादो नमतु ।

यजमान—ॐ सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता ।
(पहली बार) सम्पूर्णा सुप्रभावा च तामृद्धिं प्रब्रुवन्तु नः ॥
भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे
करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मण—ॐ ऋद्ध्यताम् ।

यजमान—भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे
(दूसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मण—ॐ ऋद्ध्यताम् ।

यजमान—भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्य-
(तीसरी बार) माणस्य अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मण—ॐ ऋद्ध्यताम् ।

ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता अभूम । दिवं पृथिव्या
अध्याऽरुहामाविदाम देवान्त्स्वर्ज्योतिः ॥

यजमान—ॐ स्वस्तिस्तु याऽविनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा ।
(पहली बार) विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः ॥
भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे
करिष्यमाणाय अमुककर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मण—ॐ आयुष्मते स्वस्ति ।

****

यजमान—भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे
(दूसरी बार) करिष्यमाणाय अमुककर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मण—ॐ आयुष्मते स्वस्ति ।

यजमान—भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे
(तीसरी बार) करिष्यमाणाय अमुककर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मण—ॐ आयुष्मते स्वस्ति ।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।।

यजमान— ॐ समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका ।
(पहली बार) हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः ।।
भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे
करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः श्रीरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मण—ॐ अस्तु श्रीः ।

यजमान—भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे
(दूसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः श्रीरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मण—ॐ अस्तु श्रीः ।

यजमान—भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे
(तीसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः श्रीरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मण—ॐ अस्तु श्रीः ।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण ।।

यजमान—ॐ मृकण्डुसूनोरायुर्यद् ध्रुवलोमशयोस्तथा ।
आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम् ।।

ब्राह्मण—ॐ शतं जीवन्तु भवन्तः ।

ॐ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् ।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ।।

****

यजमान—ॐ शिवगौरीविवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे ।
धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं सास्तु सद्मनि ॥

ब्राह्मण—ॐ अस्तु श्रीः ।
ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय । पशूना ँ
रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा ॥

यजमान—प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट् ।
भगवाञ्छाश्वतो नित्यं नो वै रक्षतु सर्वतः ॥

ब्राह्मण—ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम् ।
ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय ँ स्याम पतयो रयीणाम् ॥

यजमान—आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे ।
श्रिये दत्ताशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः ॥
देवेन्द्रस्य यथा स्वस्ति यथा स्वस्ति गुरोर्गृहे ।
एकलिङ्गे यथा स्वस्ति तथा स्वस्ति सदा मम ॥

ब्राह्मण—ॐ आयुष्मते स्वस्ति ।
ॐ प्रति पन्थामपद्महि स्वस्तिगामनेहसम् ।
येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु ॥
ॐ पुण्याहवाचनसमृद्धिरस्तु ॥

यजमान—अस्मिन् पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तो यो विधिरुपविष्ट-ब्राह्मणानां वचनात् श्रीमहागणपतिप्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु ।

दक्षिणाका संकल्प—कृतस्य पुण्याहवाचनकर्मणः समृद्ध्यर्थं पुण्याह-

****

वाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इमां दक्षिणां विभज्य अहं दास्ये।

ब्राह्मण—ॐ स्वस्ति।

अभिषेक

पुण्याहवाचनोपरान्त कलशके जलको पहले पात्रमें गिरा ले। अब अविधुर (जिनकी धर्मपत्नी जीवित हो) ब्राह्मण उत्तर या पश्चिम मुख होकर दूब और पल्लवके द्वारा इस जलसे यजमानका अभिषेक करे। अभिषेकके समय यजमान अपनी पत्नीको बायीं[१] तरफ कर ले। परिवार भी वहाँ बैठ जाय। अभिषेकके मन्त्र निम्नलिखित हैं—

ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमा सीद॥

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभि-षिञ्चाम्यसौ। (शु० य० ९। ३०)

१-आशीर्वादेऽभिषेके च पादप्रक्षालने तथा।
शयने भोजने चैव पत्नी तूत्तरतो भवेत्॥

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।
सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि ॥

(शु० य० १८।३७)

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभि षिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभि षिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभि षिञ्चामि ॥ (शु० य० २०।३)

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद्भद्रं तन्न आ सुव ॥

ॐ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः।
सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे ॥

(शु० य० १८।७६)

ॐ त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄँः पाहि शृणुधी गिरः।
रक्षा तोकमुत त्मना। (शु० य० १८।७७)

ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः। प्र प्र दातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।
शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥
सुशान्तिर्भवतु।

सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु सर्वकामार्थसिद्धये ॥
शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु। अमृताभिषेकोऽस्तु ॥

दक्षिणादान—ॐ अद्य...कृतैतत्पुण्याहवाचनकर्मणः साङ्गता-सिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च पुण्याहवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाशक्ति मनसोद्दिष्टां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।

═★═

षोडशमातृका-पूजन

षोडशमातृकाओंकी स्थापनाके लिये पूजक दाहिनी ओर पाँच खड़ी पाइयों और पाँच पड़ी पाइयोंका चौकोर मण्डल बनाये। इस प्रकार सोलह कोष्ठक बन जायँगे। पश्चिमसे पूर्वकी ओर मातृकाओंका आवाहन और स्थापन करे। कोष्ठकोंमें रक्त चावल, गेहूँ या जौ रख दे। पहले कोष्ठकमें गौरीका आवाहन होता है, अतः गौरीके आवाहनके पूर्व गणेशका भी आवाहन पुष्पाक्षतोंद्वारा इसी कोष्ठकमें करे। इसी प्रकार अन्य कोष्ठकोंमें भी निम्नाङ्कित मन्त्र पढ़ते हुए आवाहन करे।

षोडशमातृका-चक्र

पूर्व

आत्मनः कुलदेवता १६	लोकमातरः १२	देवसेना ८	मेधा ४
तुष्टिः १५	मातरः ११	जया ७	शची ३
पुष्टिः १४	स्वाहा १०	विजया ६	पद्मा २
धृतिः १३	स्वधा ९	सावित्री ५	गौरी १ गणेश

आवाहन एवं स्थापन—

१-ॐ गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि, स्थापयामि।

२-ॐ पद्मायै नमः, पद्मामावाहयामि, स्थापयामि ।

३-ॐ शच्यै नमः, शचीमावाहयामि, स्थापयामि ।

४-ॐ मेधायै नमः, मेधामावाहयामि, स्थापयामि ।

५-ॐ सावित्र्यै नमः, सावित्रीमावाहयामि, स्थापयामि ।

६-ॐ विजयायै नमः, विजयामावाहयामि, स्थापयामि ।

७-ॐ जयायै नमः, जयामावाहयामि, स्थापयामि ।

८-ॐ देवसेनायै नमः, देवसेनामावाहयामि, स्थापयामि ।

९-ॐ स्वधायै नमः, स्वधामावाहयामि, स्थापयामि ।

१०-ॐ स्वाहायै नमः, स्वाहामावाहयामि, स्थापयामि ।

११-ॐ मातृभ्यो नमः, मातॄः आवाहयामि, स्थापयामि ।

१२-ॐ लोकमातृभ्यो नमः, लोकमातॄः आवाहयामि, स्थापयामि ।

१३-ॐ धृत्यै नमः, धृतिमावाहयामि, स्थापयामि ।

१४-ॐ पुष्ट्यै नमः, पुष्टिमावाहयामि, स्थापयामि ।

१५-ॐ तुष्ट्यै नमः, तुष्टिमावाहयामि, स्थापयामि ।

१६-ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः, आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि, स्थापयामि ।

इस प्रकार षोडशमातृकाओंका आवाहन, स्थापनकर '**ॐ मनो जूति०**' इस मन्त्रसे अक्षत छोड़ते हुए मातृका-मण्डलकी प्रतिष्ठा करे, तत्पश्चात् निम्नलिखित नाम-मन्त्रसे गन्धादि उपचारोंद्वारा पूजन करे—

'ॐ गणेशसहितगौर्यादिषोडशमातृकाभ्यो नमः ।'

विशेष-१-मातृकाओंको यज्ञोपवीत न चढ़ाये। २-नैवेद्यके साथ-साथ घृत और गुड़का भी नैवेद्य लगाये। ३-विशेष अर्घ्य न दे।

फलका अर्पण—नारियल आदि फल अञ्जलिमें लेकर प्रार्थना करे—

ॐ आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम ।
निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः ॥

—इस तरह प्रार्थना करनेके बाद नारियल आदि फल चढ़ाकर हाथ जोड़कर बोले—**'गेहे वृद्धिशतानि भवन्तु, उत्तरे कर्मण्यविघ्नमस्तु ।'**

इसके बाद—

'अनया पूजया गणेशसहितगौर्यादिषोडशमातरः प्रीयन्ताम्, न मम ।'

इस वाक्यका उच्चारण कर मण्डलपर अक्षत छोड़कर नमस्कार करे—

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया ।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ॥
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता ।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडश ॥

★

सप्तघृतमातृका-पूजन

आग्नेयकोणमें किसी वेदी अथवा काष्ठपीठ (पाटा) पर प्रादेशमात्र स्थानमें पहले रोली या सिन्दूरसे स्वस्तिक बनाकर 'श्रीः' लिखे । इसके नीचे एक बिन्दु और इसके नीचे दो बिन्दु दक्षिणसे करके उत्तरकी ओर दे । इसी प्रकार सात बिन्दु क्रमसे चित्रानुसार बनाना चाहिये ।

पूर्व
॥ श्रीः ॥

o
o o
o o o
o o o o
o o o o o
o o o o o o
o o o o o o o

(वसोर्धारा)
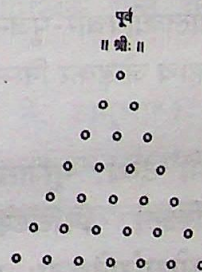
इसके बाद नीचेवाले सात बिन्दुओंपर घी या दूधसे प्रादेशमात्र सात धाराएँ निम्नलिखित मन्त्रसे दे—

घृत-धाराकरण—

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः॥

इसके बाद गुड़के द्वारा बिन्दुओंकी रेखाओंको उपर्युक्त मन्त्र पढ़ते हुए मिलाये। तदनन्तर निम्नलिखित वाक्योंका उच्चारण करते हुए प्रत्येक मातृकाका आवाहन और स्थापन करे—

आवाहन-स्थापन—

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रियै नमः, श्रियमावाहयामि, स्थापयामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मीमावाहयामि, स्थापयामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः, धृतिमावाहयामि, स्थापयामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः, मेधामावाहयामि, स्थापयामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्ट्यै नमः, पुष्टिमावाहयामि, स्थापयामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रद्धायै नमः, श्रद्धामावाहयामि, स्थापयामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः सरस्वत्यै नमः, सरस्वतीमावाहयामि, स्थापयामि।

***प्रतिष्ठा*—**इस प्रकार आवाहन-स्थापनके बाद '**एतं ते देव॰**' इस मन्त्रसे प्रतिष्ठा करे, तत्पश्चात् '**ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तघृतमातृकाभ्यो नमः**' इस नाम-मन्त्रसे यथालब्धोपचार-पूजन करे।

प्रार्थना—तदनन्तर हाथ जोड़कर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर प्रार्थना करे—

ॐ यदङ्गत्वेन भो देव्यः पूजिता विधिमार्गतः।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम्॥

'**अनया पूजया वसोर्धारादेवताः प्रीयन्ताम् न मम।**' ऐसा उच्चारण कर मण्डलपर अक्षत छोड़ दे।

पूजक अञ्जलिमें पुष्प ग्रहण करे तथा ब्राह्मण आयुष्य-मन्त्रका पाठ करें।

आयुष्यमन्त्र—ॐ आयुष्यं वर्चस्य ँ्रायस्पोषमौद्भिदम्। इद ँ्हिरण्यं वर्चस्वज्जैत्रायाविशतादु माम्॥ ॐ न तद्रक्षा ँ्सि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमज ँ्ह्येतत्। यो बिभर्ति दाक्षायण ँ् हिरण्य ँ् स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः॥

ॐ यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्य ँ् शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्म आ बध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्॥

यदायुष्यं चिरं देवाः सप्तकल्पान्तजीविषु।
ददुस्तेनायुषा युक्ता जीवेम शरदः शतम्॥
दीर्घा नागा नगा नद्योऽनन्ताः सप्तार्णवा दिशः।
अनन्तेनायुषा तेन जीवेम शरदः शतम्॥
सत्यानि पञ्चभूतानि विनाशरहितानि च।
अविनाश्यायुषा तद्वज्जीवेम शरदः शतम्॥
शतं जीवन्तु भवन्तः।

पुष्पार्पण—आयुष्यमन्त्रके श्रवणके बाद अञ्जलिके पुष्पोंको सप्तघृत-मातृका-मण्डलपर अर्पण कर दे।

दक्षिणा-संकल्प—आयुष्यमन्त्रके पाठ करनेवाले ब्राह्मणोंको निम्न सकल्पपूर्वक दक्षिणा दे—

ॐ अद्य (पृ० १९ के अनुसार) कृतैतदायुष्यवाचनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं चायुष्यवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाशक्ति मनसोद्दिष्टां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।

═★═

नवग्रह-मण्डल-पूजन

ग्रहोंकी स्थापनाके लिये ईशानकोणमें चार खड़ी पाइयों और चार पड़ी पाइयोंका चौकोर मण्डल बनाये। इस प्रकार नौ कोष्ठक बन जायँगे। बीचवाले कोष्ठकमें सूर्य, अग्निकोणमें चन्द्र, दक्षिणमें मङ्गल, ईशानकोणमें बुध, उत्तरमें बृहस्पति, पूर्वमें शुक्र, पश्चिममें शनि, नैर्ऋत्यकोणमें राहु और वायव्यकोणमें केतुकी स्थापना करे।

नवग्रह-मण्डल
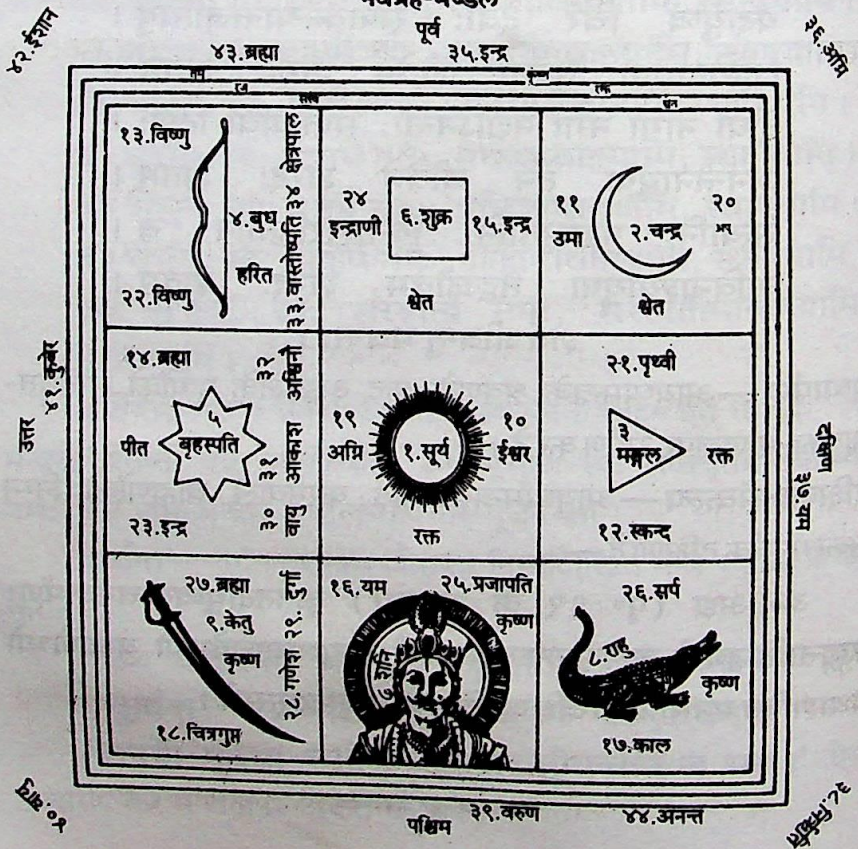
अब बायें हाथमें अक्षत लेकर नीचे लिखे मन्त्र बोलते हुए उपरिलिखित क्रमसे दाहिने हाथसे अक्षत छोड़कर ग्रहोंका आवाहन एवं स्थापन करे।

१-सूर्य (मध्यमें गोलाकार, लाल)

सूर्यका आवाहन (लाल अक्षत-पुष्प लेकर)—

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥
जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ सूर्याय नमः, श्रीसूर्यमावाहयामि, स्थापयामि।

२-चन्द्र (अग्निकोणमें, अर्धचन्द्र, श्वेत)

चन्द्रका आवाहन (श्वेत अक्षत-पुष्पसे)—

ॐ इमं देवा असपत्न ँ सुवध्वं महते क्षत्राय
महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय।
इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी
राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ँ राजा॥
दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
ज्योत्स्नापतिं निशानाथं सोममावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ सोमाय नमः, सोममावाहयामि, स्थापयामि।

३-मंगल (दक्षिणमें, त्रिकोण, लाल)

मङ्गलका आवाहन (लाल फूल और अक्षत लेकर)—

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा ँ रेता ँ सि जिन्वति॥
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्तेजस्समप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिदेशोद्भव भारद्वाजगोत्र रक्तवर्ण भो भौम ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ भौमाय नमः, भौममावाहयामि, स्थापयामि ।

४-बुध (ईशानकोणमें, हरा, धनुष)

बुधका आवाहन (पीले, हरे अक्षत-पुष्प लेकर)—

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ँ᳕ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥

प्रियङ्गुकलिकाभासं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं बुधमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयगोत्र पीतवर्ण भो बुध ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ बुधाय नमः, बुधमावाहयामि, स्थापयामि ।

५-बृहस्पति (उत्तरमें पीला, अष्टदल)

बृहस्पतिका आवाहन (पीले अक्षत-पुष्पसे)—

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु ।
यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ।
उपयामगृहीतोऽसि बृहस्पतये त्वैष ते योनिर्बृहस्पतये त्वा ॥

देवानां च मुनीनां च गुरुं काञ्चनसंनिभम् ।
वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरुमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो गुरो ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ बृहस्पतये नमः, बृहस्पतिमावाहयामि, स्थापयामि ।

६-शुक्र (पूर्वमें श्वेत, चतुष्कोण)

शुक्रका आवाहन (श्वेत अक्षत-पुष्पसे)—

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः । ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ँ᳕ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ॥

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गवगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ शुक्राय नमः, शुक्रमावाहयामि, स्थापयामि ।

७-शनि (पश्चिममें, काला मनुष्य)

शनिका आवाहन (काले अक्षत-पुष्पसे)—

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शं योरभि स्रवन्तु नः ॥

नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्डसम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ शनैश्चराय नमः, शनैश्चरमावाहयामि, स्थापयामि ।

८-राहु (नैर्ऋत्यकोणमें, काला मकर)

राहुका आवाहन (काले अक्षत-पुष्पसे)—

ॐ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता ।

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।
सिंहिकागर्भसम्भूतं राहुमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः राठिनपुरोद्भव पैठीनसगोत्र कृष्णवर्ण भो राहो ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ राहवे नमः, राहुमावाहयामि, स्थापयामि ।

९-केतु (वायव्यकोणमें, कृष्ण खड्ग)

केतुका आवाहन (धूमिल अक्षत-पुष्प लेकर)—

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे । समुषद्भिरजायथाः ॥

पलाशधूम्रसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिगोत्र धूम्रवर्ण भो केतो ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ केतवे नमः, केतुमावाहयामि, स्थापयामि ।

नवग्रह-मण्डलकी प्रतिष्ठा—आवाहन और स्थापनके बाद

हाथमें अक्षत लेकर **'ॐ मनो जूति०'**[१] इस मन्त्रसे नवग्रहमण्डलमें अक्षत छोड़े।

अस्मिन् नवग्रहमण्डले आवाहिताः सूर्यादिनवग्रहा देवाः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।

नवग्रह-पूजन

नवग्रहोंका आवाहन कर इनकी पूजा (पृष्ठ १७५ से पृष्ठ १८४ तक लिखे विधानके अनुसार) करे। नाम-मन्त्र निम्नलिखित है—

ॐ आवाहितसूर्यादिनवग्रहेभ्यो देवेभ्यो नमः।

—इस नाम-मन्त्रसे पूजन करनेके बाद हाथ जोड़कर निम्नलिखित प्रार्थना करे—

प्रार्थना—ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥
सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मङ्गलं मङ्गलः
सद्बुद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनिः।
राहुर्बाहुबलं करोतु सततं केतुः कुलस्योन्नतिं
नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूला ग्रहाः॥

इसके बाद निम्नलिखित वाक्यका उच्चारण करते हुए नवग्रहमण्डलपर अक्षत छोड़ दे और नमस्कार करे—

निवेदन और नमस्कार—'अनया पूजया सूर्यादिनवग्रहाः प्रीयन्तां न मम'

═══★═══

१-ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो३ म्प्रतिष्ठ॥ (यजु० २। १३)

अधिदेवता और प्रत्यधिदेवताका स्थापन

उद्यापन, शतचण्डी, यज्ञानुष्ठान आदि विशेष अवसरोंपर नवग्रहोंके मण्डलमें नवग्रहोंके साथ अधिदेवता, प्रत्यधिदेवता आदिकी भी पूजा की जाती है। इनकी स्थापनाका विशेष नियम है, जिसका निर्देश यहाँ किया जाता है—

चित्रानुसार अधिदेवताओंको ग्रहोंके दाहिने भागमें और प्रत्यधि-देवताओंको बायें भागमें स्थापित करना चाहिये।

अधिदेवताओंकी[1] स्थापना

(हाथमें अक्षत-पुष्प लेकर निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए चित्रानुसार नियत स्थानोंपर अधिदेवताओंके आवाहन-स्थापनपूर्वक अक्षत-पुष्पोंको छोड़ता जाय)।

१०-ईश्वर (सूर्यके दायें भागमें) आवाहन-स्थापन—

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥
एह्येहि विश्वेश्वर नस्त्रिशूलकपालखट्वाङ्गधरेण सार्धम्।
लोकेश यक्षेश्वर यज्ञसिद्ध्यै गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ईश्वराय नमः, ईश्वरमावाहयामि, स्थापयामि।

११-उमा (चन्द्रमाके दायें भागमें) आवाहन-स्थापन—

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण।

१-शिवः शिवा गुहो विष्णुर्ब्रह्मेन्द्रयमकालकाः।
चित्रगुप्तोऽथ भान्वादेर्दक्षिणे चाधिदेवताः॥
(स्कन्दपुराण)

'सूर्यादि ग्रहोंके दक्षिण पार्श्वमें क्रमशः शिव, पार्वती, स्कन्द, विष्णु, ब्रह्मा, इन्द्र, यम, काल और चित्रगुप्त—ये अधिदेवता अधिष्ठित किये जाते हैं।'

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीमुमामावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः उमायै नमः, उमामावाहयामि, स्थापयामि।

१२-स्कन्द (मङ्गलके दायें भागमें) आवाहन-स्थापन—

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्॥

रुद्रतेजःसमुत्पन्नं देवसेनाग्रगं विभुम्।
षण्मुखं कृत्तिकासूनुं स्कन्दमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि, स्थापयामि।

१३-विष्णु (बुधके दायें भागमें) आवाहन-स्थापन—

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥

देवदेवं जगन्नाथं भक्तानुग्रहकारकम्।
चतुर्भुजं रमानाथं विष्णुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि, स्थापयामि।

१४-ब्रह्मा (बृहस्पतिके दायें भागमें) आवाहन-स्थापन—

ॐ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥

कृष्णाजिनाम्बरधरं पद्मसंस्थं चतुर्मुखम्।
वेदाधारं निरालम्बं विधिमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि, स्थापयामि।

****

१५-इन्द्र (शुक्रके दायें भागमें) आवाहन-स्थापन—

ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्।
जहि शत्रूँ२रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः।
देवराजं गजारूढं शुनासीरं शतक्रतुम्।
वज्रहस्तं महाबाहुमिन्द्रमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि, स्थापयामि।

१६-यम (शनिके दायें भागमें) आवाहन-स्थापन—

ॐ यमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा।
स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥
धर्मराजं महावीर्यं दक्षिणादिक्पतिं प्रभुम्।
रक्तेक्षणं महाबाहुं यममावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः, यममावाहयामि, स्थापयामि।

१७-काल (राहुके दायें भागमें) आवाहन-स्थापन—

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि।
समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः॥
अनाकारमनन्ताख्यं वर्तमानं दिने दिने।
कलाकाष्ठादिरूपेण कालमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कालाय नमः, कालमावाहयामि, स्थापयामि।

१८-चित्रगुप्त (केतुके दायें भागमें) आवाहन-स्थापन—

ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय।
धर्मराजसभासंस्थं कृताकृतविवेकिनम्।
आवाहये चित्रगुप्तं लेखनीपत्रहस्तकम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्ताय नमः, चित्रगुप्तमावाहयामि, स्थापयामि।

****

प्रत्यधि देवताओंका स्थापन[१]

बायें हाथमें अक्षत लेकर दाहिने हाथसे नवग्रहोंके बायें भागमें मन्त्रको उच्चारण करते हुए चित्रानुसार नियत स्थानोंपर अक्षत छोड़ते हुए एक-एक प्रत्यधिदेवताका आवाहन-स्थापन करे—

१९-अग्नि (सूर्यके बायें भागमें) आवाहन-स्थापन—

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ २ आ सादयादिह॥

रक्तमाल्याम्बरधरं रक्तपद्मासनस्थितम्।
वरदाभयदं देवमग्निमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि, स्थापयामि।

२०-अप् (जल) (चन्द्रमाके बायें भागमें) आवाहन-स्थापन—

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥

आदिदेवसमुद्भूतजगच्छुद्धिकराः शुभाः।
ओषध्याप्यायनकरा अप आवाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः, अप आवाहयामि, स्थापयामि॥

२१-पृथ्वी (मंगलके बायें भागमें) आवाहन-स्थापन—

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥

शुक्लवर्णां विशालाक्षीं कूर्मपृष्ठोपरिस्थिताम्।
सर्वशस्याश्रयां देवीं धरामावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः, पृथिवीमावाहयामि, स्थापयामि।

२२-विष्णु (बुधके बायें भागमें) आवाहन-स्थापन—

ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा॥

१-अग्निरापो धरा विष्णुः शक्रेन्द्राणी पितामहाः।
पन्नगाः कः क्रमाद्वामे ग्रहप्रत्यधिदेवताः॥

सूर्यादि ग्रहोंके वामभागमें क्रमशः अग्नि, जल, पृथ्वी, विष्णु, इन्द्र, इन्द्राणी, प्रजापति, सर्प और ब्रह्मा—ये प्रत्यधिदेवता स्थापित किये जाते हैं।

शङ्खचक्रगदापद्महस्तं गरुडवाहनम्।
किरीटकुण्डलधरं विष्णुमावाहयाम्यहम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि, स्थापयामि।

२३-इन्द्र (बृहस्पतिके बायें भागमें) आवाहन-स्थापन—

ॐ इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः।
देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्॥
ऐरावतगजारूढं सहस्राक्षं शचीपतिम्।
वज्रहस्तं सुराधीशमिन्द्रमावाहयाम्यहम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि, स्थापयामि।

२४-इन्द्राणी (शुक्रके बायें भागमें) आवाहन-स्थापन—

ॐ अदित्यै रास्नाऽसीन्द्राण्या उष्णीषः। पूषाऽसि घर्माय दीष्व॥
प्रसन्नवदनां देवीं देवराजस्य वल्लभाम्।
नानालङ्कारसंयुक्तां शचीमावाहयाम्यहम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राण्यै नमः, इन्द्राणीमावाहयामि, स्थापयामि।

२५-प्रजापति (शनिके बायें भागमें) आवाहन-स्थापन—

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय ँ स्याम पतयो रयीणाम्॥
आवाहयाम्यहं देवदेवेशं च प्रजापतिम्।
अनेकव्रतकर्तारं सर्वेषां च पितामहम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः प्रजापतये नमः, प्रजापतिमावाहयामि, स्थापयामि।

२६-सर्प (राहुके बायें भागमें) आवाहन-स्थापन—

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥
अनन्ताद्यान् महाकायान् नानामणिविराजितान्।
आवाहयाम्यहं सर्पान् फणासप्तकमण्डितान्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः, सर्पानावाहयामि, स्थापयामि।

२७-ब्रह्मा (केतुके बायें भागमें) आवाहन-स्थापन—

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥

हंसपृष्ठसमारूढं देवतागणपूजितम्।
आवाहयाम्यहं देवं ब्रह्माणं कमलासनम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि, स्थापयामि।

नवग्रहोंके समान ही अधिदेवता तथा प्रत्यधिदेवताओंका भी प्रतिष्ठापूर्वक पाद्यादि उपचारोंसे पूजन करना चाहिये।

——★——

पञ्चलोकपाल[1]-पूजा

नवग्रह-मण्डलमें ही चित्रानुसार निर्दिष्ट स्थानोंपर गणेशादि पञ्चलोकपालोंका बायें हाथमें अक्षत लेकर दाहिने हाथसे छोड़ते हुए आवाहन एवं स्थापन करे।

२८-गणेशजीका आवाहन और स्थापन—

ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ँ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥

लम्बोदरं महाकायं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्।
आवाहयाम्यहं देवं गणेशं सिद्धिदायकम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपते! इहागच्छ, इह तिष्ठ गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि।

१-गणेशश्चाम्बिका वायुराकाशश्चाश्विनौ तथा।
ग्रहाणामुत्तरे पञ्चलोकपालाः प्रकीर्तिताः॥

(स्कन्दपुराण)

२९-देवी दुर्गाका आवाहन और स्थापन—

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥
पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे ।
नानाजातिकुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गे ! इहागच्छ, इह तिष्ठ दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि, स्थापयामि ।

३०-वायुका आवाहन और स्थापन—

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ँ्सहस्त्रिणीभिरुप याहि यज्ञम् । वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥

आवाहयाम्यहं वायुं भूतानां देहधारिणम् ।
सर्वाधारं महावेगं मृगवाहनमीश्वरम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वायो ! इहागच्छ, इह तिष्ठ वायवे नमः, वायुमावाहयामि, स्थापयामि ।

३१-आकाशका आवाहन और स्थापन—

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा । दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥

अनाकारं शब्दगुणं द्यावाभूम्यन्तरस्थितम् ।
आवाहयाम्यहं देवमाकाशं सर्वगं शुभम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आकाश ! इहागच्छ, इह तिष्ठ आकाशाय नमः, आकाशमावाहयामि, स्थापयामि ।

३२-अश्विनीकुमारोंका आवाहन और स्थापन—

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती । तया यज्ञं मिमिक्षतम् । उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वैष ते योनिर्माध्वीभ्यां त्वा ॥

देवतानां च भैषज्ये सुकुमारौ भिषग्वरौ ।
आवाहयाम्यहं देवावश्विनौ पुष्टिवर्द्धनौ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विनौ ! इहागच्छतम्, इह तिष्ठतम्, अश्विभ्यां नमः, अश्विनावावाहयामि, स्थापयामि ।

प्रतिष्ठा—तदनन्तर '**ॐ मनो जूति॰**' इस मन्त्रसे अक्षत छोड़ते हुए पञ्चलोकपालोंकी प्रतिष्ठा करे ।

इसके बाद '**ॐ पञ्चलोकपालेभ्यो नमः**' इस नाम-मन्त्रसे गन्धादि उपचारोंद्वारा पूजनकर '**अनया पूजया पञ्चलोकपालाः प्रीयन्ताम्, न मम**' ऐसा कहकर अक्षत छोड़ दे ।

(यज्ञादि विशेष अनुष्ठानोंमें वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल देवताका पृथक्-पृथक् चक्र बनाकर उनकी विशेष पूजा की जाती है । नवग्रह-मण्डलके देवगणोंमें भी इनकी पूजा करनेका विधान है, अतः संक्षेपमें उसे भी यहाँ दिया जा रहा है—)

३३-वास्तोष्पति—

**ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवो भवा नः ।
यत् त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥**

**वास्तोष्पतिं विदिक्कायं भूशय्याभिरतं प्रभुम् ।
आवाहयाम्यहं देवं सर्वकर्मफलप्रदम् ॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोष्पते ! इहागच्छ, इह तिष्ठ वास्तोष्पतये नमः, वास्तोष्पतिमावाहयामि, स्थापयामि ।

३४-क्षेत्रपालका आवाहन-स्थापन—

**ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुर एतारमग्नेः ।
एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः ॥**

**भूतप्रेतपिशाचाद्यैरावृतं शूलपाणिनम् ।
आवाहये क्षेत्रपालं कर्मण्यस्मिन् सुखाय नः ॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्राधिपते ! इहागच्छ, इह तिष्ठ क्षेत्राधिपतये नमः, क्षेत्राधिपतिमावाहयामि, स्थापयामि ।

तदनन्तर '**ॐ मनो जूति॰**' इस मन्त्रसे प्रतिष्ठाकर '**ॐ क्षेत्रपालाय नमः**' इस नाम-मन्त्रद्वारा गन्धादि उपचारोंसे पूजा करे ।

═★═

दश दिक्पाल-पूजन

नवग्रह-मण्डलमें परिधिके बाहर पूर्वादि दसों दिशाओंके अधिपति देवताओं (दिक्पाल देवताओं) का अक्षत छोड़ते हुए आवाहन एवं स्थापन करे।

३५-(पूर्वमें) इन्द्रका आवाहन और स्थापन—

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ँ हवे हवे सुहव ँ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ँ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥

इन्द्रं सुरपतिश्रेष्ठं वज्रहस्तं महाबलम्।
आवाहये यज्ञसिद्ध्यै शतयज्ञाधिपं प्रभुम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र! इहागच्छ, इह तिष्ठ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि, स्थापयामि।

३६-(अग्निकोणमें) अग्निका आवाहन और स्थापन—

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२ आ सादयादिह॥

त्रिपादं सप्तहस्तं च द्विमूर्धानं द्विनासिकम्।
षण्नेत्रं च चतुःश्रोत्रमग्निमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने! इहागच्छ, इह तिष्ठ अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि, स्थापयामि।

३७-(दक्षिणमें) यमका आवाहन और स्थापन—

ॐ यमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥

महामहिषमारूढं दण्डहस्तं महाबलम्।
यज्ञसंरक्षणार्थाय यममावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यम! इहागच्छ, इह तिष्ठ यमाय नमः, यममावाहयामि, स्थापयामि।

३८-(नैर्ऋत्यकोणमें) निर्ऋतिका आवाहन और स्थापन—

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥

सर्वप्रेताधिपं देवं निर्ऋतिं नीलविग्रहम्।
आवाहये यज्ञसिद्ध्यै नरारूढं वरप्रदम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋते! इहागच्छ, इह तिष्ठ निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि, स्थापयामि।

३९-(पश्चिममें) वरुणका आवाहन और स्थापन—

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ँ्स मा न आयुः प्रमोषीः॥

शुद्धस्फटिकसंकाशं जलेशं यादसां पतिम्।
आवाहये प्रतीचीशं वरुणं सर्वकामदम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण! इहागच्छ, इह तिष्ठ वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि, स्थापयामि।

४०-(वायव्यकोणमें) वायुका आवाहन और स्थापन—

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ँ्सहस्त्रिणीभिरुप याहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥

मनोजवं महातेजं सर्वतश्चारिणं शुभम्।
यज्ञसंरक्षणार्थाय वायुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वायो! इहागच्छ, इह तिष्ठ वायवे नमः, वायुमावाहयामि, स्थापयामि।

४१-(उत्तरमें) कुबेरका आवाहन और स्थापन—

ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय। इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति॥ उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वा सरस्वत्यै त्वेन्द्राय त्वा सुत्राम्ण। एष ते योनिस्तेजसे त्वा वीर्याय त्वा बलाय त्वा॥

आवाहयामि देवेशं धनदं यक्षपूजितम्।
महाबलं दिव्यदेहं नरयानगतिं विभुम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कुबेर ! इहागच्छ, इह तिष्ठ कुबेराय नमः, कुबेरमावाहयामि, स्थापयामि ।

४२-(ईशानकोणमें) ईशानका आवाहन और स्थापन—

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥

सर्वाधिपं महादेवं भूतानां पतिमव्ययम् ।
आवाहये तमीशानं लोकानामभयप्रदम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशान ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि, स्थापयामि ।

४३-(ईशान-पूर्वके मध्यमें) ब्रह्माका आवाहन और स्थापन—

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः ।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः ॥

पद्मयोनिं चतुर्मूर्तिं वेदगर्भं पितामहम् ।
आवाहयामि ब्रह्माणं यज्ञसंसिद्धिहेतवे ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि, स्थापयामि ।

४४-(नैर्ऋत्य-पश्चिमके मध्यमें) अनन्तका आवाहन और स्थापन—

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म सप्रथाः ।

अनन्तं सर्वनागानामधिपं विश्वरूपिणम् ।
जगतां शान्तिकर्तारं मण्डले स्थापयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्त ! इहागच्छ, इह तिष्ठ अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि, स्थापयामि ।

प्रतिष्ठा—इस प्रकार आवाहन कर '**ॐ मनो०**' इस मन्त्रसे अक्षत छोड़ते हुए प्रतिष्ठा करे। तदनन्तर निम्नलिखित नाम-मन्त्रसे यथालब्धोपचार

पूजन करे—'**ॐ इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यो नमः।**' इसके बाद '**अनया पूजया इन्द्रादिदशदिक्पालाः प्रीयन्ताम्, न मम**'—ऐसा उच्चारण कर अक्षत मण्डलपर छोड़ दे।

═★═

चतुःषष्टियोगिनी-पूजन

यज्ञादि अनुष्ठानोंमें चौंसठ योगिनियोंका विशेष पूजन प्रायः पृथक् वेदीमें चक्र बनाकर किया जाता है, परंतु साधारण पूजामें प्रायः षोडश-मातृका-मण्डलपर ही चौंसठ योगिनियोंके आवाहन एवं पूजनादिकी भी परम्परा है। तदनुसार बायें हाथमें अक्षत लेकर दाहिने हाथसे छोड़ते हुए निम्नलिखित नाम-मन्त्र पढ़कर चौंसठ योगिनियोंका आवाहन करे।

आवाहन—

१-ॐ दिव्ययोगायै नमः, २-ॐ महायोगायै नमः, ३-ॐ सिद्धयोगायै नमः, ४-ॐ महेश्वर्यै नमः, ५-ॐ पिशाचिन्यै नमः, ६-ॐ डाकिन्यै नमः, ७-ॐ कालरात्र्यै नमः, ८-ॐ निशाचर्यै नमः, ९-ॐ कंकाल्यै नमः, १०-ॐ रौद्रवेताल्यै नमः, ११-ॐ हुँकार्यै नमः, १२-ॐ ऊर्ध्वकेश्यै नमः, १३-ॐ विरूपाक्ष्यै नमः, १४-ॐ शुष्काङ्ग्यै नमः, १५-ॐ नरभोजिन्यै नमः, १६-ॐ फट्कार्यै नमः, १७-ॐ वीरभद्रायै नमः, १८-ॐ धूम्राक्ष्यै नमः, १९-ॐ कलहप्रियायै नमः, २०-ॐ रक्ताक्ष्यै नमः, २१-ॐ राक्षस्यै नमः, २२-ॐ घोरायै नमः, २३-ॐ विश्वरूपायै नमः, २४-ॐ भयङ्कर्यै नमः, २५-ॐ कामाक्ष्यै नमः, २६-ॐ उग्रचामुण्डायै नमः, २७-ॐ भीषणायै नमः, २८-ॐ त्रिपुरान्तकायै नमः, २९-ॐ वीरकौमारिकायै नमः, ३०-ॐ चण्ड्यै नमः, ३१-ॐ वाराह्यै नमः, ३२-ॐ मुण्डधारिण्यै नमः, ३३-ॐ भैरव्यै नमः, ३४-ॐ हस्तिन्यै नमः, ३५-ॐ

क्रोधदुर्मुख्यै नमः, ३६-ॐ प्रेतवाहिन्यै नमः, ३७-ॐ खट्वाङ्गदीर्घलम्बोष्ठ्यै नमः, ३८-ॐ मालत्यै नमः, ३९-ॐ मन्त्रयोगिन्यै नमः, ४०-ॐ अस्थिन्यै नमः, ४१-ॐ चक्रिण्यै नमः, ४२-ॐ ग्राहायै नमः, ४३-ॐ भुवनेश्वर्यै नमः, ४४-ॐ कण्टक्यै नमः, ४५-ॐ कारक्यै नमः, ४६-ॐ शुभ्रायै नमः, ४७-ॐ क्रियायै नमः, ४८-ॐ दूत्यै नमः, ४९-ॐ करालिन्यै नमः, ५०-ॐ शङ्खिन्यै नमः, ५१-ॐ पद्मिन्यै नमः, ५२-ॐ क्षीरायै नमः, ५३-ॐ असन्धायै नमः, ५४-ॐ प्रहारिण्यै नमः, ५५-ॐ लक्ष्म्यै नमः, ५६-ॐ कामुक्यै नमः, ५७-ॐ लोलायै नमः, ५८-ॐ काकदृष्ट्यै नमः, ५९-ॐ अधोमुख्यै नमः, ६०-ॐ धूर्जट्यै नमः, ६१-ॐ मालिन्यै नमः, ६२-ॐ घोरायै नमः, ६३-ॐ कपाल्यै नमः, ६४-ॐ विषभोजिन्यै नमः ।

आवाहयाम्यहं देवीर्योगिनीः परमेश्वरीः ।
योगाभ्यासेन संतुष्टाः परं ध्यानसमन्विताः ॥
दिव्यकुण्डलसंकाशा दिव्यज्वालास्त्रिलोचनाः ।
मूर्तिमतीर्ह्यमूर्त्ताश्च उग्राश्चैवोग्ररूपिणीः ॥
अनेकभावसंयुक्ताः संसारार्णवतारिणीः ।
यज्ञे कुर्वन्तु निर्विघ्नं श्रेयो यच्छन्तु मातरः ॥

ॐ चतुःषष्टियोगिनीभ्यो नमः, युष्मान् अहम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च ।

पूजन—आवाहनके बाद प्रतिष्ठापूर्वक निम्नलिखित नाम-मन्त्रसे गन्धादि उपचारोंद्वारा पूजन करे—

'ॐ चतुःषष्टियोगिनीभ्यो नमः ।'

प्रार्थना—पूजनके अनन्तर हाथ जोड़कर निम्न मन्त्रसे प्रार्थना करे—

यज्ञे कुर्वन्तु निर्विघ्नं श्रेयो यच्छन्तु मातरः ॥

इसके बाद हाथमें अक्षत लेकर **'अनया पूजया चतुःषष्टियोगिन्यः प्रीयन्ताम्, न मम ।'** कहकर मण्डलपर अक्षत छोड़ दे ।

रक्षा-विधान

बायें हाथमें अक्षत, पीली सरसों, द्रव्य और तीन तारकी मौली (नारा) लेकर दाहिने हाथसे ढककर नीचे लिखे मन्त्रसे अभिमन्त्रित करे—

ॐ गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम् ।
विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम् ॥
स्थानाधिपं नमस्कृत्य ग्रहनाथं निशाकरम् ।
धरणीगर्भसम्भूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम् ॥
दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम् ।
राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः ॥
शक्राद्या देवताः सर्वाः मुनींश्चैव तपोधनान् ।
गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमम् ॥
वसिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं च गोभिलम् ।
व्यासं मुनिं नमस्कृत्य सर्वशास्त्रविशारदम् ॥
विद्याधिका ये मुनय आचार्याश्च तपोधनाः ।
तान् सर्वान् प्रणमाम्येवं यज्ञरक्षाकरान् सदा ॥

अब निम्नलिखित मन्त्रोंसे दसों दिशाओंमें अक्षत तथा पीली सरसों छोड़े—

पूर्वे रक्षतु वाराह आग्नेय्यां गरुडध्वजः ।
दक्षिणे पद्मनाभस्तु नैर्ऋत्यां मधुसूदनः ॥
पश्चिमे पातु गोविन्दो वायव्यां तु जनार्दनः ।
उत्तरे श्रीपती रक्षेदैशान्यां तु महेश्वरः ॥
ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेद् ह्यधोऽनन्तस्तथैव च ।
एवं दश दिशो रक्षेद् वासुदेवो जनार्दनः ॥
रक्षाहीनं तु यत्स्थानं रक्षत्वीशो महाद्रिधृक् ।
यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा ॥
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ।
अपक्रामन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः ॥
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशः ॥
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे ॥

इसके बाद हाथकी मौली (नारा) को गणेशजीके सम्मुख रख दे। फिर इसे उठाकर गणपति आदि आवाहित देवताओंपर चढ़ाये तथा उसमेंसे पहले पूजक आचार्यको और आचार्य पूजकको रक्षा बाँधे।

यजमानद्वारा रक्षाबन्धन—

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥

अब यजमान आचार्यको निम्नलिखित मन्त्रसे तिलक करके प्रणाम करे—

यजमानद्वारा तिलक—नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥

आचार्यद्वारा रक्षाबन्धन—इसके बाद आचार्य यजमानको रक्षा बाँधे—

ॐ यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्यँ शतानीकाय सुमनस्यमानाः।
तन्म आ बध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्॥
येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वामनुबध्नामि रक्षे मा चल मा चल॥

अब आचार्य यजमानको निम्न मन्त्रसे तिलक करे—

आचार्यद्वारा तिलक—

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

═══ ★ ═══

श्रीशालग्राम-पूजन

श्रीशालग्राम साक्षात् सत्यनारायण भगवान् हैं, नारायणस्वरूप हैं। इसलिये इसमें प्राण-प्रतिष्ठा आदि संस्कारोंकी आवश्यकता नहीं होती। इनकी पूजामें आवाहन और विसर्जन भी नहीं होता। इनके साथ देवी भगवती तुलसीका नित्य संयोग माना गया है। शयनके समय तुलसी-पत्रको

शालग्राम-शिलासे हटाकर पार्श्वमें रख दिया जाता है। जहाँ शालग्राम-शिला होती है, वहाँ सभी तीर्थ और भुक्ति-मुक्तिका वास होता है। शालग्रामका चरणोदक सभी तीर्थोंसे अधिक पवित्र माना गया है। शालग्रामकी पूजा सम-संख्यामें अच्छी मानी जाती है, किंतु सम-संख्यामें दो शालग्रामोंका निषेध है। विषममें एक शालग्रामकी पूजाका विधान है। शालग्रामके साथ द्वारावती-शिला भी रखी जाती है। व्रत, दान, प्रतिष्ठा तथा श्राद्धादि कार्योंमें शालग्रामका सांनिध्य विशेष फलप्रद होता है। स्त्री, अनुपनीत ब्राह्मणादिको शालग्रामका स्पर्श नहीं करना चाहिये।

सत्यनारायण-पूजा अथवा शालग्रामकी नित्य-पूजामें शालग्रामकी मूर्तिको किसी पवित्र पात्रमें रखकर पुरुषसूक्तका पाठ करते हुए पञ्चामृत अथवा शुद्ध जलसे अभिषेक करानेके बाद मूर्तिको शुद्ध वस्त्रसे पोंछकर गन्धयुक्त तुलसीदलके साथ किसी सिंहासन अथवा यथास्थान पात्रादिमें विराजमान कराकर ही पूजा प्रारम्भ की जाती है।

पूजन-विधि

संध्या-वन्दनादि नित्यकृत्य सम्पन्न कर आचमन, पवित्रीधारण, मार्जन, प्राणायाम तथा पूजनका संकल्प कर हाथमें पुष्प लेकर गणपति-गौरी-स्मरणपूर्वक भगवान् शालग्रामका इस प्रकार ध्यान करना चाहिये—

ध्यान—नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः॥
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

(भगवान्‌के सामने पुष्प रख दे।)

शालग्राममें भगवान् विष्णुकी नित्य संनिधि रहती है, इसलिये उनका आवाहन नहीं होता, आवाहनके स्थानपर प्रार्थनापूर्वक पुष्प समर्पित करे,

अन्य प्रतिमाओंमें प्रतिष्ठापूर्वक इस प्रकार आवाहन करे—

आवाहन—ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमि ँ सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥
आगच्छ भगवन् देव स्थाने चात्र स्थिरो भव।
यावत् पूजां करिष्यामि तावत् त्वं संनिधौ भव॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि।
(आवाहनके लिये पुष्प चढ़ाये।)

आसन—ॐ पुरुष एवेद ँ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥
अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्।
भावितं हेममयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।
(आसनके लिये पुष्प समर्पित करे।)

पाद्य—ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥
गङ्गोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं मे प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। पादयोः पाद्यं समर्पयामि।
(आचमनीसे जल छोड़े।)

अर्घ्य—ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि॥
गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं प्रसन्नो वरदो भव॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामिं। (अर्घ्यका जल छोड़े।)

आचमन—ॐ ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः ।

स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥

कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम् ।

तोयमाचमनीयार्थं गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः । मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामि । (आचमनके लिये जल समर्पित करे ।)

एक शुद्ध पात्रमें कुङ्कुमादिसे स्वस्तिकादि बनाकर चन्दनयुक्त तुलसीदलके ऊपर भगवान्‌को स्थापितकर निम्नलिखित विधिसे स्नान कराये ।

स्नान—ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।

पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥

मन्दाकिन्यास्तु यद् वारि सर्वपापहरं शुभम् ।

तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः । स्नानीयं जलं समर्पयामि । (जलसे स्नान कराये ।)

स्नानाङ्ग-आचमन—ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः । स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि । (स्नानके बाद आचमनीय जल समर्पित करे ।)

दुग्धस्नान—ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः ।

पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् ।

पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः । पयःस्नानं समर्पयामि । (दूधसे स्नान कराये, पुनः शुद्ध जलसे स्नान कराये ।)

दधिस्नान—ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयू ँ षि तारिषत् ॥
पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः । दधिस्नानं समर्पयामि । (दधिसे स्नान कराये, पुनः शुद्ध जलसे स्नान कराये ।)

घृतस्नान—ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा । दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ।
नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम् ।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः । घृतस्नानं समर्पयामि । (घृतसे स्नान कराकर शुद्ध जलसे स्नान कराये ।)

मधुस्नान—ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥
पुष्परेणुसमुत्पन्नं सुस्वादु मधुरं मधु ।
तेजःपुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः । मधुस्नानं समर्पयामि । (मधु (शहद) से स्नान कराये, पुनः शुद्धोदकसे स्नान कराये ।)

शर्करास्नान—ॐ अपा ँ रसमुद्वयस ँ सूर्ये सन्त ँ समाहितम् । अपा ँ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥
इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम् ।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः । शर्करास्नानं समर्पयामि । (शर्करासे

स्नान कराये, पुनः शुद्ध जलसे स्नान कराये।)

पञ्चामृतस्नान—निम्न मन्त्र पढ़कर पञ्चामृतसे स्नान कराये।

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥
पयोदधिघृतं चैव मधुशर्करयान्वितम्।
पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।
(पञ्चामृतसे स्नान करानेके बाद शुद्ध जलसे स्नान कराये।)

गन्धोदक स्नान—अ॑ँ॒शुना ते अ॑ँ॒शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः॥
मलयाचलसम्भूतचन्दनेन विमिश्रितम्।
इदं गन्धोदकस्नानं कुङ्कुमाक्तं नु गृह्यताम्॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। गन्धोदकस्नानं समर्पयामि।
(केसरमिश्रित चन्दनसे स्नान कराये।)

शुद्धोदकस्नान—शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः
श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा
अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।
शुद्धं यत्सलिलं दिव्यं गङ्गाजलसमं स्मृतम्।
समर्पितं मया भक्त्या शुद्धस्नानाय गृह्यताम्॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (शुद्ध जलसे स्नान कराये[1]। तदनन्तर आचमनीय जल समर्पित करे। फिर स्वच्छ वस्त्रसे (अङ्गप्रोक्षण कर) पोंछकर तुलसीदल एवं चन्दनके साथ शालग्रामको किसी सिंहासन आदिमें बैठाकर शेष पूजा करनी चाहिये।

१-यथासम्भव पुरुषसूक्तका पाठ करते हुए घण्टानादपूर्वक शुद्ध जल अथवा गङ्गादि तीर्थजलोंद्वारा भगवान् शालग्रामका अभिषेक भी करना चाहिये, इससे उनकी विशेष अनुकम्पा प्राप्त होती है।

****

भगवान्‌के स्नानीय अथवा अभिषेकका जल पवित्र जगहमें ढँककर रख दे। पूजनके अन्तमें चरणोदकके रूपमें इसे ग्रहण करना चाहिये।)

वस्त्र—**ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।**
छन्दा ँ सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥
शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। वस्त्रं समर्पयामि, आचमनीयं जलं च समर्पयामि। (वस्त्र चढ़ाये, पुनः आचमनीय जल दे।)

उपवस्त्र—**उपवस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।**
भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। उपवस्त्रं समर्पयामि, आचमनीयं जलं च समर्पयामि। (उपवस्त्र चढ़ाये तथा आचमनीय जल समर्पित करे।)

यज्ञोपवीत—**ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।**
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परेमश्वर॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि, यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं च समर्पयामि। (यज्ञोपवीत अर्पण करे, पुनः आचमनीय जल दे।)

गन्ध—**ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।**
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥
श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। चन्दनं समर्पयामि। (मलय चन्दन चढ़ाये।)

अक्षत—(शालग्रामपर अक्षत नहीं चढ़ाया जाता, अतः अक्षतके स्थानपर श्वेत तिल अर्पित करना चाहिये।)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत । अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी ॥

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः ।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः । अक्षतस्थाने श्वेततिलान् समर्पयामि । (श्वेत तिल चढ़ाये ।)

पुष्प—ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् ।
समूढमस्य पाँ सुरे स्वाहा ॥
माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः । पुष्पं पुष्पमालां च समर्पयामि । (पुष्प और पुष्पमालाओंसे अलङ्कृत करे ।)

तुलसीपत्र—ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते ॥
तुलसीं हेमरूपां च रत्नरूपां च मञ्जरीम् ।
भवमोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम् ॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः । तुलसीदलं तुलसीमञ्जरीं च समर्पयामि । (तुलसीदल तथा तुलसीमञ्जरी अर्पित करे ।)

दूर्वा—ॐ काण्डात्काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ।
एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्रेण शतेन च ॥
दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान् ।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः । दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि । (दूब अर्पित करे ।)

आभूषण—वज्रमाणिक्यवैदूर्यमुक्ताविद्रुममण्डितम् ।
पुष्परागसमायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः । अलङ्करणार्थे आभूषणानि समर्पयामि ।

(अलङ्कृत करनेके लिये आभूषण समर्पित करे।)

सुगन्धित तैल—**अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः।**
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमाँ्सं परि पातु विश्वतः॥

तैलानि च सुगन्धीनि द्रव्याणि विविधानि च।
मया दत्तानि लेपार्थं गृहाण परमेश्वर॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। सुगन्धिततैलादिद्रव्यं समर्पयामि। (सुगन्धित तेल, इतर आदि अर्पित करे।)

धूप—**ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।**
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याँ् शूद्रो अजायत॥

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। धूपमाघ्रापयामि। (धूप आघ्रापित करे।)

दीप—**ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।**
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। दीपं दर्शयामि। (घृत-दीप दिखाये तथा हाथ धो ले।)

नैवेद्य—भगवान्‌के भोगके निमित्त सामने रखे नैवेद्यमें तुलसीदल छोड़कर पाँच ग्रास-मुद्रा दिखाये—

१-ॐ प्राणाय स्वाहा—कनिष्ठिका, अनामिका और अँगूठा मिलाये।

२-ॐ अपानाय स्वाहा—अनामिका, मध्यमा और अँगूठा मिलाये।

३-ॐ व्यानाय स्वाहा—मध्यमा, तर्जनी और अँगूठा मिलाये।

४-ॐ उदानाय स्वाहा—तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और अँगूठा मिलाये।

५-ॐ समानाय स्वाहा—सब अँगुलियाँ मिलाये।

इसके बाद निम्न मन्त्र पढ़कर नैवेद्य भगवान्‌को निवेदित करे—

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्‌भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन्॥

त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये।
गृहाण सुमुखो भूत्वा प्रसीद परमेश्वर॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। नैवेद्यं निवेदयामि, मध्ये पानीयं जलं समर्पयामि, आचमनीयं जलं च समर्पयामि। (नैवेद्य निवेदित करे तथा पानीय जल अर्पित करे, पुनः आचमनीय जल अर्पित करे।)

अखण्ड ऋतुफल—ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳ हसः॥

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। अखण्डऋतुफलं समर्पयामि। (अखण्ड ऋतुफल समर्पित करे।)

ताम्बूल—ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥

पूगीफलं महद्‌दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलालवङ्गसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। एलालवङ्गपूगीफलयुतं ताम्बूलं समर्पयामि। (इलायची, लवंग तथा पूगीफलयुक्त ताम्बूल अर्पित करे।)

****

दक्षिणा—**ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।**
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥
दक्षिणा प्रेमसहिता यथाशक्तिसमर्पिता।
अनन्तफलदामेनां गृहाण परमेश्वर॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। (द्रव्य-दक्षिणा अर्पित करे।)

आरती—किसी स्वस्तिकादि माङ्गलिक चिह्नोंसे अलङ्कृत तथा पुष्प-अक्षतादिसे सुसज्जित थालीमें कर्पूर अथवा घृतकी बत्तीको प्रज्वलित कर जलसे प्रोक्षित कर ले। पुनः घण्टा-नाद करते हुए अपने स्थानपर खड़े होकर भगवान्‌की मङ्गलमय आरती करे। आरतीका यह मुख्य विधान है कि सर्वप्रथम चरणोंमें चार बार, नाभिमें दो बार, मुखमें एक बार आरती करनेके बाद पुनः समस्त अङ्गोंकी सात बार आरती करनी चाहिये। फिर शङ्खमें जल लेकर भगवान्‌के चारों ओर भ्रमण कराये तथा भगवान्‌को निवेदित करे।

आरती-मन्त्र—**ॐ इद ँ हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीर ँ सर्वगण ँ स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्य-भयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त॥**

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

श्रीसत्यनारायणजीकी आरती

जय लक्ष्मीरमणा, श्रीलक्ष्मीरमणा।
सत्यनारायण स्वामी जन-पातक-हरणा॥ जय०॥ टेक॥

****

रत्नजटित सिंहासन अद्भुत छबि राजै ।
नारद करत निराजन घंटा ध्वनि बाजै ।। जय० ।।
प्रकट भये कलि कारण, द्विजको दरस दियो ।
बूढ़े ब्राह्मण बनकर कञ्चन-महल कियो ।। जय० ।।
दुर्बल भील कठारो, जिनपर कृपा करी ।
चन्द्रचूड़ एक राजा, जिनकी बिपति हरी ।। जय० ।।
वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीन्हीं ।
सो फल भोग्यो प्रभुजी फिर अस्तुति कीन्हीं ।। जय० ।।
भाव-भक्तिके कारण छिन-छिन रूप धर्‍यो।
श्रद्धा धारण कीनी, तिनको काज सर्‍यो ।। जय० ।।
ग्वाल-बाल सँग राजा वनमें भक्ति करी ।
मनवाञ्छित फल दीन्हों दीनदयालु हरी ।। जय० ।।
चढ़त प्रसाद सवायो कदलीफल, मेवा ।
धूप-दीप-तुलसीसे राजी सत्यदेवा ।। जय० ।।
(सत्य) नारायणजीकी आरति जो कोइ नर गावै ।
तन-मन-सुख-सम्पति मन-वाञ्छित फल पावै ।। जय० ।।

स्तुति-प्रार्थना—शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।।

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे ।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः ।।

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ।।

आकाशात्पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम् ।
सर्वदेवनमस्कारः केशवम्प्रति गच्छति ।।

मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिम्।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम्॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥
पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः।
त्राहि मां पुण्डरीकाक्ष सर्वपापहरो भव॥
कृष्णाय वासुदेवाय देवकीनन्दनाय च।
नन्दगोपकुमाराय गोविन्दाय नमो नमः॥

शङ्ख-जल—तदनन्तर शङ्खका जल भगवान्पर घुमाकर अपने ऊपर तथा भक्तजनोंपर निम्न मन्त्रके द्वारा छोड़े—

शङ्खमध्यस्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि।
अङ्गलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यां व्यपोहति॥

पुष्पाञ्जलि—हाथमें पुष्प लेकर इस प्रकार प्रार्थना करे—

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् काम कामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु॥ कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषान्ता-दापरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति॥

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः।

तत्पुरुषाय विद्महे नारायणाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वानुसृतस्वभावात्।
करोति यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयेत्तत्॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। (भगवान्‌को पुष्पाञ्जलि समर्पित करे।)

प्रदक्षिणा—ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषा ँ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥
यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। प्रदक्षिणां समर्पयामि। (भगवान्‌की प्रदक्षिणा कर उन्हें साष्टाङ्ग प्रणाम करे, तदनन्तर क्षमा-प्रार्थना करे।)

क्षमा-प्रार्थना—मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥
यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर॥

चरणामृत-ग्रहण—भगवान्‌का चरणोदक अति पुण्यप्रद, कल्याणकारी है एवं सभी पाप-तापोंका समूल उच्छेद कर देता है। अतः श्रद्धा-भक्तिपूर्वक पूजनके अन्तमें इसे सर्वप्रथम ग्रहण करना चाहिये। ग्रहण करते समय इसे भूमिपर न गिरने दे। अतः बायें हाथके ऊपर स्वच्छ दोहरा वस्त्र रखकर उसपर दाहिना हाथ रखे तथा दाहिने हाथमें लेकर ग्रहण करे। चरणोदकके बाद पञ्चामृत लेना चाहिये।

तुलसी-ग्रहण—तदनन्तर भगवान् शालग्रामको अर्पित एवं भोग लगाया गया तुलसीदल निम्न मन्त्रसे लेना चाहिये—

पूजनानन्तरं विष्णोरर्पितं तुलसीदलम्।
भक्षयेद्देहशुद्ध्यर्थं चान्द्रायणशताधिकम्॥

प्रसाद-ग्रहण—अन्तमें भगवान्‌को भोग लगाये गये नैवेद्यको प्रसादरूपमें भक्तोंको बाँटकर स्वयं भी ग्रहण करे।

——★——

श्रीमहालक्ष्मी-पूजन

भगवती महालक्ष्मी चल एवं अचल, दृश्य एवं अदृश्य सभी सम्पत्तियों, सिद्धियों एवं निधियोंकी अधिष्ठात्री साक्षात् नारायणी हैं। भगवान् श्रीगणेश सिद्धि, बुद्धिके एवं शुभ और लाभके स्वामी तथा सभी अमङ्गलों एवं विघ्नोंके नाशक हैं, ये सत्-बुद्धि प्रदान करनेवाले हैं। अतः इनके समवेत-पूजनसे सभी कल्याण-मङ्गल एवं आनन्द प्राप्त होते हैं।

कार्तिक कृष्ण अमावास्याको भगवती श्रीमहालक्ष्मी एवं भगवान् गणेशकी नूतन प्रतिमाओंका प्रतिष्ठापूर्वक विशेष पूजन किया जाता है। पूजनके लिये किसी चौकी अथवा कपड़ेके पवित्र आसनपर गणेशजीके दाहिने भागमें माता महालक्ष्मीको स्थापित करना चाहिये। पूजनके दिन घरको स्वच्छ कर पूजन-स्थानको भी पवित्र कर लेना चाहिये और स्वयं भी पवित्र होकर श्रद्धा-भक्तिपूर्वक सायंकालमें इनका पूजन करना चाहिये। मूर्तिमयी श्रीमहालक्ष्मीजीके पास ही किसी पवित्र पात्रमें केसरयुक्त चन्दनसे अष्टदल कमल बनाकर उसपर द्रव्य-लक्ष्मी (रुपयों) को भी स्थापित करके एक साथ ही दोनोंकी पूजा करनी चाहिये। पूजन-सामग्रीको यथास्थान रख ले।

सर्वप्रथम पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख हो आचमन, पवित्री-धारण, मार्जन-प्राणायाम कर अपने ऊपर तथा पूजा-सामग्रीपर निम्न मन्त्र पढ़कर जल छिड़के—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

आसन-शुद्धि और स्वस्ति-पाठ (पृ० सं० १६८ के अनुसार) कर हाथमें जल-अक्षतादि लेकर पूजनका संकल्प करे—

संकल्प—ॐ विष्णुः.... (पृ० सं० १९ के अनुसार) **मासोत्तमे मासे कार्तिकमासे कृष्णपक्षे पुण्यायाममावास्यायां तिथौ अमुक वासरे अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुक नाम शर्मा (वर्मा,**

गुप्तः, दासः) अहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलावाप्तिकामनया ज्ञाताज्ञातकायिकवाचिकमानसिकसकलपापनिवृत्तिपूर्वकं स्थिरलक्ष्मीप्राप्तये श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थं महालक्ष्मीपूजनं कुबेरादीनां च पूजनं करिष्ये। तदङ्गत्वेन गौरीगणपत्यादिपूजनं च करिष्ये।

यह संकल्प-वाक्य पढ़कर जलाक्षतादि गणेशजीके समीप छोड़ दे। अनन्तर सर्वप्रथम गणेशजीका पूजन करे। गणेश-पूजनसे पूर्व उस नूतन प्रतिमाकी निम्न-रीतिसे प्राण-प्रतिष्ठा कर ले—

प्रतिष्ठा—बायें हाथमें अक्षत लेकर निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए दाहिने हाथसे उन अक्षतोंको गणेशजीकी प्रतिमापर छोड़ता जाय—

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञँ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो३ म्प्रतिष्ठ।

ॐ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

इस प्रकार प्रतिष्ठा कर भगवान् गणेशका षोडशोपचार पूजन (पृ० सं० १७४—१८५ के अनुसार) करे। तदनन्तर नवग्रह (पृ० सं० २१०), षोडशमातृका (पृ० सं० २०५) तथा कलश-पूजन (पृ० सं० १८६) के अनुसार करे।

इसके बाद प्रधान-पूजामें भगवती महालक्ष्मीका पूजन करे। पूजनसे पूर्व नूतन प्रतिमा तथा द्रव्यलक्ष्मीकी '**ॐ मनो जूति०**' तथा '**अस्यै प्राणाः**' इत्यादि मन्त्र पढ़कर पूर्वोक्त रीतिसे प्राण-प्रतिष्ठा कर ले। सर्वप्रथम भगवती महालक्ष्मीका हाथमें फूल लेकर इस प्रकार ध्यान करे—

ध्यान—या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी
गम्भीरावर्तनाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया।
या लक्ष्मीर्दिव्यरूपैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भैः
सा नित्यं पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता॥

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि। (ध्यानके लिये पुष्प अर्पित करे।)

आवाहन—सर्वलोकस्य जननीं सर्वसौख्यप्रदायिनीम्।
सर्वदेवमयीमीशां देवीमावाहयाम्यहम्॥
ॐ तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। महालक्ष्मीमावाहयामि, आवाहनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि। (आवाहनके लिये पुष्प दे।)

आसन—तप्तकाञ्चनवर्णाभं मुक्तामणिविराजितम्।
अमलं कमलं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। आसनं समर्पयामि। (आसनके लिये कमलादिके पुष्प अर्पण करे।)

पाद्य—गङ्गादितीर्थसम्भूतं गन्धपुष्पादिभिर्युतम्।
पाद्यं ददाम्यहं देवि गृहाणाशु नमोऽस्तु ते॥
ॐ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम्॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। (चन्दन, पुष्पादियुक्त जल अर्पित करे।)

अर्घ्य—अष्टगन्धसमायुक्तं स्वर्णपात्रप्रपूरितम्।
अर्घ्यं गृहाण मद्दत्तं महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥
ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनीमीं शरणं प्र पद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि। (अष्टगन्धमिश्रित[1] जल अर्घ्यपात्रसे देवीके हाथोंमें दे।)

आचमन—सर्वलोकस्य या शक्तिर्ब्रह्मविष्णवादिभिः स्तुता।
ददाम्याचमनं तस्यै महालक्ष्म्यै मनोहरम्॥

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

स्नान—मन्दाकिन्याः समानीतैर्हेमाम्भोरुहवासितैः।
स्नानं कुरुष्व देवेशि सलिलैश्च सुगन्धिभिः॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। स्नानं समर्पयामि। (स्नानीय जल अर्पित करे।) **स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।** (स्नानके बाद '**ॐ महालक्ष्म्यै नमः**' ऐसा उच्चारण कर आचमनके लिये जल दे।)

दुग्ध-स्नान—कामधेनुसमुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥
ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। पयःस्नानं समर्पयामि। पयःस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (गौके कच्चे दूधसे स्नान कराये, पुनः शुद्ध जलसे स्नान कराये।)

दधिस्नान—पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देवि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयू ँ् षि तारिषत्।

१-अगर, तगर, चन्दन, कस्तूरी, लालचन्दन, कुंकुम, देवदारु तथा केसर—ये अष्टगन्ध कहलाते हैं।

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। दधिस्नानं समर्पयामि। दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (दधिसे स्नान कराये, फिर शुद्ध जलसे स्नान कराये।)

घृतस्नान—नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः। घृतस्नानं समर्पयामि। घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (घृतसे स्नान कराये तथा फिर शुद्ध जलसे स्नान कराये।)

मधुस्नान—तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजःपुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। मधुस्नानं समर्पयामि। मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (मधु (शहद) से स्नान कराये, पुनः शुद्ध जलसे स्नान कराये।)

शर्करास्नान—इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ अपा ँ रसमुद्वयस ँ सूर्ये सन्त ँ समाहितम्। अपा ँ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। शर्करास्नानं समर्पयामि, शर्करास्नानान्ते पुनः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (शर्करासे स्नान कराकर पश्चात् शुद्ध जलसे स्नान कराये।)

पञ्चामृतस्नान—एकत्र मिश्रित पञ्चामृतसे एकतन्त्रसे निम्न मन्त्रसे स्नान कराये—

पयो दधि घृतं चैव मधुशर्करयान्वितम्।
पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत् सरित्॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि, पञ्चामृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (पञ्चामृतस्नानके अनन्तर शुद्ध जलसे स्नान कराये।)

(यदि अभिषेक करना अभीष्ट हो तो शुद्ध जल या दुग्धादिसे 'श्रीसूक्त' का पाठ करते हुए अखण्ड जलधारासे स्नान (अभिषेक) कराये। मृण्मय प्रतिमा अखण्ड जलधारासे क्षरित न हो जाय इस आशयसे धातुकी मूर्ति या द्रव्यलक्ष्मीपर अभिषेक किया जाता है, इसे पृथक् पात्रमें कराना चाहिये।)

गन्धोदकस्नान— मलयाचलसम्भूतं चन्दनागरुसम्भवम्।
चन्दनं देवदेवेशि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। गन्धोदकस्नानं समर्पयामि। (गन्ध (चन्दन) मिश्रित जलसे स्नान कराये।)

शुद्धोदक-स्नान—मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं तुभ्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। गङ्गाजल अथवा शुद्ध जलसे स्नान कराये, तदनन्तर प्रतिमाका अङ्ग-प्रोक्षण कर (पोंछकर) उसे यथास्थान आसनपर स्थापित करे और निम्नरूपसे उत्तराङ्ग-पूजन करे।)

आचमन—शुद्धोदकस्नानके बाद '**ॐ महालक्ष्म्यै नमः**' ऐसा कहकर आचमनीय जल अर्पित करे।)

वस्त्र—दिव्याम्बरं नूतनं हि क्षौमं त्वतिमनोहरम्।
दीयमानं मया देवि गृहाण जगदम्बिके॥
ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। वस्त्रं समर्पयामि, आचमनीयं जलं च समर्पयामि। (वस्त्र अर्पित करे, आचमनीय जल दे।)

उपवस्त्र—कञ्चुकीमुपवस्त्रं च नानारत्नैः समन्वितम्।
गृहाण त्वं मया दत्तं मङ्गले जगदीश्वरि॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। उपवस्त्रं समर्पयामि, आचमनीयं जलं च समर्पयामि। (कञ्चुकी आदि उत्तरीय वस्त्र चढ़ाये, आचमनके लिये जल दे।)

मधुपर्क—कांस्ये कांस्येन पिहितो दधिमध्वाज्यसंयुतः।
मधुपर्को मयानीतः पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। मधुपर्कं समर्पयामि, आचमनीयं जलं च समर्पयामि। (काँस्यपात्रमें स्थित मधुपर्क समर्पित कर आचमनके लिये जल दे।)

आभूषण—रत्नकङ्कणवैदूर्यमुक्ताहारादिकानि च।
सुप्रसन्नेन मनसा दत्तानि स्वीकुरुष्व भोः॥
ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। नानाविधानि कुण्डलकटकादीनि आभूषणानि समर्पयामि। (आभूषण समर्पित करे।)

गन्ध—श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठे चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम्॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। गन्धं समर्पयामि। (अनामिका अँगुलीसे केसरादिमिश्रित चन्दन अर्पित करे।)

रक्तचन्दन—रक्तचन्दनसम्मिश्रं पारिजातसमुद्भवम्।
मया दत्तं महालक्ष्मि चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। रक्तचन्दनं समर्पयामि। (अनामिकासे रक्त चन्दन चढ़ाये।)

सिन्दूर—सिन्दूरं रक्तवर्णं च सिन्दूरतिलकप्रिये।
भक्त्या दत्तं मया देवि सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वात प्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। सिन्दूरं समर्पयामि। (देवीजीको सिन्दूर चढ़ाये।)

कुङ्कुम—कुङ्कुमं कामदं दिव्यं कुङ्कुमं कामरूपिणम्।
अखण्डकामसौभाग्यं कुङ्कुमं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। कुङ्कुमं समर्पयामि। (कुङ्कुम अर्पित करे।)

पुष्पसार (इतर)—तैलानि च सुगन्धीनि द्रव्याणि विविधानि च।
मया दत्तानि लेपार्थं गृहाण परमेश्वरि॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। सुगन्धिततैलं पुष्पसारं च समर्पयामि। (सुगन्धित तेल एवं इतर चढ़ाये।)

अक्षत[१]—अक्षताश्च सुरश्रेष्ठे कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वरि॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। अक्षतान् समर्पयामि। (कुङ्कुमाक्त अक्षत अर्पित करे।)

१-देशाचारसे कहीं-कहीं महालक्ष्मीको अक्षतके स्थानपर हल्दी या धनिया तथा भोगमें गुड़का प्रसाद दिया जाता है।

पुष्प एवं पुष्पमाला—माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयानीतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। पुष्पं पुष्पमालां च समर्पयामि। (देवीजीको पुष्पों तथा पुष्पमालाओंसे अलङ्कृत करे, यथासम्भव लाल कमलके फूलोंसे पूजा करे।)

दूर्वा—विष्णवादिसर्वदेवानां प्रियां सर्वसुशोभनाम्।
क्षीरसागरसम्भूते दूर्वां स्वीकुरु सर्वदा॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि। (दूर्वाङ्कुर अर्पित करे।)

अङ्गपूजा

रोली, कुङ्कुममिश्रित अक्षत-पुष्पोंसे निम्नाङ्कित एक-एक नाम-मन्त्र पढ़ते हुए अङ्गपूजा करे—

ॐ चपलायै नमः, पादौ पूजयामि।
ॐ चञ्चलायै नमः, जानुनी पूजयामि।
ॐ कमलायै नमः, कटिं पूजयामि।
ॐ कात्यायन्यै नमः, नाभिं पूजयामि।
ॐ जगन्मात्रे नमः, जठरं पूजयामि।
ॐ विश्ववल्लभायै नमः, वक्षःस्थलं पूजयामि।
ॐ कमलवासिन्यै नमः, हस्तौ पूजयामि।
ॐ पद्माननायै नमः, मुखं पूजयामि।
ॐ कमलपत्राक्ष्यै नमः, नेत्रत्रयं पूजयामि।
ॐ श्रियै नमः, शिरः पूजयामि।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः, सर्वाङ्गं पूजयामि।

अष्टसिद्धि-पूजन

इस प्रकार अङ्गपूजाके अनन्तर पूर्वादि-क्रमसे आठों दिशाओंमें आठों सिद्धियोंकी पूजा कुङ्कुमाक्त अक्षतोंसे देवी महालक्ष्मीके पास निम्नाङ्कित मन्त्रोंसे करे—

१-ॐ अणिम्ने नमः (पूर्वे), २-ॐ महिम्ने नमः (अग्निकोणे), ३-ॐ गरिम्णे नमः (दक्षिणे), ४-ॐ लघिम्ने नमः (नैर्ऋत्ये), ५-ॐ प्राप्त्यै नमः (पश्चिमे), ६-ॐ प्राकाम्यै नमः (वायव्ये), ७-ॐ ईशितायै नमः (उत्तरे) तथा ८-ॐ वशितायै नमः (ऐशान्याम्)।

अष्टलक्ष्मी-पूजन

तदनन्तर पूर्वादि-क्रमसे आठों दिशाओंमें महालक्ष्मीके पास कुङ्कुमाक्त अक्षत तथा पुष्पोंसे एक-एक नाम-मन्त्र पढ़ते हुए आठ लक्ष्मियोंका पूजन करे—

१-ॐ आद्यलक्ष्म्यै नमः, २-ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः, ३-ॐ सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः, ४-ॐ अमृतलक्ष्म्यै नमः, ५-ॐ कामलक्ष्म्यै नमः, ६-ॐ सत्यलक्ष्म्यै नमः, ७-ॐ भोगलक्ष्म्यै नमः ८-ॐ योगलक्ष्म्यै नमः।

धूप—वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यः सुमनोहरः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः, धूपमाघ्रापयामि। (धूप आघ्रापित करे।)

दीप—कार्पासवर्तिसंयुक्तं घृतयुक्तं मनोहरम्।
तमोनाशकरं दीपं गृहाण परमेश्वरि॥
ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। दीपं दर्शयामि। (दीपक दिखाये और फिर हाथ धो ले।)

नैवेद्य—नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ष्यभोज्यसमन्वितम्।
षड्रसैरन्वितं दिव्यं लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते॥
ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। नैवेद्यं निवेदयामि, मध्ये पानीयम्, उत्तरापोऽशनार्थं हस्तप्रक्षालनार्थं मुखप्रक्षालनार्थं च जलं समर्पयामि। (देवीजीको नैवेद्य निवेदित कर पानीय जल एवं हस्तादि प्रक्षालनके लिये भी जल अर्पित करे।)

करोद्वर्तन—'ॐ महालक्ष्म्यै नमः' यह कहकर करोद्वर्तनके लिये हाथोंमें चन्दन उपलेपित करे।

आचमन—शीतलं निर्मलं तोयं कर्पूरेण सुवासितम्।
आचम्यतां जलं ह्येतत् प्रसीद परमेश्वरि॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि। (नैवेद्य निवेदन करनेके अनन्तर आचमनके लिये जल दे।)

ऋतुफल—फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम्।
तस्मात् फलप्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः, अखण्डऋतुफलं समर्पयामि, आचमनीयं जलं च समर्पयामि। (ऋतुफल अर्पित करे तथा आचमनके लिये जल दे।)

ताम्बूल-पूगीफल—पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलाचूर्णादिसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः, मुखवासार्थे ताम्बूलं समर्पयामि। (एला, लवंग, पूगीफलयुक्त ताम्बूल अर्पित करे।)

दक्षिणा—हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥
ॐ तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः, दक्षिणां समर्पयामि । (दक्षिणा चढ़ाये ।)

नीराजन—चक्षुर्दं सर्वलोकानां तिमिरस्य निवारणम् ।
आर्तिक्यं कल्पितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि ॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः, नीराजनं समर्पयामि । (आरती करे तथा जल छोड़े, हाथ धो ले ।)

प्रदक्षिणा—यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे ॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि । (प्रदक्षिणा करे ।)

प्रार्थना—हाथ जोड़कर प्रार्थना करे—

सुरासुरेन्द्रादिकिरीटमौक्तिकै-
युक्तं सदा यत्तव पादपङ्कजम् ।
परावरं पातु वरं सुमङ्गलं
नमामि भक्त्याखिलकामसिद्धये ॥
भवानि त्वं महालक्ष्मीः सर्वकामप्रदायिनी ।
सुपूजिता प्रसन्ना स्यान्महालक्ष्मि ! नमोऽस्तु ते ॥
नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये ।
या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात् त्वदर्चनात् ॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः, प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि । (प्रार्थना करते हुए नमस्कार करे ।)

समर्पण—पूजनके अन्तमें—**'कृतेनानेन पूजनेन भगवती महालक्ष्मीदेवी प्रीयताम्, न मम ।'** (यह वाक्य उच्चारण कर समस्त पूजन-कर्म भगवती महालक्ष्मीको समर्पित करे तथा जल गिराये ।)

भगवती महालक्ष्मीके यथालब्धोपचार-पूजनके अनन्तर महालक्ष्मी-पूजनके अङ्ग-रूप, श्रीदेहलीविनायक, मसिपात्र, लेखनी, सरस्वती, कुबेर, तुला-मान तथा दीपकोंकी पूजा की जाती है। संक्षेपमें उन्हें भी यहाँ दिया जा रहा है। सर्वप्रथम 'देहलीविनायक' की पूजा की जाती है—

देहलीविनायक-पूजन

व्यापारिक प्रतिष्ठानादिमें दीवालोंपर 'ॐ श्रीगणेशाय नमः', 'स्वस्तिक चिह्न', 'शुभ-लाभ' आदि माङ्गलिक एवं कल्याणकर शब्द सिन्दूरादिसे लिखे जाते हैं। इन्हीं शब्दोंपर **'ॐ देहलीविनायकाय नमः'** इस नाम-मन्त्रद्वारा गन्ध-पुष्पादिसे पूजन करे।

श्रीमहाकाली (दावात)-पूजन

स्याही-युक्त दावातको भगवती महालक्ष्मीके सामने पुष्प तथा अक्षतपुञ्जमें रखकर उसमें सिन्दूरसे स्वस्तिक बना दे तथा मौली लपेट दे। **'ॐ श्रीमहाकाल्यै नमः'** इस नाम-मन्त्रसे गन्ध-पुष्पादि पञ्चोपचारोंसे या षोडशोपचारोंसे दावातमें भगवती महाकालीका पूजन करे और अन्तमें इस प्रकार प्रार्थना-पूर्वक उन्हें प्रणाम करे—

कालिके ! त्वं जगन्मातर्मसिरूपेण वर्तसे।
उत्पन्ना त्वं च लोकानां व्यवहारप्रसिद्धये॥
या कालिका रोगहरा सुवन्द्या भक्तैः समस्तैर्व्यवहारदक्षैः।
जनैर्जनानां भयहारिणी च सा लोकमाता मम सौख्यदास्तु॥

लेखनी-पूजन

लेखनी (कलम) पर मौली बाँधकर सामने रख ले और—

लेखनी निर्मिता पूर्वं ब्रह्मणा परमेष्ठिना।
लोकानां च हितार्थाय तस्मात्तां पूजयाम्यहम्॥

'ॐ लेखनीस्थायै देव्यै नमः' इस नाम-मन्त्रद्वारा गन्ध-पुष्पाक्षत

आदिसे पूजन कर इस प्रकार प्रार्थना करे—

शास्त्राणां व्यवहाराणां विद्यानामाप्नुयाद्यतः ।
अतस्त्वां पूजयिष्यामि मम हस्ते स्थिरा भव ॥

सरस्वती-(पञ्जिका-बही-खाता) पूजन

पञ्जिका—बही, बसना तथा थैलीमें रोली या केसरयुक्त चन्दनसे स्वस्तिक-चिह्न बनाये तथा थैलीमें पाँच हल्दीकी गाँठें, धनिया, कमलगट्टा, अक्षत, दूर्वा और द्रव्य रखकर उसमें सरस्वतीका पूजन करे। सर्वप्रथम सरस्वतीजीका ध्यान इस प्रकार करे—

ध्यान—या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥

'ॐ वीणापुस्तकधारिण्यै श्रीसरस्वत्यै नमः'—इस नाम-मन्त्रसे गन्धादि उपचारोंद्वारा पूजन करे।

कुबेर-पूजन

तिजोरी अथवा रुपये रखे जानेवाले संदूक आदिको स्वस्तिकादिसे अलङ्कृत कर उसमें निधिपति कुबेरका आवाहन करे—

आवाहयामि देव त्वामिहायाहि कृपां कुरु ।
कोशं वर्द्धय नित्यं त्वं परिरक्ष सुरेश्वर ॥

आवाहनके पश्चात् **'ॐ कुबेराय नमः'** इस नाम-मन्त्रसे यथालब्धोपचार-पूजनकर अन्तमें इस प्रकार प्रार्थना करे—

धनदाय नमस्तुभ्यं निधिपद्माधिपाय च ।
भगवन् त्वत्प्रसादेन धनधान्यादिसम्पदः ॥

****

—इस प्रकार प्रार्थना कर पूर्वपूजित हल्दी, धनिया, कमलगट्टा, द्रव्य, दूर्वादिसे युक्त थैली तिजोरीमें रखे।

तुला तथा मान-पूजन

सिन्दूरसे तराजू आदिपर स्वस्तिक बना ले। मौली लपेटकर तुलाधिष्ठातृदेवताका इस प्रकार ध्यान करना चाहिये—

नमस्ते सर्वदेवानां शक्तित्वे सत्यमाश्रिता।
साक्षीभूता जगद्धात्री निर्मिता विश्वयोनिना॥

ध्यानके बाद '**ॐ तुलाधिष्ठातृदेवतायै नमः**' इस नाम-मन्त्रसे गन्धाक्षतादि उपचारोंद्वारा पूजन कर नमस्कार करे।

दीपमालिका-(दीपक-) पूजन

किसी पात्रमें ग्यारह, इक्कीस या उससे अधिक दीपकोंको प्रज्वलित कर महालक्ष्मीके समीप रखकर उस दीप-ज्योतिका '**ॐ दीपावल्यै नमः**' इस नाम-मन्त्रसे गन्धादि उपचारोंद्वारा पूजन कर इस प्रकार प्रार्थना करे—

त्वं ज्योतिस्त्वं रविश्चन्द्रो विद्युदग्निश्च तारकाः।
सर्वेषां ज्योतिषां ज्योतिर्दीपावल्यै नमो नमः॥

दीपमालिकाओंका पूजन कर अपने आचारके अनुसार संतरा, ईख, पानीफल, धानका लावा इत्यादि पदार्थ चढ़ाये। धानका लावा (खील) गणेश, महालक्ष्मी तथा अन्य सभी देवी-देवताओंको भी अर्पित करे। अन्तमें अन्य सभी दीपकोंको प्रज्वलित कर सम्पूर्ण गृह अलङ्कृत करे।

प्रधान आरती

इस प्रकार भगवती महालक्ष्मी तथा उनके सभी अङ्ग-प्रत्यङ्गों एवं उपाङ्गोंका पूजन कर लेनेके अनन्तर प्रधान आरती करनी चाहिये। इसके लिये एक थालीमें स्वस्तिक आदि माङ्गलिक चिह्न बनाकर अक्षत तथा

पुष्पोंके आसनपर किसी दीपक आदिमें घृतयुक्त बत्ती प्रज्वलित करे। एक पृथक् पात्रमें कर्पूर भी प्रज्वलित कर वह पात्र भी थालीमें यथास्थान रख ले, आरती-थालका जलसे प्रोक्षण कर ले। पुनः आसनपर खड़े होकर अन्य पारिवारिक जनोंके साथ घण्टानादपूर्वक निम्न आरती गाते हुए साङ्ग-महालक्ष्मीजीकी मङ्गल आरती करे—

श्रीलक्ष्मीजीकी आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, (मैया) जय लक्ष्मी माता।
तुमको निसिदिन सेवत हर-विष्णू-धाता॥ ॐ॥
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥ ॐ॥
दुर्गारूप निरञ्जनि, सुख-सम्पति-दाता।
जो कोइ तुमको ध्यावत, ऋधि-सिधि-धन पाता॥ ॐ॥
तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधिकी त्राता॥ ॐ॥
जिस घर तुम रहती, तहँ सब सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता॥ ॐ॥
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता।
खान-पानका वैभव सब तुमसे आता॥ ॐ॥
शुभ-गुण-मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहिं पाता॥ ॐ॥
महालक्ष्मी (जी) की आरति, जो कोई नर गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता॥ ॐ॥

मन्त्र-पुष्पाञ्जलि—दोनों हाथोंमें कमल आदिके पुष्प लेकर हाथ जोड़े और निम्न मन्त्रोंका पाठ करे—

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे।
स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु॥
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषान्तादापरार्धात्। पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्।
सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः॥

महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।

ॐ या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्॥

ॐ महालक्ष्म्यै नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। (हाथमें लिये फूल महालक्ष्मीपर चढ़ा दे।) प्रदक्षिणा कर साष्टाङ्ग प्रणाम करे, पुनः हाथ जोड़कर क्षमा-प्रार्थना करे—

क्षमा-प्रार्थना—नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये।
या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्त्वदर्चनात्॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥
पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः।
त्राहि मां परमेशानि सर्वपापहरा भव॥
अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि॥
सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम्॥

पुनः प्रणाम करके '**ॐ अनेन यथाशक्त्यर्चनेन श्रीमहालक्ष्मीः प्रसीदतु**' यह कहकर जल छोड़ दे। ब्राह्मण एवं गुरुजनोंको प्रणाम कर चरणामृत तथा प्रसाद वितरण करे।

विसर्जन—पूजनके अन्तमें हाथमें अक्षत लेकर नूतन गणेश एवं महालक्ष्मीकी प्रतिमाको छोड़कर अन्य सभी आवाहित, प्रतिष्ठित एवं पूजित देवताओंको अक्षत छोड़ते हुए निम्न मन्त्रसे विसर्जित करे—

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥

═══★═══

वैदिक शिव-पूजन

भगवान् शङ्करकी पूजाके समय शुद्ध आसनपर बैठकर पहले आचमन, पवित्री-धारण, शरीर-शुद्धि और आसन-शुद्धि कर लेनी चाहिये। तत्पश्चात् पूजन-सामग्रीको यथास्थान रखकर रक्षादीप प्रज्वलित

कर ले, तदनन्तर स्वस्ति-पाठ करे। इसके बाद पूजनका संकल्प कर तदङ्गभूत भगवान् गणेश एवं भगवती गौरीका स्मरणपूर्वक पूजन करना चाहिये। रुद्राभिषेक, लघुरुद्र, महारुद्र तथा सहस्रार्चन आदि विशेष अनुष्ठानोंमें नवग्रह, कलश, षोडशमातृका आदिका भी पूजन करना चाहिये। यदि ब्राह्मणोंद्वारा अभिषेक-कर्म सम्पन्न हो रहा हो तो पहले उनका पादप्रक्षालनपूर्वक अर्घ्य, चन्दन, पुष्पमाला आदिसे अर्चन करे, फिर वरणीय सामग्री हाथमें ग्रहणकर संकल्पपूर्वक उनका वरण करे।

वरणका संकल्प—ॐ अद्य....मम....रुद्राभिषेकाख्ये कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकामुकगोत्रोत्पन्नान् अमुकामुक-नाम्नो ब्राह्मणान् युष्मानहं वृणे।

तदनन्तर ब्राह्मण बोलें—'**वृताः स्मः**'।

(स्वस्तिवाचन एवं गणपत्यादि-पूजन पृ० १६८—१८५ के अनुसार करे) भगवान् शङ्करकी पूजामें उनके विशिष्ट अनुग्रहकी प्राप्तिके लिये उनके परिकर-परिच्छद एवं पार्षदोंका भी पूजन किया जाता है। संक्षेपमें उसे भी यहाँ दिया जा रहा है।

नन्दीश्वर-पूजन

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन् मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे—

ॐ प्रैतु वाजी कनिक्रदन्नानदद्रासभः पत्वा।
भरन्नग्निं पुरीष्यं मा पाद्यायुषः पुरा॥

वीरभद्र-पूजन

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे—

ॐ भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः।
भद्रा उत प्रशस्तयः॥

****

कार्तिकेय-पूजन

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे—

ॐ यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव। तन्न इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु॥

कुबेर-पूजन

ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय। इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे—

ॐ वय ँ्सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥

कीर्तिमुख-पूजन

ॐ असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहाऽभिभुवे स्वाहाऽधिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा स ँ् सर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा दिवा पतयते स्वाहा॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे—

ॐ ओजश्च मे सहश्च म आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थीनि च मे परू ँ षि च मे शरीराणि च म आयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।

सर्प-पूजन

जलहरीमें सर्पका आकार हो तो सर्पका पूजन कर पश्चात् शिव-पूजन करे।

शिव-पूजन

सर्वप्रथम हाथमें बिल्वपत्र और अक्षत लेकर भगवान् शिवका ध्यान करे[1]।

---

[1]-प्रतिष्ठित शिवमूर्ति, ज्योतिर्लिङ्ग, स्वयम्भूलिङ्ग तथा नर्मदेश्वरलिङ्गादिमें आवाहन एवं विसर्जन नहीं होता, उनमें ध्यान करके ही पूजा की जाती है।

ध्यान—ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, ध्यानार्थे बिल्वपत्रं समर्पयामि। (ध्यान करके शिवपर बिल्वपत्र चढ़ा दे।)

आसन—ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, आसनार्थे बिल्वपत्राणि समर्पयामि। (आसनके लिये बिल्वपत्र चढ़ाये।)

पाद्य—ॐ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे।
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि ँ्सीः पुरुषं जगत् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, पादयोः पाद्यं समर्पयामि। (जल चढ़ाये।)

अर्घ्य—ॐ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्म ँ् सुमना असत् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि। (अर्घ्य समर्पित करे।)

आचमन—ॐ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।
अहीँश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि। (जल चढ़ाये।)

स्नान—ॐ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः।
ये चैन ँ् रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषा ँ् हेड ईमहे ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि। स्नानान्ते आचमनीयं जलं च समर्पयामि (स्नानीय और आचमनीय जल चढ़ाये।)

पयःस्नान—ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, पयःस्नानं समर्पयामि, पयःस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (दूधसे स्नान कराये, पुनः शुद्ध जलसे स्नान कराये और आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

दधिस्नान—ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयू ँ षि तारिषत्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, दधिस्नानं समर्पयामि, दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (दहीसे स्नान कराकर शुद्ध जलसे स्नान कराये तथा आचमनके लिये जल समर्पित करे।)

घृतस्नान—ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम।
अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, घृतस्नानं समर्पयामि, घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (घृतसे स्नान कराकर शुद्ध जलसे स्नान कराये और पुनः आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

मधुस्नान—

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, मधुस्नानं समर्पयामि, मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते

****

आचमनीयं जलं समर्पयामि। (मधुसे स्नान कराकर शुद्ध जलसे स्नान कराये तथा आचमनके लिये जल समर्पित करे।)

शर्करास्नान—ॐ अपा ँ᳭ रसमुद्वयस ँ᳭ सूर्ये सन्त ँ᳭ समाहितम्।
अपा ँ᳭ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतो-
ऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि, शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदक-स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (शर्करासे स्नान कराकर शुद्ध जलसे स्नान कराये तथा आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

पञ्चामृतस्नान—ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि, पञ्चामृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदक-स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (पञ्चामृतसे स्नान कराकर शुद्ध जलसे स्नान कराये तथा आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

गन्धोदकस्नान—ॐ अ ँ᳭ शुना ते अ ँ᳭ शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, गन्धोदकस्नानं समर्पयामि, गन्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (गन्धोदकसे स्नान कराकर आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

शुद्धोदकस्नान—ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः
श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा
अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्या॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (शुद्ध जलसे स्नान कराये)।

आचमनीय जल—ॐ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बदाशिवाय नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

अभिषेक

शुद्ध जल, गङ्गाजल अथवा दुग्धादिसे निम्न मन्त्रोंका पाठ करते हुए शिवलिङ्गका अभिषेक करे—

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥
या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि॥
यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे।
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि ँ सीः पुरुषं जगत्॥
शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्म ँ सुमना असत्॥
अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव॥
असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः।
ये चैन ँ रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषा ँ हेड ईमहे॥
असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः।
उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः॥
नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे।
अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः॥
प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्।
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप॥
विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२ उत।
अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः॥

****

या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः।
तयाऽस्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज ॥
परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः।
अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्नि धेहि तम् ॥
अवतत्य धनुष्ट्व ँ सहस्राक्ष शतेषुधे।
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव ॥
नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने ॥

मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः ॥
मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे ॥

अभिषेकके अनन्तर शुद्धोदक-स्नान कराये। तत्पश्चात् '**ॐ द्यौः शान्तिः**' इत्यादि शान्तिक मन्त्रोंका पाठ करते हुए शान्त्यभिषेक करना चाहिये। तदनन्तर भगवान्को आचमन कराकर उत्तराङ्ग-पूजन करे।

वस्त्र—ॐ असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः।
उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, वस्त्रं समर्पयामि, वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (वस्त्र चढ़ाये तथा आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

यज्ञोपवीत—ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे।
अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि, यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (यज्ञोपवीत समर्पित करे तथा आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

उपवस्त्र—ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्वः ।
वासो अग्ने विश्वरूप ँ सं व्ययस्व विभावसो ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि, उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि । (उपवस्त्र चढ़ाये तथा आचमनके लिये जल दे ।)

गन्ध—ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम् ।
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, गन्धानुलेपनं समर्पयामि । (चन्दन उपलेपित करे ।)

सुगन्धित द्रव्य—ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि । (सुगन्धित द्रव्य चढ़ाये ।)

अक्षत—ॐ व्रीहयश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे
खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मेऽणवश्च मे श्यामाकाश्च मे
नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, अक्षतान् समर्पयामि । (अक्षत चढ़ाये ।)

पुष्पमाला—ॐ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२ उत ।
अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, पुष्पमालां समर्पयामि । (पुष्पमाला चढ़ाये ।)

बिल्वपत्र—ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च
नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च ॥
त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुतम् ।
त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, बिल्वपत्राणि समर्पयामि। (बिल्वपत्र समर्पित करे।)

नानापरिमलद्रव्य—

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमाँ् सं परि पातु विश्वतः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि। (विविध परिमलद्रव्य चढ़ाये।)

धूप—ॐ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः।
तयाऽस्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, धूपमाघ्रापयामि। (धूप आघ्रापित करे।)

दीप—ॐ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः।
अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्नि धेहि तम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, दीपं दर्शयामि। (दीप दिखलाये और हाथ धो ले।)

नैवेद्य—ॐ अवतत्य धनुष्ट्वँ् सहस्राक्ष शतेषुधे।
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। नैवेद्यान्ते ध्यानम्, ध्यानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (नैवेद्य निवेदित करे, तदनन्तर भगवान्‌का ध्यान करके आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

करोद्वर्तन—ॐ सिञ्चति परि षिञ्चन्त्युत्सिञ्चन्ति पुनन्ति च।
सुरायै बभ्र्वै मदे किन्त्वो वदति किन्त्वः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि। (चन्दनका अनुलेपन करे।)

ऋतुफल—ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ँ्हसः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि। (ऋतुफल समर्पित करे।)

ताम्बूल-पूगीफल—ॐ नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे ।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, मुखवासार्थे सपूगीफलं ताम्बूलपत्रं समर्पयामि। (पान और सुपारी चढ़ाये।)

दक्षिणा—ॐ यद्दत्तं यत्परादानं यत्पूर्तं याश्च दक्षिणाः ।
तदग्निर्वैश्वकर्मणः स्वर्देवेषु नो दधत् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। (द्रव्य-दक्षिणा समर्पित करे।)

आरती—ॐ आ रात्रि पार्थिव ँ् रजः पितुरप्रायि धामभिः ।
दिवः सदा ँ्सि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, कर्पूरार्तिक्य-दीपं दर्शयामि। (कपूरकी आरती करे।)

भगवान् गङ्गाधरकी आरती

ॐ जय गङ्गाधर ज़य हर जय गिरिजाधीशा ।
त्वं मां पालय नित्यं कृपया जगदीशा ॥ १ ॥ हर हर हर महादेव ॥
कैलासे गिरिशिखरे कल्पद्रुमविपिने ।
गुञ्जति मधुकरपुञ्जे कुञ्जवने गहने ॥
कोकिलकूजित खेलत हंसावन ललिता ।
रचयति कलाकलापं नृत्यति मुदसहिता ॥ २ ॥ हर० ॥

तस्मिंल्ललितसुदेशे शाला मणिरचिता ।
तन्मध्ये हरनिकटे गौरी मुदसहिता ॥
क्रीडा रचयति भूषारञ्जित निजमीशम् ।
इन्द्रादिक सुर सेवत नामयते शीशम् ॥ ३ ॥ हर० ॥
बिबुधबधू बहु नृत्यत हृदये मुदसहिता ।
किन्नर गायन कुरूते सप्त स्वर सहिता ॥
धिनकत थै थै धिनकत मृदङ्ग वादयते ।
क्वण क्वण ललिता वेणुं मधुरं नाटयते ॥ ४ ॥ हर० ॥
रुण रुण चरणे रचयति नूपुरमुज्ज्वलिता ।
चक्रावर्ते भ्रमयति कुरूते तां धिक तां ॥
तां तां लुप चुप तां तां डमरू वादयते ।
अंगुष्ठांगुलिनादं लासकतां कुरूते ॥ ५ ॥ हर० ॥
कर्पूरद्युतिगौरं पञ्चाननसहितम् ।
त्रिनयनशशिधरमौलिं विषधरकण्ठयुतम् ॥
सुन्दरजटाकलापं पावकयुतभालम् ।
डमरुत्रिशूलपिनाकं करधृतनृकपालम् ॥ ६ ॥ हर० ॥
मुण्डै रचयति माला पन्नगमुपवीतम् ।
वामविभागे गिरिजारूपं अतिललितम् ॥
सुन्दरसकलशरीरे कृतभस्माभरणम् ।
इति वृषभध्वजरूपं तापत्रयहरणम् ॥ ७ ॥ हर० ॥
शङ्खनिनादं कृत्वा झल्लरि नादयते ।
नीराजयते ब्रह्मा वेदऋचां पठते ॥
अतिमृदुचरणसरोजं हृत्कमले धृत्वा ।
अवलोकयति महेशं ईशं अभिनत्वा ॥ ८ ॥ हर० ॥

ध्यानं आरति समये हृदये अति कृत्वा ।
रामस्त्रिजटानाथं ईशं अभिनत्वा ।।
संगतिमेवं प्रतिदिन पठनं यः कुरुते ।
शिवसायुज्यं गच्छति भक्त्या यः शृणुते ।। ९ ।। हर० ।।

आरतीके बाद जल गिरा दे। देवताको फूल चढ़ाये। फिर दोनों हाथोंसे आरती लेकर हाथ धो ले।

प्रदक्षिणा—

ॐ मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि। (प्रदक्षिणा करे।)

पुष्पाञ्जलि—

ॐ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे ।।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। (मन्त्र-पुष्पाञ्जलि समर्पण करे, तदनन्तर साष्टाङ्ग प्रणाम और पूजनकर्म शिवार्पण करे।)

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधारहेतवे ।
साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः ।।
पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः ।
त्राहि मां पार्वतीनाथ सर्वपापहरो भव ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, प्रार्थनापूर्वक-नमस्कारान् समर्पयामि। अनया पूजया श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवः प्रीयतां न मम। श्रीसाम्बसदाशिवार्पणमस्तु।

इसके बाद भगवान् शङ्करकी विशेष उपासनाकी दृष्टिसे पञ्चाक्षर-मन्त्रका जप, रुद्राभिषेक तथा बिल्वपत्र एवं कमलपुष्पोंसे सहस्रार्चन

आदि किये जा सकते हैं। अन्तमें संक्षेपमें उत्तराङ्ग-पूजन कर आरती, पुष्पाञ्जलि एवं स्तुति करनी चाहिये। शिवरात्रि आदि पर्वोंमें बिल्व-पत्रादिसे शिवार्चन तथा रात्रि-जागरणकी विशेष महिमा है।

★

पार्थिव-पूजन[१]

पार्थिव-पूजनके लिये स्नान, संध्योपासन आदि नित्यकर्मसे निवृत्त होकर शुभासनपर पूर्व या उत्तरकी ओर मुख करके बैठे। पूजाकी सामग्रीको सँभालकर रख दे। अच्छी मिट्टी[२] भी रख ले। भस्मका त्रिपुण्ड्र लगाकर रुद्राक्षकी माला पहन ले[३]। पवित्री धारण कर आचमन और प्राणायाम करे। इसके बाद विनियोगसहित **'ॐ अपवित्रः०'** इस मन्त्रसे अपना और पूजन-सामग्रीका सम्प्रोक्षण करे। रक्षादीप जला ले। विनियोगसहित **'ॐ पृथ्वि त्वया०'** इस मन्त्रसे आसनको पवित्र कर ले। हाथमें अक्षत और पुष्प लेकर स्वस्त्ययन (पृ० सं० १६८ के अनुसार) तथा गणपति-स्मरण करे। इसके बाद दाहिने हाथमें अर्घ्यपात्र लेकर उसमें कुशत्रय, पुष्प, अक्षत, जल और

१-जिनका यज्ञोपवीत न हुआ हो, वे प्रणव (ॐ) रहित मन्त्रोंका उच्चारण करें। पार्थिव-पूजन करनेका अधिकार स्त्री, शूद्र, अन्त्यज आदि सभी वर्णोंको है।

२-शमी या पीपलके पेड़की जड़की मिट्टी या विमौट (वल्मीक) अच्छी मानी जाती है। या पवित्र जगहसे ऊपरसे चार अंगुल मिट्टी हटाकर भीतरकी मिट्टीका अथवा गङ्गादि पवित्र स्थानोंकी मिट्टीका संग्रह करे।

३-विना भस्मत्रिपुण्ड्रेण विना रुद्राक्षमालया।
पूजितोऽपि महादेवो न स्यात् तस्य फलप्रदः।
तस्मान्मृदापि कर्तव्यं ललाटे वै त्रिपुण्ड्रकम्॥

(लिङ्गपुराण)

अर्थात् भस्मसे त्रिपुण्ड्र लगाये बिना और रुद्राक्षमाला पहने बिना पूजा कर देनेसे भगवान् शङ्कर फल प्रदान नहीं करते। इसलिये भस्म न हो तो मिट्टीसे भी त्रिपुण्ड्र लगाकर पूजा करे।

द्रव्य रखकर निम्नलिखित संकल्प करे।

(क) **सकाम संकल्प—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः, अद्य....मम सर्वारिष्टनिरसनपूर्वकसर्वपापक्षयार्थं दीर्घायुरारोग्यधनधान्यपुत्र-पौत्रादिसमस्तसम्पत्प्रवृद्ध्यर्थं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्रीसाम्बसदाशिवप्रीत्यर्थं पार्थिवलिङ्गपूजनमहं करिष्ये।**

(ख) **निष्काम संकल्प—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः, अद्य.... श्रीपरमात्मप्रीत्यर्थं पार्थिवलिङ्गपूजनमहं करिष्ये।**

भूमि-प्रार्थना—इस प्रकार संकल्प करनेके बाद निम्नलिखित मन्त्रसे भूमिकी प्रार्थना करे—

ॐ सर्वाधारे धरे देवि त्वद्रूपां मृत्तिकामिमाम्।
ग्रहीष्यामि प्रसन्ना त्वं लिङ्गार्थं भव सुप्रभे॥
ॐ ह्राँ पृथिव्यै नमः।

मिट्टीका ग्रहण—उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना।
मृत्तिके त्वां च गृह्णामि प्रजया च धनेन च॥

'ॐ हराय नमः'—यह मन्त्र पढ़कर मिट्टी ले। मिट्टीको अच्छी तरह देखकर कंकड़ आदि निकाल दे। कम-से-कम १२ ग्राम मिट्टी हो। जल मिलाकर मिट्टीको गूँथ ले।

लिङ्ग-गठन—'ॐ महेश्वराय नमः' कहकर लिङ्गका गठन करे। यह अँगूठेसे न छोटा हो और न बित्तेसे बड़ा। मिट्टीकी नन्हीं-सी गोली बनाकर लिङ्गके ऊपर रखे। यह 'वज्र' कहलाता है। काँसा आदिके पात्रमें बिल्वपत्र रखकर उसपर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर लिङ्गकी स्थापना करे।

प्रतिष्ठा—'ॐ शूलपाणये नमः, हे शिव इह प्रतिष्ठितो भव।' यह कहकर लिङ्गकी प्रतिष्ठा करे।[१]

१- यद्यपि सामान्यरूपसे पार्थिव-पूजनमें सुगमताकी दृष्टिसे प्रतिष्ठाकी सूक्ष्म विधि ऊपर दी गयी है, किंतु पूजनके अवसरोंपर निम्नरूपसे भी प्रतिष्ठाकी विधि है, जो यहाँ दी जा रही है—

विनियोग—ॐ अस्य श्रीशिवपञ्चाक्षरमन्त्रस्य वामदेव ऋषिरनुष्टुपछन्दः श्रीसदाशिवो देवता, ओङ्कारो बीजम्, नमः शक्तिः, शिवाय इति कीलकम्, मम साम्बसदाशिवप्रीत्यर्थं न्यासे पार्थिवलिङ्ग-पूजने जपे च विनियोगः।

इस विनियोगसे अपने और देवताको दूर्वा अथवा कुशसे स्पर्श करते हुए तत्तद् अङ्गोंमें न्यास करे।

ऋष्यादिन्यास—ॐ वामदेवर्षये नमः, शिरसि।
ॐ अनुष्टुपछन्दसे नमः, मुखे।
ॐ श्रीसदाशिवदेवतायै नमः, हृदि।
ॐ बीजाय नमः, गुह्ये।

प्राणप्रतिष्ठा-मन्त्रका विनियोग—प्रतिष्ठासे पूर्व जल ग्रहण कर निम्नरूपसे विनियोग करे—

विनियोग—ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः, ऋग्यजुः-सामानिच्छन्दांसि, क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता आँ बीजं ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकं देव (देवी) - प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

इतना कहकर जल भूमिपर छोड़ दे।

प्राणप्रतिष्ठा—हाथमें पुष्प लेकर उसे मूर्तिपर स्पर्श करते हुए नीचे लिखे मन्त्र बोले—

ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः, शिरसि। ॐ ऋग्यजुःसामच्छन्दोभ्यो नमः, मुखे। ॐ प्राणाख्यदेवतायै नमः, हृदि। ॐ आँ बीजाय नमः, गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्त्यै नमः, पादयोः। ॐ क्रौं कीलकाय नमः, सर्वाङ्गेषु।

इस प्रकार न्यास करके पुनः पार्थिव लिङ्गका स्पर्श करे—

ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोऽहं शिवस्य प्राणा इह प्राणाः।
ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोऽहं शिवस्य जीव इह स्थितः।
ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोऽहं शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुः-श्रोत्रघ्राणजिह्वापाणिपादपायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। तदनन्तर अक्षतसे आवाहन करे।

ॐ भूः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि। ॐ भुवः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाह-यामि। ॐ स्वः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि।

ॐ स्वामिन् सर्वजगन्नाथ यावत्पूजावसानकम्।
तावत्त्वम्प्रीतिभावेन लिङ्गेऽस्मिन् संनिधिं कुरु॥

ॐ शक्तये नमः, पादयोः ।

ॐ शिवाय कीलकाय नमः, सर्वाङ्गे ।

ॐ नं तत्पुरुषाय नमः, हृदये ।

ॐ मं अघोराय नमः, पादयोः ।

ॐ शिं सद्योजाताय नमः, गुह्ये ।

ॐ वां वामदेवाय नमः, मूर्ध्नि ।

ॐ यं ईशानाय नमः, मुखे ।

करन्यास—ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।

ॐ नं तर्जनीभ्यां नमः ।

ॐ मं मध्यमाभ्यां नमः ।

ॐ शिं अनामिकाभ्यां नमः ।

ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।

ॐ यं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

षडङ्गन्यास—ॐ हृदयाय नमः ।

ॐ नं शिरसे स्वाहा ।

ॐ मं शिखायै वषट् ।

ॐ शिं कवचाय हुम् ।

ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट् ।

ॐ यं अस्त्राय फट् ।

—इस प्रकार न्यास करनेके पश्चात् भगवान् साम्बसदाशिवका ध्यानपूर्वक पूजन करे—

ध्यान—ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

आवाहन—ॐ पिनाकधृषे नमः, श्रीसाम्बसदाशिव पार्थिवेश्वर इहागच्छ, इह प्रतिष्ठ, इह संनिहितो भव।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवपार्थिवेश्वराय नमः, आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि। (पुष्प चढ़ाये)।

आसन—ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय[१] नमः, आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि। (अक्षत चढ़ाये।)

पाद्य—ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, पादयोः पाद्यं समर्पयामि। (जल चढ़ाये।)

अर्घ्य—ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि। (जल चढ़ाये।)

आचमन—ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि। (जल चढ़ाये।)

मधुपर्क—ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, मधुपर्कं समर्पयामि। (मधुपर्क निवेदित करे।)

स्नान—ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि। (जलसे स्नान कराये।)

पञ्चामृतस्नान—ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। (पञ्चामृतसे स्नान कराये।)

शुद्धोदकस्नान—ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (शुद्ध जलसे स्नान कराये।)

आचमन—शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (जल चढ़ाये।)

महाभिषेक—पार्थिवलिङ्गपर महिम्नःस्तोत्र (पृ०-सं० २९३) या वैदिक

१- जैसा कि ऊपर लिखा गया है—'साम्बसदाशिवपार्थिवेश्वराय नमः', वैसा आगे भी बोला जा सकता है।

रुद्रसूक्त (पृ०-सं० २६६-२६७)से जलधाराद्वारा अभिषेक भी कर सकते हैं। (पत्र-पुष्पसे आच्छादित कर ही अभिषेक करना चाहिये, जिससे पार्थिवलिङ्गकी मिट्टी क्षरित न हो।)

गन्धोदक-स्नान—ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, गन्धोदकस्नानं समर्पयामि। (गन्धोदकसे स्नान कराये।)

शुद्धस्नान-आचमन— गन्धोदकस्नानान्ते शुद्धस्नानं समर्पयामि। शुद्धस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (शुद्ध जलसे स्नान तथा आचमन कराये।)

वस्त्र—ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, वस्त्रं समर्पयामि। (वस्त्र निवेदित करे।)

आचमन—वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (जल चढ़ाये।)

यज्ञोपवीत—ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि। (यज्ञोपवीत चढ़ाये।)

आचमन—यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (जल चढ़ाये।)

उपवस्त्र— ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि। (उपवस्त्र चढ़ाये।)

आचमन—उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (जल चढ़ाये।)

चन्दन—ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, चन्दनं समर्पयामि। (चन्दन चढ़ाये।)

भस्म—ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, भस्म समर्पयामि। (भस्म निवेदित करे।)

अक्षत—ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, अक्षतान् समर्पयामि। (अक्षत चढ़ाये।)

***

पुष्पमाला—ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, पुष्पमालां समर्पयामि। (फूलकी माला चढ़ाये।)

बिल्वपत्र—ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, बिल्वपत्राणि समर्पयामि। (बिल्वपत्र चढ़ाये।)

दूर्वा—ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि। (दूर्वाङ्कुर चढ़ाये।)

नानापरिमलद्रव्य—ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि। (परिमलद्रव्य चढ़ाये।)

धूप—ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, धूपमाघ्रापयामि। (धूप निवेदित करे।)

दीप—ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, दीपं दर्शयामि। (दीप दिखाये, हाथ धो ले।)

नैवेद्य—ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। (नैवेद्य निवेदित करे।)

पानीय और आचमन—मध्ये पानीयमाचमनीयं च जलं समर्पयामि। (जल निवेदित करे।)

करोद्वर्तन—ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि। (चन्दन चढ़ाये।)

ऋतुफल—ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि। (ऋतुफल चढ़ाये।)

धत्तूरफल—ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, धत्तूरफलानि समर्पयामि। (धत्तूरके फल चढ़ाये।)

ताम्बूल—ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, मुखवासार्थे एलालवंगपूगीफलयुतं ताम्बूलं समर्पयामि। (इलायची, लवंग, सुपारीके साथ पान चढ़ाये।)

दक्षिणा—ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, दक्षिणां समर्पयामि। (दक्षिणा चढ़ाये।)

आरती—ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, आरार्तिक्यं समर्पयामि। (आरती करे, जल गिरा दे।)

मन्त्रपुष्पाञ्जलि—ॐ नमः शिवाय, श्रीभगवते साम्बसदाशिव-पार्थिवेश्वराय नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

(पुष्पाञ्जलि समर्पित करे।)

अष्टमूर्तियोंकी पूजा

अब गन्ध, अक्षत, फूलके द्वारा भगवान् शङ्करकी आठों मूर्तियोंकी आठों दिशाओंमें पूजा करे—

१-पूर्वदिशामें (पृथ्वीरूपमें)—**ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः।**

२-ईशानकोणमें (जलरूपमें)—**ॐ भवाय जलमूर्तये नमः।**

३-उत्तरदिशामें (अग्निरूपमें)—**ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः।**

४-वायव्यकोणमें (वायुरूपमें)—**ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः।**

५-पश्चिमदिशामें (आकाशरूपमें)—**ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः।**

६-नैर्ऋत्यकोणमें (यजमानरूपमें)—**ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः।**

७-दक्षिणदिशामें (चन्द्ररूपमें)—**ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः।**

८-अग्निकोणमें (सूर्यरूपमें)—**ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः।**

इसके बाद '**ॐ नमः शिवाय**' मन्त्रका कम-से-कम एक माला अथवा दस बार जप करे। उसके बाद—

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव! त्वत्प्रसादान्महेश्वर॥

—यह मन्त्र पढ़कर देवताके दक्षिण हाथमें जपको समर्पित करे।

प्रदक्षिणा—यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे॥

क्षमा-प्रार्थना—**आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।**
पूजां नैव हि जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत् पूजितं महादेव! परिपूर्णं तदस्तु मे॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥
(क्षमा-प्रार्थना करे।)

विसर्जन—**गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ! स्वस्थाने परमेश्वर।**
मम पूजां गृहीत्वेमां पुनरागमनाय च॥[1]

ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः॥ (ऐसा कहकर विसर्जन करे।)

समर्पण—**अनेन पार्थिवलिङ्गपूजनकर्मणा श्रीयज्ञस्वरूपः शिवः प्रीयताम्, न मम।** (पूजनकर्म समर्पण करे।)

ज्ञातव्य बातें

(१) शिवकी प्रदक्षिणाके लिये शास्त्रका आदेश है कि इनकी अर्धप्रदक्षिणा करनी चाहिये। आचारेन्दुमें 'अर्ध'का अर्थ—**'अर्धं सोमसूत्रान्तमित्यर्थः'** 'सोमसूत्रतक' ऐसा किया गया है। **'शिवं प्रदक्षिणीकुर्वन् सोमसूत्रं न लङ्घयेत्, इति वचनान्तरात्।'**

अपवाद—तृण, काष्ठ, पत्ता, पत्थर, ईंट आदिसे ढके सोमसूत्रका लङ्घन किया जा सकता है।

(२) दुर्गाजीकी एक, सूर्यकी सात, गणेशकी तीन, विष्णुकी चार और शिवकी अर्ध प्रदक्षिणा करनी चाहिये।

एका चण्ड्या रवेः सप्त तिस्रः कार्या विनायके।
हरेश्चतस्रः कर्तव्याः शिवस्यार्धप्रदक्षिणा॥

१-तीर्थजलमें अथवा किसी पवित्र स्थानमें विसर्जन करना चाहिये।

(३) [क]—पूजनमें जिस सामग्रीकी कमी हो, उसकी पूर्ति मानसिक भावनासे करनी चहिये—'**असम्पन्नं मनसा सम्पादयेत्।**'जैसे—**आसनं मनसा परिकल्पयामि, पुष्पमालां मनसा परिकल्पयामि इत्यादि।**

[ख]—दूसरा विकल्प है, उस-उस सामग्रीके लिये अक्षत-फूल चढ़ा दे या जल चढ़ा दे—

तत्तद् द्रव्यं तु संकल्प्य पुष्पैर्वापि समर्चयेत्।
अर्चनेषु विहीनं यत् तत्तोयेन प्रकल्पयेत्॥

[ग]—केवल नैवेद्य चढ़ानेसे अथवा केवल चन्दन, फूल चढ़ानेसे भी पूजा मान ली जाती है।

'केवलनैवेद्यसमर्पणेनैव पूजासिद्धिरिति .... ।
गन्धपुष्पसमर्पणमात्रेण पूजासिद्धिरित्यपि पूर्वे।'

(आचारेन्दु)

स्तुति-प्रकरण

श्रीसङ्कष्टनाशनगणेशस्तोत्रम्

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम् ।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुष्कामार्थसिद्धये ॥ १ ॥
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम् ।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ॥ २ ॥
लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च ।
सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टमम् ॥ ३ ॥
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम् ।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ॥ ४ ॥
द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः ।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम् ॥ ५ ॥
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् ।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम् ॥ ६ ॥
जपेद् गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत् ।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः ॥ ७ ॥
अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत् ।
तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ॥ ८ ॥

॥ श्रीनारदपुराणे सङ्कष्टनाशनं नाम गणेशस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

═★═

श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम्

ॐ भद्रङ्कर्णेभिरिति शान्तिः

हरिः ॐ ॥ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्तासि। त्वमेव केवलं धर्तासि। त्वमेव केवलं हर्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि नित्यम्। ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि। अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचानमव शिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अव चोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्। त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि। सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि। त्वं गुणत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्। गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्॥ १ ॥ तारेण रुद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्। बिन्दुरुत्तररूपम्। नादः सन्धानम्। संहिता सन्धिः। सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः निचृद्गायत्री छन्दः। श्रीमहागणपतिर्देवता। ॐ गम्। (गणपतये नमः।) एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्॥ एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम्। अभयं वरदं हस्तैर्ब्रिभ्राणं मूषकध्वजम्॥ रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्। रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्॥ भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्। आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्॥ एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः।

नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदराय‌ैकदन्ताय विघ्नविनाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमो नमः ॥ एतदथर्वशिरो योऽधीते स ब्रह्मभूयाय कल्पते। स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते। स सर्वतः सुखमेधते। स पञ्चमहापातकोपपातकात् प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानोऽपापो भवति। धर्मार्थकाममोक्षं च विन्दति। इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम्। यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान् भवति। सहस्रावर्तनाद्यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत्। अनेन गणपतिमभिषिञ्चति स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्नञ्जपति स विद्यावान् भवति। इत्यथर्वणवाक्यम्। ब्रह्माद्याचरणं विद्यात्। न बिभेति कदाचनेति। यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति। स मेधावान् भवति। यो मोदकसहस्रेण यजति स वाञ्छितफलमवाप्नोति। यः साज्यसमिद्भिर्यजति स सर्वं लभते स सर्वं लभते। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासंनिधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति। महाविघ्नात् प्रमुच्यते। महापापात् प्रमुच्यते। महादोषात् प्रमुच्यते। स सर्वविद्भवति। स सर्वविद्भवति। य एवं वेद ॥ ॐ भद्रङ्कर्णेभिरिति शान्तिः ॥

॥ इति श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम् ॥

━━ ★ ━━

गणेशपञ्चरत्नम्

मुदा करात्तमोदकं सदा विमुक्तिसाधकं
कलाधरावतंसकं विलासिलोकरञ्जकम् ।
अनायकैकनायकं विनाशितेभदैत्यकं
नताशुभाशुनाशकं नमामि तं विनायकम् ॥ १ ॥
नतेतरातिभीकरं नवोदितार्कभास्वरं
नमत्सुरारिनिर्जरं नताधिकापदुद्धरम् ।
सुरेश्वरं निधीश्वरं गजेश्वरं गणेश्वरं
महेश्वरं तमाश्रये परात्परं निरन्तरम् ॥ २ ॥
समस्तलोकशङ्करं निरस्तदैत्यकुञ्जरं
दरेतरोदरं वरं वरेभवक्त्रमक्षरम् ।
कृपाकरं क्षमाकरं मुदाकरं यशस्करं
नमस्करं नमस्कृतां नमस्करोमि भास्वरम् ॥ ३ ॥
अकिंचनार्तिमार्जनं चिरन्तनोक्तिभाजनं
पुरारिपूर्वनन्दनं सुरारिगर्वचर्वणम् ।
प्रपञ्चनाशभीषणं धनञ्जयादिभूषणं
कपोलदानवारणं भजे पुराणवारणम् ॥ ४ ॥
नितान्तकान्तदन्तकान्तिमन्तकान्तकात्मज-
मचिन्त्यरूपमन्तहीनमन्तरायकृन्तनम् ।
हृदन्तरे निरन्तरं वसन्तमेव योगिनां
तमेकदन्तमेव तं विचिन्तयामि संततम् ॥ ५ ॥
महागणेशपञ्चरत्नमादरेण योऽन्वहं
प्रगायति प्रभातके हृदि स्मरन् गणेश्वरम् ।
अरोगतामदोषतां सुसाहितीं सुपुत्रतां
समाहितायुरष्टभूतिमभ्युपैति सोऽचिरात् ॥ ६ ॥

॥ श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतं गणेशपञ्चरत्नस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

★

श्रीसत्यनारायणाष्टकम्

आदिदेवं जगत्कारणं श्रीधरं लोकनाथं विभुं व्यापकं शङ्करम्।
सर्वभक्तेष्टदं मुक्तिदं माधवं सत्यनारायणं विष्णुमीशम्भजे ॥ १ ॥
सर्वदा लोककल्याणपारायणं देवगोविप्ररक्षार्थसद्विग्रहम्।
दीनहीनात्मभक्ताश्रयं सुन्दरं सत्य॰ ॥ २ ॥
दक्षिणे यस्य गङ्गा शुभा शोभते राजते सा रमा यस्य वामे सदा।
यः प्रसन्नाननो भाति भव्यश्च तं सत्य॰ ॥ ३ ॥
सङ्कटे सङ्गरे यं जनः सर्वदा स्वात्मभीनाशनाय स्मरेत् पीडितः।
पूर्णकृत्यो भवेद् यत्प्रसादाच्च तं सत्य॰ ॥ ४ ॥
वाञ्छितं दुर्लभं यो ददाति प्रभुः साधवे स्वात्मभक्ताय भक्तिप्रियः।
सर्वभूताश्रयं तं हि विश्वम्भरं सत्य॰ ॥ ५ ॥
ब्राह्मणः साधुवैश्यश्च तुङ्गध्वजो येऽभवन् विश्रुता यस्य भक्त्यामराः।
लीलया यस्य विश्वं ततं तं विभुं सत्य॰ ॥ ६ ॥
येन चाब्रह्मबालतृणं धार्यते सृज्यते पाल्यते सर्वमेतज्जगत्।
भक्तभावप्रियं श्रीदयासागरं सत्य॰ ॥ ७ ॥
सर्वकामप्रदं सर्वदा सत्प्रियं वन्दितं देववृन्दैर्मुनीन्द्रार्चितम्।
पुत्रपौत्रादिसर्वेष्टदं शाश्वतं सत्य॰ ॥ ८ ॥
अष्टकं सत्यदेवस्य भक्त्या नरः भावयुक्तो मुदा यस्त्रिसन्ध्यं पठेत्।
तस्य नश्यन्ति पापानि तेनाग्निना इन्धनानीव शुष्काणि सर्वाणि वै ॥ ९ ॥

॥ श्रीसत्यनारायणाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

★

श्रीआदित्यहृदयस्तोत्रम्*

ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम् ।
रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम् ॥ १ ॥
दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम् ।
उपगम्याब्रवीद्राममगस्त्यो भगवांस्तदा ॥ २ ॥
राम राम महाबाहो शृणु गुह्यं सनातनम् ।
येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसे ॥ ३ ॥

---

* इस आदित्यहृदय' नामक स्तोत्रका विनियोग एवं न्यासविधि इस प्रकार है—

विनियोग

ॐ अस्य आदित्यहृदयस्तोत्रस्यागस्त्यऋषिरनुष्टुप्छन्दः, आदित्यहृदयभूतो भगवान् ब्रह्मा देवता निरस्ताशेषविघ्नतया ब्रह्मविद्यासिद्धौ सर्वत्र जयसिद्धौ च विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास

ॐ अगस्त्यऋषये नमः, शिरसि । अनुष्टुप्छन्दसे नमः, मुखे । आदित्यहृदयभूतब्रह्मदेवतायै नमः, हृदि । ॐ बीजाय नमः, गुह्ये । रश्मिमते शक्तये नमः, पादयोः । ॐ तत्सवितुरित्यादिगायत्रीकीलकाय नमः, नाभौ ।

करन्यास

इस स्तोत्रके अङ्गन्यास और करन्यास तीन प्रकारसे किये जाते हैं। केवल प्रणवसे, गायत्रीमन्त्रसे अथवा **'रश्मिमते नमः'** इत्यादि छः नाम-मन्त्रोंसे। यहाँ नाम-मन्त्रोंसे किये जानेवाले न्यासका प्रकार बताया जाता है—

ॐ रश्मिमते अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ समुद्यते तर्जनीभ्यां नमः । ॐ देवासुरनमस्कृताय मध्यमाभ्यां नमः । ॐ विवस्वते अनामिकाभ्यां नमः । ॐ भास्कराय कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ भुवनेश्वराय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादि अङ्गन्यास

ॐ रश्मिमते हृदयाय नमः। ॐ समुद्यते शिरसे स्वाहा। ॐ देवासुरनमस्कृताय शिखायै वषट्। ॐ विवस्वते कवचाय हुम्। ॐ भास्कराय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ भुवनेश्वराय अस्त्राय फट्। इस प्रकार न्यास करके निम्नाङ्कित मन्त्रसे भगवान् सूर्यका ध्यान एवं नमस्कार करना चाहिये—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।
तत्पश्चात् **'आदित्यहृदय'** स्तोत्रका पाठ करना चाहिये ।

आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम् ।
जयावहं जपं नित्यमक्षयं परमं शिवम् ॥ ४ ॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम् ।
चिन्ताशोकप्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम् ॥ ५ ॥
रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम् ।
पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम् ॥ ६ ॥
सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः ।
एष देवासुरगणाँल्लोकान् पाति गभस्तिभिः ॥ ७ ॥
एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः ।
महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपाम्पतिः ॥ ८ ॥
पितरो वसवः साध्या अश्विनौ मरुतो मनुः ।
वायुर्वह्निः प्रजाः प्राण ऋतुकर्ता प्रभाकरः ॥ ९ ॥
आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान् ।
सुवर्णसदृशो भानुर्हिरण्यरेता दिवाकरः ॥ १० ॥
हरिदश्वः सहस्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान् ।
तिमिरोन्मथनः शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्डकोऽशुमान् ॥ ११ ॥
हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनोऽहस्करो रविः ।
अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रः शङ्खः शिशिरनाशनः ॥ १२ ॥
व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुःसामपारगः ।
घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीप्लवङ्गमः ॥ १३ ॥
आतपी मण्डली मृत्युः पिङ्गलः सर्वतापनः ।
कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः ॥ १४ ॥
नक्षत्रग्रहताराणामधिपो विश्वभावनः ।
तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन् नमोऽस्तु ते ॥ १५ ॥
नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः ।
ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः ॥ १६ ॥

जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः ।
नमो नमः सहस्रांशो आदित्याय नमो नमः ॥ १७ ॥
नम उग्राय वीराय सारङ्गाय नमो नमः ।
नमः पद्मप्रबोधाय प्रचण्डाय नमोऽस्तु ते ॥ १८ ॥
ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूरायादित्यवर्चसे ।
भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः ॥ १९ ॥
तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने ।
कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः ॥ २० ॥
तप्तचामीकराभाय हरये विश्वकर्मणे ।
नमस्तमोऽभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे ॥ २१ ॥
नाशयत्येष वै भूतं तमेव सृजति प्रभुः ।
पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः ॥ २२ ॥
एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः ।
एष चैवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम् ॥ २३ ॥
देवाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च ।
यानि कृत्यानि लोकेषु सर्वेषु परमप्रभुः ॥ २४ ॥
एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च ।
कीर्तयन् पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव ॥ २५ ॥
पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम् ।
एतत्त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यसि ॥ २६ ॥
अस्मिन् क्षणे महाबाहो रावणं त्वं जहिष्यसि ।
एवमुक्त्वा ततोऽगस्त्यो जगाम स यथागतम् ॥ २७ ॥
एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत् तदा ।
धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान् ॥ २८ ॥
आदित्यं प्रेक्ष्य जप्त्वेदं परं हर्षमवाप्तवान् ।
त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान् ॥ २९ ॥

रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा जयार्थं समुपागमत्।
सर्वयत्नेन महता वृतस्तस्य वधेऽभवत्॥ ३०॥
अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः।
निशिचरपतिसंक्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति॥ ३१॥

॥ श्रीवाल्मीकीये रामायणे युद्धकाण्डे, अगस्त्यप्रोक्तमादित्यहृदयस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

——★——

चाक्षुषोपनिषद् (चाक्षुषी विद्या[१])

विनियोग—ॐ अस्याश्चाक्षुषीविद्याया अहिर्बुध्न्य ऋषिर्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता चक्षूरोगनिवृत्तये विनियोगः।

ॐ चक्षुः चक्षुः चक्षुः तेजः स्थिरो भव। मां पाहि पाहि। त्वरितं चक्षूरोगान् शमय शमय। मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय। यथा अहम् अन्धो न स्यां तथा कल्पय कल्पय। कल्याणं कुरु कुरु। यानि मम पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुःप्रतिरोधकदुष्कृतानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय।

ॐ नमः चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय। ॐ नमः करुणाकरायामृताय। ॐ नमः सूर्याय। ॐ नमो भगवते सूर्यायाक्षितेजसे नमः। खेचराय नमः। महते नमः। रजसे नमः। तमसे नमः। असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय। उष्णो भगवाञ्छुचिरूपः। हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः।

य इमां चाक्षुष्मतीविद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीते न तस्याक्षिरोगो भवति। न तस्य कुले अन्धो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति। ॐ नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिनी अहोवाहिनी स्वाहा।

॥ श्रीकृष्णयजुर्वेदीया चाक्षुषी विद्या सम्पूर्णा॥

——★——

१-इस चाक्षुषी विद्याके श्रद्धा-विश्वासपूर्वक पाठ करनेसे नेत्रके समस्त रोग दूर हो जाते हैं। आँखकी ज्योति स्थिर रहती है। इसका पाठ नित्य करनेवालेके कुलमें कोई अन्धा नहीं होता। पाठके अन्तमें गन्धादियुक्त जलसे सूर्यको अर्घ्य देकर नमस्कार करना चाहिये।
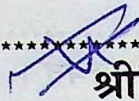
श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय ॥ १ ॥

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय
नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय ।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय
तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय ॥ २ ॥

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द-
सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय
तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय ॥ ३ ॥

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य-
मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय
तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय ॥ ४ ॥

यक्षस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय ॥ ५ ॥

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसंनिधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥ ६ ॥

॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

══ ★ ══

श्रीशिवमहिम्नःस्तोत्रम्

पुष्पदन्त उवाच

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ॥ १ ॥
अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो-
रतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥ २ ॥
मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम्।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ॥ ३ ॥
तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तुव्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु।
अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ॥ ४ ॥
किमीहः किं कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥ ५ ॥
अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥ ६ ॥
त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।

रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव॥ ७ ॥
महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम्।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति च भवद्भ्रूप्रणिहितां
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति॥ ८ ॥
ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव
स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता॥ ९ ॥
तवैश्वर्यं यत्नाद् यदुपरि विरिञ्चो हरिरधः
परिच्छेतुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति॥ १० ॥
अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
दशास्यो यद् बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान्।
शिरःपद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम्॥ ११ ॥
अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
बलात् कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः॥ १२ ॥
यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सती-
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयो-
र्न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः॥ १३ ॥
अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा-
विधेयस्याऽऽसीद्यस्त्रिनयनविषं संहृतवतः।

स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः ॥ १४ ॥
असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः ।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः ॥ १५ ॥
मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम् ।
मुहुर्द्यौर्दौःस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ॥ १६ ॥
वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते ।
जगद् द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः ॥ १७ ॥
रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति ।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि-
र्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः ॥ १८ ॥
हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन् निजमुदहरन्नेत्रकमलम् ।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ॥ १९ ॥
क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते ।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः ॥ २० ॥
क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता-
मृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः ।

क्रतुभ्रेषस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ॥ २१ ॥
प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा ।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ॥ २२ ॥
स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि ।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्धघटना-
दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः ॥ २३ ॥
श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्त्रगपि नृकरोटीपरिकरः ।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मङ्गलमसि ॥ २४ ॥
मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः ।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत् किल भवान् ॥ २५ ॥
त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च ।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि ॥ २६ ॥
त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत् तीर्णविकृति ।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम् ॥ २७ ॥
भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ।

अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रविहितनमस्योऽस्मि भवते ॥ २८ ॥
नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः ।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः ॥ २९ ॥
बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ॥ ३० ॥
कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः ।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्
वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ॥ ३१ ॥
असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥ ३२ ॥
असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले-
र्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ।
सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ॥ ३३ ॥
अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः ।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथात्र
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्च ॥ ३४ ॥
महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः ।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥ ३५ ॥

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः ।
महिम्नः स्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥ ३६ ॥

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शिशुशशिधरमौलेर्देवदेवस्य दासः ।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद् दिव्यदिव्यं महिम्नः ॥ ३७ ॥

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः ।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ॥ ३८ ॥

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम् ।
अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम् ॥ ३९ ॥

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः ।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः ॥ ४० ॥

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर ।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः ॥ ४१ ॥

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते ॥ ४२ ॥

श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन
स्तोत्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण ।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ॥ ४३ ॥

॥ श्रीशिवमहिम्नःस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्रीशिवमानसपूजा

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम् ।
जातीचम्पकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम् ॥ १ ॥
सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसं
भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम् ।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ॥ २ ॥
छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं
वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा ।
साष्टाङ्गं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया
सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो ॥ ३ ॥
आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ॥ ४ ॥
करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम् ।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचिता शिवमानसपूजा समाप्ता ॥

═══ ★ ═══

देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः ।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥ १ ॥
विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत् ।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ २ ॥
पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः ।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ ३ ॥
जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ ४ ॥
परित्यक्ता देवा विविधविधिसेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि ।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम् ॥ ५ ॥
श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः ।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥ ६ ॥

****

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः ।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥ ७ ॥

न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः ।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ॥ ८ ॥

नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः ।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥ ९ ॥

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं
करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि ।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः
क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥ १०॥

जगदम्ब विचित्रमत्र किं
परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि ।
अपराधपरम्परापरं
न हि माता समुपेक्षते सुतम् ॥ ११ ॥

मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि ।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ॥ १२ ॥

॥ इति श्रीशङ्कराचार्यविरचितं देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

═══ ★ ═══

अन्नपूर्णास्तोत्रम्

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी
निर्धूताखिलघोरपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी ।
प्रालेयाचलवंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥ १ ॥

नानारत्नविचित्रभूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी
मुक्ताहारविलम्बमानविलसद्वक्षोजकुम्भान्तरी ।
काश्मीरागरुवासिताङ्गरुचिरे काशीपुराधीश्वरी ॥ भिक्षां देहि० ॥ २ ॥

योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्मार्थनिष्ठाकरी
चन्द्रार्कानलभासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी ।
सर्वैश्वर्यसमस्तवाञ्छितकरी काशीपुराधीश्वरी ॥ भिक्षां देहि० ॥ ३ ॥

कैलासाचलकन्दरालयकरी गौरी उमा शङ्करी
कौमारी निगमार्थगोचरकरी ओंकारबीजाक्षरी ।
मोक्षद्वारकपाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी ॥ भिक्षां देहि० ॥ ४ ॥

दृश्यादृश्यविभूतिवाहनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी
लीलानाटकसूत्रभेदनकरी विज्ञानदीपाङ्कुरी ।
श्रीविश्वेशमनःप्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी ॥ भिक्षां देहि० ॥ ५ ॥

उर्वीसर्वजनेश्वरी भगवती मातान्नपूर्णेश्वरी
वेणीनीलसमानकुन्तलहरी नित्यान्नदानेश्वरी ।
सर्वानन्दकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी ॥ भिक्षां देहि० ॥ ६ ॥

आदिक्षान्तसमस्तवर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी
काश्मीरात्रिजलेश्वरी त्रिलहरी नित्याङ्कुरा शर्वरी ।
कामाकाङ्क्षकरी जनोदयकरी काशीपुराधीश्वरी ॥ भिक्षां देहि० ॥ ७ ॥

देवी सर्वविचित्ररत्नरचिता दाक्षायणी सुन्दरी
वामं स्वादु पयोधरप्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी ।
भक्ताभीष्टकरी सदाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी ॥ भिक्षां देहि॰ ॥ ८ ॥
चन्द्रार्कानलकोटिकोटिसदृशा चन्द्रांशुबिम्बाधरी
चन्द्रार्काग्निसमानकुन्तलधरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी ।
मालापुस्तकपाशसाङ्कुशधरी काशीपुराधीश्वरी ॥ भिक्षां देहि॰ ॥ ९ ॥
क्षत्रत्राणकरी महाऽभवकरी माता कृपासागरी
साक्षान्मोक्षकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरश्रीधरी ।
दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी ॥ भिक्षां देहि॰ ॥ १० ॥
अन्नपूर्णे सदापूर्णे शङ्करप्राणवल्लभे ।
ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति ॥ ११ ॥
माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः ।
बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम् ॥ १२ ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ अन्नपूर्णास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

═★═

श्रीकनकधारास्तोत्रम्[१]

अङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम् ।
अङ्गीकृताखिलविभूतिरपाङ्गलीला माङ्गल्यदाऽस्तु मम मङ्गलदेवतायाः ॥ १ ॥
मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि ।
माला दृशोर्मधुकरीव महोत्पले या सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः ॥ २ ॥
विश्वामरेन्द्रपदविभ्रमदानदक्षमानन्दहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि ।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्धमिन्दीवरोदरसहोदरमिन्दिरायाः ॥ ३ ॥
आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्दमानन्दकन्दमनिमेषमनङ्गतन्त्रम् ।
आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रं भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः ॥ ४ ॥
बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या हारावलीव हरिनीलमयी विभाति ।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः ॥ ५ ॥
कालाम्बुदालिललितोरसि कैटभारेर्धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव ।
मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्तिर्भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः ॥ ६ ॥
प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत्प्रभावान्माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन ।
मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्धं मन्दालसं च मकरालयकन्यकायाः ॥ ७ ॥
दद्याद्दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारामस्मिन्नकिञ्चनविहङ्गशिशौ विषण्णे ।
दुष्कर्मघर्ममपनीय चिराय दूरं नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाहः ॥ ८ ॥
इष्टा विशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्रदृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते ।
दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टां पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः ॥ ९ ॥
गीर्देवतेति गरुडध्वजसुन्दरीति शाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति ।
सृष्टिस्थितिप्रलयकेलिषु संस्थितायै तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै ॥ १० ॥
श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै ।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै ॥ ११ ॥

१-इसके श्रद्धा-विश्वासपूर्वक पाठ-अनुष्ठानसे ऋणमुक्ति और लक्ष्मी-प्राप्ति होती है। कहा जाता है कि आचार्य श्रीशंकरने इसका पाठ करके स्वर्णवर्षा करायी थी।

नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै नमोऽस्तु दुग्धोदधिजन्मभूत्यै ।
नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै ॥ १२ ॥
सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि साम्राज्यदानविभवानि सरोरुहाक्षि ।
त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये ॥ १३ ॥
यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः सेवकस्य सकलार्थसम्पदः ।
संतनोति वचनाङ्गमानसैस्त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे ॥ १४ ॥
सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतमांशुकगन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥ १५ ॥
दिग्घस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्टस्वर्वाहिनीविमलचारुजलप्लुताङ्गीम् ।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेषलोकाधिनाथगृहिणीममृताब्धिपुत्रीम् ॥ १६ ॥
कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं करुणापूरतरङ्गितैरपाङ्गैः ।
अवलोकय मामकिञ्चनानां प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः ॥ १७ ॥
स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम् ।
गुणाधिका गुरुतरभाग्यभागिनो भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः ॥ १८ ॥

॥ श्रीभगवत्पादशङ्करविरचितं कनकधारास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

═══ ★ ═══

श्रीसूक्तम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥ १ ॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ २ ॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम् ।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥ ३ ॥
कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥ ४ ॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्र पद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥ ५ ॥

आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ ६ ॥
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥ ७ ॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥ ८ ॥
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥ ९ ॥
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥ १० ॥
कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥ ११ ॥
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥ १२ ॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥ १३ ॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥ १४ ॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥ १५ ॥
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥ १६ ॥
पद्मानने पद्मविपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि ।
विश्वप्रिये विष्णुमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सं नि धत्स्व ॥ १७ ॥
पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षि पद्मसम्भवे ।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥ १८ ॥
अश्वदायि गोदायि धनदायि महाधने ।
धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे ॥ १९ ॥

पुत्रपौत्रधनं धान्यं हस्त्यश्वाश्वतरी रथम् ।
प्रजानां भवसि माता आयुष्मन्तं करोतु मे ॥ २० ॥
धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः ।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणो धनमश्विना ॥ २१ ॥
वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा ।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥ २२ ॥
न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्त्या श्रीसूक्तजापिनाम् ॥ २३ ॥
सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्र सीद मह्यम् ॥ २४ ॥
विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् ।
लक्ष्मीं प्रियसखीं भूमिं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ॥ २५ ॥
महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्र चोदयात् ॥ २६ ॥
आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः ।
ऋषयः श्रियः पुत्राश्च श्रीर्देवीर्देवता मताः ॥ २७ ॥
ऋणरोगादिदारिद्र्यपापक्षुदपमृत्यवः ।
भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥ २८ ॥
श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते ।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥ २९ ॥

॥ ऋग्वेदोक्तं श्रीसूक्तं सम्पूर्णम् ॥

═══ ★ ═══

पुरुषसूक्तम्

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमि ँ सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ १॥
पुरुष एवेद ँ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥ २॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ ३॥
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि॥ ४॥
ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥ ५॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥ ६॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दा ँ सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥ ७॥
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥ ८॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥ ९॥
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते॥ १०॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ँ शूद्रो अजायत॥ ११॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥ १२॥
नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन्॥ १३॥

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥ १४ ॥
सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् ॥ १५ ॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ १६ ॥

॥ पुरुषसूक्तं सम्पूर्णम् ॥

श्रीकृष्णाष्टकम्

श्रियाश्लिष्टो विष्णुः स्थिरचरवपुर्वेदविषयो
धियां साक्षी शुद्धो हरिरसुरहन्ताब्जनयनः ।
गदी शङ्खी चक्री विमलवनमाली स्थिररुचिः
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः ॥ १ ॥
यतः सर्वं जातं वियदनिलमुख्यं जगदिदं
स्थितौ निःशेषं योऽवति निजसुखांशेन मधुहा ।
लये सर्वं स्वस्मिन् हरति कलया यस्तु स विभुः । शरण्यो० ॥ २ ॥
असूनायम्यादौ यमनियममुख्यैः सुकरणै-
र्निरुध्येदं चित्तं हृदि विलयमानीय सकलम् ।
यमीड्यं पश्यन्ति प्रवरमतयो मायिनमसौ । शरण्यो० ॥ ३ ॥
पृथिव्यां तिष्ठन् यो यमयति महीं वेद न धरा
यमित्यादौ वेदो वदति जगतामीशममलम् ।
नियन्तारं ध्येयं मुनिसुरनृणां मोक्षदमसौ । शरण्यो० ॥ ४ ॥
महेन्द्रादिर्देवो जयति दितिजान् यस्य बलतो
न कस्य स्वातन्त्र्यं क्वचिदपि कृतौ यत्कृतिमृते ।
कवित्वादेर्गर्वं परिहरति योऽसौ विजयिनः । शरण्यो० ॥ ५ ॥
विना यस्य ध्यानं व्रजति पशुतां सूकरमुखां
विना यस्य ज्ञानं जनिमृतिभयं याति जनता ।
विना यस्य स्मृत्या कृमिशतजनिं याति स विभुः । शरण्यो० ॥ ६ ॥

नरातङ्कोत्तङ्कः शरणशरणो भ्रान्तिहरणो
घनश्यामः वामो व्रजशिशुवयस्योऽर्जुनसखः ।
स्वयम्भूर्भूतानां जनक उचिताचारसुखदः । शरण्यो॰ ॥ ७ ॥
यदा धर्मग्लानिर्भवति जगतां क्षोभकरणी
तदा लोकस्वामी प्रकटितवपुः सेतुधृगजः ।
सतां धाता स्वच्छो निगमगणगीतो व्रजपतिः । शरण्यो॰ ॥ ८ ॥
इति हरिरखिलात्माराधितः शंकरेण
श्रुतिविशदगुणोऽसौ मातृमोक्षार्थमाद्यः ।
यतिवरनिकटे श्रीयुक्त आविर्बभूव
स्वगुणवृत उदारः शङ्खचक्राब्जहस्तः ॥ ९ ॥

॥ श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतं कृष्णाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

श्रीगङ्गाष्टकम्

मातः शैलसुतासपत्नि वसुधाशृङ्गारहारावलि
स्वर्गारोहणवैजयन्ति भवतीं भागीरथि प्रार्थये ।
त्वत्तीरे वसतस्त्वदम्बु पिबतस्त्वद्वीचिषु प्रेङ्खत-
स्त्वन्नाम स्मरतस्त्वदर्पितदृशः स्यान्मे शरीरव्ययः ॥ १ ॥
त्वत्तीरे तरुकोटरान्तर्गतो गङ्गे विहङ्गो वरं
त्वन्नीरे नरकान्तकारिणि वरं मत्स्योऽथवा कच्छपः ।
नैवान्यत्र मदान्धसिन्धुरघटासङ्घट्टघण्टारण-
त्कारत्रस्तसमस्तवैरिवनितालब्धस्तुतिर्भूपतिः ॥ २ ॥
उक्षा पक्षी तुरग उरगः कोऽपि वा वारणो वा-
वारीणः स्यां जननमरणक्लेशदुःखासहिष्णुः ।
न त्वन्यत्र प्रविरलरणत्कङ्कणक्वाणमिश्रं
वारस्त्रीभिश्चमरमरुता वीजितो भूमिपालः ॥ ३ ॥
काकैर्निष्कुषितं श्वभिः कवलितं गोमायुभिर्लुण्ठितं
स्रोतोभिश्चलितं तटाम्बुलुलितं वीचीभिरान्दोलितम् ।

दिव्यस्त्रीकरचारुचामरमरुत्संवीज्यमानः कदा
द्रक्ष्येऽहं परमेश्वरि त्रिपथगे भागीरथि स्वं वपुः ॥ ४ ॥
अभिनवबिसवल्ली पादपद्मस्य विष्णो-
मर्दनमथनमौलेर्मालतीपुष्पमाला ।
जयति जयपताका काप्यसौ मोक्षलक्ष्म्याः
क्षपितकलिकलङ्का जाह्नवी नः पुनातु ॥ ५ ॥
एतत्तालतमालसालसरलव्यालोलवल्लीलता-
च्छन्नं सूर्यकरप्रतापरहितं शङ्खेन्दुकुन्दोज्ज्वलम् ।
गन्धर्वामरसिद्धकिन्नरवधूत्तुङ्गस्तनास्फालितं
स्नानाय प्रतिवासरं भवतु मे गाङ्गं जलं निर्मलम् ॥ ६ ॥
गाङ्गं वारि मनोहारि मुरारिचरणच्युतम् ।
त्रिपुरारिशिरश्चारि पापहारि पुनातु माम् ॥ ७ ॥
पापापहारि दुरितारि तरङ्गधारि
शैलप्रचारि गिरिराजगुहाविदारि ।
झङ्कारकारि हरिपादरजोऽपहारि
गाङ्गं पुनातु सततं शुभकारि वारि ॥ ८ ॥
गङ्गाष्टकं पठति यः प्रयतः प्रभाते
वाल्मीकिना विरचितं शुभदं मनुष्यः ।
प्रक्षाल्य गात्रकलिकल्मषपङ्कमाशु
मोक्षं लभेत्पतति नैव नरो भवाब्धौ ॥ ९ ॥

॥ श्रीमहर्षिवाल्मीकिविरचितं गङ्गाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

★

श्रीनवग्रहस्तोत्रम्

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥ १ ॥
दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥ २ ॥
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्॥ ३ ॥
प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥ ४ ॥
देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसंनिभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥ ५ ॥
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥ ६ ॥
नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥ ७ ॥
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥ ८ ॥
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥ ९ ॥
इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति॥ १० ॥
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशनम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्॥ ११ ॥

॥ महर्षिव्यासविरचितं नवग्रहस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

★

श्रीकालभैरवाष्टकम्

देवराजसेव्यमानपावनाङ्घ्रिपङ्कजं व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम् ।
नारदादियोगिवृन्दवन्दितं दिगम्बरं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ १ ॥
भानुकोटिभास्वरं भवाब्धितारकं परं नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम् ।
कालकालमम्बुजाक्षमक्षशूलमक्षरं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ २ ॥
शूलटङ्कपाशदण्डपाणिमादिकारणं श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम् ।
भीमविक्रमं प्रभुं विचित्रताण्डवप्रियं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ३ ॥
भुक्तिमुक्तिदायकं प्रशस्तचारुविग्रहं भक्तवत्सलं स्थितं समस्तलोकविग्रहम् ।
विनिक्वणन्मनोज्ञहेमकिङ्किणीलसत्कटिं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ४ ॥
धर्मसेतुपालकं त्वधर्ममार्गनाशकं कर्मपाशमोचकं सुशर्मदायकं विभुम् ।
स्वर्णवर्णशेषपाशशोभिताङ्गमण्डलं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ५ ॥
रत्नपादुकाप्रभाभिरामपादयुग्मकं नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरञ्जनम् ।
मृत्युदर्पनाशनं करालदंष्ट्रमोक्षणं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ६ ॥
अट्टहासभिन्नपद्मजाण्डकोशसन्ततिं दृष्टिपातनष्टपापजालमुग्रशासनम् ।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकन्धरं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ७ ॥
भूतसंघनायकं विशालकीर्तिदायकं काशिवासलोकपुण्यपापशोधकं विभुम् ।
नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ८ ॥
कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरं ज्ञानमुक्तिसाधनं विचित्रपुण्यवर्धनम् ।
शोकमोहदैन्यलोभकोपतापनाशनं ते प्रयान्ति कालभैरवाङ्घ्रिसंनिधिं ध्रुवम् ॥ ९ ॥

॥ श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं कालभैरवाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

═★═

रामरक्षास्तोत्रम्

'रामरक्षाकवच'की सिद्धिकी विधि

नवरात्रमें प्रतिदिन नौ दिनोंतक ब्राह्म-मुहूर्तमें नित्य-कर्म तथा स्नानादिसे निवृत्त हो शुद्ध वस्त्र धारणकर कुशाके आसनपर सुखासन लगाकर बैठ जाइये। भगवान् श्रीरामके कल्याणकारी स्वरूपमें चित्तको एकाग्र करके इस महान् फलदायी स्तोत्रका कम-से-कम ग्यारह बार और यदि यह न हो सके तो सात बार नियमित रूपसे प्रतिदिन पाठ कीजिये। पाठ करनेवालेकी श्रीरामकी शक्तियोंके प्रति जितनी अखण्ड श्रद्धा होगी, उतना ही फल प्राप्त होगा। वैसे 'रामरक्षाकवच' कुछ लंबा है, पर इस संक्षिप्तरूपसे भी काम चल सकता है। पूर्ण शान्ति और विश्वाससे इसका जाप होना चाहिये, यहाँतक कि यह कण्ठस्थ हो जाय।

विनियोगः

अस्य श्रीरामरक्षास्तोत्रमन्त्रस्य बुधकौशिक ऋषिः श्रीसीता-रामचन्द्रो देवता अनुष्टुप् छन्दः सीता शक्तिः श्रीमान् हनुमान् कीलकं श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थे रामरक्षास्तोत्रजपे विनियोगः।

ध्यानम्

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं
पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम्।
वामाङ्कारूढसीतामुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं
नानालंकारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डलं रामचन्द्रम्॥

स्तोत्रम्

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम्।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम्॥ १॥
ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम्।
जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमण्डितम्॥ २॥
सासितूणधनुर्बाणपाणिं नक्तंचरान्तकम्।
स्वलीलया जगत्त्रातुमाविर्भूतमजं विभुम्॥ ३॥
रामरक्षां पठेत् प्राज्ञः पापघ्नीं सर्वकामदाम्।
शिरो मे राघवः पातु भालं दशरथात्मजः॥ ४॥

कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती।
घ्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः॥ ५॥
जिह्वां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतवन्दितः।
स्कन्धौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेशकार्मुकः॥ ६॥
करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित्।
मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जाम्बवदाश्रयः॥ ७॥
सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः।
ऊरू रघूत्तमः पातु रक्षःकुलविनाशकृत्॥ ८॥
जानुनी सेतुकृत् पातु जङ्घे दशमुखान्तकः।
पादौ विभीषणश्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः॥ ९॥
एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत्।
स चिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत्॥ १०॥
पातालभूतलव्योमचारिणश्छद्मचारिणः।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः॥ ११॥
रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन्।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति॥ १२॥
जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नाभिरक्षितम्।
यः कण्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः॥ १३॥
वज्रपञ्जरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत्।
अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमङ्गलम्॥ १४॥
आदिष्टवान् यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः।
तथा लिखितवान् प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः॥ १५॥
आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम्।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान् स नः प्रभुः॥ १६॥
तरुणौ रूपसम्पन्नौ सुकुमारौ महाबलौ।
पुण्डरीकविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाम्बरौ॥ १७॥
फलमूलाशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ॥ १८॥

शरण्यौ सर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम्।
रक्षःकुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ ॥ १९ ॥
आत्तसज्जधनुषाविषुस्पृशा-
वक्षयाशुगनिषङ्गसङ्गिनौ।
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणा-
वग्रतः पथि सदैव गच्छताम् ॥ २० ॥
संनद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा।
गच्छन् मनोरथान् नश्च रामः पातु सलक्ष्मणः ॥ २१ ॥
रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली।
काकुत्स्थः पुरुषः पूर्णः कौसल्येयो रघूत्तमः ॥ २२ ॥
वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः।
जानकीवल्लभः श्रीमानप्रमेयपराक्रमः ॥ २३ ॥
इत्येतानि जपन् नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयान्वितः।
अश्वमेधाधिकं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशयः ॥ २४ ॥
रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम्।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नराः ॥ २५ ॥
रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं
काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम्।
राजेन्द्रं सत्यसंधं दशरथतनयं श्यामलं शान्तमूर्तिं
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम् ॥
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥ २७ ॥
श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम
श्रीराम राम भरताग्रज राम राम।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम
श्रीराम राम शरणं भव राम राम ॥ २८ ॥
श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि।

****

श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ २९ ॥
माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः
स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः ।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालु-
र्नान्यं जाने नैव जाने न जाने ॥ ३० ॥
दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा ।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम् ॥ ३१ ॥
लोकाभिरामं रणरङ्गधीरं
राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम् ।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं
श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये ॥ ३२ ॥
मनोजवं मारुततुल्यवेगं
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं
श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥ ३३ ॥
कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम् ।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥ ३४ ॥
आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥ ३५ ॥
भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम् ।
तर्जनं यमदूतानां रामरामेति गर्जनम् ॥ ३६ ॥
रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः ।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर ॥ ३७ ॥
राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ।
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ॥ ३८ ॥

॥ इति श्रीबुधकौशिकमुनिविरचितं श्रीरामरक्षास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्रीमद्भागवतान्तर्गत

गजेन्द्रकृत भगवान्‌का स्तवन

गजेन्द्रमोक्ष

श्रीशुक उवाच

एवं व्यवसितो बुद्ध्या समाधाय मनो हृदि।
जजाप परमं जाप्यं प्राग्जन्मन्यनुशिक्षितम्॥ १॥

गजेन्द्र उवाच

ॐ नमो भगवते तस्मै यत एतच्चिदात्मकम्।
पुरुषायादिबीजाय परेशायाभिधीमहि॥ २॥
यस्मिन्निदं यतश्चेदं येनेदं य इदं स्वयम्।
योऽस्मात्परस्माच्च परस्तं प्रपद्ये स्वयम्भुवम्॥ ३॥
यः स्वात्मनीदं निजमाययार्पितं
क्वचिद् विभातं क्व च तत् तिरोहितम्।
अविद्धदृक् साक्ष्युभयं तदीक्षते
स आत्ममूलोऽवतु मां परात्परः॥ ४॥
कालेन पञ्चत्वमितेषु कृत्स्नशो
लोकेषु पालेषु च सर्वहेतुषु।
तमस्तदाऽऽसीद् गहनं गभीरं
यस्तस्य पारेऽभिविराजते विभुः॥ ५॥
न यस्य देवा ऋषयः पदं विदु-
र्जन्तुः पुनः कोऽर्हति गन्तुमीरितुम्।
यथा नटस्याकृतिभिर्विचेष्टतो
दुरत्ययानुक्रमणः स मावतु॥ ६॥
दिदृक्षवो यस्य पदं सुमङ्गलं
विमुक्तसङ्गा मुनयः सुसाधवः।
चरन्त्यलोकव्रतमव्रणं वने
भूतात्मभूताः सुहृदः स मे गतिः॥ ७॥
न विद्यते यस्य च जन्म कर्म वा
न नामरूपे गुणदोष एव वा।

****

तथापि लोकाप्ययसम्भवाय यः
स्वमायया तान्यनुकालमृच्छति ॥ ८॥

तस्मै नमः परेशाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये ।
अरूपायोरुरूपाय नम आश्चर्यकर्मणे ॥ ९॥

नम आत्मप्रदीपाय साक्षिणे परमात्मने ।
नमो गिरां विदूराय मनसश्चेतसामपि ॥ १० ॥

सत्त्वेन प्रतिलभ्याय नैष्कर्म्येण विपश्चिता ।
नमः कैवल्यनाथाय निर्वाणसुखसंविदे ॥ ११ ॥

नमः शान्ताय घोराय मूढाय गुणधर्मिणे ।
निर्विशेषाय साम्याय नमो ज्ञानघनाय च ॥ १२ ॥

क्षेत्रज्ञाय नमस्तुभ्यं सर्वाध्यक्षाय साक्षिणे ।
पुरुषायात्ममूलाय मूलप्रकृतये नमः ॥ १३ ॥

सर्वेन्द्रियगुणद्रष्ट्रे सर्वप्रत्ययहेतवे ।
असताच्छाययोक्ताय सदाभासाय ते नमः ॥ १४ ॥

नमो नमस्तेऽखिलकारणाय
निष्कारणायाद्भुतकारणाय ।
सर्वागमाम्नायमहार्णवाय
नमोऽपवर्गाय परायणाय ॥ १५ ॥

गुणारणिच्छन्नचिदूष्मपाय
तत्क्षोभविस्फूर्जितमानसाय ।
नैष्कर्म्यभावेन विवर्जितागम-
स्वयंप्रकाशाय नमस्करोमि ॥ १६ ॥

मादृक्प्रपन्नपशुपाशविमोक्षणाय
मुक्ताय भूरिकरुणाय नमोऽलयाय ।
स्वांशेन सर्वतनुभृन्मनसि प्रतीत-
प्रत्यग्दृशे भगवते बृहते नमस्ते ॥ १७ ॥

आत्मात्मजाप्तगृहवित्तजनेषु सक्तै-
दुष्प्रापणाय गुणसङ्गविवर्जिताय ।
मुक्तात्मभिः स्वहृदये परिभाविताय
ज्ञानात्मने भगवते नम ईश्वराय ॥ १८ ॥
यं धर्मकामार्थविमुक्तिकामा
भजन्त इष्टां गतिमाप्नुवन्ति ।
किं त्वाशिषो रात्यपि देहमव्ययं
करोतु मेऽदभ्रदयो विमोक्षणम् ॥ १९ ॥
एकान्तिनो यस्य न कंचनार्थं
वाञ्छन्ति ये वै भगवत्प्रपन्नाः ।
अत्यद्भुतं तच्चरितं सुमङ्गलं
गायन्त आनन्दसमुद्रमग्नाः ॥ २० ॥
तमक्षरं ब्रह्म परं परेश-
मव्यक्तमाध्यात्मिकयोगगम्यम् ।
अतीन्द्रियं सूक्ष्ममिवातिदूर-
मनन्तमाद्यं परिपूर्णमीडे ॥ २१ ॥
यस्य ब्रह्मादयो देवा वेदा लोकाश्चराचराः ।
नामरूपविभेदेन फल्ग्व्या च कलया कृताः ॥ २२ ॥
यथार्चिषोऽग्नेः सवितुर्गभस्तयो
निर्यान्ति संयान्त्यसकृत् स्वरोचिषः ।
तथा यतोऽयं गुणसम्प्रवाहो
बुद्धिर्मनः खानि शरीरसर्गाः ॥ २३ ॥
स वै न देवासुरमर्त्यतिर्यङ्
न स्त्री न षण्ढो न पुमान् न जन्तुः ।
नायं गुणः कर्म न सन्न चासन्
निषेधशेषो जयतादशेषः ॥ २४ ॥
जिजीविषे नाहमिहामुया कि-
मन्तर्बहिश्चावृतयेभयोन्या ।

इच्छामि कालेन न यस्य विप्लव-
स्तस्यात्मलोकावरणस्य मोक्षम् ॥ २५ ॥
सोऽहं विश्वसृजं विश्वमविश्वं विश्ववेदसम् ।
विश्वात्मानमजं ब्रह्म प्रणतोऽस्मि परं पदम् ॥ २६ ॥
योगरन्धितकर्माणो हृदि योगविभाविते ।
योगिनो यं प्रपश्यन्ति योगेशं तं नतोऽस्म्यहम् ॥ २७ ॥
नमो नमस्तुभ्यमसह्यवेग-
शक्तित्रयायाखिलधीगुणाय ।
प्रपन्नपालाय दुरन्तशक्तये
कदिन्द्रियाणामनवाप्यवर्त्मने ॥ २८ ॥
नायं वेद स्वमात्मानं यच्छक्त्याहंधिया हतम् ।
तं दुरत्ययमाहात्म्यं भगवन्तमितोऽस्म्यहम् ॥ २९ ॥

श्रीशुक उवाच

एवं गजेन्द्रमुपवर्णितनिर्विशेषं
ब्रह्मादयो विविधलिङ्गभिदाभिमानाः ।
नैते यदोपससृपुर्निखिलात्मकत्वात्
तत्राखिलामरमयो हरिराविरासीत् ॥ ३० ॥
तं तद्वदार्त्तमुपलभ्य जगन्निवासः
स्तोत्रं निशम्य दिविजैः सह संस्तुवद्भिः ।
छन्दोमयेन गरुडेन समुह्यमान-
श्चक्रायुधोऽभ्यगमदाशु यतो गजेन्द्रः ॥ ३१ ॥
सोऽन्तःसरस्युरुबलेन गृहीत आर्त्तो
दृष्ट्वा गरुत्मति हरिं ख उपात्तचक्रम् ।
उत्क्षिप्य साम्बुजकरं गिरमाह कृच्छ्रा-
न्नारायणाखिलगुरो भगवन् नमस्ते ॥ ३२ ॥
तं वीक्ष्य पीडितमजः सहसावतीर्य
सग्राहमाशु सरसः कृपयोज्जहार ।
ग्राहाद् विपाटितमुखादरिणा गजेन्द्रं
सम्पश्यतां हरिरमूमुचदुस्त्रियाणाम् ॥ ३३ ॥

श्रीपरमात्मने नमः

विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्

यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात्।
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे॥
नमः समस्तभूतानामादिभूताय भूभृते।
अनेकरूपरूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे॥

वैशम्पायन उवाच

श्रुत्वा धर्मानशेषेण पावनानि च सर्वशः।
युधिष्ठिरः शान्तनवं पुनरेवाभ्यभाषत॥ १ ॥

युधिष्ठिर उवाच

किमेकं दैवतं लोके किं वाप्येकं परायणम्।
स्तुवन्तः कं कमर्चन्तः प्राप्नुयुर्मानवाः शुभम्॥ २ ॥
को धर्मः सर्वधर्माणां भवतः परमो मतः।
किं जपन् मुच्यते जन्तुर्जन्मसंसारबन्धनात्॥ ३ ॥

भीष्म उवाच

जगत्प्रभुं देवदेवमनन्तं पुरुषोत्तमम्।
स्तुवन् नामसहस्रेण पुरुषः सततोत्थितः॥ ४ ॥
तमेव चार्चयन् नित्यं भक्त्या पुरुषमव्ययम्।
ध्यायन् स्तुवन् नमस्यंश्च यजमानस्तमेव च॥ ५ ॥
अनादिनिधनं विष्णुं सर्वलोकमहेश्वरम्।
लोकाध्यक्षं स्तुवन् नित्यं सर्वदुःखातिगो भवेत्॥ ६ ॥
ब्रह्मण्यं सर्वधर्मज्ञं लोकानां कीर्तिवर्धनम्।
लोकनाथं महद्भूतं सर्वभूतभवोद्भवम्॥ ७ ॥
एष मे सर्वधर्माणां धर्मोऽधिकतमो मतः।
यद्भक्त्या पुण्डरीकाक्षं स्तवैरर्चेन्नरः सदा॥ ८ ॥

****

परमं यो महत्तेजः परमं यो महत्तपः ।
परमं यो महद्ब्रह्म परमं यः परायणम् ॥ ९ ॥
पवित्राणां पवित्रं यो मङ्गलानां च मङ्गलम् ।
दैवतं देवतानां च भूतानां योऽव्ययः पिता ॥ १० ॥
यतः सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादियुगागमे ।
यस्मिंश्च प्रलयं यान्ति पुनरेव युगक्षये ॥ ११ ॥
तस्य लोकप्रधानस्य जगन्नाथस्य भूपते ।
विष्णोर्नामसहस्रं मे शृणु पापभयापहम् ॥ १२ ॥
यानि नामानि गौणानि विख्यातानि महात्मनः ।
ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि भूतये ॥ १३ ॥
ॐ विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः ।
भूतकृद् भूतभृद् भावो भूतात्मा भूतभावनः ॥ १४ ॥
पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमा गतिः ।
अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च ॥ १५ ॥
योगो योगविदां नेता प्रधानपुरुषेश्वरः ।
नारसिंहवपुः श्रीमान् केशवः पुरुषोत्तमः ॥ १६ ॥
सर्वः शर्वः शिवः स्थाणुर्भूतादिर्निधिरव्ययः ।
सम्भवो भावनो भर्ता प्रभवः प्रभुरीश्वरः ॥ १७ ॥
स्वयम्भूः शम्भुरादित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः ।
अनादिनिधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः ॥ १८ ॥
अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभुः ।
विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः ॥ १९ ॥
अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः ।
प्रभूतस्त्रिककुब्धाम पवित्रं मङ्गलं परम् ॥ २० ॥
ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः ।
हिरण्यगर्भो भूगर्भो माधवो मधुसूदनः ॥ २१ ॥
ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः ।
अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरात्मवान् ॥ २२ ॥

सुरेशः शरणं शर्म विश्वरेताः प्रजाभवः ।
अहः संवत्सरो व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः ॥ २३ ॥
अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्वादिरच्युतः ।
वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनिःसृतः ॥ २४ ॥
वसुर्वसुमनाः सत्यः समात्मा सम्मितः समः ।
अमोघः पुण्डरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृतिः ॥ २५ ॥
रुद्रो बहुशिरा बभ्रुर्विश्वयोनिः शुचिश्रवाः ।
अमृतः शाश्वतः स्थाणुर्वरारोहो महातपाः ॥ २६ ॥
सर्वगः सर्वविद्भानुर्विष्वक्सेनो जनार्दनः ।
वेदो वेदविदव्यङ्गो वेदाङ्गो वेदवित् कविः ॥ २७ ॥
लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः कृताकृतः ।
चतुरात्मा चतुर्व्यूहश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः ॥ २८ ॥
भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता सहिष्णुर्जगदादिजः ।
अनघो विजयो जेता विश्वयोनिः पुनर्वसुः ॥ २९ ॥
उपेन्द्रो वामनः प्रांशुरमोघः शुचिरूर्जितः ।
अतीन्द्रः संग्रहः सर्गो धृतात्मा नियमो यमः ॥ ३० ॥
वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः ।
अतीन्द्रियो महामायो महोत्साहो महाबलः ॥ ३१ ॥
महाबुद्धिर्महावीर्यो महाशक्तिर्महाद्युतिः ।
अनिर्देश्यवपुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृक् ॥ ३२ ॥
महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सतां गतिः ।
अनिरुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविदां पतिः ॥ ३३ ॥
मरीचिर्दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः ।
हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापतिः ॥ ३४ ॥
अमृत्युः सर्वदृक् सिंहः संधाता सन्धिमान् स्थिरः ।
अजो दुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा ॥ ३५ ॥

गुरुर्गुरुत्तमो धाम सत्यः सत्यपराक्रमः ।
निमिषोऽनिमिषः स्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः ॥ ३६ ॥
अग्रणीर्ग्रामणीः श्रीमान् न्यायो नेता समीरणः ।
सहस्रमूर्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ ३७ ॥
आवर्तनो निवृत्तात्मा संवृतः सम्प्रमर्दनः ।
अहः संवर्तको वह्निरनिलो धरणीधरः ॥ ३८ ॥
सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृग् विश्वभुग् विभुः ।
सत्कर्ता सत्कृतः साधुर्जह्नुर्नारायणो नरः ॥ ३९ ॥
असंख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः ।
सिद्धार्थः सिद्धसंकल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः ॥ ४० ॥
वृषाही वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोदरः ।
वर्धनो वर्धमानश्च विविक्तः श्रुतिसागरः ॥ ४१ ॥
सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेन्द्रो वसुदो वसुः ।
नैकरूपो बृहद्रूपः शिपिविष्टः प्रकाशनः ॥ ४२ ॥
ओजस्तेजोद्युतिधरः प्रकाशात्मा प्रतापनः ।
ऋद्धः स्पष्टाक्षरो मन्त्रश्चन्द्रांशुर्भास्करद्युतिः ॥ ४३ ॥
अमृतांशूद्भवो भानुः शशबिन्दुः सुरेश्वरः ।
औषधं जगतः सेतुः सत्यधर्मपराक्रमः ॥ ४४ ॥
भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पावनोऽनलः ।
कामहा कामकृत् कान्तः कामः कामप्रदः प्रभुः ॥ ४५ ॥
युगादिकृद् युगावर्तो नैकमायो महाशनः ।
अदृश्योऽव्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनन्तजित् ॥ ४६ ॥
इष्टोऽविशिष्टः शिष्टेष्टः शिखण्डी नहुषो वृषः ।
क्रोधहा क्रोधकृत्कर्ता विश्वबाहुर्महीधरः ॥ ४७ ॥
अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वासवानुजः ।
अपां निधिरधिष्ठानमप्रमत्तः प्रतिष्ठितः ॥ ४८ ॥
स्कन्दः स्कन्दधरो धुर्यो वरदो वायुवाहनः ।
वासुदेवो बृहद्भानुरादिदेवः पुरन्दरः ॥ ४९ ॥

अशोकस्तारणस्तारः शूरः शौरिर्जनेश्वरः ।
अनुकूलः शतावर्तः पद्मी पद्मनिभेक्षणः ॥ ५० ॥
पद्मनाभोऽरविन्दाक्षः पद्मगर्भः शरीरभृत् ।
महर्द्धिर्ऋद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुडध्वजः ॥ ५१ ॥
अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हविर्हरिः ।
सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान् समितिञ्जयः ॥ ५२ ॥
विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदरः सहः ।
महीधरो महाभागो वेगवानमिताशनः ॥ ५३ ॥
उद्भवः क्षोभणो देवः श्रीगर्भः परमेश्वरः ।
करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनो गुहः ॥ ५४ ॥
व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदो ध्रुवः ।
परर्द्धिः परमस्पष्टस्तुष्टः पुष्टः शुभेक्षणः ॥ ५५ ॥
रामो विरामो विरजो मार्गो नेयो नयोऽनयः ।
वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो धर्मविदुत्तमः ॥ ५६ ॥
वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणवः पृथुः ।
हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षजः ॥ ५७ ॥
ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः ।
उग्रः संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः ॥ ५८ ॥
विस्तारः स्थावरस्थाणुः प्रमाणं बीजमव्ययम् ।
अर्थोऽनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः ॥ ५९ ॥
अनिर्विण्णः स्थविष्ठोऽभूर्धर्मयूपो महामखः ।
नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमः क्षामः समीहनः ॥ ६० ॥
यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः सत्रं सतां गतिः ।
सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम् ॥ ६१ ॥
सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत् ।
मनोहरो जितक्रोधो वीरबाहुर्विदारणः ॥ ६२ ॥
स्वापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत् ।
वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः ॥ ६३ ॥

****

धर्मगुब् धर्मकृद् धर्मी सदसत्क्षरमक्षरम् ।
अविज्ञाता सहस्रांशुर्विधाता कृतलक्षणः ॥ ६४ ॥
गभस्तिनेमिः सत्त्वस्थः सिंहो भूतमहेश्वरः ।
आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद्गुरुः ॥ ६५ ॥
उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः ।
शरीरभूतभृद् भोक्ता कपीन्द्रो भूरिदक्षिणः ॥ ६६ ॥
सोमपोऽमृतपः सोमः पुरुजित् पुरुसत्तमः ।
विनयो जयः सत्यसंधो दाशार्हः सात्वतां पतिः ॥ ६७ ॥
जीवो विनयिता साक्षी मुकुन्दोऽमितविक्रमः ।
अम्भोनिधिरनन्तात्मा महोदधिशयोऽन्तकः ॥ ६८ ॥
अजो महार्हः स्वाभाव्यो जितामित्रः प्रमोदनः ।
आनन्दो नन्दनो नन्दः सत्यधर्मा त्रिविक्रमः ॥ ६९ ॥
महर्षिः कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदिनीपतिः ।
त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाशृङ्गः कृतान्तकृत् ॥ ७० ॥
महावराहो गोविन्दः सुषेणः कनकाङ्गदी ।
गुह्यो गभीरो गहनो गुप्तश्चक्रगदाधरः ॥ ७१ ॥
वेधाः स्वाङ्गोऽजितः कृष्णो दृढः संकर्षणोऽच्युतः ।
वरुणो वारुणो वृक्षः पुष्कराक्षो महामनाः ॥ ७२ ॥
भगवान् भगहानन्दी वनमाली हलायुधः ।
आदित्यो ज्योतिरादित्यः सहिष्णुर्गतिसत्तमः ॥ ७३ ॥
सुधन्वा खण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रदः ।
दिविस्पृक् सर्वदृग् व्यासो वाचस्पतिरयोनिजः ॥ ७४ ॥
त्रिसामा सामगः साम निर्वाणं भेषजं भिषक् ।
संन्यासकृच्छमः शान्तो निष्ठा शान्तिः परायणम् ॥ ७५ ॥
शुभाङ्गः शान्तिदः स्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः ।
गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः ॥ ७६ ॥
अनिवर्ती निवृत्तात्मा संक्षेप्ता क्षेमकृच्छिवः ।
श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतां वरः ॥ ७७ ॥

श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः ।
श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमाँल्लोकत्रयाश्रयः ॥ ७८ ॥
स्वक्षः स्वङ्गः शतानन्दो नन्दिर्ज्योतिर्गणेश्वरः ।
विजितात्मा विधेयात्मा सत्कीर्तिश्छिन्नसंशयः ॥ ७९ ॥
उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतस्थिरः ।
भूशयो भूषणो भूतिर्विशोकः शोकनाशनः ॥ ८० ॥
अर्चिष्मानर्चितः कुम्भो विशुद्धात्मा विशोधनः ।
अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः ॥ ८१ ॥
कालनेमिनिहा वीरः शौरिः शूरजनेश्वरः ।
त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशिहा हरिः ॥ ८२ ॥
कामदेवः कामपालः कामी कान्तः कृतागमः ।
अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्वीरोऽनन्तो धनंजयः ॥ ८३ ॥
ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद् ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्धनः ।
ब्रह्मविद् ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः ॥ ८४ ॥
महाक्रमो महाकर्मा महातेजा महोरगः ।
महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः ॥ ८५ ॥
स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः ।
पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः ॥ ८६ ॥
मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः ।
वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हविः ॥ ८७ ॥
सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता सद्भूतिः सत्परायणः ।
शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः ॥ ८८ ॥
भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनिलयोऽनलः ।
दर्पहा दर्पदो दृप्तो दुर्धरोऽथापराजितः ॥ ८९ ॥
विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान् ।
अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः ॥ ९० ॥
एको नैकः सवः कः किं यत् तत् पदमनुत्तमम् ।
लोकबन्धुर्लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः ॥ ९१ ॥

****

सुवर्णवर्णो हेमाङ्गो वराङ्गश्चन्दनाङ्गदी ।
वीरहा विषमः शून्यो घृताशीरचलश्चलः ॥ ९२ ॥
अमानी मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक् ।
सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः ॥ ९३ ॥
तेजोवृषो द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतां वरः ।
प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकशृङ्गो गदाग्रजः ॥ ९४ ॥
चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः ।
चतुरात्मा चतुर्भावश्चतुर्वेदविदेकपात् ॥ ९५ ॥
समावर्तोऽनिवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः ।
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा ॥ ९६ ॥
शुभाङ्गो लोकसारङ्गः सुतन्तुस्तन्तुवर्धनः ।
इन्द्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः ॥ ९७ ॥
उद्भवः सुन्दरः सुन्दो रत्ननाभः सुलोचनः ।
अर्को वाजसनः शृङ्गी जयन्तः सर्वविज्जयी ॥ ९८ ॥
सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः ।
महाह्रदो महागर्तो महाभूतो महानिधिः ॥ ९९ ॥
कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः पावनोऽनिलः ।
अमृताशोऽमृतवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ॥ १०० ॥
सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः ।
न्यग्रोधोदुम्बरोऽश्वत्थश्चाणूरान्ध्रनिषूदनः ॥ १०१ ॥
सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः सप्तैधाः सप्तवाहनः ।
अमूर्तिरनघोऽचिन्त्यो भयकृद् भयनाशनः ॥ १०२ ॥
अणुर्बृहत्कृशः स्थूलो गुणभृन्निर्गुणो महान् ।
अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशो वंशवर्धनः ॥ १०३ ॥
भारभृत् कथितो योगी योगीशः सर्वकामदः ।
आश्रमः श्रमणः क्षामः सुपर्णो वायुवाहनः ॥ १०४ ॥
धनुर्धरो धनुर्वेदो दण्डो दमयिता दमः ।
अपराजितः सर्वसहो नियन्ता नियमो यमः ॥ १०५ ॥

सत्त्ववान् सात्त्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः ।
अभिप्रायः प्रियार्होऽर्हः प्रियकृत् प्रीतिवर्धनः ॥ १०६ ॥
विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग् विभुः ।
रविर्विरोचनः सूर्यः सविता रविलोचनः ॥ १०७ ॥
अनन्तो हुतभुग् भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रजः ।
अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतः ॥ १०८ ॥
सनात् सनातनतमः कपिलः कपिरप्ययः ।
स्वस्तिदः स्वस्तिकृत् स्वस्ति स्वस्तिभुक् स्वस्तिदक्षिणः ॥ १०९ ॥
अरौद्रः कुण्डली चक्री विक्रम्यूर्जितशासनः ।
शब्दातिगः शब्दसहः शिशिरः शर्वरीकरः ॥ ११० ॥
अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणां वरः ।
विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः ॥ १११ ॥
उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः ।
वीरहा रक्षणः सन्तो जीवनः पर्यवस्थितः ॥ ११२ ॥
अनन्तरूपोऽनन्तश्रीर्जितमन्युर्भयापहः ।
चतुरस्रो गभीरात्मा विदिशो व्यादिशो दिशः ॥ ११३ ॥
अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मीः सुवीरो रुचिराङ्गदः ।
जननो जनजन्मादिर्भीमो भीमपराक्रमः ॥ ११४ ॥
आधारनिलयोऽधाता पुष्पहासः प्रजागरः ।
ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः पणः ॥ ११५ ॥
प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत् प्राणजीवनः ।
तत्त्वं तत्त्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः ॥ ११६ ॥
भूर्भुवःस्वस्तरुस्तारः सविता प्रपितामहः ।
यज्ञो यज्ञपतिर्यज्वा यज्ञाङ्गो यज्ञवाहनः ॥ ११७ ॥
यज्ञभृद् यज्ञकृद् यज्ञी यज्ञभुग् यज्ञसाधनः ।
यज्ञान्तकृद् यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एव च ॥ ११८ ॥
आत्मयोनिः स्वयंजातो वैखानः सामगायनः ।
देवकीनन्दनः स्रष्टा क्षितीशः पापनाशनः ॥ ११९ ॥

शङ्खभृन्नन्दकी चक्री शार्ङ्गधन्वा गदाधरः ।
रथाङ्गपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः ॥ १२० ॥

॥ सर्वप्रहरणायुध ॐ नम इति ॥

इतीदं कीर्तनीयस्य केशवस्य महात्मनः ।
नाम्नां सहस्रं दिव्यानामशेषेण प्रकीर्तितम् ॥ १२१ ॥
य इदं शृणुयान्नित्यं यश्चापि परिकीर्तयेत् ।
नाशुभं प्राप्नुयात् किञ्चित् सोऽमुत्रेह च मानवः ॥ १२२ ॥
वेदान्तगो ब्राह्मणः स्यात् क्षत्रियो विजयी भवेत् ।
वैश्यो धनसमृद्धः स्याच्छूद्रः सुखमवाप्नुयात् ॥ १२३ ॥
धर्मार्थी प्राप्नुयाद् धर्ममर्थार्थी चार्थमाप्नुयात् ।
कामानवाप्नुयात् कामी प्रजार्थी प्राप्नुयात् प्रजाम् ॥ १२४ ॥
भक्तिमान् यः सदोत्थाय शुचिस्तद्गतमानसः ।
सहस्रं वासुदेवस्य नाम्नामेतत् प्रकीर्तयेत् ॥ १२५ ॥
यशः प्राप्नोति विपुलं ज्ञातिप्राधान्यमेव च ।
अचलां श्रियमाप्नोति श्रेयः प्राप्नोत्यनुत्तमम् ॥ १२६ ॥
न भयं क्वचिदाप्नोति वीर्यं तेजश्च विन्दति ।
भवत्यरोगो द्युतिमान् बलरूपगुणान्वितः ॥ १२७ ॥
रोगार्तो मुच्यते रोगाद् बद्धो मुच्येत बन्धनात् ।
भयान्मुच्येत भीतस्तु मुच्येतापन्न आपदः ॥ १२८ ॥
दुर्गाण्यतितरत्याशु पुरुषः पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन् नामसहस्रेण नित्यं भक्तिसमन्वितः ॥ १२९ ॥
वासुदेवाश्रयो मर्त्यो वासुदेवपरायणः ।
सर्वपापविशुद्धात्मा याति ब्रह्म सनातनम् ॥ १३० ॥
न वासुदेवभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित् ।
जन्ममृत्युजराव्याधिभयं नैवोपजायते ॥ १३१ ॥
इमं स्तवमधीयानः श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ।
युज्येतात्मसुखक्षान्तिश्रीधृतिस्मृतिकीर्तिभिः ॥ १३२ ॥

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां पुरुषोत्तमे ॥ १३३ ॥
द्यौः सचन्द्रार्कनक्षत्रा खं दिशो भूर्महोदधिः ।
वासुदेवस्य वीर्येण विधृतानि महात्मनः ॥ १३४ ॥
ससुरासुरगन्धर्वं सयक्षोरगराक्षसम् ।
जगद् वशे वर्ततेदं कृष्णस्य सचराचरम् ॥ १३५ ॥
इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः सत्त्वं तेजो बलं धृतिः ।
वासुदेवात्मकान्याहुः क्षेत्रं क्षेत्रज्ञ एव च ॥ १३६ ॥
सर्वागमानामाचारः प्रथमं परिकल्पते ।
आचारप्रभवो धर्मो धर्मस्य प्रभुरच्युतः ॥ १३७ ॥
ऋषयः पितरो देवा महाभूतानि धातवः ।
जङ्गमाजङ्गमं चेदं जगन्नारायणोद्भवम् ॥ १३८ ॥
योगो ज्ञानं तथा सांख्यं विद्याः शिल्पादि कर्म च ।
वेदाः शास्त्राणि विज्ञानमेतत् सर्वं जनार्दनात् ॥ १३९ ॥
एको विष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः ।
त्रींल्लोकान् व्याप्य भूतात्मा भुङ्क्ते विश्वभुगव्ययः ॥ १४० ॥
इमं स्तवं भगवतो विष्णोर्व्यासेन कीर्तितम् ।
पठेद् य इच्छेत् पुरुषः श्रेयः प्राप्तुं सुखानि च ॥ १४१ ॥
विश्वेश्वरमजं देवं जगतः प्रभवाप्ययम् ।
भजन्ति ये पुष्कराक्षं न ते यान्ति पराभवम् ॥ १४२ ॥

ॐ तत्सदिति श्रीमहाभारते शतसाहस्त्र्यां संहितायां वैयासिक्यामानुशासनिके पर्वणि भीष्मयुधिष्ठिरसंवादे श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्त्रनामस्तोत्रम् ॥

★

श्रीसप्तश्लोकी दुर्गा

शिव उवाच

देवि त्वं भक्तसुलभे सर्वकार्यविधायिनी।
कलौ हि कार्यसिद्ध्यर्थमुपायं ब्रूहि यत्नतः॥

देव्युवाच

शृणु देव प्रवक्ष्यामि कलौ सर्वेष्टसाधनम्।
मया तवैव स्नेहेनाप्यम्बास्तुतिः प्रकाश्यते॥

विनियोग—अस्य श्रीदुर्गासप्तश्लोकीस्तोत्रमन्त्रस्य नारायण ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः, श्रीदुर्गाप्रीत्यर्थं सप्तश्लोकीदुर्गापाठे विनियोगः।

ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति॥ १॥

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥ २॥

सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥ ३॥

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥ ४॥

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते॥ ५॥

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।

त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥ ६ ॥
सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥ ७ ॥

॥ श्रीसप्तश्लोकी दुर्गा सम्पूर्णा ॥

सप्तश्लोकी गीता

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन् मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन् देहं स याति परमां गतिम् ॥ १ ॥
स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या
जगत् प्रहृष्यत्यनुरज्यते च ।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति
सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः ॥ २ ॥
सर्वतःपाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ।
सर्वतःश्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥ ३ ॥
कविं पुराणमनुशासितार-
मणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः ।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूप-
मादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ॥ ४ ॥
ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् ।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ॥ ५ ॥
सर्वस्य चाहं हृदि संनिविष्टो
मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च ।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो
वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् ॥ ६ ॥
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः ॥ ७ ॥

॥ सप्तश्लोकी गीता सम्पूर्णा ॥

चतुःश्लोकि भागवतम्

अहमेवासमेवाग्रे नान्यद्यत्सदसत्परम् ।
पश्चादहं यदेतच्च योऽवशिष्येत सोऽस्म्यहम् ॥ १ ॥
ऋतेऽर्थं यत् प्रतीयेत न प्रतीयेत चात्मनि ।
तद्विद्यादात्मनो मायां यथाऽऽभासो यथा तमः ॥ २ ॥
यथा महान्ति भूतानि भूतेषूच्चावचेष्वनु ।
प्रविष्टान्यप्रविष्टानि तथा तेषु न तेष्वहम् ॥ ३ ॥
एतावदेव जिज्ञास्यं तत्त्वजिज्ञासुनाऽऽत्मनः ।
अन्वयव्यतिरेकाभ्यां यत् स्यात् सर्वत्र सर्वदा ॥ ४ ॥

॥ चतुःश्लोकि भागवतं सम्पूर्णम् ॥

═ ★ ═

एकश्लोकि रामायणम्

आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृगं काञ्चनं
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम् ।
बालीनिग्रहणं समुद्रतरणं लङ्कापुरीदाहनं
पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननमेतद्धि रामायणम् ॥

॥ एकश्लोकि रामायणं सम्पूर्णम् ॥

═ ★ ═

अश्वत्थस्तोत्रम्

श्रीनारद उवाच

अनायासेन लोकोऽयं सर्वान् कामानवाप्नुयात्।
सर्वदेवात्मकं चैकं तन्मे ब्रूहि पितामह॥ १॥

ब्रह्मोवाच

शृणु देव मुनेऽश्वत्थं शुद्धं सर्वात्मकं तरुम्।
यत्प्रदक्षिणतो लोकः सर्वान् कामान् समश्नुते॥ २॥
अश्वत्थाद्दक्षिणे रुद्रः पश्चिमे विष्णुरास्थितः।
ब्रह्मा चोत्तरदेशस्थः पूर्वे त्विन्द्रादिदेवताः॥ ३॥
स्कन्धोपस्कन्धपत्रेषु गोविप्रमुनयस्तथा।
मूलं वेदाः पयो यज्ञाः संस्थिता मुनिपुङ्गव॥ ४॥
पूर्वादिदिक्षु संयाता नदीनदसरोऽब्धयः।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन ह्यश्वत्थं संश्रयेद्बुधः॥ ५॥
त्वं क्षीर्यफलकश्चैव शीतलश्च वनस्पते।
त्वामाराध्य नरो विन्द्यादैहिकामुष्मिकं फलम्॥ ६॥
चलद्दलाय वृक्षाय सर्वदाश्रितविष्णवे।
बोधिसत्त्वाय देवाय ह्यश्वत्थाय नमो नमः॥ ७॥
अश्वत्थ यस्मात् त्वयि वृक्षराज नारायणस्तिष्ठति सर्वकाले।
अतः श्रुतस्त्वं सततं तरूणां धन्योऽसि चारिष्टविनाशकोऽसि॥ ८॥
क्षीरदस्त्वं च येनेह येन श्रीस्त्वां निषेवते।
सत्येन तेन वृक्षेन्द्र मामपि श्रीर्निषेवताम्॥ ९॥
एकादशात्मरुद्रोऽसि वसुनाथशिरोमणिः।
नारायणोऽसि देवानां वृक्षराजोऽसि पिप्पल॥ १०॥
अग्निगर्भः शमीगर्भो देवगर्भः प्रजापतिः।
हिरण्यगर्भो भूगर्भो यज्ञगर्भो नमोऽस्तु ते॥ ११॥

***

आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च ।
ब्रह्म प्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते ॥ १२ ॥
सततं वरुणो रक्षेत् त्वामाराद्दृष्टिराश्रयेत् ।
परितस्त्वां निषेवन्तां तृणानि सुखमस्तु ते ॥ १३ ॥
अक्षिस्पन्दं भुजस्पन्दं दुःस्वप्नं दुर्विचिन्तनम् ।
शत्रूणां च समुत्थानं ह्यश्वत्थ शमय प्रभो ॥ १४ ॥
अश्वत्थाय वरेण्याय सर्वैश्वर्यप्रदायिने ।
नमो दुःस्वप्ननाशाय सुस्वप्नफलदायिने ॥ १५ ॥
मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे ।
अग्रतः शिवरूपाय वृक्षराजाय ते नमः ॥ १६ ॥
यं दृष्ट्वा मुच्यते रोगैः स्पृष्ट्वा पापैः प्रमुच्यते ।
यदाश्रयाच्चिरञ्जीवी तमश्वत्थं नमाम्यहम् ॥ १७ ॥
अश्वत्थ सुमहाभाग सुभग प्रियदर्शन ।
इष्टकामांश्च मे देहि शत्रुभ्यस्तु पराभवम् ॥ १८ ॥
आयुः प्रजां धनं धान्यं सौभाग्यं सर्वसम्पदम् ।
देहि देव महावृक्ष त्वामहं शरणं गतः ॥ १९ ॥
ऋग्यजुःसाममन्त्रात्मा सर्वरूपी परात्परः ।
अश्वत्थो वेदमूलोऽसावृषिभिः प्रोच्यते सदा ॥ २० ॥
ब्रह्महा गुरुहा चैव दरिद्रो व्याधिपीडितः ।
आवृत्य लक्षसंख्यं तत् स्तोत्रमेतत् सुखी भवेत् ॥ २१ ॥
ब्रह्मचारी हविष्याशी त्वधःशायी जितेन्द्रियः ।
पापोपहतचित्तोऽपि व्रतमेतत् समाचरेत् ॥ २२ ॥
एकहस्तं द्विहस्तं वा कुर्याद्गोमयलेपनम् ।
अर्चेत् पुरुषसूक्तेन प्रणवेन विशेषतः ॥ २३ ॥
मौनी प्रदक्षिणं कुर्यात् प्रागुक्तफलभाग्भवेत् ।
विष्णोर्नामसहस्रेण ह्यच्युतस्यापि कीर्तनात् ॥ २४ ॥

पदे पदान्तरं गत्वा करचेष्टाविवर्जितः ।
वाचा स्तोत्रं मनो ध्याने चतुरङ्गं प्रदक्षिणम् ॥ २५ ॥
अश्वत्थः स्थापितो येन तत्कुलं स्थापितं ततः ।
धनायुषां समृद्धिस्तु नरकात् तारयेत् पितॄन् ॥ २६ ॥
अश्वत्थमूलमाश्रित्य शाकान्नोदकदानतः ।
एकस्मिन् भोजिते विप्रे कोटिब्राह्मणभोजनम् ॥ २७ ॥
अश्वत्थमूलमाश्रित्य जपहोमसुरार्चनात् ।
अक्षयं फलमाप्नोति ब्रह्मणो वचनं यथा ॥ २८ ॥
एवमाश्वासितोऽश्वत्थः सदाश्वासाय कल्पते ।
यज्ञार्थं छेदितेऽश्वत्थे ह्यक्षयं स्वर्गमाप्नुयात् ॥ २९ ॥
छिन्नो येन वृथाऽश्वत्थश्छेदिताः पितृदेवताः ।
अश्वत्थः पूजितो यत्र पूजिताः सर्वदेवताः ॥ ३० ॥

॥ ब्रह्मनारदसंवादे अश्वत्थस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

═══ ★ ═══

तुलसीस्तोत्रम्

जगद्धात्रि नमस्तुभ्यं विष्णोश्च प्रियवल्लभे ।
यतो ब्रह्मादयो देवाः सृष्टिस्थित्यन्तकारिणः ॥ १ ॥
नमस्तुलसि कल्याणि नमो विष्णुप्रिये शुभे ।
नमो मोक्षप्रदे देवि नमः सम्पत्प्रदायिके ॥ २ ॥
तुलसी पातु मां नित्यं सर्वापद्भ्योऽपि सर्वदा ।
कीर्तितापि स्मृता वापि पवित्रयति मानवम् ॥ ३ ॥
नमामि शिरसा देवीं तुलसीं विलसत्तनुम् ।
यां दृष्ट्वा पापिनो मर्त्या मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषात् ॥ ४ ॥
तुलस्या रक्षितं सर्वं जगदेतच्चराचरम् ।
या विनिहन्ति पापानि दृष्ट्वा वा पापिभिर्नरैः ॥ ५ ॥
नमस्तुलस्यतितरां यस्यै बद्ध्वाञ्जलिं कलौ ।
कलयन्ति सुखं सर्वं स्त्रियो वैश्यास्तथाऽपरे ॥ ६ ॥

तुलस्या नापरं किंचिद्दैवतं जगतीतले ।
यथा पवित्रितो लोको विष्णुसंगेन वैष्णवः ॥ ७ ॥
तुलस्याः पल्लवं विष्णोः शिरस्यारोपितं कलौ ।
आरोपयति सर्वाणि श्रेयांसि वरमस्तके ॥ ८ ॥
तुलस्यां सकला देवा वसन्ति सततं यतः ।
अतस्तामर्चयेल्लोके सर्वान् देवान् समर्चयन् ॥ ९ ॥
नमस्तुलसि सर्वज्ञे पुरुषोत्तमवल्लभे ।
पाहि मां सर्वपापेभ्यः सर्वसम्पत्प्रदायिके ॥ १० ॥
इति स्तोत्रं पुरा गीतं पुण्डरीकेण धीमता ।
विष्णुमर्चयता नित्यं शोभनैस्तुलसीदलैः ॥ ११ ॥
तुलसी श्रीर्महालक्ष्मीर्विद्याविद्या यशस्विनी ।
धर्म्या धर्मानना देवी देवीदेवमनःप्रिया ॥ १२ ॥
लक्ष्मीप्रियसखी देवी द्यौर्भूमिरचला चला ।
षोडशैतानि नामानि तुलस्याः कीर्तयन्नरः ॥ १३ ॥
लभते सुतरां भक्तिमन्ते विष्णुपदं लभेत् ।
तुलसी भूर्महालक्ष्मीः पद्मिनी श्रीर्हरिप्रिया ॥ १४ ॥
तुलसि श्रीसखि शुभे पापहारिणि पुण्यदे ।
नमस्ते नारदनुते नारायणमनःप्रिये ॥ १५ ॥

॥ श्रीपुण्डरीककृतं तुलसीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

═══ ★ ═══

गौको नमस्कार करनेके मन्त्र

नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च ।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः ॥
यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजङ्गमम् ।
तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम् ॥

(महा० अनु० ८० । १५)

पञ्च गावः समुत्पन्ना मथ्यमाने महोदधौ ।
तासां मध्ये तु या नन्दा तस्यै देव्यै नमो नमः ॥
सर्वकामदुघे देवि सर्वतीर्थाभिषेचिनि ।
पावनि सुरभिश्रेष्ठे देवि तुभ्यं नमो नमः ॥

गोग्रास-नैवेद्य-मन्त्र

सुरभिस्त्वं जगन्मातर्देवि विष्णुपदे स्थिता ।
सर्वदेवमयी ग्रासं मया दत्तमिमं ग्रस ॥

प्रदक्षिणा-मन्त्र

गवां दृष्ट्वा नमस्कृत्य कुर्याच्चैव प्रदक्षिणम् ।
प्रदक्षिणीकृता तेन सप्तद्वीपा वसुन्धरा ॥
मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः ।
वृद्धिमाकाङ्क्षता पुंसा नित्यं कार्या प्रदक्षिणा ॥

═══ ★ ═══

* श्रीहनूमते नमः *

श्रीहनुमानचालीसा

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥
राम दूत अतुलित बल धामा अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा॥
महाबीर बिक्रम बजरंगी कुमति निवार सुमति के संगी॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा कानन कुंडल कुंचित केसा॥
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै काँधे मूँज जनेऊ साजै॥
संकर सुवन केसरीनंदन तेज प्रताप महा जग बंदन॥
बिद्यावान गुनी अति चातुर राम काज करिबे को आतुर॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया राम लषन सीता मन बसिया॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा बिकट रूप धरि लंक जरावा॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे रामचंद्र के काज सँवारे॥
लाय सजीवन लखन जियाये श्रीरघुबीर हरषि उर लाये॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा नारद सारद सहित अहीसा॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा राम मिलाय राज पद दीन्हा॥
तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना लंकेस्वर भए सब जग जाना॥

जुग सहस्त्र जोजन पर भानू लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥
दुर्गम काज जगत के जेते सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥
राम दुआरे तुम रखवारे होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना तुम रच्छक काहू को डर ना ॥
आपन तेज सम्हारो आपै तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥
भूत पिसाच निकट नहिं आवै महाबीर जब नाम सुनावै ॥
नासै रोग हरै सब पीरा जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥
संकट तें हनुमान छुड़ावै मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥
सब पर राम तपस्वी राजा तिन के काज सकल तुम साजा ॥
और मनोरथ जो कोइ लावै सोइ अमित जीवन फल पावै ॥
चारों जुग परताप तुम्हारा है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
साधु संत के तुम रखवारे असुर निकंदन राम दुलारे ॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता अस बर दीन जानकी माता ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा सदा रहो रघुपति के दासा ॥
तुम्हरे भजन राम को पावै जनम जनम के दुख बिसरावै ॥
अंत काल रघुबर पुर जाई जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥
और देवता चित्त न धरई हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ॥
संकट कटै मिटै सब पीरा जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥
जै जै जै हनुमान गोसाईं कृपा करहु गुरु देव की नाईं ॥
जो सत बार पाठ कर कोई छूटहि बंदि महा सुख होई ॥
जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥

दोहा

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

★

देव-पूजामें विहित एवं निषिद्ध पत्र-पुष्प

पञ्चदेव-पूजामें गणपति, गौरी, विष्णु, सूर्य और शिवकी पूजा की जाती है। यहाँ इन देवी-देवताओंके लिये विहित और निषिद्ध पत्र-पुष्प आदिका उल्लेख किया जा रहा है—

गणपतिके लिये विहित पत्र-पुष्प

गणेशजीको तुलसी छोड़कर सभी पत्र-पुष्प प्रिय हैं। अतः सभी अनिषिद्ध पत्र-पुष्प इनपर चढ़ाये जाते हैं[१]। गणपतिको दूर्वा अधिक प्रिय है। अतः इन्हें सफेद या हरी दूर्वा अवश्य चढ़ानी चाहिये[२]। दूर्वाकी फुनगीमें तीन या पाँच पत्ती होनी चाहिये। गणपतिपर तुलसी कभी न चढ़ाये। पद्मपुराण, आचाररत्नमें लिखा है कि **'न तुलस्या गणाधिपम्'** अर्थात् तुलसीसे गणेशजीकी पूजा कभी न की जाय। कार्तिक-माहात्म्यमें भी कहा है कि **'गणेशं तुलसीपत्रैर्दुर्गां नैव तु दूर्वया'** अर्थात् गणेशजीकी तुलसीपत्रसे और दुर्गाकी दूर्वासे पूजा न करे। गणपतिको नैवेद्यमें लड्डू अधिक प्रिय है[३]।

देवीके लिये विहित पत्र-पुष्प

भगवान् शङ्करकी पूजामें जो पत्र-पुष्प विहित हैं, वे सभी भगवती गौरीको भी प्रिय हैं। अपामार्ग उन्हें विशेष प्रिय है। शङ्करपर चढ़ानेके लिये जिन फूलोंका निषेध है तथा जिन फूलोंका नाम नहीं लिया गया है,

---

१-तुलसीं वर्जयित्वा सर्वाण्यपि पत्रपुष्पाणि गणपतिप्रियाणि।
(आचारभूषण)

२-हरिताः श्वेतवर्णा वा पञ्चत्रिपत्रसंयुताः।
दूर्वाङ्कुरा मया दत्ता एकविंशतिसम्मिताः॥
(गणेशपुराण)

३-गणेशो लड्डुकप्रियः। (आचारेन्दु)

वे भी भगवतीपर चढ़ाये जाते हैं[१]। जितने लाल फूल हैं वे सभी भगवतीको अभीष्ट हैं तथा सुगन्धित समस्त श्वेत फूल भी भगवतीको विशेष प्रिय हैं[२]।

बेला, चमेली, केसर, श्वेत और लाल फूल, श्वेत कमल, पलाश, तगर, अशोक, चंपा, मौलसिरी, मदार, कुंद, लोध, कनेर, आक, शीशम और अपराजित (शंखपुष्पी) आदिके फूलोंसे देवीकी भी पूजा की जाती है[३]।

इन फूलोंमें आक और मदार—इन दो फूलोंका निषेध भी मिलता है—**'देवीनामर्कमन्दारौ..... (वर्जयेत्)'** (शातातप)। अतः ये दोनों विहित भी हैं और प्रतिषिद्ध भी हैं। जब अन्य विहित फूल न मिलें तब इन दोनोंका उपयोग करे[४]। दुर्गासे भिन्न देवियोंपर इन दोनोंको न चढ़ाये। किंतु दुर्गाजीपर चढ़ाया जा सकता है, क्योंकि दुर्गाकी पूजामें इन दोनोंका

१-यानि पुष्पाणि चोक्तानि शङ्करस्यार्चने पुरा।
तानि गौर्याः प्रशस्तानि त्वपामार्गो विशेषतः॥
शिवार्चने निषिद्धानि पत्रपुष्पफलानि च।
तानि देव्याः प्रशस्तानि अनुक्तानि विशेषतः॥

२-नित्यं गौर्याः प्रशस्तानि रक्तपुष्पाणि सर्वदा।
शुक्लान्यपि च सर्वाणि गन्धवन्ति स्मृतानि वै॥
(पारिजात)

३-ऋतुकालोद्भवैः पुष्पैर्मल्लिकाजातिकुङ्कुमैः॥
सितरक्तैश्च कुसुमैस्तथा पद्मैश्च पाण्डुरैः॥
किंशुकैस्तगरैश्चैव किंकिरातैः सचम्पकैः।
बकुलैश्चैव मन्दारैः कुन्दपुष्पैस्तिरीटकैः।
करवीरार्कपुष्पैश्च शिंशपैश्चापराजितैः॥
(आचारभूषण)

४-अर्कपुष्पविधानं तु विहितालाभे द्रष्टव्यम् देवीनामर्कमन्दाराविति निषेधात्।

****

विधान है[१]।

शमी, अशोक, कर्णिकार (कनियार या अमलतास), गूमा, दोपहरिया, अगस्त्य, मदन, सिन्दुवार, शल्लकी, माधवी आदि लताएँ, कुशाकी मंजरियाँ, बिल्वपत्र, केवड़ा, कदम्ब, भटकटैया, कमल[२]—ये फूल भगवतीको प्रिय हैं।

देवीके लिये विहित-प्रतिषिद्ध पत्र-पुष्प

आक और मदारकी तरह दूर्वा, तिलक, मालती, तुलसी, भंगरैया और तमाल विहित-प्रतिषिद्ध हैं अर्थात् ये शास्त्रोंसे विहित भी हैं और निषिद्ध भी हैं[३]। विहित-प्रतिषिद्धके सम्बन्धमें तत्त्वसागरसंहिताका कथन है कि

१-अर्कमन्दारनिषेधो दुर्गेतरदेवीविषयः। दुर्गापूजाधिकारे तयोः पाठात्।
(आचारेन्दु, पृ० १५९)

२-मल्लिकामुत्पलं पुष्पं शमीं पुन्नागचम्पकम्।
अशोकं कर्णिकारं च द्रोणपुष्पं विशेषतः॥
(आचारेन्दु, पृ० १५९)

धत्तूरकातिरक्तैश्च बन्धूकागस्तिसम्भवैः।
मदनैः सिन्दुवारैश्च सुरभीभिर्बकैस्तथा।
लताभिर्ब्रह्मवृक्षस्य दूर्वाङ्कुरैः सुकोमलैः॥
मञ्जरीभिः कुशानां च बिल्वपत्रैः सुशोभनैः।
...... केतकीं चातिमुक्तं च बन्धूकं बहुलान्यपि।
कर्णिकारः कदम्बश्च सिन्दुवारः समृद्धये।
पुन्नागश्चम्पकश्चैव यूथिका वनमल्लिका॥
तगरार्जुनमल्ली च बृहती शतपत्रिका॥
(वीरमि०, पृ० ३१५—३१८)

विशेषः—इन श्लोकोंमें जो फूल आ चुके हैं, उनका हिंदीमें उल्लेख नहीं किया गया है।

३-तिलकं मालती वाणस्तुलसी भृङ्गराजकम्।
तमालं शिवदुर्गार्थे निषिद्धविहितं भवेत्॥
(भविष्यपुराण)

जब शास्त्रोंसे विहित फूल न मिल पायें तो विहित-प्रतिषिद्ध फूलोंसे पूजा कर लेनी चाहिये[१]।

शिव-पूजनके लिये विहित पत्र-पुष्प

भगवान् शंकरपर फूल चढ़ानेका बहुत अधिक महत्त्व है। बतलाया जाता है कि तपःशील सर्वगुणसम्पन्न वेदमें निष्णात किसी ब्राह्मणको सौ सुवर्ण दान[२] करनेपर जो फल प्राप्त होता है, वह भगवान् शंकरपर सौ फूल चढ़ा देनेसे प्राप्त हो जाता है[३]। कौन-कौन पत्र-पुष्प शिवके लिये विहित हैं और कौन-कौन निषिद्ध हैं, इनकी जानकारी अपेक्षित है। अतः उनका उल्लेख यहाँ किया जाता है—

पहली बात यह है कि भगवान् विष्णुके लिये जो-जो पत्र और पुष्प विहित हैं, वे सब भगवान् शंकरपर भी चढ़ाये जाते हैं। केवल केतकी—केवड़ेका निषेध है[४]।

शास्त्रोंने कुछ फूलोंके चढ़ानेसे मिलनेवाले फलका तारतम्य बतलाया है, जैसे दस सुवर्ण-मापके बराबर सुवर्ण-दानका फल एक आकके फूलको चढ़ानेसे मिल जाता है। हजार आकके फूलोंकी अपेक्षा एक कनेरका फूल, हजार कनेरके फूलोंके चढ़ानेकी अपेक्षा एक बिल्व-

---

१-विहितप्रतिषिद्धैस्तु विहितालाभतोऽर्चयेत्।

२-एक सुवर्ण=सोलह माशा या एक कर्ष।

३-तपःशीलगुणोपेते विप्रे वेदस्य पारगे।
दत्त्वा सुवर्णस्य शतं तत्फलं कुसुमस्य च॥
(वीरमित्रोदय, पृ० २०)

४-विष्णोर्यानीह चोक्तानि पुष्पाणि च पत्रिकाः।
केतकीपुष्पमेकं तु विना तान्यखिलान्यपि।
शस्तान्येव सुरश्रेष्ठ शंकराराधनाय हि॥
(नारद)

पत्रसे फल मिल जाता है और हजार बिल्वपत्रोंकी अपेक्षा एक गूमाफूल (द्रोण-पुष्प) होता है। इस तरह हजार गूमासे बढ़कर एक चिचिड़ा, हजार चिचिड़ों (अपामार्गों) से बढ़कर एक कुशका फूल, हजार कुश-पुष्पोंसे बढ़कर एक शमीका पत्ता, हजार शमीके पत्तोंसे बढ़कर एक नीलकमल, हजार नीलकमलोंसे बढ़कर एक धतूरा, हजार धतूरोंसे बढ़कर एक शमीका फूल होता है। अन्तमें बतलाया है कि समस्त फूलोंकी जातियोंमें सबसे बढ़कर नीलकमल होता है[१]।

भगवान् व्यासने कनेरकी कोटिमें चमेली, मौलसिरी, पाटला, मदार, श्वेतकमल, शमीके फूल और बड़ी भटकटैयाको रखा है। इसी तरह धतूरेकी कोटिमें नागचम्पा और पुंनागको माना है[२]।

शास्त्रोंने भगवान् शंकरकी पूजामें मौलसिरी (बक-बकुल) के फूलको ही अधिक महत्त्व दिया है[३]।

भविष्यपुराणने भगवान् शंकरपर चढ़ानेयोग्य और भी फूलोंके नाम गिनाये हैं—

करवीर (कनेर), मौलसिरी, धतूरा, पाढर[४], बड़ी कटेरी,

१-सर्वासां पुष्पजातीनां प्रवरं नीलमुत्पलम्॥
(वीरमित्रोदय, पूजाप्रकाश)

२-करवीरसमा ज्ञेया जातीबकुलपाटलाः।
श्वेतमन्दारकुसुमं सितपद्मं च तत्समम्॥
शमीपुष्पं बृहत्याश्च कुसुमं तुल्यमुच्यते।
नागचम्पकपुन्नागौ धत्तूरकसमौ स्मृतौ॥

३-सत्यं सत्यं पुनः सत्यं शिवं स्पृष्ट्वेदमुच्यते।
बकपुष्पेण चैकेन शैवमर्चनमुत्तमम्॥
(वीर० मि०, पू० प्र०)

४-'पाटला' का अर्थ 'पाढर' होता है। कुछ लोग इसका अर्थ 'गुलाब' बतलाते हैं।

कुरैया, कास, मन्दार, अपराजिता, शमीका फूल, कुब्जक, शंखपुष्पी, चिचिड़ा, कमल, चमेली, नागचम्पा[१], चम्पा, खस, तगर, नागकेसर, किंकिरात (करंटक अर्थात् पीले फूलवाली कटसरैया), गूमा, शीशम, गूलर, जयन्ती, बेला, पलाश, बेलपत्ता, कुसुम्भ-पुष्प, कुङ्कुम[२] अर्थात् केसर, नीलकमल और लाल कमल। जल एवं स्थलमें उत्पन्न जितने सुगन्धित फूल हैं, सभी भगवान् शंकरको प्रिय हैं[३]।

शिवार्चामें निषिद्ध पत्र-पुष्प

कदम्ब, सारहीन फूल या कठूमर, केवड़ा, शिरीष, तिन्तिणी, बकुल (मौलसिरी), कोष्ठ, कैथ, गाजर, बहेड़ा, कपास, गंभारी, पत्रकंटक, सेमल, अनार, धव, केतकी, वसंत ऋतुमें खिलनेवाला कंद-विशेष, कुंद, जूही, मदन्ती, शिरीष सर्ज और दोपहरियाके फूल भगवान् शंकरपर नहीं चढ़ाने चाहिये। वीरमित्रोदयमें इनका संकलन किया गया है[४]।

१-मूलमें 'काञ्चनम्' पद है। अमरकोषकारने बतलाया है कि स्वर्णके जितने नाम हैं वे 'नागचम्पा' फूलके वाचक हैं। अतः 'काञ्चन' का अर्थ नागचम्पा होता है।—'काञ्चनाह्वयः।' (२।४।६५)

२-'..... अथ कुङ्कुमम्। काश्मीरजन्माग्निशिखं वरं बाह्लीकपीतनम्।'

(अमरकोष २।६।१२३)

३-वीरमित्रोदय, पू० प्र०।

४-कदम्बं फल्गुपुष्पं च केतकं च शिरीषकम्।
तिन्तिणी बकुलं कोष्ठं कपित्थं गृञ्जनं तथा॥
बिभीतकं च कार्पासं श्रीपर्णी पत्रकण्टकम्।
शाल्मली दाडिमीवर्ज्यं धातकी शंकरार्चने॥
केतकी चातिमुक्तं च कुन्दो यूथी मदन्तिका।
शिरीषसर्जबन्धूककुसुमानि विवर्जयेत्॥

(वीरमित्रोदय, पूजाप्रकाश)

कदम्ब, बकुल और कुन्दपर विशेष विचार

इन पुष्पोंका कहीं विधान और कहीं निषेध मिलता है। अतः विशेष विचारद्वारा निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाता है—

कदम्ब—शास्त्रका एक वचन है—**'कदम्बकुसुमैः शम्भुमुन्मत्तैः सर्वसिद्धिभाक्।'** अर्थात् कदम्ब और धतूरेके फूलोंसे पूजा करनेसे सारी सिद्धियाँ मिलती हैं। शास्त्रका दूसरा वचन मिलता है—

अत्यन्तप्रतिषिद्धानि कुसुमानि शिवार्चने।
कदम्बं फल्गुपुष्पं च केतकं च शिरीषकम्॥

अर्थात् कदम्ब तथा फल्गु (गन्धहीन आदि) के फूल शिवके पूजनमें अत्यन्त निषिद्ध हैं। इस तरह एक वचनसे कदम्बका शिवपूजनमें विधान और दूसरे वचनसे निषेध मिलता है, जो परस्पर विरुद्ध प्रतीत होता है।

इसका परिहार वीरमित्रोदयकारने कालविशेषके द्वारा इस प्रकार किया है। इनके कथनका तात्पर्य यह है कि कदम्बका जो विधान किया गया है, वह केवल भाद्रपदमास—मास-विशेषमें। इस पुष्प-विशेषका महत्त्व बतलाते हुए देवीपुराणमें लिखा है—

'कदम्बैश्चम्पकैरेवं नभस्ये सर्वकामदा।'

अर्थात् 'भाद्रपदमासमें कदम्ब और चम्पासे शिवकी पूजा करनेसे सभी इच्छाएँ पूरी होती हैं।'

इस प्रकार भाद्रपदमासमें 'विधि' चरितार्थ हो जाती है और भाद्रपदमाससे भिन्न मासोंमें निषेध चरितार्थ हो जाता है। दोनों वचनोंमें कोई विरोध नहीं रह जाता।

'सामान्यतः कदम्बकुसुमार्चनं यत्तद् वर्षर्तुविषयम्। अन्यदा तु निषेधः। तेन न पूर्वोत्तरवाक्यविरोधः।'

(वीरमित्रोदय, पूजाप्रकाश, पृ० २१६)

बकुल (मौलसिरी)—यही बात बकुल-सम्बन्धी विधि-निषेधपर भी लागू होती है। आचारेन्दुमें 'बक' का अर्थ 'बकुल' किया गया है और 'बकुल' का अर्थ है—'मौलसिरी'। शास्त्रका एक वचन है—

'बकपुष्पेण चैकेन शैवमर्चनमुत्तमम्।'

दूसरा वचन है—

'बकुलैर्नार्चयेद् देवम्।'

पहले वचनमें मौलसिरीका शिवपूजनमें विधान है और दूसरे वचनमें निषेध। इस प्रकार आपाततः पूर्वापर-विरोध प्रतीत होता है। इसका भी परिहार कालविशेषद्वारा हो जाता है, क्योंकि मौलसिरी चढ़ानेका विधान सायंकाल किया गया है—**'सायाह्ने बकुलं शुभम्।'** इस तरह सायंकालमें विधि चरितार्थ हो जाती है और भिन्न समयमें निषेध चरितार्थ हो जाता है।

कुन्द—कुन्द-फूलके लिये भी उपर्युक्त पद्धति व्यवहरणीय है। माघ महीनेमें भगवान् शंकरपर कुन्द चढ़ाया जा सकता है, शेष महीनोंमें नहीं। वीरमित्रोदयने लिखा है—

कुन्दपुष्पस्य निषेधेऽपि माघे निषेधाभावः।

विष्णु-पूजनमें विहित पत्र-पुष्प

भगवान् विष्णुको तुलसी बहुत ही प्रिय है[१]। एक ओर रत्न, मणि तथा स्वर्णनिर्मित बहुत-से फूल चढ़ाये जायँ और दूसरी ओर तुलसीदल चढ़ाया जाय तो भगवान् तुलसीदलको ही पसंद करेंगे। सच पूछा जाय

१-अत्यन्तवल्लभा सा हि शालग्रामाभिधे हरौ। (पद्मपुराण)

****

तो ये तुलसीदलकी सोलहवीं कलाकी भी समता नहीं कर सकते[१]। भगवान्‌को कौस्तुभ भी उतना प्रिय नहीं है, जितना कि तुलसीपत्र-मंजरी[२]। काली तुलसी तो प्रिय है ही किंतु गौरी तुलसी तो और भी अधिक प्रिय है[३]। भगवान्‌ने श्रीमुखसे कहा है कि यदि तुलसीदल न हो तो कनेर, बेला, चम्पा, कमल और मणि आदिसे निर्मित फूल भी मुझे नहीं सुहाते[४]। तुलसीसे पूजित शिवलिङ्ग या विष्णुकी प्रतिमाके दर्शन-मात्रसे ब्रह्महत्या भी दूर हो जाती है[५]। एक ओर मालती आदिकी ताजी मालाएँ हों और दूसरी ओर बासी तुलसी हो तो भगवान् बासी तुलसीको ही अपनायेंगे[६]।

शास्त्रने भगवान्‌पर चढ़ानेयोग्य पत्रोंका भी परस्पर तारतम्य बतलाकर तुलसीकी सर्वातिशायिता बतलायी है, जैसे कि चिचिड़ेकी पत्तीसे भँगरैयाकी पत्ती अच्छी मानी गयी है तथा उससे अच्छी खैरकी

१-मणिकाञ्चनपुष्पाणि तथा मुक्तामयानि च।
तुलसीदलमात्रस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्॥
(स्कन्दपुराण)

२-तावद्गर्जन्ति भूतानि कौस्तुभादीनि भूतले।
यावन्न प्राप्यते कृष्णा तुलसी विष्णुवल्लभा॥ (पद्मपु०)

३-श्यामापि तुलसी विष्णोः प्रिया गौरी विशेषतः। (पद्मपु०)

४-करवीरप्रसूनं वा मल्लिका वाथ चम्पकम्।
उत्पलं शतपत्रं वा पुष्पे चान्यतमं तु वा॥
सुवर्णेन कृतं पुष्पं राजतं रत्नमेव वा।
मम पादाब्जपूजायामनर्हं भवति ध्रुवम्॥ (स्कन्दपु०)

५-लिङ्गमभ्यर्चितं दृष्ट्वा प्रतिमां केशवस्य च।
तुलसीपत्रनिकरैर्मुच्यते ब्रह्महत्यया॥ (ब्रह्म०पु०)

६-त्यक्त्वा तु मालतीपुष्पं पुष्पाण्यन्यानि च प्रभुः।
गृह्णाति तुलसीं शुष्कामपि पर्युषितां प्रभुः॥ (पद्मपु०)

और उससे अच्छी शमीकी। शमीसे दूर्वा, उससे अच्छा कुश, उससे अच्छी दौनाकी, उससे अच्छी बेलकी पत्तीको और उससे भी अच्छा तुलसीदल होता है[१]।

नरसिंहपुराणमें फूलोंका तारतम्य बतलाया गया है। कहा गया है कि दस स्वर्ण-सुमनोंका दान करनेसे जो फल प्राप्त होता है, वह एक गूमाके फूल चढ़ानेसे प्राप्त हो जाता है। इसके बाद उन फूलोंके नाम गिनाये गये हैं, जिनमें पहलेकी अपेक्षा अगला उत्तरोत्तर हजार गुना अधिक फलप्रद होता जाता है, जैसे—गूमाके फूलसे हजार गुना बढ़कर एक खैर, हजारों खैरके फूलोंसे बढ़कर एक शमीका फूल, हजारों शमीके फूलोंसे बढ़कर एक मौलसिरीका फूल, हजारों मौलसिरी पुष्पोंसे बढ़कर एक नन्द्यावर्त, हजारों नन्द्यावर्तोंसे बढ़कर एक कनेर, हजारों कनेरके फूलोंसे बढ़कर एक सफेद कनेर, हजारों सफेद कनेरसे बढ़कर कुशका फूल, हजारों कुशके फूलोंसे बढ़कर वनवेला, हजारों वनवेलाके फूलोंसे एक चम्पा, हजारों चम्पाओंसे बढ़कर एक अशोक, हजारों अशोकके पुष्पोंसे बढ़कर एक माधवी, हजारों वासन्तियोंसे बढ़कर एक गोजटा, हजारों गोजटाओंके फूलोंसे बढ़कर एक मालती, हजारों मालती फूलोंसे बढ़कर एक लाल त्रिसंधि (फगुनिया), हजारों लाल त्रिसंधि फूलोंसे बढ़कर एक सफेद त्रिसंधि, हजारों सफेद त्रिसंधि फूलोंसे बढ़कर एक कुन्दका फूल, हजारों कुन्द-पुष्पोंसे बढ़कर एक

१-अपामार्गदलं पुण्यं तस्माद् भृङ्गरजस्य च।
तस्माच्च खादिरं श्रेष्ठं शमीपत्रं ततः परम्॥
दूर्वापत्रं ततः श्रेष्ठं ततश्च कुशपत्रकम्।
ततो दमनकं श्रेष्ठं ततो बिल्वस्य पत्रकम्॥
बिल्वपत्रादपि हरेस्तुलसीपत्रमुत्तमम्॥ (पद्मपु०)

कमल-फूल, हजारों कमल-पुष्पोंसे बढ़कर एक बेला और हजारों बेला-फूलोंसे बढ़कर एक चमेलीका फूल होता है[1]।

निम्नलिखित फूल भगवान्‌को लक्ष्मीकी तरह प्रिय हैं। इस बातको उन्होंने स्वयं श्रीमुखसे कहा है—

मालती, मौलसिरी, अशोक, कालीनेवारी (शेफालिका), बसंतीनेवारी (नवमल्लिका), आम्रात (आमड़ा), तगर, आस्फोत, बेल, मधुमल्लिका, जूही (यूथिका), अष्टपद, स्कन्द, कदम्ब, मधुपिङ्गल, पाटला, चम्पा, हृद्य, लवंग, अतिमुक्तक (माधवी),

---

१-द्रोणपुष्पे तथैकस्मिन् माधवाय निवेदिते।
दत्त्वा दश सुवर्णानि यत्फलं तदवाप्नुयात्॥
द्रोणपुष्पसहस्रेभ्यः खादिरं वै प्रशस्यते।
खादिरपुष्पसहस्रेभ्यः शमीपुष्पं विशिष्यते॥
शमीपुष्पसहस्रेभ्यो बकपुष्पं विशिष्यते।
बकपुष्पसहस्राद्धि नन्द्यावर्तो विशिष्यते॥
नन्द्यावर्तसहस्राद्धि करवीरं विशिष्यते।
करवीरस्य पुष्पाद्धि श्वेतं तत्पुष्पमुत्तमम्॥
कुशपुष्पसहस्राद्धि वनमल्ली विशिष्यते।
वनमल्लीसहस्राद्धि चाम्पकं पुष्पमुत्तमम्॥
चाम्पकात् पुष्पसाहस्रादशोकं पुष्पमुत्तमम्।
अशोकपुष्पसाहस्राद् वासन्तीपुष्पमुत्तमम्।
वासन्तीपुष्पसाहस्राद् गोजटापुष्पमुत्तमम्॥
गोजटापुष्पसाहस्रान्मालतीपुष्पमुत्तमम्।
मालतीपुष्पसाहस्रात् त्रिसंध्यं रक्तमुत्तमम्॥
त्रिसंध्यरक्तसाहस्रात् त्रिसंध्यश्वेतकं वरम्।
त्रिसंध्यश्वेतकसाहस्रात् कुन्दपुष्पं विशिष्यते॥
कुन्दपुष्पसहस्राद्धि शतपत्रं विशिष्यते।
शतपत्रसहस्राद्धि मल्लिकापुष्पमुत्तमम्॥
मल्लिकापुष्पसाहस्राद् जातीपुष्पं विशिष्यते॥ (नरसिंहपुराण)

केवड़ा, कुरब, बेल, सायंकालमें फूलनेवाला श्वेत कमल (कह्लार) और अडूसा[१]।

कमलका फूल तो भगवान्‌को बहुत ही प्रिय है। विष्णुरहस्यमें बतलाया गया है कि कमलका एक फूल चढ़ा देनेसे करोड़ों वर्षके पापोंका भगवान् नाश कर देते हैं[२]। कमलके अनेक भेद हैं। उन भेदोंके फल भी भिन्न-भिन्न हैं। बतलाया गया है कि सौ लाल कमल चढ़ानेका फल एक श्वेत कमलके चढ़ानेसे मिल जाता है तथा लाखों श्वेत कमलोंका फल एक नीलकमलसे और करोड़ों नीलकमलोंका फल एक पद्मसे प्राप्त हो जाता है। यदि कोई भी किसी प्रकार एक भी पद्म चढ़ा दे, तो उसके लिये विष्णुपुरीकी प्राप्ति सुनिश्चित है[३]।

१-मालतीबकुलाशोकशेफालीनवमल्लिकाः।
आम्राततगरास्फोता मल्लिकामधुमल्लिकाः॥
यूथिकाष्टपदं स्कन्दं कदम्बं मधुपिङ्गलम्।
पाटला चम्पकं हृद्यं लवङ्गमतिमुक्तकम्॥
केतकं कुरबं बिल्वं कह्लारं वासकं द्विजाः।
पञ्चविंशतिपुष्पाणि लक्ष्मीतुल्यप्रियाणि मे॥
(विष्णुधर्मोत्तर)

२-कमलेनैकेन देवेशं योऽर्चयेत् कमलाप्रियम्।
वर्षायुतसहस्रस्य पापस्य कुरुते क्षयम्॥

३-रक्तोत्पलशतेनापि यत्फलं पूजिते नृणाम्।
श्वेतोत्पलेन चैकेन तत्फलं समवाप्नुयात्॥
श्वेतानामेकलक्षेण यत्फलं पूजिते भवेत्।
नीलोत्पलेन चैकेन तत्फलं समवाप्नुयात्॥
नीलोत्पलयुतानां तु लक्षकोट्ययुतायुतैः।
समर्चिते हृषीकेशे यत्फलं देहिनां भवेत्॥
तत्फलं समवाप्नोति पद्मेनैकेन पूजकः।
किमन्यैर्बहुभिः पुष्पैर्नैवेद्यैर्वान्यसाधनैः॥
पद्मेनैकेन सम्पूज्य कृष्णं विष्णुपुरं व्रजेत्।
अवशेनापि चैकेन पद्मेन मधुसूदनम्।
यदा तदापि चाभ्यर्च्य नरो विष्णुपुरीं व्रजेत्॥

बलिके द्वारा पूछे जानेपर भक्तराज प्रह्लादने विष्णुके प्रिय कुछ फूलोंके नाम बतलाये हैं—'सुवर्णजाती (जाती), शतपुष्पा (शताह्वा), चमेली (सुमनाः), कुंद, कठचंपा (चारुपुट), बाण, चम्पा, अशोक, कनेर, जूही, पारिभद्र, पाटला, मौलसिरी, अपराजिता (गिरिशालिनी), तिलक, अड़हुल, पीले रंगके समस्त फूल (पीतक) और तगर[१]।

पुराणोंने कुछ नाम और गिनाये हैं, जो नाम पहले आ गये हैं, उनको छोड़कर शेष नाम इस प्रकार हैं—

अगस्त्य[२] आमकी मंजरी[३], मालती, बेला, जूही, (माधवी) अतिमुक्तक, यावन्ति, कुब्जई, करण्टक (पीली कटसरैया), धव (धातक), वाण (काली कटसरैया), बर्बरमल्लिका (बेलाका भेद) और अड़ूसा[४]।

१-जातीशताह्वा सुमनाः कुन्दं चारुपुटं तथा।
बाणं च चम्पकाशोकं करवीरं च यूथिका॥
पारिभद्रं पाटला च बकुलं गिरिशालिनी।
तिलकं जम्बुवनजं पीतकं तगरं तथा॥
एतानि तु प्रशस्तानि कुसुमान्यच्युतार्चने।
सुरभीणि तथान्यानि (वर्जयित्वा तु केतकीम्) ॥
(वीरमित्रोदय, पूजाप्रकाश)

२-अगस्त्यवृक्षसम्भूतैः कुसुमैरसितैः सितैः।
येऽर्चयन्ति हि देवेशं तैः प्राप्तं परमं पदम्॥ (स्कन्दपु०)

३-मञ्जर्यः सहकारस्य तथा देया जनार्दने॥
(विष्णुधर्मोत्तर)

४-मालती मल्लिका चैव यूथिका चातिमुक्तकः।
पाटला करवीरं च जया यावन्तिरेव च॥
कुब्जकस्तगरश्चैव कर्णिकारः करण्टकः।
चम्पको धातकः कुन्दो वाणो बर्बरमल्लिका॥
अशोकस्तिलकश्चम्पस्तथा चैवाऽऽरूषकः।
अमी पुष्पाकराः सर्वे शस्ता केशवपूजने॥
(अग्निपुराण)

विष्णुधर्मोत्तरमें बतलाया गया है कि भगवान् विष्णुकी श्वेत[१] पीले[२] फूलकी प्रियता प्रसिद्ध है, फिर भी लाल फूलोंमें दोपहरिया[३] (बन्धूक), केसर[४], कुङ्कुम और अड़हुलके फूल उन्हें प्रिय हैं, अतः इन्हें अर्पित करना चाहिये। लाल कनेर और बर्रे भी भगवान्‌को प्रिय हैं[५]। बर्रेका फूल पीला-लाल होता है।

इसी तरह कुछ सफेद फूलोंको वृक्षायुर्वेद लाल उगा देता है। लाल रंग होनेमात्रसे वे अप्रिय नहीं हो जाते, उन्हें भगवान्‌को अर्पण करना चाहिये[६]। इसी प्रकार कुछ सफेद फूलोंके बीच भिन्न-भिन्न वर्ण होते हैं। जैसे पारिजातके बीचमें लाल वर्ण। बीचमें भिन्न वर्ण होनेसे भी उन्हें सफेद फूल माना जाना चाहिये और वे भगवान्‌के अर्पण योग्य हैं[७]।

विष्णुधर्मोत्तरके द्वारा प्रस्तुत नये नाम ये हैं—तीसी[८], भूचम्पक[९],

---

१-श्वेतैः पुष्पैः समभ्यर्च्य सर्वान् कामानवाप्नुयात्।
२-ऐश्वर्यं प्राप्नुयाल्लोके पीतैरेवं समर्चयन्॥
३-बन्धुजीवस्य पुष्पाणि रक्तान्यपि निवेदयेत्।
४-कुङ्कुमस्य तु पुष्पाणि बन्धुजीवस्य चाप्यथ।
५-अतिरिक्तैर्महापुष्पैः कुसुमैः करवीरकैः।
अर्चयित्वाच्युतं याति यत्रास्ति गरुडध्वजः॥
६-वृक्षायुर्वेदविधिना शुक्लं रक्तं कृतं च यत्।
तद्रक्तमपि दातव्यम् ....॥
७-मध्येऽन्यवर्णो यस्य स्याच्छुक्लस्य कुसुमस्य तु।
पुष्पं युक्तं तु विज्ञेयं मनोज्ञं केशवप्रियम्॥
८-अतसीकुसुमं तथा।
९-तथा भूचम्पकस्य च। इसमें पत्ते न रहनेपर भी जड़से फूल निकलता है—
'भूचम्पकः=यस्य पत्राभावेऽपि मूलात् पुष्पमुद्गच्छति।'
(वीरमित्रोदय, पूजाप्रकाश, पृ० ५५)

पुरन्ध्रि[1], गोकर्ण[2] और नागकर्ण।

अन्तमें विष्णुधर्मोत्तरने पुष्पोंके चयनके लिये एक उपाय बतलाया है। कहा है कि जो फूल शास्त्रसे निषिद्ध न हों और गन्ध तथा रंग-रूपसे संयुक्त हों उन्हें विष्णुभगवान्‌को अर्पण करना चाहिये[3]।

विष्णुके लिये निषिद्ध फूल

विष्णु भगवान्‌पर नीचे लिखे फूलोंको चढ़ाना मना है—

आक, धतूरा, कांची, अपराजिता (गिरिकर्णिका), भटकटैया, कुरैया, सेमल, शिरीष, चिचिड़ा (कोशातकी), कैथ, लाङ्गुली, सहिजन, कचनार, बरगद, गूलर, पाकर, पीपर और अमड़ा (कपीतन)[4]।

घरपर रोपे गये कनेर और दोपहरियाके फूलका भी निषेध है[5]।

१-तथा पुरन्ध्रिपुष्पैर्यः कुर्यात् पूजां मधुद्विषः।

२-गोकर्णनागकर्णाभ्याम्।

३-येषां न प्रतिषेधोऽस्ति गन्धवर्णान्वितानि च।
तानि पुष्पाणि देयानि विष्णवे प्रभविष्णवे॥
(विष्णुधर्मोत्तर)

४-नार्कं नोन्मत्तकं काञ्चीं तथैव गिरिकर्णिकाम्।
न कण्टकाटिकापुष्पमच्युताय निवेदयेत्॥
कौटजं शाल्मलीपुष्पं शैरीषं च जनार्दने।
निवेदितं भयं शोकं निःस्वतां च प्रयच्छति॥ (विष्णुधर्मोत्तर)
कोशातिक्यर्कधत्तूरशाल्मलीगिरिकर्णिका।
कपित्थलाङ्गुलीशिंगुकोविदारशिरीषकैः॥
अज्ञानात् पूजयेद् विष्णुं नरो नरकमाप्नुयात्।
........न्यग्रोधोदुम्बरप्लक्षसपिप्पलकपीतनैः॥
कोविदारैश्च तत्पत्रैर्नैव विष्णुं प्रपूजयेत्॥ (विष्णुरहस्य)

५-विष्णुधर्मोत्तरका एक वचन है—
करवीरस्य पुष्पाणि तथा धत्तूरकस्य च।
कृष्णं च कुटजं चार्कं नैव देयं जनार्दने॥

सूर्यके अर्चनके लिये विहित पत्र-पुष्प

भविष्यपुराणमें बतलाया गया है कि सूर्यभगवान्‌को यदि एक आकका फूल अर्पण कर दिया जाय तो सोनेकी दस अशर्फियाँ चढ़ानेका फल मिल जाता है[१]। फूलोंका तारतम्य इस प्रकार बतलाया गया है—

हजार अड़हुलके फूलोंसे बढ़कर एक कनेरका फूल होता है, हजार कनेरके फूलोंसे बढ़कर एक बिल्वपत्र, हजार बिल्वपत्रोंसे बढ़कर एक 'पद्म' (सफेद रंगसे भिन्न रंगवाला), हजारों रंगीन पद्म-पुष्पोंसे बढ़कर एक मौलसिरी, हजारों मौलसिरियोंसे बढ़कर एक कुशका फूल, हजार कुशके फूलोंसे बढ़कर एक शमीका फूल, हजार शमीके फूलोंसे बढ़कर एक नीलकमल, हजारों नील एवं रक्त कमलोंसे बढ़कर 'केसर

तात्पर्य यह कि करवीर, धतूर, काला कुटज तथा मदारका फूल विष्णुको नहीं चढ़ाना चाहिये। इसके विपरीत वचन इस प्रकार है—

करवीरस्य पुष्पेण रक्तेनाथ सितेन वा।
मुचुकुन्दस्य चैकेन सम्पूज्य गरुडध्वजम्॥

इसमें कनेर और मुचुकुन्दके फूलको विष्णुभगवान्‌पर चढ़ानेका विधान किया गया है। इस तरह परस्पर विरोध प्रतीत होता है। इसका समन्वय निबन्धकारोंने इस प्रकार किया है— निषेध-वचनमें जो 'करवीर' शब्द आया है उसका तात्पर्य 'गृहरोपित करवीर' है, अर्थात् घरमें रोपे गये करवीर-फूलको नहीं चढ़ाना चाहिये। इससे भिन्न कनेरोंको तो चढ़ाना ही चाहिये। इस अभिप्रायका एक वचन स्वयं विष्णुधर्मोत्तरमें मिलता है—

'न गृहे करवीरोत्थैः कुसुमैरर्चयेद्धरिम्।'

यहाँ कुछ पुष्प विहित-निषिद्ध हैं जिन्हें शास्त्रानुसार पूजनमें अन्य पुष्पोंके अभाव होनेपर चढ़ाया जा सकता है।

१-करवीरे नृपैकस्मिन्नर्कार्यं विनिवेदिते।
दत्त्वा दशसुवर्णस्य निष्कस्य लभते फलम्॥
(भविष्यपुराण)

और लाल कनेर' का फूल होता है[१]।

यदि इनके फूल न मिलें तो बदलेमें पत्ते चढ़ाये और पत्ते भी न मिलें तो इनके फल चढ़ाये[२]।

फूलकी अपेक्षा मालामें दुगुना फल प्राप्त होता है[३]।

रातमें कदम्बके फूल और मुकुरको अर्पण करे और दिनमें शेष समस्त फूल। बेला दिनमें और रातमें भी चढ़ाना चाहिये[४]।

सूर्यभगवान्पर चढ़ाने योग्य कुछ फूल ये हैं—बेला, मालती, काश, माधवी, पाटला, कनेर, जपा, यावन्ति, कुब्जक, कर्णिकार, पीली कटसरैया (कुरण्टक), चम्पा, रोलक, कुन्द, काली कटसरैया (वाण), बर्बरमल्लिका, अशोक, तिलक, लोध, अरूषा, कमल, मौलसिरी, अगस्त्य और पलाशके फूल तथा दूर्वा[५]।

१-जपापुष्पसहस्रेभ्यः करवीरं विशिष्यते।
करवीरसहस्रेभ्यो बिल्वपत्रं विशिष्यते॥
बिल्वपत्रसहस्रेभ्यः पद्ममेकं विशिष्यते।
वीर पद्मसहस्रेभ्यो वकपुष्पं विशिष्यते॥
वकपुष्पसहस्रेभ्यः कुशपुष्पं विशिष्यते।
कुशपुष्पसहस्रेभ्यः शमीपुष्पं विशिष्यते॥
शमीपुष्पसहस्रेभ्यो नृप नीलोत्पलं वरम्।
रक्तोत्पलसहस्रेण नीलोत्पलशतेन च।
रक्तैश्च करवीरैश्च यस्तु पूजयते रविम्॥ (भविष्यपुराण)

२-अलाभे सति पुष्पाणां पत्राण्यपि निवेदयेत्।
पत्राणामप्यलाभे तु फलान्यपि निवेदयेत्॥ ('')

३-स्रग्भिश्च नृपशार्दूल तदेव द्विगुणं भवेत्। ('')

४-मुकुराणि कदम्बानि रात्रौ देयानि भानवे।
दिवा शेषाणि पुष्पाणि दिवा रात्रौ च मल्लिका॥ ('')

५-मल्लिका मालती चैव दूर्वा काशोऽतिमुक्तकः।
पाटला करवीरश्च जपा यावन्तिरेव च॥

कुछ समकक्ष पुष्प

शमीका फूल और बड़ी कटेरीका फूल एक समान माने जाते हैं। करवीरकी कोटिमें चमेली, मौलसिरी और पाटला आते हैं। श्वेत कमल और मन्दारकी श्रेणी एक है। इसी तरह नागकेसर, चम्पा, पुन्नाग और मुकुर एक समान माने जाते हैं[१]।

विहित पत्र

बेलका पत्र, शमीका पत्ता, भँगरैयाकी पत्ती, तमालपत्र, तुलसी और काली तुलसीके पत्ते तथा कमलके पत्ते सूर्यभगवान्‌की पूजामें गृहीत हैं[२]।

सूर्यके लिये निषिद्ध फूल

गुंजा (कृष्णला), धतूरा, कांची, अपराजिता (गिरिकर्णिका), भटकटैया, तगर और अमड़ा—इन्हें सूर्यपर न चढ़ाये। 'वीरमित्रोदय' ने इन्हें सूर्यपर चढ़ानेका स्पष्ट निषेध किया है, यथा—

कुब्जकस्तगरश्चैव कर्णिकारः कुरण्टकः।
चम्पको रोलकः कुन्दो वाणो बर्बरमल्लिकाः॥
अशोकस्तिलको लोधस्तथा चैवाटरूषकम्॥
शतपत्राणि चान्यानि बकुलश्च विशेषतः।
... . अगस्तिकिंशुकौतद्वत्॥
(वीरमित्रोदय, पूजाप्रकाश, पृ० २५७)

१-शमीपुष्पबृहत्याश्च कुसुमं तुल्यमुच्यते।
करवीरसमा ज्ञेया जातीबकुलपाटलाः॥
श्वेतमन्दारकुसुमं सितपद्मं च तत्समम्।
नागचम्पकपुन्नागमुकुराश्च समाः स्मृताः॥('')

२-बिल्वपत्रं शमीपत्रं पत्रं भृङ्गरजस्य च।
तमालपत्रं च हरे सदैव तपनप्रियम्॥
तुलसीकालतुलसी तथा रक्तं च चन्दनम्।
केतकी पद्मपत्रं च सद्यस्तुष्टिकरं रवेः॥('')

कृष्णलोन्मत्तकं काञ्ची तथा च गिरिकर्णिका ।
न कण्टकारिपुष्पं च तथान्यद् गन्धवर्जितम् ॥
देवीनामर्कमन्दारौ सूर्यस्य तगरं तथा ।
न चाम्रातकजैः पुष्पैरर्चनीयो दिवाकरः ॥

फूलोंके चयनकी कसौटी—सभी फूलोंका नाम गिनाना कठिन है। सब फूल सब जगह मिलते भी नहीं। अतः शास्त्रने योग्य फूलोंके चुनावके लिये हमें एक कसौटी दी है कि जो फूल निषेध कोटिमें नहीं हैं और रंग-रूप तथा सुगन्धसे युक्त हैं उन सभी फूलोंको भगवान्‌को चढ़ाना चाहिये।

येषां न प्रतिषेधोऽस्ति गन्धवर्णान्वितानि च ।
तानि पुष्पाणि देयानि भानवे लोकभानवे ॥

संक्षिप्त पुण्याहवाचन

यजमान—

ब्राह्मं पुण्यं महर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्।
वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे अमुककर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण—

ॐ पुण्याहम्, ॐ पुण्याहम्, ॐ पुण्याहम्।

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥

यजमान—

पृथिव्यामुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुरा कृतम्।
ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे अमुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण—

ॐ कल्याणम्, ॐ कल्याणम्, ॐ कल्याणम्।

ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्याँ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृध्यतामुप मादो नमतु।

यजमान—

सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां च ऋद्धिं ब्रवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रवन्तु।

ब्राह्मण—

ॐ कर्म ऋध्यताम्, ॐ कर्म ऋध्यताम्, ॐ कर्म ऋध्यताम्।

ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता अभूम। दिवं पृथिव्याम् अध्याऽरुहामाविदाम देवान्त्स्वर्ज्योतिः॥

यजमान—

स्वस्तिस्तु याऽविनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा।
विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे अमुककर्मणः स्वस्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण—

ॐ आयुष्मते स्वस्ति, ॐ आयुष्मते स्वस्ति, ॐ आयुष्मते स्वस्ति।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

यजमान—

मृकण्डसूनोरायुर्यद्ध्रुवलोमशयोस्तथा।
आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम्॥

ब्राह्मण—

जीवन्तु भवन्तः, जीवन्तु भवन्तः, जीवन्तु भवन्तः।

ॐ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥

यजमान—

समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका।
हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः॥
शिवगौरीविवाहे तु या श्रीरामे नृपात्मजे।
धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं सास्तु सद्मनि॥

ब्राह्मण—

अस्तु श्रीः, अस्तु श्रीः, अस्तु श्रीः।

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय पशूनाᳬं रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा ।

यजमान—

प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट् ।
भगवाञ्छाश्वतो नित्यं स नो रक्षतु सर्वतः ॥
योऽसौ प्रजापतिः पूर्वे यः करे पद्मसम्भवः ।
पद्मा वै सर्वलोकानां तन्नोऽस्तु प्रजापते ॥

—पश्चात् हाथमें जल लेकर छोड़ दे और कहे—

भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम् ।

ब्राह्मण—

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्त्वयममुष्य पितासावस्य पिता वयᳬं स्याम पतयो रयीणाᳬं स्वाहा ॥

आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे ।
कृताः सर्वाशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः ॥
या स्वस्तिर्ब्रह्मणो भूता या च देवे व्यवस्थिता ।
धर्मराजस्य या पत्नी स्वस्तिः शान्तिः सदा तव ॥
देवेन्द्रस्य यथा स्वस्तिर्यथा स्वस्तिर्गुरोर्गृहे ।
एकलिंगे यथा स्वस्तिस्तथा स्वस्तिः सदा तव ॥

ॐ आयुष्मते स्वस्ति, ॐ आयुष्मते स्वस्ति, ॐ आयुष्मते स्वस्ति ।

ॐ प्रति पन्थामपद्महि स्वस्तिगामनेहसम् । येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु ।

पुण्याहवाचनकर्मणः समृद्धिरस्तु ।

═══ ★ ═══

नित्यहोम-विधि

नित्यकर्मके पश्चात् पूर्वमुख बैठकर आसन-शुद्धिके बाद आचमन, प्राणायाम करके संकल्प करे। **ॐ अद्य** आदि देश-कालका उच्चारण कर **गोत्रः, प्रवरः, शर्मा (वर्मा/ गुप्तः/ दासः) अहं नित्यकर्मानुष्ठानसिद्धि-द्वारा श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं च नित्यहोमं करिष्ये।**

पञ्चभूसंस्कार—संकल्प करनेके बाद वेदीके निम्नलिखित पाँच संस्कार करने चाहिये—

(१) तीन कुशोंसे वेदी अथवा ताम्रकुण्डका दक्षिणसे उत्तरकी ओर परिमार्जन करे तथा उन कुशोंको ईशान दिशामें फेंक दे **(दर्भैः परिसमुह्य)**। (२) गोबर और जलसे लीप दे **(गोमयोदकेनोपलिप्य)**। (३) स्रुवा अथवा कुशमूलसे पश्चिमसे पूर्वकी ओर प्रादेशमात्र (दस अंगुल लंबी) तीन रेखाएँ दक्षिणसे प्रारम्भ कर उत्तरकी ओर खींचे **(वज्रेणोल्लिख्य)**। (४) उल्लेखनक्रमसे दक्षिण अनामिका और अँगूठेसे रेखाओंपरसे मिट्टी निकालकर बायें हाथमें तीन बार रखकर पुनः सब मिट्टी दाहिने हाथमें रख ले और उसे उत्तरकी ओर फेंक दे **(अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य)**। (५) पुनः जलसे कुण्ड या स्थण्डिलको सींच दे **(उदकेनाभ्युक्ष्य)**।

इस प्रकार पञ्चभूसंस्कार करके पवित्र अग्नि अपने दक्षिणकी ओर रखे और उस अग्निसे थोड़ा क्रव्याद-अंश निकालकर नैर्ऋत्यकोणमें रख दे। पुनः सामने रखी पवित्र अग्निको कुण्ड या स्थण्डिलपर निम्न मन्त्रसे स्थापित करे—**ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२ आ सादयादिह।**

—इस मन्त्रसे अग्नि-स्थापनके पश्चात् कुशोंसे परिस्तरण करे। कुण्ड या स्थण्डिलके पूर्व उत्तराग्र तीन कुश या दूर्वा रखे। दक्षिणभागमें पूर्वाग्र तीन कुश या दूर्वा रखे। पश्चिमभागमें उत्तराग्र तीन कुश या दूर्वा रखे। उत्तरभागमें पूर्वाग्र तीन कुश या दूर्वा रखे। अग्निको बाँसकी नलीसे

प्रज्वलित करे। इसके बाद अग्निका ध्यान करे।

अग्निका ध्यान—ॐ चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य। त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यॉं२ आ विवेश।

ॐ मुखं यः सर्वदेवानां हव्यभुक् कव्यभुक् तथा।
पितृणां च नमस्तस्मै विष्णवे पावकात्मने॥

—ऐसा ध्यान करके '**ॐ अग्ने शाण्डिल्यगोत्र मेषध्वज प्राङ्मुख मम सम्मुखो भव**'—इस प्रकार प्रार्थना करके '**पावकाग्नये नमः**' इस मन्त्रसे पञ्चोपचार-पूजन करे। गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य चढ़ाये। तदनन्तर घृतमिश्रित हविष्यान्नसे अथवा घृतसे हवन करे। सम्भव हो तो घृतसे स्रुवाद्वारा अग्निके जलते अंशपर तीन आहुति दे—

१-ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम।

२-ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम।

३-ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम।

(१) ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम।

(२) ॐ धन्वन्तरये स्वाहा, इदं धन्वन्तरये न मम।

(३) ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा, इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यो न मम।

(४) ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।

(५) ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।

—इस प्रकार गौतम महर्षिप्रोक्त पाँच आहुतियाँ देकर निम्न मन्त्रोंसे आहुतियाँ और दे—

[१] ॐ देवकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा, इदमग्नये न मम।

[२] ॐ मनुष्यकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा, इदमग्नये न मम।

[३] ॐ पितृकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा, इदमग्नये न मम।

[४] ॐ आत्मकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा, इदमग्नये न मम।

[५] ॐ एनस एनसोऽवयजनमसि स्वाहा, इदमग्नये न मम।

****

[६] **ॐ यच्चाहमेनो विद्वांश्चकार यच्चाविद्वाँस्तस्य सर्वस्यैन-सोऽवयजनमसि स्वाहा, इदमग्नये न मम।**

—इस प्रकार होम सम्पन्न कर पञ्चोपचार—गन्ध, पुष्प, धूप, दीप तथा नैवेद्यसे अग्निकी उत्तर-पूजा करके न्यूनतापूर्तिके लिये प्रार्थना करे—

ॐ सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि। सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरा पृणस्व घृतेन स्वाहा॥ अन्तमें निम्नाङ्कित वाक्य कहकर कृत हवन-कर्म भगवान्‌को अर्पित करे—**अनेन नित्यहोमकर्मणा श्रीपरमेश्वरः प्रीयताम् न मम।**

ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु।
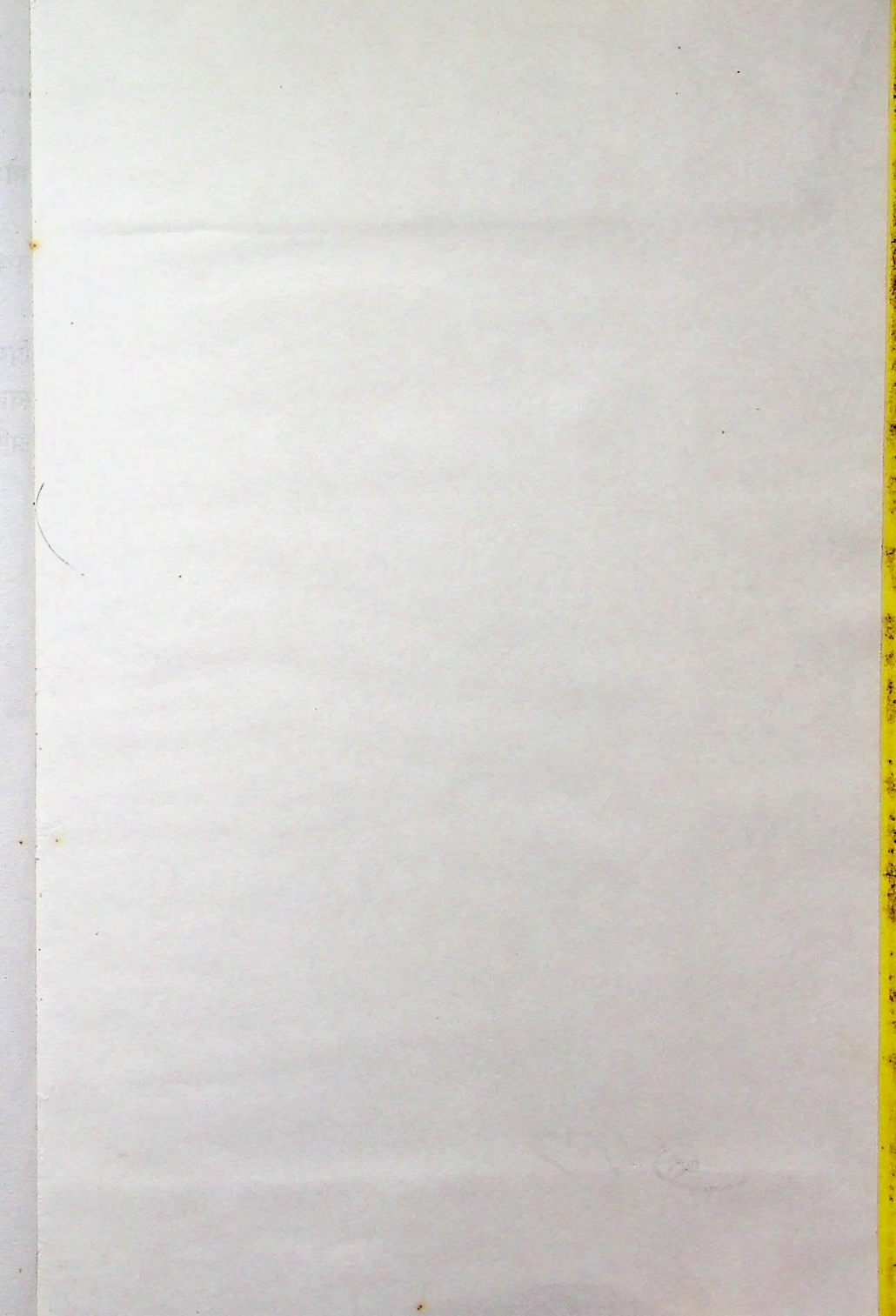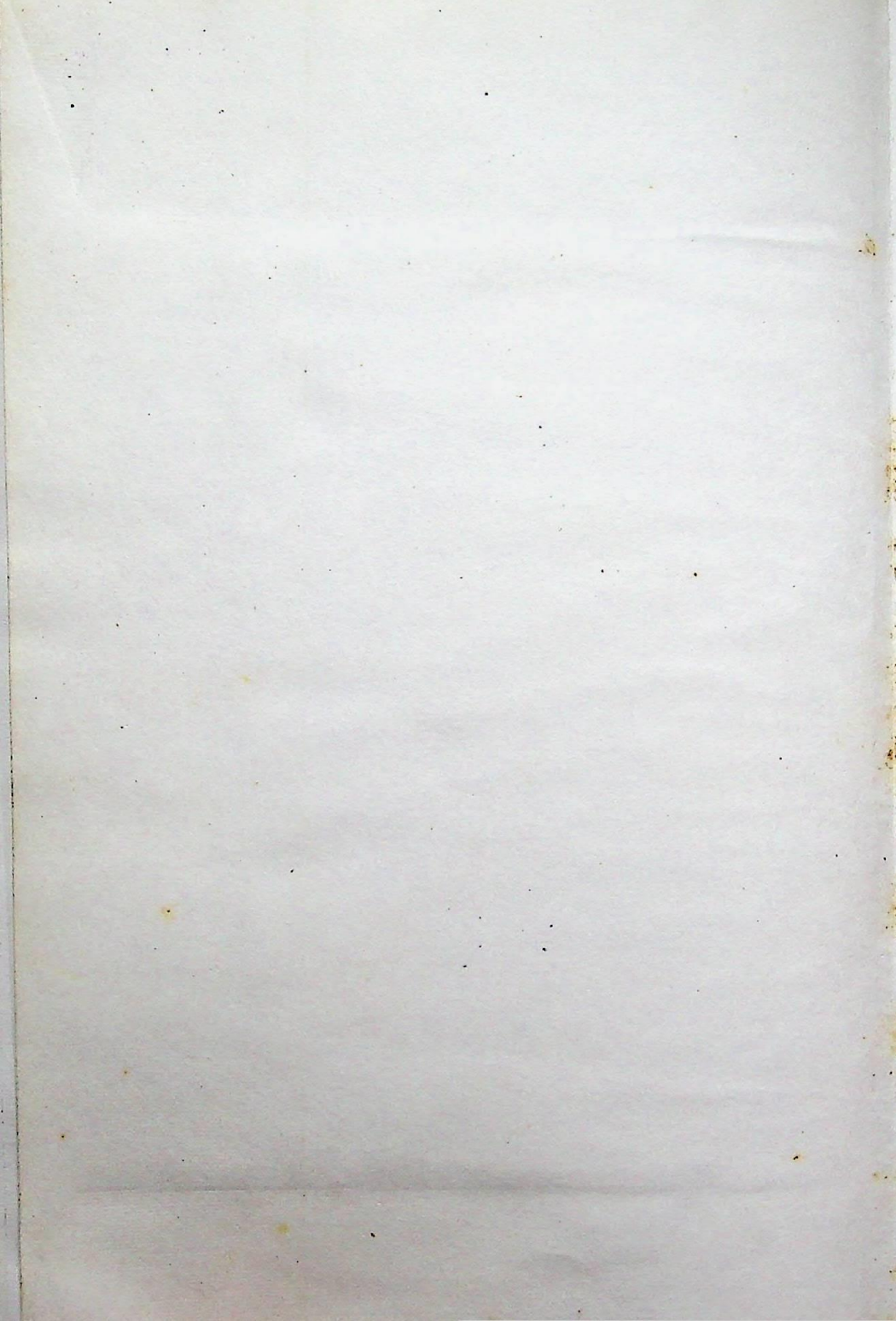
गीताप्रेस गोरखपुर

GITA PRESS, GORAKHPUR

ISBN 81-293-0047-8

गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५

फोन : (०५५१) २३३४७२१, फैक्स : २३३६९९७

GPPN 592